Левъ Толстой

Л. ТОЛСТОЙ

КАЗАКИ

Кавказская повесть

ИЗДАТЕЛЬСТВО ЛИТЕРАТУРЫ НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ
Москва

लेव तोल्स्तोय

काकेशस का उपन्यास

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह

मास्को

अनुवादक डॉ० नारायणदास खन्ना

चित्रकार द० विस्ती

पाठको से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारो के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बडी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है

२१, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत सघ।

१

मास्को का वातावरण शान्त हो गया है। हाँ, सर्दी से ठढी पडती हुई सडको पर कभी कभी पहियो की चरमराहट जरूर सुनाई दे जाती है। खिडकियो में से प्रकाश की ताक-झाँक वन्द हो गई है और सडको की बत्तियाँ वुझ गई हैं। गिरजे की मीनारो से घण्टो की आवाजें सुनाई पड

रही है जो मारे नगर में व्याप्त होकर सुवह हो जाने की घोषणा कर रही है। सड़को पर कोई आता-जाता नही दिखाई पडता। यदा-कदा वर्फ और वालू में से गुज़रती हुई स्लेज-गाडी की खडखडाहट कानो में पड जाती है, और कोचवान सडक के नुक्कड तक पहुँचते पहुँचते ऊँघ जाता है। उसकी गाडी सवारी का इन्तज़ार करने लगती है। एक वृद्धा गिरजे की ओर वढ रही है जहाँ इधर-उधर रखी हुई कुछ मोमवत्तियाँ झिलमिला रही है। ईसा मसीह की सुनहरी प्रतिमा पर लाल रोशनी पड रही है। जाडे की लम्बी लम्बी रातो में करवटें वदल लेने के वाद अव मजदूर विस्तर छोड चुके है और अपने अपने कामो पर चल पडे है।

परन्तु भले आदमियो के लिए अभी शाम है।

शेवल्ये रेस्टराँ के झरोखो से झाँकता हुआ विजली का प्रकाश दीख रहा है। लोग जानते हैं कि इस समय तक वत्तियाँ जलते रहना ग़ैर-कानूनी है। प्रवेश द्वार पर एक गाडी और कई स्लेजें पास पास खडी है। इन्ही में तीन घोडोवाली एक स्लेज भी है। अपने में ही सिकुडा और सर्दी से ठिठुरता हुआ दरवान ऐसे दुवका वैठा है मानो मकान के किसी कोने मे छिपा हो।

"यहाँ वैठे वैठे वाते वघारने से क्या फायदा?" हाल में वैठा हुआ वैरा सोच रहा है। उसके कुरूप चेहरे पर रूखापन झलकने लगता है, "जव कभी मैं ड्यूटी पर होता हूँ हमेशा यही होता है।"

पास के छोटे कमरे से तीन नवयुवको की आवाज़ें सुनाई पड रही है। कमरा प्रकाश से जगमगा रहा है। कमरे की मेज़ पर शाम का खाया हुआ खाना और शराव इधर-उधर विखरी पडी है। सुन्दर वेशभूषा में एक सीधा-सादा, दुवला-पतला नाटा-सा व्यक्ति कुर्सी पर वैठा, थकी-माँदी किन्तु कोमल दृष्टि से अपने उस मित्र को देख रहा है जो शीघ्र ही उससे विदा लेगा। दूसरा एक लमतडग, उगली पर चाभी का गुच्छा नचाता हुआ खाली

बोतलोवाली मेज़ के पास एक सोफे पर लुढका पडा है। यहाँ एक तीसरा व्यक्ति भी है जो भेड की खाल का नया कोट पहने कमरे में चहलकदमी कर रहा है। कभी कभी वह एक क्षण के लिए रुक जाता है और उगलियो से बादाम तोडने लगता है। उसकी उगलियाँ मजबूत हैं, मोटी हैं और नाखून बडी होशियारी से साफ किये गये हैं। वह किसी बात पर देर से मुस्करा रहा है। उसकी आँखो तथा चेहरे पर चमक है। जब वह बोलता है तो उसके शब्दो में उत्साह और शरीर के अग-प्रत्यग से हाव-भाव प्रकट होते हैं। ऐसा लगता है कि जो कुछ वह कहना चाहता है उसके लिए उसे उपयुक्त शब्द नही मिल पाते और यदि कुछ उसके ओठो तक आते भी हैं तो वे उसके अन्तर के उद्गारो को व्यक्त करने मे असमर्थ हैं।

"अब मैं आप से सारी बाते कह सकता हूँ," यात्री कह उठा, "मैं अपनी सफाई नही दे रहा हूँ, मैं तो केवल यही चाहता हूँ कि आप मुझे वैसा ही समझें जैसा कि मैं अपने आप को समझता हूँ और इस विषय पर आप सामान्य अथवा कोई हल्का दृष्टिकोण न रखें। आप कहते है कि मैंने उसके साथ बुरा बर्ताव किया है?" वह उस व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए कहता जा रहा था जो उसे कोमल दृष्टि से देख रहा था।

"हाँ, दोष तुम्हारा ही है," सम्बोधित व्यक्ति कहने लगा। उसकी आँखो से ऐसा लग रहा था जैसे उनकी कोमलता तथा थकावट और भी बढ गई है।

"मै जानता हूँ आप ऐसा क्यो कह रहे है," यात्री कहता जा रहा था, "आप समझते हैं कि प्यार पाने में उतनी ही प्रसन्नता होती है जितनी प्यार करने में, और अगर एक बार भी आपको किसी ने प्यार कर लिया, तो वह ज़िन्दगी भर के लिए काफी है।"

"हाँ, मेरे दोस्त, बिल्कुल काफी है बल्कि उससे भी कुछ अधिक," आँख मारते हुए उस छोटे, दुबले-पतले आदमी ने जवाब दिया।

"परन्तु खुद इन्सान भी प्यार क्यो न करे?" यात्री अपने मित्र को दया-भाव से देखते हुए गम्भीरतापूर्वक बोला, "आखिर कोई प्रेम क्यों न करे? प्रेम यो ही नही आता नहीं, वह प्यार पाना ही मुसीबत है जब आप अपने को अपराधी समझने लगें क्योकि जो कुछ आपको मिल रहा है आप उसे वापस नही करते और कर भी नही सकते। हे भगवान!" और उसके हाथ झूल गये, "यदि केवल यही बाते कायदे से होती! परन्तु ये सब उल्टी-सीधी है और हमारे बस की नही। जो होना होता है वही होता है। क्यो? ऐसा लगता है कि मैंने किसी का प्यार चुरा लिया है। आप भी यही समझते है न। देखिए, इनकार न कीजिएगा—आपको इसी प्रकार सोचना चाहिए। परन्तु क्या आप विश्वास करेंगे कि जीवन में मैंने जितने नीच और घृणित कर्म किये है उनमें केवल यही एक ऐसा काम है जिसके लिए मुझे कोई पछतावा नही और मैं पछता भी नही सकता। मैंने न तो प्रेम के उषाकाल में, और न उसके बाद ही, जानबूझ कर, न स्वय को धोखे में रखा और न उसी को। मुझे कुछ ऐसा लगा था कि स्वय मैं भी प्रेम करने लगा हूँ। परन्तु बाद में मैंने समझा कि मैं अज्ञात रूप मे अपने को ही धोखा दे रहा हूँ—इस प्रकार प्रेम करना असम्भव है—और मै आगे नही बढ सका। परन्तु वह बढती ही गई। तो क्या यह मेरा दोष है कि मै नहीं बढा? मै करता ही क्या?"

"खैर जो हुआ, हो चुका," जगते रहने के उद्देश्य ने सिगार जलाते हुए उसके दोस्त ने कहा, "बात सिर्फ यह है कि न तुमने कभी किसी से प्यार किया और न तुम जानते ही हो कि प्यार है किस चिड़िया का नाम!"

जो व्यक्ति भेड की खाल पहने था, वह फिर कुछ कहना चाहता था और इसीलिए उसने अपना हाथ माथे पर रखा भी था, परन्तु वह क्या कहना चाहता था इसे व्यक्त न कर सका।

"प्यार नही किया हाँ बिल्कुल ठीक। मैने कभी नही किया। लेकिन मेरे हृदय में प्यार करने की आकाक्षा तो है और उस आकाक्षा से बढकर कुछ नही हो सकता। परन्तु क्या ऐसे प्यार का अस्तित्व भी है? अपूर्णता सदैव कही न कही तो होती ही है। होगा! कोरी बातो से क्या फायदा? मैने जिन्दगी को गोरखधन्धा बना दिया है! परन्तु कुछ भी हो अब सब खत्म हो गया। आप ठीक कहते है। और, मुझे ऐसा लगता है कि मैं एक नई जिन्दगी शुरू कर रहा हूँ।"

"जिसे तुम फिर गोरखधन्धा बना दोगे," सोफे पर पडे तथा चाभियो से खेलते हुए व्यक्ति ने कहा। परन्तु यात्री ने नहीं सुना।

"मै उदास हूँ, फिर भी मुझे जाने की खुशी है," उसने कहा, "मैं उदास क्यो हूँ, मैं नही जानता।"

और यात्री अपने बारे में बाते करता रहा। उसने इस बात पर ध्यान नही दिया कि अपनी बातो में जितनी दिलचस्पी उसे है उतनी दूसरो को नही। आध्यात्मिक उन्मेष के क्षणो में मनुष्य जितना आत्मश्लाघी बन जाता है उतना अन्य किसी अवसर पर नही रहता। उस समय उसे ऐसा लगने लगता है मानो दुनिया में उसे छोडकर और कोई शानदार और दिलचस्प चीज़ है ही नही।

"दिमीत्री अन्द्रेयेविच! कोचवान अब अधिक इन्तजार न करेगा," एक नववयस्क भूदास ने कमरे में प्रवेश करते करते कहा। वह भेड की खाल का कोट पहने था और उसके सिर के चारो ओर एक गुलूबन्द लिपटा था। "घोडे रात के ग्यारह बजे से खडे खडे हिनहिना रहे हैं और इस समय सुबह के चार बज रहे हैं।"

दिमीत्री अन्द्रेयेविच ने अपने दास वन्यूशा की ओर देखा। उसके सिर पर बधा हुआ गुलूवन्द, उसका फेल्ट वूट, और उसका ऊँघता-सा चेहरा मानो अपने स्वामी को ऐसे नये जीवन की ओर आमन्त्रित कर रहा था जिसमें परिश्रम है, कठिनाई है और है जीवन की हलचल।

"ठीक है! नमस्ते!" उसने अपने कोट का खुला हुआ हुक खोजते हुए कहा।

वख्शीश देकर कोचवान को शान्त करने के लिए कहने के वजाय उसने अपनी टोपी पहनी और कमरे के वीच आकर खडा हो गया। मित्रों ने एक वार, दो वार, फिर कुछ रुककर तीसरी वार उसे चूमा। यात्री मेज़ के पास आया और उसने एक जाम खाली कर दिया। अव उसने उस छोटे-से आदमी का हाथ प्यार से अपने हाथ में लिया और सलज्ज भाव से कहने लगा—

"खैर, मैं तो कहूँगा ही मुझे आपसे साफ साफ कहना चाहिए और मैं वैसा कहूँगा भी क्योकि आप मुझे वहुत अच्छे लगते हैं आप उसे प्रेम करते है। मैंने हमेशा यही समझा—है न यही वात?"

"हाँ," मुस्कान में और अधिक कोमलता लाते हुए उसके दोस्त ने सिर हिलाया।

"और शायद "

"हुजूर, मुझे वत्तियाँ वुझा देने का हुक्म हुआ है," ऊँघते हुए वैरे ने कहा। वह वातचीत का अंतिम अंश सुनता जा रहा था और आश्चर्य कर रहा था कि ये भले मानस एक ही वात को वार वार दुहराते क्यों है।

"विल किसे दूँ? हुजूर, आपको?" उसने लम्वे व्यक्ति को सवोधित करते हुए कहा। वह जानता था कि इस सम्वन्ध में किससे वात करनी चाहिए।

"मुझे," उस लम्वे व्यक्ति ने कहा, "कितना हुआ?"

"छब्बीस रुवल।"

लम्बे व्यक्ति ने एक क्षण सोचा और बिना कुछ कहे-सुने बिल जेब में रख लिया।

बाकी दोनो बाते करते रहे।

"नमस्ते! कितने लाजवाब तुम हो!" सीधे-सादे छोटे आदमी ने मृदुता से कहा।

दोनो की आँखो में आँसू छलछला आये। वे चलते चलते बरामदे में आ चुके थे।

"हाँ, बहरहाल क्या आप शेवल्ये का बिल अदा कर देंगे और फिर मुझे लिखकर उसकी सूचना देंगे?" यात्री ने लम्बे व्यक्ति की ओर मुडते हुए सहज भाव से कहा।

"ठीक है, ठीक है," दस्ताने उतारते हुए लम्बा व्यक्ति बोला। "मै तुमसे कितनी ईर्ष्या करता हूँ!" अप्रत्याशित उसके मुँह से निकला। अब दोनो बरामदे में पहुँच चुके थे।

यात्री अपनी स्लेज में बैठ गया। उसने भेड की खाल अपने चारो ओर लपेट ली और कहा, "हाँ, आ जाओ!" और उस व्यक्ति के लिए, जिसने कहा था कि मैं तुमसे ईर्ष्या करता हूँ, जगह करने की गरज़ से वह एक ओर खिसक गया। उसकी आवाज़ लडखडा रही थी।

"नमस्कार, मित्या! मुझे आशा है कि ईश्वर की कृपा से तुम " लम्बे व्यक्ति ने कहा। परन्तु उसकी एक ही इच्छा थी कि दूसरा शीघ्र ही वहाँ से चला जाय और इसीलिए वह अपनी बात पूरी न कर सका।

एक क्षण के लिए वे मौन हो गये। तब एक ने फिर कहा "नमस्ते" और एक आवाज़ सुनाई दी "हाँ, ठीक है।" और, कोचवान ने घोडे को चाबुक लगाया।

"येलिज़ार, चले आओ!" एक दोस्त ने आवाज़ लगाई। टिक टिक करते तथा लगाम खीचते हुए कोचवान और स्लेज चलानेवाले हवा से बाते करने लगे। पहिये बर्फ पर चर्र-मर्र करते लुढ्क रहे थे।

"वह ओलेनिन कितना अच्छा है वह," एक दोस्त ने कहा।

"हुँह क्या वेहूदी वात! काकेशिया जाना वह भी कैडेट वनकर! मैं तो किराये पर भी न जाऊँ! क्या कल तुम क्लव में खाना खाओगे?"

"हाँ।"

और वे अपने अपने रास्ते चल दिये।

यात्री को गर्मी लग रही थी। उसके फर अन्दर से गरमा रहे थे। वह स्लेज पर नीचे उतरकर वैठ गया। उसने अपना कोट खोल दिया। तीनो घोडे तेज़ी से वढ रहे थे, कभी एक अधेरी गली से निकलकर दूसरी में घुस जाते और कभी मकानो को पार करते हुए सर्र से आगे निकल जाते। ओलेनिन को ऐसा लगा कि लम्वी यात्रा को जानेवाले यात्री ही इन गलियो से होकर जाते हैं। उसके चारो ओर सव कुछ धूमिल, नीरस और निर्जीव था, परन्तु उसकी आत्मा स्मृतियो, प्रेमाख्यानो, पश्चात्तापो और रोके हुए अश्रुओ की सुखद अनुभूतियो से ओत-प्रोत थी।

२

"मै उनपर मुग्ध हूँ, वहुत मुग्ध! कितने अच्छे हैं वे दोस्त कितने खुशदिल!" वार वार वह यही कहता जा रहा था और चाहता था कि वह आँसुओ में घुल जाय! परन्तु वह ऐसा क्यो चाहता था? वे अच्छे दोस्त कौन थे जिनपर वह इतना मुग्ध था, यह वह स्वय न जानता था। कभी कभी वह किसी मकान की तरफ़ देखता और आश्चर्य करने लगता कि इसकी वनावट इतनी अद्भुत क्यो है? कभी उसे इसी वात पर ताज्जुव होता था कि कोचवान और वन्यूशा, जो उससे इतने भिन्न हैं, पास पास क्यो वैठे हैं, और जमी हुई वर्फ़ पर गाडी के चलने से अगल-वगल वाले घोडो के इधर-उधर हिलने-डुलने के कारण मुझे, कोचवान तथा वन्यूशा

को धक्के क्यो लगते हैं? उसने फिर दोहराया "कितने अच्छे! सुन्दर!" फिर उसके मुख से निकला–"बहुत खूब! वाह!" पर साथ ही उसे आश्चर्य भी हुआ कि वह यह सब क्या ऊलजलूल बक रहा है। उसने मन ही मन प्रश्न किया, "क्या मैंने अधिक पी ली है?" उसने शराब की कुछ बोतलें गले में उतारी ज़रूर थी, परन्तु यह अकेली शराब ही न थी जिसका ओलेनिन पर असर हो रहा था। चलते समय कहे गये मित्रता के, आत्मीयता के, शिष्टाचार के तथा सहज आवेग के सभी शब्द उसे याद आने लगे। उसे याद आ रहा था कि उस समय मैंने किन किन से हाथ मिलाया था, किसने मुझे किस दृष्टि से देखा था और वे मौन क्षण कितनी व्यग्रता से बीते थे। उसके कान में "नमस्कार मित्या," ये शब्द अब भी बराबर गूंज रहे थे। उसे याद आ रहा था कि मैंने ये शब्द उस समय सुने थे जब मैं स्लेज में बैठ चुका था। उसे याद आ रहा था कि मैंने स्वय कितनी स्पष्टवादिता दिखाई थी। और इन सब बातो का उसके लिए विशेष महत्व था। ऐसा लगता था कि न केवल मित्र और सम्बन्धी, न केवल वे लोग जो उसके प्रति उदासीन रहते थे परन्तु वे लोग भी उसपर मुग्ध थे जो उसे नही चाहते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि उसके प्रस्थान करने से पूर्व लोगो ने उसे क्षमा कर दिया है जैसे कि साधारणतया लोग उस व्यक्ति को क्षमा करते हैं जिसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया हो या जिसकी मृत्यु निकट हो।

"शायद मैं काकेशिया से न लौटूं," उसने सोचा। और उसे लगा कि वह अपने मित्रो को प्यार करता है, और उनके अलावा किसी एक और व्यक्ति को भी। उसे स्वय अपने पर खेद हो रहा था। परन्तु यह उसका अपने मित्रो के प्रति वह प्रेम न था जिसने उसके हृदय को इतना उद्वेलित कर दिया था कि वह उन अनर्गल शब्दो पर भी क़ाबू न

पा सका जो स्वत उसके मुँह तक आ चुके थे। और न यह किसी स्त्री
ही प्यार था (उसने अभी तक किसी स्त्री से प्रेम न किया था) जिस
कारण उसकी मानसिक स्थिति ही ऐसी हो गयी थी। वह स्वत अपने
प्यार करता था ऐसा प्यार जिसमें आशा थी, जिसमें उष्णता थी।
नन्हा-सा प्यार जो उसकी आत्मा के समस्त उदात्त रूप के लिए था (औ
उस समय उसे जान पडा कि उसमें उदात्त रूप के अतिरिक्त और कु
नही है) उसे विवश कर रहा था कि वह रुदन और अनर्गल प्रलाप कर उठे

ओलेनिन एक नवयुवक था। उसने कभी विश्वविद्यालय की पढा
पूरी नहीं की, कहीं नौकरी नही की (हाँ, किसी सरकारी या ऐसे
किसी दफ्तर में नाममात्र के लिए कभी किसी जगह पर जरूर रहा था)। उस
अपनी आधी जायदाद खुराफातो में ही फूंक दी थी। इस समय वह चौबी
वर्ष का हो चुका था और अभी तक न तो किसी काम पर लगा था औ
न जीविका का ही कोई सहारा ढूंढ सका था। वह एक ऐसा आदमी था जि
मास्को के समाज मे छैला कहा जाता है।

अट्ठारह वर्ष की अवस्था में वह स्वच्छन्द हो गया ठीक उसी प्रकार जै
१८४०-५० में वे सभ्रान्त रूसी युवक हो जाते थे जिनकी बाल्यावस्था में उन
माता-पिता इस ससार से कूच कर जाते थे। अब उसके लिए न को
शारीरिक बन्धन था, न नैतिक। वह इच्छानुसार जो चाहता कर सकत
था। न उसे किसी की जरूरत थी और न वह किसी से बँधा ही था।
उसके लिए परिवार था, न पितृभूमि, न धर्म, न आवश्यकताएँ। न व
किसी में विश्वास करता और न किसी को स्वीकार करता। परन्तु व
नीरस और बुझा बुझा-सा रहनेवाला नवयुवक न था। वह बकवादी तो
था, हाँ, आसानी से मान जानेवाला व्यक्ति जरूर था। वह इस नतीज
पर पहुँचा था कि दुनिया में प्रेम नाम की कोई चीज नही। फिर भी किस
युवा और आकर्षक स्त्री को सामने देख कर उसका हृदय उसके वश में

रहता। बहुत पहले से ही उसे यह विश्वास होने लगा था कि इज्जत और हैसियत सब वाहियात है। फिर भी जब एक नृत्य-समारोह के अवसर पर राजकुमार सेर्जियस उसके पास आया और उसने उससे शिष्टता से बाते की उस समय ओलेनिन बडा प्रसन्न हुआ। वह अपनी अन्त.प्रेरणा के समक्ष तभी झुकता जब उसकी स्वच्छन्दता में बाधा न पडती।

जब कभी वह किसी बात से प्रभावित होता और उसे यह पता चल जाता कि इसके परिणामस्वरूप उसे परिश्रम और सघर्ष—जीवन से साधारण-सा सघर्ष भी—करना होगा तो स्वाभाविक प्रवृत्तिवश वह शीघ्र ही इस बात का प्रयत्न करता कि जिस क्रियाशीलता की ओर वह बढ रहा है अथवा जो अप्रिय अनुभूति उसे हो रही है उससे मुक्त होकर वह पुन अपनी स्वच्छन्दता प्राप्त करे। इस प्रकार उसने सामाजिक जीवन, लोक-सेवा, कृषि, सगीत, यहाँ तक कि स्त्रियो से प्रेम करने के उस क्षेत्र में भी प्रयोग किये जिसमें स्वय उसका अपना विश्वास न था। सगीत के लिए तो एक बार उसने अपना सारा जीवन ही लगा देने की ठान ली थी। वह सोचता रहा, विचारता रहा—मैं युवावस्था की उस अद्भुत शक्ति का उपयोग कैसे करूँ जो मनुष्य को जीवन में केवल एक बार प्राप्त होती है, उस शक्ति का नही जिसका सम्बन्ध मनुष्य के बौद्धिक विकास, उसकी अनुभूतियो अथवा उसके शिक्षण से होता है अपितु उस सहज आवेग का जिससे मनुष्य अपना, अथवा—जैसा उसे प्रतीत हो रहा था—अखिल ब्रह्माड का रूप इच्छानुसार निर्मित कर सकता है चाहे वह कला के क्षेत्र में हो, या विज्ञान के, नारी-प्रेम के क्षेत्र में हो या व्यवहारिकता के। यह ठीक है कि कुछ लोगो में इस प्रेरक-शक्ति का पूर्णत अभाव रहता है और जब वे जीवन में प्रवेश करते हैं उस समय अपना सिर उसी जुए में डाल देते हैं जिसे वे पहले-पहल देखते हैं और फिर पूरी ईमानदारी के साथ अपने शेष जीवन में उसी के साथ खटते रहते हैं।

परन्तु ओलेनिन को इस बात का पूर्ण ज्ञान था कि मुझमें सर्वप्रभुता सम्पन्न 'यौवन-देवता' विद्यमान है, वह क्षमता है जिससे सम्पूर्ण अस्तित्व को आदर्श या स्फूर्ति में परिवर्तित किया जा सकता है, इच्छा और क्रिया की सम्पूर्ण शक्ति है, वह सामर्थ्य है जिसके बल पर क्यो और कहाँ का विचार किये बिना गहरे पाताल तक में प्रवेश किया जा सकता है। वह इनसे अनुप्राणित होता था, उसे इनपर गर्व होता था और इनके कारण अज्ञात रूप से उसे प्रसन्नता होती थी। उस समय तक उसने स्वय अपने को प्रेम किया था। वह अपने से प्रेम करने के लिए विवश था क्योकि उसे विश्वास था कि वह अन्य किसी चीज़ का नही एकमात्र श्रेष्ठता का प्रतीक है। उसे निर्भ्रान्त होने का कभी कोई अवसर प्राप्त नही हुआ था। मास्को छोडने पर वह उस युवक जैसा प्रसन्न था, जो पिछली त्रुटियो के प्रति जागरूक रहते हुए अपने से कहा करता है "वह यथार्थता न थी," जो कुछ पहले हो चुका है वह केवल आकस्मिक एव महत्त्वहीन था। उस समय तक वास्तव में उसने जीवित रहने का कोई प्रयत्न नही किया था। परन्तु, अब, मास्को से प्रस्थान कर चुकने के पश्चात् एक नया जीवन आरम्भ हो रहा था—ऐसा जीवन जिसमें पिछली त्रुटियाँ न होगी, पश्चात्ताप की भावनाएँ न होगी और हर्षोल्लास को छोडकर निश्चय ही और कुछ न होगा।

लम्बे सफर में सदा यही होता है—जब तक पहले कुछ स्टेशन पार नहीं हो जाते तब तक ध्यान केवल उसी स्थान पर रहता है जिसे यात्री पहले-पहल छोडता है, परन्तु मार्ग पर पहला प्रभात होते ही वह गन्तव्य स्थान के सम्बन्ध में विचार करने लगता है और फिर हवाई क़िले बनाना शुरू कर देता है। यही बात ओलेनिन के साथ हुई।

नगर पीछे छूट जाने के पश्चात् उसने बर्फ से ढके मैदानो की ओर देखा और उनके बीच अकेले अपने को ही पाकर उसे असीम उल्लास की अनुभूति हुई। अपने को कोट में समेटते हुए वह स्लेज-तल पर शान्त पड़ा

रहा और न जाने किस समय उसकी आँख लग गई। मित्रो से बिछुडने का उसे वडा रज था। मास्को में विताये हुए आखिरी जाडे की स्मृतियाँ और अस्पष्ट विचारो तथा पश्चात्तापो से परिपूर्ण विगत काल के धुँधले चित्र उसकी कल्पना के समक्ष निर्बाध रूप से साकार हो उठे थे।

उसे अपने उस मित्र की याद आई जो उसे विदा करने आया था और याद आई उस लडकी के साथ अपने सम्बन्धो की जिसके वारे में दोस्तो के बीच इतनी चर्चा हुई थी। लडकी धनी थी। "वह मुझसे प्रेम करती है – यह जानते हुए वह उसे कैसे प्यार कर सकता है?" उसने विचार किया और कुत्सित सन्देहो से उसका मन भर गया। "अगर सोचा जाय तो पता लगेगा कि मनुष्य में वेईमानी ही वहुत है।" तव उसके सामने सहसा यह प्रश्न खडा हो गया कि "सचमुच वात क्या है कि मैंने कभी प्यार नही किया? सभी कहते हैं कि मैंने प्यार नही किया। कही ऐसा तो नही कि मै सनकी हूँ?" और उसकी सारी लालसाएँ उसकी कल्पना के सामने साकार होने लगी। उसे याद आया कि मैंने समाज में कैसे प्रवेश किया था। उसे अपने मित्र की उस वहन की भी याद आई जिसके साथ कई कई शामें उसने मेज़ पर गुज़ारी थी। उसकी कल्पना के समक्ष कढाई करती हुई उसकी नाज़ुक अगुलियाँ और उसके सुन्दर मुखडे का वह निचला भाग नाच रहा था जो उस दिन मेज़ पर रखे हुए लैम्प की रोशनी में दमक उठा था। उसे उसके साथ अपनी लम्वी लम्वी वाते याद आईं जो 'लकडी की अग्नि शिखा को अधिक से अधिक देर तक सुरक्षित रखने' के खेल की भाँति बढती जाती थी। और यह भी याद आया कि उस समय मैं कितना विचित्र था, कितना विवश था और इसके कारण मेरे अन्तस् में विद्रोह की कितनी तीव्रता थी। कोई आवाज़ उसके कानो में कह जाती "वह यह नही है, वह यह नहीं है" और वही हुआ। उसे एक नृत्य-समारोह की याद आई जिसमें उसने सुन्दरी द के साथ नृत्य किया था। "उस रात मैंने कितना प्यार किया

था और मैं कितना निहाल था। दूसरे दिन प्रातःकाल जब मैं जागा और मैंने अपने को फिर स्वतंत्र पाया उस समय मुझे कितनी पीडा और कितना क्लेश हुआ था। प्रेम आकर मेरे हाथ-पैर क्यो नही बाँध देता?" उसने विचार किया। "नही, प्रेम जैसी कोई चीज़ नही। मेरी पडोसिन मुझसे भी कहा करती थी, जैसा कि उसने दुब्रोविन और मार्शल मे कहा था, कि उसे सितारो से प्रेम है। क्या यह भी प्रेम नही है।"

और उसे अपनी खेतीबारी तथा गाँव में किये गये अन्य कार्यों की याद आ रही थी। इन स्मृतियो मे भी ऐसी कोई बात न थी जिसपर मन रम सकता। "क्या मेरे प्रस्थान के बारे मे वे लोग बहुत कुछ कहेगे?" उसे ख्याल आया। परन्तु ये 'वे लोग' हैं कौन वह न समझ सका। बाद में उसे एक ख्याल और आया जिसने उसे चौंका दिया और अट-सट बकने को विवश कर दिया। उसे दर्जी म० कपेल की याद आई, जिसके अभी भी ६७८ रूबल देने बाकी थे और उसे वे शब्द भी याद आये जिनमें उसने दर्जी से अगले वर्ष तक इन्तज़ार करने की प्रार्थना की थी। इन शब्दो से दर्जी के चेहरे पर परेशानी और निराशा दीख पडने लगी थी। यह असह्य विचार दिमाग़ से निकाल देने के लिए उसने "हे भगवान, हे भगवान" ये शब्द दुहरा दिए। "और इन सबके होते हुए भी वह मुझे प्यार करती थी," उसे उस लडकी की याद आई जिसके बारे में उन्होने विदाई-भोज के समय बातचीत की थी। "हाँ, यदि मैंने उससे विवाह कर लिया होता तो मैं किसी का कर्ज़दार न रह गया होता। इस समय मुझे वसील्येव का ऋण चुकाना है।" फिर, उसे वह रात याद आई जब उसने क्लब में (उस लडकी को छोडने के तुरन्त बाद) वसील्येव के साथ जुआ खेला था। साथ ही उसे यह भी याद आया कि उसने उससे एक बार और खेलने के लिए घिघियाते हुए कहा था और वसील्येव ने बडी बेरहमी के साथ इनकार किया था। "एक साल तक हाथ रोककर खर्च करूँगा और सारे कर्ज़े निपट

जायेंगे। शैतानो को सब कुछ मिल जायेगा " परन्तु इस आश्वासन के होते हुए भी, उसने फिर हिसाव लगाना शुरू कर दिया कि उसे किसका किसका देना है, कितना देना है, कर्ज़ किन तारीखो पर लिये गये थे और वह कब तक उन्हे चुका देने की आशा करता है। "और मुझे कुछ मोरेल का और कुछ शेवल्ये का भी तो देना है," उसने उस रात की याद करते हुए विचार किया, जब उसपर इतना बडा कर्ज़ हो गया था। उस रात कुछ जिप्सियो के साथ पीने की होड लगी थी और इसका प्रवन्ध पीटर्सबर्ग के कुछ लोगो, सम्राट के अगरक्षक साश्का ब , एक छट हुए बूढे घमडी और राजकुमार द ने किया था। "क्या बात है कि वे भले आदमी इतने आत्म-सतुष्ट है?" उसने विचार किया, "और उन्हे ऐसी कूट मण्डली वनाने का क्या अधिकार, जिसमें वे समझते हैं, कि दूसरो को शामिल करने के लिए उनकी चाटुकारिता की आवश्यकता है? क्या ऐसा इसलिए कि वे सम्राट के अगरक्षक है? ओफ! हैरानी होती है कि वे दूसरो को बेवकूफ और गधे समझते है। कुछ भी हो मैंने उन्हें वता दिया है कि मुझे उनकी आत्मीयता से कोई सरोकार नही। यह जरूर है कि जव मेरे स्टेट मैनेजर को पता चलेगा कि सम्राट के कर्नल तथा अगरक्षक साश्का ब से मेरी दोस्ती है तो उसे हैरत होगी। हाँ, और उस रात सवसे अधिक मैंने ही पी थी और उन जिप्सियो को एक नया गाना सिखाया था और प्रत्येक व्यक्ति ने उसे सुना था। मैंने कितनी ही वेवकूफियाँ क्यो न की हो फिर भी मैं एक बहुत अच्छा आदमी हूँ।"

प्रात काल तक ओलेनिन तीसरे पडाव पर पहुँच गया था। उसने चाय पी और अपनी गठरियाँ और सन्दूक उठाने-धरने में वन्यूशा की मदद की। वह अपने सामान के वीच वैठ गया, स्वस्थचित्त और शान्त। उसे मालूम था कि उसकी चीज़ें कहाँ कहाँ हैं, उसके पास कितना रुपया है और कहाँ

रखा है, उसका पासपोर्ट और घोडे तथा सीमा-कर सम्बन्धी काग़ज़ात कहाँ है। और जब उसे इत्मीनान हो गया कि सारी चीज़ें कायदे से रखी है तो वह खिल उठा और उसकी लम्बी यात्रा मनोरंजन के लिए किया जानेवाला पर्यटन मात्र बनकर रह गई।

पूरे सुबह और दोपहर तक वह यही हिसाब लगाता रहा कि मैं कितने मील चल चुका हूँ, अगला पडाव कितने मील बाद पडेगा, पहला नगर कितनी दूर है, जिस स्थान पर मैं मध्याह्न का खाना खाऊँगा या अपराह्न की चाय पिऊँगा वह यहाँ से कितने मील है, स्तावरोपोल कितनी दूर है, और इस समय तक मैं कुल यात्रा का कौनसा भाग चल चुका हूँ। उसने यह भी हिसाब लगा लिया कि मेरे पास कितना रुपया है, कितना रह जायेगा, सारे कर्ज़ों को चुकाने के लिए कितने रुपये की ज़रूरत होगी और आमदनी का कौनसा भाग मैं प्रति मास खर्च करूँगा। चाय के पश्चात् शाम के समय उसने हिसाब लगाया कि स्तावरोपोल तक पहुँचने के लिए मुझे कुल यात्रा का सात बटे ग्यारह भाग और चलना होगा, अपने कर्ज़ों को पूरा करने के लिए सात महीनो तक हाथ रोककर खर्च करना होगा और इसके लिए अपनी कुल सम्पत्ति के आठवे भाग की ज़रूरत होगी। इस प्रकार अपने दिमाग को कुछ शान्त कर लेने के पश्चात् उसने फिर अपना कोट लपेटा और स्लेज में पडकर ऊँघने लगा। अब उसकी कल्पना उसे भविष्य की ओर ले गई—काकेशिया में। उसके भविष्य के स्वप्न अमलत-बेक जैसे नायको, चेरकेसियन महिलाओं, पर्वतो, चट्टानो, भयानक तरगो और विपत्तियो मे टकराने लगे। उसके लिए ये सब चीज़ें अभी अस्पष्ट और धूमिल थी परन्तु यश की चाह और मृत्यु के खतरे ने उसमें भविष्य के लिए एक उत्कट आकाक्षा पैदा कर दी थी। अब वह अपने अभूतपूर्व साहस और सबको चकित कर देनेवाली शक्ति से अनगिनत पर्वतीयो को या तो मौत के घाट

उतार देता है या उन्हे अपने अधिकार में कर लेता है, अव वह खुद एक पर्वतीय है और रूसियो के विरुद्ध अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए लड रहा है। जैसे ही उसकी कल्पना के आगे कोई निश्चित चित्र आता कि उसे मास्को के चिरपरिचित चेहरे दिखाई देने लगते। साश्का व रूसियो या पर्वतीयो के साथ उसके विरुद्ध लड रहा है। स्वय दर्जी म० कपेल ने विचित्र ढग से विजेता की सफलताओ में हाथ वँटाया है। और जव इन सव विचारो के साथ उसे यह याद आता कि पहले उसने कितनी वार अपमान सहे है, कितनी वार कमजोरियाँ दिखाई है, कितनी वार गलतियाँ की है तो ये स्मृतियाँ भी उसे दुखद न लगती। यह स्पष्ट था कि वहाँ पर्वतो, झरनो, सुन्दर चेरकेसियनो और खतरो के बीच ऐसी गलतियाँ न दुहराई जायेंगी। एक वार अपने सामने गलतियाँ स्वीकार कर लेने के बाद फिर कुछ नही रह जाता। परन्तु इस युवक के भविष्य-स्वप्नो में एक कल्पना और छाई हुई थी जो मधुरतम थी—स्त्री की कल्पना। और वहाँ, पर्वतो के बीच, वह स्त्री एक चेरकेसियन गुलाम के रूप में दिखाई दी—वह सुन्दर थी और अपने लम्वे घुघराले वालो तथा सलज्ज चितवन में और भी आकर्पक लग रही थी। अव उसकी कल्पना के आगे पर्वतो के वीच एक एकाकी झोपडी थी जहाँ द्वार पर खडी वह उसकी प्रतीक्षा करती है और वह स्वय थका-माँदा, धूल-धूसरित, रक्त-रजित, यश रजित उसके पास आता है। उसके चुम्वनो के अभिज्ञान के साथ उसके कन्धे, उसकी मधुर वोली और उसकी विनयशीलता सभी कुछ तो वह जानता है—वह मोहक तो है परन्तु अशिक्षित, जगली और रूखी है। जाडे की लम्वी लम्वी शामो में वह उसे पढाने वैठता है। उसमें वुद्धि है, प्रतिभा है और वह अपने जरूरत भर का सारा ज्ञान शीघ्र ही प्राप्त कर लेती है। क्यो नही? वह वडी आसानी से विदेशी भाषाएँ सीख सकती है, फ्रेंच के वडे वडे ग्रन्थ पढ और समझ सकती है, उदाहरण के लिए "नोत्र दाम दे पारिस" पढकर उसे सच्चा आनन्द

मिलेगा इसमें सन्देह नही। वह फ्रेंच भी बोल सकती है। ड्राइंग रूम में उसकी सहज शान का क्या कहना! ऊँचे से ऊँचे समाज की महिला भी उसका मुकाबला नही कर सकती। वह गा सकती है—आसानी से, मनमोहक गान, करुण स्वरो में "अरे, यह सब क्या बेवकूफी है!" उसने मन ही मन कहा। परन्तु यहाँ अब एक पडाव आ चुका था और उसे दूसरी स्लेज बदलनी थी, और बख्शीशें भी देनी थी। परन्तु फिर उसकी कल्पना उसी 'बेवकूफी' की ओर दौडी जिसे वह अभी अभी छोड चुका था। और फिर चेरकेसियन सुन्दरियाँ, यश की प्राप्ति, रूस की वापसी, अगरक्षक के रूप में उसकी नियुक्ति और एक अति सुन्दर पत्नी उसकी कल्पना के समक्ष साकार हो उठी। "परन्तु प्रेम के आगे किस चीज़ की हस्ती!" उसने मन ही मन कहा, "नेकनामी! सब बेकार की बात है। परन्तु ६७८ रूबल? और जीते हुए प्रदेश मुझे उससे भी अधिक धन देंगे जिसकी मुझे सारी ज़िन्दगी ज़रूरत पड सकती है? हाँ, सब का सब धन स्वय मैं ही रख लूं यह ठीक न होगा। इसे बाँटना भी तो चाहिए। परन्तु किसे? हाँ, ६७८ रूबल कपेल को। और फिर बाद में देखा जायेगा" अस्पष्ट धुंधले चित्र उसके दिमाग में चक्कर काट रहे हैं और उसकी मदभरी मीठी नीद या तो वन्यूशा की आवाज़ से टटती है या स्लेज के रुकने से। शायद ही उसे पता लगा हो, परन्तु उसने स्लेज बदली और फिर राह पकडी।

अगले दिन प्रात काल मे फिर वही चक्र शुरु हुआ—पहले जैसे पडाव, चाय पीना, दौडते हुए घोडो की काठी, वन्यूशा से वही थोडी-सी बातचीत, वैसे ही अस्पष्ट स्वप्न और झपकियाँ और रात्रि में थकावट के बाद खर्राटो वाली पहली जैसी नीद।

३

ओलेनिन मध्य रूस से जितनी ही दूर आगे बढ़ता गया उसकी स्मृतियाँ उतनी ही पीछे छूटती गईं और काकेशिया के जितने ही समीप पहुँचता गया उसका हृदय उतना ही हल्का होता गया। "मैं हमेशा हमेशा के लिए दूर रहूँगा और समाज में अपना मुँह दिखाने कभी न लौटूँगा," यह विचार भी उसके मस्तिष्क में पैदा हो जाता, "जिन व्यक्तियो को म यहाँ देख रहा हूँ वे सच्चे अर्थ में व्यक्ति नही हैं। इनमें से कोई मुझे नही जानता और कोई भी मास्को के उस समाज में नही पहुँच सकता जहाँ मैं था। मेरी पिछली ज़िन्दगी के वारे में किसी को कुछ पता नही चल सकता। और उस समाज का कोई भी प्राणी कभी यह न जान सकेगा कि इन लोगो के बीच रहता हुआ मै क्या कर रहा हूँ।" सडको पर वह जिन रूखे व्यक्तियो से मिलता उनके वीच उसे यह अनुभूति होती मानो वह अपने सम्पूर्ण विगत जीवन से नाता तोड चुका है। इन व्यक्तियो को वह उस अर्थ में व्यक्ति नही समझता था जिसमें उसके मास्को के परिचित समझे जाते थे। यह एक नई अनुभूति थी।

जो जितना ही रुक्ष होता और उसमें सभ्यता के चिन्ह जितने ही कम होते, वह अपने को उतना ही स्वतन्त्र अनुभव करता। स्तावरोपोल से होकर उसे जाना था। यहाँ ज़रूर उसे कुछ उलझन हुई थी। यहाँ के नाम-पटो को, जिनमें से कुछ फ्रेंच भाषा में भी थे, गाडियो में आने-जानेवाली स्त्रियो को, वाज़ारो में खडी गाडियो, और लबादा पहने तथा हैट लगाकर यात्रियो को घूरनेवाले एक भले आदमी को देखकर वह घवडा-सा गया था। "शायद ये लोग मेरे कुछ परिचितो को जानते है," उसने विचार किया, और एक वार फिर उसकी कल्पना के आगे क्लव, दर्ज़ी, ताश, समाज सभी कुछ घूमने लगे। परन्तु स्तावरोपोल

निकल जाने के पश्चात् फिर सव कुछ ठीक हो गया। यह वन्य स्थान था, सुन्दर था और यहाँ की प्रकृति में युद्धप्रियता प्रतिविम्वित हो रही थी। ओलेनिन को अधिक से अधिक प्रसन्नता होने लगी। सभी कज्ज़ाक, गाडीवान और पडाव-रक्षक उसे सीधे-सादे लगे, जिनके साथ वह हँसी-मज़ाक़ कर सकता था और विना यह सोच-विचार के कि वे किस श्रेणी के है उनसे खुलकर और स्वतन्त्रतापूर्वक बातचीत कर सकता था। वे सभी इन्सान थे जिन्हे ओलेनिन चाहता था, प्यार करता था। और, वे सव भी उसे दोस्त की तरह मानते और उसका आदर करते थे।

दोन कज्ज़ाको के प्रान्त में उसकी स्लेज वदल दी गई थी और अव वह पहियोवाली एक गाडी में सफर कर रहा था। स्तावरोपोल के वाद इतनी अधिक गर्मी पडने लगी कि ओलेनिन को अपना भारी कोट उतारकर एक ओर रख देना पडा। वसन्त का आगमन हो चुका था और यह ओलेनिन के लिए एक मादक अनुभूति थी। रात में उसे कज्ज़ाक गाँवो से वाहर नही जाने दिया गया था क्योकि लोगो का कहना था कि शाम को यात्रा करना खतरे से खाली नही है। वन्यूशा की व्याकुलता वढने लगी और दोनो ने त्रोइका-गाडी* में वैठे वैठे अपनी भरी हुई वन्दूक सम्भाल ली। ओलेनिन को और भी प्रसन्नता हुई। एक पडाव पर पोस्टमास्टर ने उसे वताया कि हाल ही में राजमार्ग पर एक निर्मम हत्या हुई है। अव उन्हे सशस्त्र लोग मिलने लगे थे। "हाँ, अव यह आया!" ओलेनिन ने विचार किया और वह उन हिमावृत्त पर्वतशिखरो को देखने की आस लगाये रहा जिनका उल्लेख वह पीछे कई वार सुन चुका था। एक दिन सायकाल नगई गाडीवान ने, वादलो मे ढके हुए पहाडो की ओर अपने चावुक से सकेत भी किया। ओलेनिन ने उत्सुकतापूर्वक उनकी ओर देखा—वातावरण शान्त था और पर्वत प्राय

---

* तीन घोडोवाली एक गाडी रूस में 'त्रोइका' कहलाती है।

बादलो के पीछे छिपे थे। ओलेनिन ने कुछ भूरे-सफेद तथा रोयेंदार-जैसे दृश्य देखे थे परन्तु कोशिश करने पर भी वह पर्वतो में ऐसी कोई सुरम्य और आकर्षक छटा न देख सका जिसके बारे में उसने प्राय पढा और सुना था। उसे पर्वत तथा बादल दोनो एक जैसे ही लग रहे थे और वह सोच रहा था कि हिम शिखरो का विशिष्ट सौन्दर्य, जिसके बारे में उसे कितनी ही बार बताया गया था, बाख का सगीत या नारी के प्रति प्रेम जैसा ही कोई काल्पनिक आविष्कार है। और उसे न तो बाख के सगीत में ही कोई विश्वास था न नारी के प्रति प्रेम में ही। अतएव उसने पर्वतो की ओर देखना छोड दिया।

दूसरे दिन प्रात काल जब भीनी भीनी बयार की सुरभि से त्रोइका-गाडी में उसकी नीद टूटी तो उसने दाहिनी ओर एक उडती हुई नजर डाली। प्रभात अपना सौन्दर्य बिखेर चुका था। सहसा उसने आँखें ऊपर उठाई और लगभग बीस कदम की दूरी पर उसे भूधराकार आकृतियाँ दिखाई पडी। ऐसा प्रतीत होता कि सुदूर आकाश से उनके शिखरो की आकर्षक रूपरेखाएँ अपना सम्पूर्ण सौन्दर्य अपने में समेटे पृथ्वी पर उतर रही है। जब उसने अपने और उन आकृतियो तथा आकाश के बीच की दूरी पर ध्यान दिया और पर्वतो की विशालता पर एक निगाह डाली तथा उस अपूर्व सौन्दर्य की निस्सीमता का अनुभव किया तो उसे यह सोचकर भय होने लगा कि यह इन्द्रजाल है, स्वप्न है। उसने आँखें मली और एक बार सारे शरीर को झटका, यह देखने के लिए कि कही वह सो तो नही रहा है। परन्तु वे पर्वत ही थे अपनी जगह पर अटल, अविचल, स्थिर।

"क्या है वह? यह क्या है?" उसने गाडीवान से पूछा।

"क्यो? पहाड ही तो है," नगई गाडीवान ने अन्यमनस्कता से जवाब दिया।

"मैं तो इन्हे वडी देर से देख रहा हूँ," वन्यूशा ने कहा, "क्या वे सुन्दर नही? घर पर तो कोई विश्वास भी न करेगा।"

ओइका-गाडी चिकनी सडक पर सर्राटे से चली जा रही थी और इसी कारण पहाड भी क्षितिज से सटकर भागते से दिखाई पड रहे थे। पहाडो के गुलावी शृग उदय होते हुए सूर्य के प्रकाश में जगमगा रहे थे। पहले-पहल ओलेनिन पहाडो को देखकर दग रह गया परन्तु वाद में उसे वडी प्रसन्नता हुई। वह हिमावृत शृखलाओ की ओर वरावर टकटकी लगाये देखता रहा। शृखलाएँ भी अपनी सम्पूर्ण सुषमा लिये मीलो तक फैली हुई थी। उनका प्रारम्भ मैदानो से ही हो गया था। ओलेनिन देर तक इस प्राकृतिक सौन्दर्य का पान करता रहा और अन्तत उसे विश्वास हो गया कि मैं पर्वतो और शिखरो के वीच आ गया हूँ। उस क्षण से जो कुछ भी उसने देखा, जो कुछ भी उसने सोचा-विचारा और जो कुछ अनुभव किया उससे वह स्वय महान् हो गया, विराट् हो गया, पर्वतो के समकक्ष हो गया! अव उसकी मास्को की स्मृतियाँ, लज्जा और पश्चात्ताप की अनुभूतियाँ और काकेशिया के वारे में उसके तुच्छ क्षुद्र स्वप्न समाप्त हो गये और फिर उनकी कभी पुनरावृत्ति नहीं हुई। "अव उसका आरम्भ होने लगा है" ऐसा लगता था कोई पवित्रवाणी उसके कानो में पड रही है। सडक और तेरेक दूर ही से दिखाई पड रहे थे। अव कज्ज़ाक गाँव तथा वहाँ के निवासी उसके लिए केवल सुनी-सुनायी चीज़ ही न रह गये थे। उसने आकाश की ओर देखा और उसे पहाडो की याद आई। उसने अपनी तथा वन्यूशा की ओर देखा और फिर पर्वतो पर ध्यान केन्द्रित किया दो कज्ज़ाक घोडो पर निकल गये। उनकी वन्दूकें उनके कन्धो से झूल रही थी और उनके घोडो के सफेद पैर उठते, पडते, आगे वढते एक विचित्र ध्वनि पैदा कर रहे थे और पहाड! तेरेक के पीछे एक चेचेन औल मे धुआँ उठ रहा है और पहाड! उदय होता हुआ सूर्य तेरेक पर चमक रहा है, उस तेरेक पर जो नरकट की

झाडियो का आलिगन करती हुई घूम गई है और पहाड! गाँव से एक गाडी चली आ रही है और स्त्रियाँ, सुन्दरियाँ, आ-जा रही हैं और पहाड! अनेक* घोडो पर बैठे धीरे धीरे खुले मैदान में चक्कर लगा रहे हैं। और मैं हूँ कि उन्ही के बीच गाडी पर बैठा हुआ आगे बढ रहा हूँ। और, मुझे उनसे तनिक भी डर नही लगता! मेरे पास बन्दूक है, ताकत है, जवानी है और पहाड!

४

तेरेक तट के पूरे इलाके (लगभग अस्सी मील) में ग्रेबेन कज्ज़ाको के गाँव है। सभी गाँव, ग्रामक्षेत्रो अथवा वहाँ के निवासियो की दृष्टि से, प्राय एक जैसे है। तेरेक, पहाडी जातियो को कज्ज़ाको की दुनिया से अलग करती है। नदी चौडी और शान्त है, परन्तु है गन्दी और प्रवाहयुक्त। अपने निचले तथा नरकटो के झाड-झखाडो से युक्त दाहिने तट पर भूरे रग की रेत की तहे बिछाती और ढालू, कम ऊँचे, बायें तट को, जहाँ सैकडो वर्ष पुराने ओक के वृक्ष आज भी मौजूद हैं, धोती और तटवर्ती घनी झाडियो को सींचती हुई, तेरेक बहती जा रही है। दाहिने तट पर कुछ गाँव बसे हैं जहाँ चेचेन रहते हैं। वे सन्तुष्ट तो जरूर है परन्तु उनका हृदय शान्त नही है। बायें किनारे पर नदी से लगभग आधे मील दूर कज्ज़ाको के कई गाँव हैं। गाँव प्राय एक दूसरे से सात सात या आठ आठ मील की दूरी पर हैं। पुराने जमाने में इनमें से अनेक गाँव नदी-तट पर ही बसे थे। परन्तु, वर्ष प्रति वर्ष तेरेक के उत्तर की ओर बढते रहने के कारण उसके किनारे

---

* उपद्रवी चेचेन जो लूटमार करने के लिए तेरेक के रूसी तट में घुस आये थे।

बह गये। अब वहाँ पुराने गाँवो के ध्वसावशेष ही रह गये हैं। वहाँ आड़ू, बेर, जामुन और चिनार के वृक्ष तथा बनैले अगूरो की लताएँ अब भी मिलती है। इस समय वहाँ कोई नही रहता। हाँ, हिरन, भेडिये, खरगोश और तीतर आज भी इस स्थान को नही भूले है। वे इसे प्यार करते है और यही रहते है। अनेक गाँवो को मिलाती हुई एक सडक ऐसी दिखाई पडती है मानो बन्दूक़ से छूटी हुई गोली अपना रास्ता बनाती हुई आगे बढ रही हो। कभी कभी जगलो के कारण इस सडक की दिशा में कुछ व्याघात पड जाता है। सडक के किनारे कज्ज़ाको के खेमे है जहाँ चौकसी का पूरा इन्तज़ाम है। वहाँ चौकीदारो की भी कमी नही। उर्वरा वन्य भूमि की लगभग सात सौ गज़ लम्बी सकरी पट्टी पर कज्जाको का अधिकार है। इसके उत्तर में नगई अथवा मजदोक स्टेपी के रेत के टीले आरम्भ हो जाते हैं जो सुदूर उत्तर तक फैले हुए भगवान जाने कहाँ तक चले गये है—तुर्कमेन में, अस्त्राखान में या किरघीज़-कैसक स्टेपी में। तेरेक के उस पार, दक्षिण में महान चेचना पर्वत, कोचकलिकोव्स्की पहाडियाँ, काला पर्वत, फिर कोई पर्वत श्रेणी और अन्त में हिमावृत पहाड हैं जो देखे भर जा सकते हैं, परन्तु अभी तक पर्वतारोहियो ने उनपर विजय नही पाई। इस उर्वरा पट्टी में वनस्पतियो की प्रचुरता है। यही बहुत प्राचीन काल से एक ख़ूबसूरत रूसी जाति रहती आई है। ये लोग प्राचीन विश्वासकर्त्ताओ* के सम्प्रदाय के है और ग्रेबेन कज्ज़ाक कहलाते हैं।

बहुत प्राचीन काल से इन प्राचीन विश्वासकर्त्ताओ के पूर्वज रूस से भाग कर तेरेक के उस पार चेचेनो के बीच ग्रेबेन पर बस गये थे। ग्रेबेन

---

* प्राचीन विश्वासकर्त्ता उस सम्प्रदाय का एक सामान्य नाम है जो सत्रहवी शताब्दी में रूसी-ग्रीक चर्च से अलग हो गया था—अनु०

महान चेचना के वनपूर्ण पर्वतो की पहली शृखला है। चेचेनो के बीच रहते हुए कज़्ज़ाको ने उनसे वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये और पहाडी जातियो के आचरण तथा रीति-रिवाज अपनाये। परन्तु वे बराबर शुद्ध रूसी भाषा का प्रयोग करते रहे तथा अपने पुरानें विश्वासो में अटल रहे। उनके मध्य एक दन्त-कथा चली आती है जो उन्हे आज भी याद है। इसके अनुसार एक बार भयकर ज़ार इवान स्वय तेरेक आया था और उसने उनके पूर्वजो को बुलाकर नदी के इस पार की ज़मीन देकर उनसे रूस के प्रति मित्रवत् व्यवहार करने का अनुरोध किया था और यह वादा किया था कि वह न तो उनपर अपना शासन लागू करेगा और न उन्हे अपने विश्वासो को बदलने के लिए बाध्य ही करेगा। आज भी कज़्ज़ाक परिवारो का कहना है कि उनका तथा चेचेनो का नाते-रिश्ते का सम्बन्ध है। उनकी प्रमुख विशेषताएँ है—स्वच्छन्दता, विराम-सुख, लूट-खसोट और युद्ध की चाह। रूसी प्रभाव का अप्रिय पक्ष कभी निर्वाचनो में हस्तक्षेप, गिरजे के घण्टो की ज़ब्ती और उन सैनिक टुकडियो के रूप में देखने को मिल जाता है जो ग्रामक्षेत्रो में तैनात कर दी गई है अथवा वहाँ से होकर गश्त लगाती हुई गुज़रती हैं।

कज़्ज़ाक उस सैनिक की अपेक्षा, जो उसके ग्राम की सुरक्षा के लिए उसके सर पर थोपा गया है परन्तु जिसने धूम्रपान करके उसकी झोपड़ी को अपवित्र कर दिया है, उस जिगीत* पार्वतीय से कम घृणा करता है जिसने सम्भवत उसके भाई को मौत के घाट उतारा है। वह अपने शत्रु पार्वतीय की इज़्ज़त करता है परन्तु सैनिक को घृणा की दृष्टि से देखता है क्योंकि सैनिक उसकी निगाह में विदेशी है, अत्याचारी

---

* चेचेनो में 'जिगीत' कुछ उसी प्रकार के होते हैं जिस प्रकार लाल भारतीयो में 'बलवान'। परन्तु इस शब्द का रूढार्थ निपुण घुडसवार है।

है। वास्तविकता यह है कि कज्ज़ाक के दृष्टिकोण से, रूसी किसान विदेशी, जगली और घृणित जीव है जिसका एक नमना उसे उन फेरीवालो में दिखाई पडता है जो उसके गांवो में आते हैं और दूसरा वाहर से आ वसनेवाले उन हीन रूसियो में जिन्हे कज्ज़ाक घृणा से 'ऊन पीटनेवाले' कहता है। उसके लिए सुन्दर वेशभूषा का अर्थ है चेरकेसियन की वेशभूषा। सर्वोत्तम हथियार पार्वतीयो से प्राप्त होते है। इसी प्रकार सर्वोत्तम घोडे भी या तो इन्ही पार्वतीयो से मिलते हैं अथवा उनके यहाँ से चुरा लिये जाते हैं। उत्साही कज्ज़ाक हमेशा तातारी भाषा के अपने ज्ञान का प्रदर्शन करना चाहता है और जब मण्डली में शराव पीने लगता है उस समय भी अपने कज्ज़ाक दोस्तो से तातारी वोलता है।

इन सव वातो के होते हुए भी ईसाइयो का यह छोटा-सा फ़िरका पृथ्वी के एक ऐसे छोटे-से कोने में निस्सहाय पड़ा है जिसके इर्द-गिर्द अर्द्ध-वहशी मुसलमान जातियाँ और सैनिक हैं। लेकिन वह वश अपने आपको वडा समुन्नत समझता है और कज्ज़ाको को छोडकर अन्य किसी को मनुष्य ही नही मानता। वह वाकी सभी को घृणा की दृष्टि से देखता है। कज्ज़ाक अपना अधिकाश समय घेरा डालने, युद्ध करने, शिकार खेलने और मछली मारने में व्यतीत करता है। शायद ही कभी वह घर पर कोई काम करता हो। जव वह गाँव में ठहरता है उस समय केवल छुट्टी मनाता है। गाँव मे ठहरना प्राय उसके सामान्य कामो के अन्तर्गत नही आता। कज्ज़ाक अपनी शराव खुद वनाता है। पीना उसकी सामान्य आदत नही वल्कि उसके रीति-रिवाजो का एक अग है। जो नही पीता वह अपने धर्म, नियम और समाज का वहिष्कार करनेवाला समझा जाता है। कज्ज़ाक स्त्री को अपने कल्याण की शक्ति समझता है। उनके समाज में आनन्द मनाने का अधिकार केवल अविवाहिता लडकियो को ही है। विवाहिता स्त्री को जवानी से लेकर वुढापे तक अपने पति के लिए काम करना पडता है। कज्ज़ाक अपनी पत्नी

में प्राच्य् गुणो–परिश्रम और समर्पण–का विकास देखना चाहता है। शायद इसी कारण स्त्रियों का शारीरिक और मानसिक विकास होता है। और यद्यपि वे, जैसा कि पूर्वीय देशो में है, नाम मात्र को पराधीन रहती है फिर भी पाश्चात्य स्त्रियो की अपेक्षा पारिवारिक जीवन में उनका महत्व और प्रभाव कही अधिक है। सार्वजनिक जीवन से अलग तथा पुरुषो जैसे कठोर परिश्रम करने के अभ्यास के कारण परिवार में उनका अधिकार और महत्व बहुत बढा-चढा है। जो कज्ज़ाक अपरिचितो के सामने अपनी पत्नी से प्रेमपूर्वक बाते करना या बिना ज़रूरत बोलना अनुचित समझता है वही जब उसके साथ अकेला रहता है उस समय पत्नी की वरिष्ठता और श्रेष्ठता का लोहा मानता है। उसका घर, उसकी सम्पत्ति, उसका सब कुछ केवल उसकी पत्नी की मेहनत और देखरेख के कारण ही सुव्यवस्थित रहता है। यद्यपि उसका निश्चित विश्वास है कि मेहनत करना कज्ज़ाक के लिए अपमानजनक है,–मेहनत या तो नगई गुलाम के लिए उचित है अथवा स्त्री के लिए–फिर भी वह यह बात भली भाँति जानता है कि उसके काम आनेवाली प्रत्येक वस्तु, जिसे वह अपनी कह सकता है, उसी मेहनत का नतीजा है। और यह केवल स्त्री (माता या पत्नी), जिसे वह अपना गुलाम समझता है, के हाथ की बात है कि वह जब चाहे उसे उसकी अपनी चीज़ो से वंचित कर दे। इसके अतिरिक्त, पुरुषोचित बडे बडे कामो को बराबर करते रहने और सौंपी गई ज़िम्मेदारियो को निभाने के कारण ग्रेबेन महिलाओ के व्यक्तित्व में असाधारण स्वतन्त्रता और पौरुष का प्रादुर्भाव हुआ है और वे अपनी शारीरिक शक्तियो, सामान्य बुद्धि, सकल्प और दृढता का विकास कर सकी हैं। अधिकाशतया महिलाएँ पुरुषो की अपेक्षा अधिक मज़बूत, अधिक बुद्धि सम्पन्न, अधिक विकसित और अधिक सुन्दर होती है। ग्रेबेन महिला की सुन्दरता की एक विशेषता यह है कि उसमें शुद्ध चेरकेसियन प्रकार के चेहरे-मोहरे और उत्तरी महिलाओ

के गठित और मशक्त शरीर का अद्भुत समन्वय होता है। कज्ज़ाक महिलाएँ चेरकेसियन वेशभूपा धारण करती हैं–तातारी कोट, वेशमेत*, मुलायम स्लीपर–और रुसियो की भाँति अपने सिर के चारो ओर रूमाल लपेटती है। चुस्ती, सफाई, वेशभूषा का शिष्ट सौन्दर्य और झोपडो की सुव्यवस्था उनके आचार-व्यवहार का एक अग है–और उनके लिए आवश्यक है।

पुरुषो के साथ अपने सम्वन्धो में स्त्रियो को, और विशेष रूप से अविवाहिता लडकिओ को, पूरी स्वतन्त्रता है।

नवोमलिन्स्काया ग्रेवेन कज्ज़ाको का सवसे महत्वपूर्ण ग्राम है। अन्य सभी स्थानो की अपेक्षा प्राचीन ग्रेवेन जनता के रीति-रिवाज यही सवसे अधिक सुरक्षित रहे हैं। यहाँ की स्त्रियाँ अतीत काल से ही अपने सौन्दर्य के लिए काकेशिया भर में प्रख्यात रही हैं। अगूर के वाग़, फलोद्यान, तरवूज़ और लौकी की खेती, मछली मारना, शिकार, मक्का तथा मोटे अनाज की पैदावार और युद्ध से प्राप्त लूट का माल यही कज्ज़ाक की जीविका के साधन हैं। नवोमलिन्स्काया गाँव तेरेक से प्राय तीन मील पर है। गाँव तथा नदी के वीच एक घना जगल पडता है। गाँव से होकर जानेवाली सडक के एक ओर नदी और दूसरी ओर अगूर के वाग और फलोद्यान है जिनके पीछे नगई स्टेपी के रेतीले टीले दीख पडते है। गाँव के चारो ओर मिट्टी के ढेर तथा गोखरू की घनी झाडियाँ हैं। गाँव में एक ऊचे फाटक से होकर प्रवेश किया जाता है। यह फाटक दो खम्भो पर सधा है जिसके ऊपर नरकटो की घास-फूस की एक छत-सी है। इसके पास ही एक काठ की गाडी पर एक वृहदाकार तोप रखी है जिसे किसी ज़माने में कज्ज़ाक युद्ध-स्थल से लूट लाये थे। लगभग सौ साल से गोलेवारी के लिए इसका इस्तेमाल नही किया गया है। एक

---

* आस्तीनोदार एक तातारी कमीज़।

वर्दीधारी कज़्ज़ाक चौकीदार तलवार बन्दूक लेकर कभी कभी फाटक के पास खडा होता है और गुजरते हुए किसी अफसर को कभी कभी सलाम कर लेता है।

फाटक की छत के नीचे एक सफेद बोर्ड पर काले अक्षरो में लिखा हुआ है–घर २६६, पुरुष ८९७, स्त्रियाँ १०१२। कज़्ज़ाको के मकान ज़मीन से दो या तीन फुट की उचाई पर लकडी के लट्ठो पर बने हैं। उनपर नरकटो की फूस बिछी है और दीवारो के ऊपरी भाग पर कुछ नक्काशी की हुई है। यद्यपि वे नये तो नही फिर भी साफ-सुथरे और सीधे-सादे बने हैं। मकानो में भिन्न भिन्न प्रकार की ड्योढियाँ है। वे एक दूसरे से सटे हुए नही हैं। उनके चारो ओर अच्छी-खासी जगह छूटी है और वे चौडी चौडी सडको तथा गलियो के किनारे किनारे खूबसूरती से बनाये गये है। बाडो के उस ओर बहुत से मकानो की बडी बडी और हल्की खिडकियो के सामने गहरे हरे रग के चिनार के वृक्ष तथा बबूल अपनी कोमल पीत हरियाली और सुगधित फूलो की सुषमा बिखेरते है। ये वृक्ष कभी कभी मकान की छतो से भी ऊँचे होते है और बडे लुभावने लगते हैं। इन वृक्षो के पास पीली सूरजमुखी, लताएँ और अगूर की बेले लहलहाती हैं। खुले चौडे चौक में तीन दूकाने है, जहाँ वस्त्र, सूर्यमुखी तथा लौकी के बीज, सेम और अदरक भरी रोटियाँ बिकती है। चिनार के वृक्षो की पक्ति के पीछे, अन्य मकानो से बडे तथा ऊँचे, एक मकान में रेजीमेन्ट का कमाडर रहता है। इस मकान की सभी खिडकियाँ चौखटदार हैं। सप्ताह के दिनो में, विशेष रूप से गर्मी में, गाँव की सडको पर थोडे से ही लोग दिखाई पडते हैं। नवयुवक घेरो अथवा साहसिक अभियानो पर रहते है और वृद्ध या तो मछलियाँ मारते हैं या बाग-बगीचो में स्त्रियो की सहायता करते है। केवल बहुत बूढे, बच्चे या बीमार लोग ही घरो पर रहते है।

५

काकेशिया में ऐसी मनमोहक शामे कम होती है। सूर्य पहाडो के पीछे छिप गया था परन्तु प्रकाश अब भी था। एक-तिहाई आकाश पर सायकालीन झुटपुटा फैल चुका था और इस क्षीण होते हुए प्रकाश में पर्वतो का विषण्ण महाकार और भी गहरी रेखाओ में खिच रहा था। वायु स्थिर थी, तरल थी और उसमें गूंज थी। स्टेपी पर मीलो तक पहाडो की छाया पड रही थी। स्टेपी, सडके और नदी के दूसरी ओर का क्षेत्र सब सुनसान हो चुके थे। यदि कभी कभी कोई सवार दिखाई पड जाते तो शिविरो के कज्जाक तथा औलो (चेचेनो के गाव) के चेचेन उन्हे आश्चर्य और उत्सुकता से देखने लगते और यह अनुमान लगाने का प्रयत्न करते कि ये जीव कौन हैं, कहाँ के हैं ?

रात होते होते लोग अपने अपने घरो में पहुँच जाते क्योकि प्रत्येक को दूसरे का डर बना रहता। मनुष्यो के भय से मुक्त पशु पक्षी उस निर्जन स्थान पर टें-टें किया करते। स्त्रियाँ सूर्यास्त से पूर्व अगूर की लताएँ लपेट-लपाट कर बागो से जल्दी जल्दी घर की राह लेती और बातो ही बातो में उनका रास्ता मौज में कट जाता। आस-पास के क्षेत्रो की भाँति बाग-बगीचे भी वीरान हो जाते। परन्तु, शाम के समय गाँवो में जीवन की बहार होती। सभी ओर से मनुष्यो का काफिला गाँवो की ओर बढता हुआ नजर आता—कुछ पैदल, कुछ गाडियो पर और कुछ घोडो पर। फ्राक पहने और हाथो मे टहनियाँ नचाती हुई ग्राम-सुन्दरियाँ बातो में रस घोलती हुई अपने पशुधन का स्वागत करने के लिए गाँव के प्रवेश द्वार तक दौड जाती। उनके पशु भी धूलि-धूसरित और स्टेपी मे मक्खी-मच्छडो की फौज लिये हुए गोखर में आते। स्वस्थ गाय भैंसे सडक पर सटरगश्ती करती और कज्जाक स्त्रियाँ अपनी रग-

विरंगी वेशमेते पहने उनके मध्य स्वच्छन्द घूमा करती। पशुओ के रभाने के बीच उनकी हँसी और किलकारियाँ दूर दूर तक सुनाई पडती। यही एक सशस्त्र घुडसवार कज्जाक घेरे से छुट्टी पाकर एक घर की ओर जाता दिखाई पडता है। वहाँ पहुँच कर वह कुछ झुक कर खिडकी खटखटाता है। और एक नवयुवती का सुन्दर मुखडा खिडकी में से झाँकता हुआ दिखाई पडता है, और फिर मस्ती से भरी हँसी और आत्मीयता उस भाग्यशाली का स्वागत करती है। यही एक फटे-हाल नगई गुलाम, जिसके गालो की हड्डियाँ उभरी हुई है, स्टेपी से गाडी पर नरकटो का एक बोझा लादे हुए आता दिखाई देता है। शीघ्र ही वह सारे नरकट कज्जाकी कप्तान के लम्बे-चौडे और साफ आँगन में उलट देता है और बैलो पर से जुआ उतार देता है। बैल भी अब मुक्त होकर अपने सिर दाएँ-बाएँ झुलाने लगते हैं। इधर मालिक और गुलाम तातारी भाषा मे एक दूसरे को चिल्ला चिल्ला कर पुकारते है। सामने कीचड और कूडा-करकट से भरा एक पोखरा है जो वर्ष प्रति वर्ष प्राय सडक पार तक बढ आता है। इसे केवल मेड की सहायता से ही लाँघा जा सकता है। इसी पोखरे से होकर आती हुई एक कज्जाक महिला दीख पडती है। उसके पैर नगे है और पीठ पर है लकडी का एक बोझ। कीचड से बचने के लिए उसने अपना फ्राक कुछ ऊँचा उठा लिया है और उसके सफेद पैर दीखने लगे है। शिकार मे लौट कर आता हुआ एक कज्जाक उससे मज़ाक कर बैठता है—"तनिक और ऊपर उठा लो, मेरी जान!" और अपनी बन्दूक उसपर तान देता है। महिला फ्राक छोड देती है और लकडियाँ गिरा देती है। एक वृद्ध कज्जाक मछली मार कर घर लौट रहा है। उसका पैजामा नारे के पास से मुडा हुआ है। उसका बालदार भूरा सीना खुला है। उसके कधे पर एक जाल है जिसमे चाँदी जैसी चमकीली मछलियाँ अब भी तिलमिला रही है। रास्ता बचाने की गरज

से वह अपने पडोसी की टूटी मेड पर जाता है और चढते समय दोना हाथो से अपना कोट पकड लेता है। एक महिला सूखी डाल घसीटती हुई आगे बढ रही है। एक कोने से कुल्हाडी की खटखट भी सुनाई पड रही है। कज्जाको के बच्चे, सडक की चिकनी चिकनी जगहो पर लट्टू नचा रहे है और चीख चिल्ला रहे हैं। लम्वा चक्कर बचाने के लिए स्त्रियाँ मेडो पर चढ रही हैं। प्रत्येक चिमनी से किज्याक* का सुगधित धुआँ निकल रहा है। घर घर में चिल्लपो सुनाई दे रही है जैसे वह रात्रि की नीरवता की भूमिका हो।

कज्जाक कार्नेट एक स्कूल मास्टर है। उसकी पत्नी श्रीमती उलित्का अन्य स्त्रियो की तरह अपने आँगन के फाटक तक जाती है और उन मवेशियो का इन्तजार करती है जिन्हे उसकी पुत्री मर्यान्का सडक से हाक कर ला रही है। टट्टर के वाडे का फाटक पूरी तरह खुल भी नही पाता कि मच्छरो से सनी हुई एक बडी-सी भैस हुकारती हुई उसमें घुस जाती है। बाद में गायें भी वाडे में प्रवेश करती हैं। पूंछो से शरीर झाडती हुई वे अपनी स्वामिनी की ओर इस दृष्टि से ताक रही है मानो कह रही हो 'देखो, हम आ गये'।

सुन्दर और सुगठित मर्यान्का फाटक में घुस आती है और झट से उसे बन्द कर लेती है। फिर वह भागती हुई कभी इधर, कभी उधर, गाय भैंसो को अलग अलग करती तथा प्रत्येक को उसके ओसारे में पहुँचाती है। "चद्रियाँ तो उतार दे, चुडैल!" उसकी माता चिल्लाती है। "घिसटा घिसटा कर क्या उनमें छेद बना देगी!" मर्यान्का को 'चुडैल' शब्द सुन कर न गुस्सा आया न तिलमिलाहट हुई। वह तो प्यार का शब्द

---

* सुखाये हुए गोबर का ईंधन—अनु०

था। अतएव, प्रसन्न होती हुई वह अपने काम में लगी रही। उसका चेहरा ढका हुआ है क्योकि उसने सिर के चारो ओर एक रूमाल लपेट लिया है। वह गुलाबी रग की एक फ्राक तथा हरी वेशमेत पहने हुए है। वह अहाते में से होकर एक ओसारे में घुस जाती है। उसके पीछे पीछे एक बडी, मोटी भैस भी लगी हुई है। बडे दुलार से वह भैस को पुचकारती हुई कह उठती है, "वही खडी रहेगी या आयेगी भी? कैसी बुद्धू है, आ जा, आ जा!" शीघ्र ही माँ-बेटी ओसारे से निकल कर बाहरी कमरे में आ जाती है। उनके हाथ में दो बरतन हैं जिनमें गाय भैसो का इकट्ठा किया हुआ दिन भर का दूध है। कमरे की चिमनी से किज़्याक का धुआँ उठ रहा है। यहाँ दूध से मलाई तैयार की जा रही है। लडकी आग सुलगाने तथा उसे तेज़ करने में लग जाती है और उसकी माता फाटक की ओर बढती है। झुटपुटा हो गया है। वायु में शाकसब्जियो, मवेशियो और किज़्याक-धूम की सुगन्ध भरी हुई है। कज्ज़ाक महिलाएँ हाथ में जलते हुए चिथडे लेकर सडको पर तेज़ी से आ जा रही है। अहातो में दुहे जाते मवेशियो के रभाने का शब्द सुनाई पड रहा है। सडको तथा आँगनो से स्त्रियो तथा बच्चो की आवाज़े आ रही हैं—कोई किसी को पुकारता है तो कोई किसी को। सप्ताह के दिन किसी पियक्कड का शोरगुल प्राय नही सुनाई पडता।

मर्दों-सी लगनेवाली एक लम्बी-चौडी कज्ज़ाक वृद्धा सामने के मकान से आग माँगने श्रीमती उलित्का के पास आती है। उसके हाथ मे एक चिथडा है।

"काम खतम हो गया न?"

"लडकी आग सुलगा रही है। तुम्हे आग चाहिए?" श्रीमती

उलित्का ने जवाव दिया। उसे गर्व है कि वह अपनी पडोसिन की मदद कर सकती है।

दोनो महिलाएँ अन्दर चली गईं। श्रीमती उलित्का ने अपनी मोटी मोटी उगलियो मे, जो छोटी वस्तुओ के व्यवहार में अभ्यस्त नही थी, दियामलाई का ढक्कन काँपते हुए हाथों से खोला। काकेगिया के लिए दियासलाई एक दुर्लभ वस्तु है। मर्दो-सी लगनेवाली नवागता दहलीज पर जम कर वैठ जाती है। शायद वह गपशप करना चाहती है।

"तुम्हारा आदमी कहाँ है—स्कूल में?" उसने पूछा।

"हाँ। वह हमेशा वच्चो को पढाने में लगा रहता है। परन्तु उसने लिखा है कि उत्सव के दिनो में वह घर आयेगा," श्रीमती उलित्का ने उत्तर दिया।

"आदमी होशियार है। चलो यह भी अच्छा है।"

"वेशक।"

"और मेरा लुकाश्का घेरे पर है। वे उसे घर नही आने देंगे," वृद्धा ने कहा, यद्यपि श्रीमती उलित्का यह सब वहुत पहले से जानती थी। वृद्धा अपने लुकाश्का के विषय में वातचीत चलाना चाहती थी। उसने कुछ समय पूर्व अपनेवेटे को कज्ज़ाक सेना में नौकरी के लिए भेज दिया था। वृद्धा उसका विवाह श्रीमती उलित्का की पुत्री मर्यान्का से करना चाहती थी।

"तो वह घेरे पर है?"

"हाँ। पिछले उत्सव के वाद से वह घर नही आया। अभी उसी दिन मैंने फोमुश्किन के हाथ उसे कुछ क़मीज़ें भेजी थी। उसका कहना है कि वह वडे मजे में है और उसके अफसर उससे खुश हैं। उसने लिखा है कि वे फिर अव्रेकों की तलाश में हैं। लुकाश्का कहता है कि वह वहुत खुश है।"

"भगवान की दया है," कार्नेट की पत्नी ने कहा, "निस्सदेह उसके लिए एक ही शब्द है, उर्वान।"

लुकाश्का का कल्पित नाम उर्वान था, जिसका अर्थ है 'छीनने वाला', और यह नाम इसलिए पड़ा था कि उसने एक बार नदी में डूबते हुए किसी लड़के को बचाकर अपनी बहादुरी का परिचय दिया था। श्रीमती उलित्का ने इस नाम का प्रयोग इसीलिए किया था कि लुकाश्का की माता को अपने पुत्र की बहादुरी का उल्लेख सुनकर प्रसन्नता हो।

"मैं ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ कि वह अच्छा लड़का है, बहादुर है, और सब उसकी प्रशंसा करते हैं," लुकाश्का की माँ ने कहा। "अब तो मैं यही चाहती हूँ कि किसी प्रकार उसका घर बस जाय और मैं शान्ति की मौत मरूँ।"

"ठीक तो है। क्या गाँव में ढेरों जवान औरतें नहीं हैं?" चतुर श्रीमती उलित्का ने जवाब दिया और अपने खुरदरे हाथों से दियासलाई ठीक करने में लग गई।

"बहुत हैं" सिर हिलाते हुए लुकाश्का की माँ ने कहना शुरू किया, "तुम्हारी ही लड़की है—मर्यान्का। वह है एक लड़की। सारे इलाके में उस जैसी दूसरी होगी कौन?"

श्रीमती उलित्का लुकाश्का की माता का अभिप्राय जानती है, परन्तु यद्यपि उसे विश्वास है कि लुकाश्का एक अच्छा कज्ज़ाक है फिर भी वह तरह दे जाती है, क्योंकि पहली बात तो यह है कि वह एक कार्नेट की बीवी है और धनी है, जबकि लुकाश्का एक मामूली कज्ज़ाक का बेटा है और पितृहीन है, और दूसरी, अभी वह अपनी बेटी को अपने से अलग नहीं करना चाहती। लेकिन मुख्य बात तो औचित्य का तकाज़ा है।

"खैर, जब मर्यान्का बड़ी होगी तभी उसके विवाह की फिक्र भी की जायेगी," उसने गम्भीरता और मृदुता से कहा।

"मैं विवाह ठहराने वालों को तुम्हारे पास भेज दूंगी—अवश्य भेज दूगी। अगूर के बाग का मेरा काम खत्म हो जाने दो तब हम लोग तुम्हारे पास फिर आयेंगे और इस सबध में बात चलायेंगे," लुकाश्का की माँ ने कहा, "और हम ईल्या वसीलियेविच से भी बात चलायेंगे।"

"ईल्या, ज़रूर, ज़रूर!" गर्व से कार्नेट की पत्नी बोली, "लेकिन इस सम्बन्ध में तुम्हे मुझसे बात करनी चाहिए। वह भी मौके-महल पर!"

लुकाश्का की माँ ने कार्नेट की पत्नी की ओर देखा। उसके मुख पर कर्कशता थी जिसे देखते ही उसने समझ लिया कि इस समय आगे कुछ कहना-सुनना ठीक नही। उसने अपने चिथडे में दियासलाई लपेटी और बोली "मुझसे इनकार मत करना, याद रखना कि तुमने मुझसे क्या कहा है। अब चलती हूँ, आग सुलगाने का समय हो रहा है।"

वह जलते हुए चिथडे को नचाती हुई सडक पार करती है। रास्ते में उसकी भेंट मर्यान्का से होती है जो उसे प्रणाम करती है।

उस सुन्दर लडकी की ओर देखते हुए वह सोचती है, "यह तो रानी है, रानी। कितना अच्छा काम करती है यह लडकी! उसे और बडी होने की क्या ज़रूरत? यही समय है कि इसका व्याह हो जाना चाहिए और इसे कोई अच्छा घर बसाना चाहिए, मेरे लुकाश्का के साथ!"

परन्तु श्रीमती उलित्का की अपनी चिन्ताएँ हैं। और वह दहलीज़ पर बैठी हुई गभीरता से सोचने लगती है। तभी उसके कान में पुत्री के पुकारने की आवाज़ पड जाती है।

गाँव के पुरुष सैनिक अभियानो तथा घेरो में अथवा, जैसा कज़्ज़ाको का कहना है, 'चौकियो पर' अपने अपने कामो में लगे है। सन्ध्या का समय है। लुकाश्का-उर्वानि (जिसके सम्बन्ध में वृद्धाओ में बाते हुई थी) तेरेक नदी पर स्थित निज्ने-प्रतोत्स्की चौकी के एक पर्यवेक्षकी मचान पर खडा है। मचान के सीखचो पर झुककर वह नदी के उस पार, काफी दूर, अपने साथी कज़्ज़ाको को गहरी नज़र से देख रहा है और उनसे सकेतो से वातचीत भी कर रहा है। इस समय तक सूर्य हिमावृत पर्वतशिखरो तक पहुँच चुका था। शिखर उसकी किरणो का सस्पर्श पाकर दमक रहे थे। पहाडो के आस-पास विखरे हुए वादल धीरे धीरे धूमिल होते जा रहे थे। मद मद वायु सायकाल का परिचय दे रही थी। जगलो की ओर से कभी कभी ताजी हवा का कोई झोका आ जाता था यद्यपि चौकी के आस-पास की हवा अभी तक गर्म थी। कज़्ज़ाको की वातचीत हवा में गूँजकर एक विचित्र सुरीलापन पैदा करती तथा तेरेक का तेज़ी के साथ वहता हुआ भूरा जल जव निश्चल तटो से टकराता तो नदी का तल तक साफ-साफ दिखने लग जाता। अव नदी का पानी कम होता जा रहा था और यही कारण था कि तट पर तथा छिछले स्थलो पर कीचड और गदला जल एकत्र हो रहा था। चौकी के ठीक सामने नदी के उस पार का क्षेत्र वीरान था। केवल नरकटो की नीची नीची झाडियाँ पहाडो की तलहटी तक फैली हुई थी। निचले तट पर एक ओर हट कर एक चेचेन गाँव के मिट्टी के मकानो की चौरस छते तथा कुप्पी के आकार की चिमनियाँ दिखाई पड रही थी। मचान पर चौकसी करने वाले चौकीदार की तेज निगाहे उस शान्त गाँव के सायकालीन धूम को चीरती हुई लाल-पीली पोशाको में चलती-

फिरती उन चेचेन महिलाओ पर पड रही थी जो दूरी के कारण बौनी-सी दिखाई पडती थी।

कज्ज़ाको को ऐसा लगने लगा था कि अब्रेक न जाने किस समय तातार की ओर से आकर उनपर आक्रमण कर दें। मई का महीना होने के कारण नदी कही कही इतनी छिछली निकल आई थी कि घुडसवार उसमें से होकर आसानी से गुज़र सकते थे, लेकिन तेरेक के आस-पास के जगल इतने घने थे कि उन्हे पैदल पार करना कठिन था। और कुछ ही दिन पूर्व एक कज्ज़ाक, सेना के कमाडर का इस आशय का गश्तीपत्र लेकर आया था कि स्वयसेवको ने सूचना दी है कि आठ व्यक्तियो का एक दल तेरेक पार करना चाहता है। पत्र में विशेष चौकसी के आदेश दिये गये थे। फिर भी घेरे में कोई खास चौकसी नही रखी गई थी। कज्ज़ाक निहत्थे थे। उनके घोडो की ज़ीने खुली हुई थी और वे इतने बेखबर थे जैसे अपने अपने घरो मे हो। कुछ मछली मारते, कुछ शराब मे धुत्त रहते और कुछ शिकार मे मन बहलाते। जो व्यक्ति ड्यूटी पर था केवल उसी के घोडे पर ज़ीन दिखाई देती थी और एक मात्र वही जगलो के पास की झाडी में चक्कर लगा रहा था। चेरकेसियन कोट पहने एक चौकीदार अपनी तलवार बन्दूक लिये पहरे पर डटा था। कारपोरल एक दुबला-पतला लम्बा कज्ज़ाक था। उसकी पीठ लम्बी तथा हाथ पैर अपेक्षाकृत छोटे थे। उसकी बेशमेत के बटन खुले थे और वह एक झोपडे के सामने के चबूतरे पर बैठा था। उसके चेहरे से पता लगता था कि उसमें बडप्पन के लक्षण स्पष्ट है। कभी वह अपनी आँखें मूँदता, कभी खोलता और कभी एक हथेली पर माथा टेकता, तो कभी दूसरी पर। एक वयस्क कज्ज़ाक तेरेक की उठती हुई तरगो का आनन्द लेने के लिए वहाँ तक खिचा चला आया था। उसकी लम्बी दाढी का रग भूरापन लिये हुए कुछ काला था। वह एक साधारण-

मी कमीज़ पहने और ऊपर मे एक पेटी कसे था। गर्मी मे घवडा कर तथा आधे-चौथाई कपडे पहने हुए दूसरे कज्ज़ाक भी तेरेक के किनारे जमा हो गये। कुछ नदी में अपने कपडे निचोड़ने लगे, कुछ लगामें गूथने लगे और कुछ नदी तट की तपती हुई वालू पर लेटकर ताने छेडने लगे। एक कज्ज़ाक झोपडी के पास लेटा था। उसका चेहरा धूप के कारण काला पड चुका था। ऐसा लगता था कि वह वुरी तरह से नशे में चूर है क्योकि जिस दीवाल के महारे वह लुढका पडा था उसपर सूर्य की मीधी किरणें पड रही थी। यही दीवाल लगभग दो घटे पूर्व छाया में थी।

लुकाश्का मचान पर खडा था। वह लगभग २० वर्ष का एक लम्वा, खूवसूरत-सा जवान और वहुत-कुछ अपनी माता के समान था। इकहरे वदन का होते हुए भी उसके चेहरे और आकार से यह पता चलता था कि उसमें शारीरिक तथा नैतिक दोनो ही प्रकार का वल है। यद्यपि वह कज्ज़ाको की सेना के अग्रगामी दस्ते मे अभी हाल ही में भरती हुआ था फिर भी उसके चेहरे के भावो तथा उमकी शान्त प्रकृति से यह स्पष्ट था कि उसने कज्जाको और हथियार बाँधने के आदी व्यक्तियो के अनुरूप गौरवपूर्ण और युद्धप्रिय स्वभाव पाया है। उसे अपने कज्ज़ाक होने का गर्व था और वह अपना मूल्य अच्छी तरह समझता था। उमका चेरकेसियन कोट कई जगहो से फटा था, उसकी टोपी उसके सिर के पीछे चेचेन फैशन में लगी थी और उसके मोज़े उसके घुटनो के नीचे मुडे थे। उसकी पोशाक कीमती न थी फिर भी वह उसे ऐसे कज्ज़ाकी ढग से पहने था जिसे देखकर प्रतीत होता था कि उसने चेचेन जिगीत का अनुकरण किया है। जिगीत की विशेपता यह है कि प्रत्येक वस्तु की मात्रा तो काफी रहती है परन्तु या तो वह फटी-चिथी होती है या उपेक्षित। केवल उमके हथियार कीमती होते है। वह फटे कपडो के

साथ हथियारो को ऐसे बांधता है, और वे उसपर इतने फव जाते है, कि कज्ज़ाको अथवा पार्वतीयो की आँखें उसपर गडी की गडी रह जाती हैं। प्राय उसकी कोई नक्ल तक नही कर पाता। इस मामले में लुकाश्का जिगीत से मिलता-जुलता था। तलवार पर अपना हाथ रखे और आँखें करीव करीव मूंदे हुए वह दूरस्थ श्रौल की ओर देखता रहा। यद्यपि उसका चेहरा-मोहरा सुन्दर नही कहा जा सकता था, फिर भी जो भी उसके आकर्षक व्यक्तित्व और वुद्धिमत्ता का आभास देने वाले मुखमडल को देखता उसके मुंह से वरवस निकल जाता, "कितना अच्छा है यह व्यक्ति!"

"उन औरतो की तरफ देखो। कितनी ढेर की ढेर गाँव में मटरगश्ती कर रही है!" उसने कुछ तीखी आवाज़ में कहा और उसके मोती जैसे दाँत चमक उठे। वह विशेष रूप से किसी को लक्ष्य करके नही कह रहा था। परन्तु, लेटे हुए नज़ारका ने अपना सिर उठाया और कहने लगा—

"पानी लेने जा रही होगी।"

"मान लो मैं एक गोली चलाकर उन्हे डरा दूं! तो वे घवडाकर भाग न जायगी क्या?" वह हँसा।

"गोली, वहाँ तक पहुँचेगी भी।"

"क्या! अजी उनसे आगे निकल जायगी। थोडा ठहरो। उनकी दावत का दिन आने दो, तव देखना। मैं गिरेई-खाँ मे मिलने जाऊँगा और उसके साथ वूज़ा* पिऊँगा," लुकाश्का वोला। वह क्रोध में आकर उन मच्छरो को हटाता जा रहा था जो उसे चपटे जा रहे थे।

झाडियो में कुछ खडखडाहट हुई और कज्ज़ाको का ध्यान उधर चला गया। नाक ज़मीन की ओर किये तथा अपनी विना वालो

---

* वाजरे मे वनी तातारी वियर।

वाली दुम हिलाते हुए एक शिकारी कुत्ता भागता हुआ घेरे की तरफ आया। लुकाश्का ने कुत्ते को पहचान लिया। वह उसके पड़ोसी चचा येरोश्का का था जो एक शिकारी था। शीघ्र ही उसने देखा कि स्वय शिकारी चचा भी भागते भागते कुत्ते के पीछे चले आ रहे है।

चचा येरोश्का कज्ज़ाको में एक दैत्य था—वर्फ की तरह सफेद लम्वी-चौडी दाढी, सीना और कधे इतने चौडे और शक्तिशाली, अगो की वनावट इतनी सुगठित कि जगलो में, जहाँ उससे मुकावला करने के लिए कोई भी न होता, वह विशेष लम्ब-तडग न दीखता। उसका कोट फटा-पुराना था, पैरो में गर्म पट्टियाँ लिपटी थी जिनके ऊपर मज़बूत धागे से वधी हुई हिरन के कच्चे चमडे की चप्पले थी। उसके सिर पर एक मैली-सी सफेद टोपी भी रखी थी। उसके एक कधे पर एक परदा था जिसके पीछे छिपकर वह तीतरो का शिकार करता था। परदे के साथ ही एक थैला भी लटका था जिसमें वाज़ तथा श्येन पक्षियो को फुसलाने के लिए एक मुर्गी थी। उसके दूसरे कधे पर फीते से वधी हुई एक जगली विल्ली थी जिसका उसने शिकार किया था। उसकी पेटी के साथ पीछे की ओर लटका हुआ एक छोटा-सा झोला था जिसमें कुछ गोलियाँ, वारूद और रोटियाँ थी। इसी पेटी में एक ओर मच्छरो को उडाने के लिए घोडे की एक दुम, फटी-फटाई म्यान में रखी हुई खून के धब्बो वाली एक कटार और मरे हुए दो तीतर वधे हुए थे। घेरा देखते ही वह रुक गया।

"ठहरो ल्याम!" उसने कुत्ते को इतनी सुरीली धुन में पुकारा कि उसकी प्रतिध्वनि जगल में दूर तक सुनाई दे गई। और फिर, अपने कधे पर से भारी वन्दूक, जिसे कज्ज़ाक 'फ्लिन्ता' कहते थे, उतारकर उसने अपनी टोपी उठाई।

"आज वडा मज़ा आया, दोस्तो!" उसने तेज़ और दिल को खुश कर देने वाली आवाज़ में कहा। यद्यपि वह कोई विशेप प्रयास करता-सा

नही दिखाई पड रहा था, फिर भी आवाज़ इतनी तेज़ थी जैसे वह नदी के दूसरी ओर खडे हुए किसी व्यक्ति को पुकार रहा हो।

"बहुत खूब, चचा, बहुत खूब!" सब ओर से कज्ज़ाकों ने कहना शुरू किया।

"तुम लोगो ने क्या देखा? आओ हमें बताओ!" चचा येरोश्का अपने कोट की आस्तीन से अपने मुंह का पसीने पोछते हुए बोला।

"चचा, उस सामने वाले पेड पर एक बाज़ रहता है। जैसे ही रात होती है वह यहाँ ऊपर चक्कर लगाने लगता है," कधे और टाँगें उचकाते तथा आँख मारते हुए नजारका कहने लगा।

"क्या! सचमुच?" बूढे ने कहा। उसे विश्वास नही हो रहा था।

"हाँ, हाँ, चचा जरूर है। यही ठहरो और देखते जाओ," हँसते हुए नज़ारका बोला।

दूसरे कज्ज़ाक भी हँस दिये।

बाज देखने की बात कोरी गप थी। परन्तु घेरे के जवान कज्ज़ाका को तो चचा येरोश्का को मौके-बे-मौके परेशान करने और बुद्धू बनाने मे मज़ा आता था।

"अरे बेवकूफ–कभी तो सच बोला कर," मचान पर से लुकाश्का ने नज़ारका की तरफ मुडते हुए कहा।

नज़ारका फौरन चुप हो गया।

"ज़रूर देखना चाहिए! मैं देखूंगा," बूढे ने जवाब दिया और जवान कज्ज़ाक उसकी बातो का आनन्द लेने लगे। "क्या कभी सुअर देखे है तुमने? नही?"

"सुअर!" आगे झुकते तथा दोनो हाथो मे पीठ खुजाते हुए कारपोरल बोला। उसे विनोद सूझ रहा था।

"अरे चचा, यहाँ तो हमें अब्रेका को ढूंढना है सुअरो को नही।

कुछ वसन्त की भी खबर है तुम्हे, तुमने कुछ नही सुना ?" आँखें मटकाते और खीसें निपोरते हुए उसने कहा।

"अब्रेक ?" बूढा बोला, "नही तो। मैंने तो कुछ नही सुना। खैर, कुछ चिखीर* हो तो देना। अरे भाई कुछ पिलाओ तो सही। देखते नही, कितना थक गया हूँ। वक्त आने दो। मै भी तुम्हे ताजा गोश्त खिलाऊँगा। जरूर खिलाऊँगा! भरोसा रखना। वस इस समय थोडी पिला दो," चचा ने बात वनाई।

"खैर, और तुम भी पहरा दोगे या नही ?" कारपोरल ने पूछा जैसे उसने सुना ही न हो कि चचा क्या कह गया था।

"आज रात पहरा देने में मेरा अपना ही स्वार्थ है," चचा येरोश्का ने जवाव दिया, "भगवान ने चाहा तो मै उत्सव के लिए जरूर कुछ न कुछ मारूँगा और उसमें तुम्हे तुम्हारा हिस्सा मिलेगा, जरूर मिलेगा।"

"चचा, अरे ओ चचा!" सभी का ध्यान आकर्षित करते हुए लुकाश्का ऊपर से चिल्लाया। सारे कज्जाक ऊपर देखने लगे। "नदी के किनारे किनारे चले जाओ। वहाँ ढेरो सुअर हैं एक से एक अच्छे। नही! मैं मजाक नही कर रहा हूँ। उस दिन हमारे एक साथी ने एक मारा भी था। सच कह रहा हूँ।" कन्धे पर वन्दूक सभालते हुए उसने ऐसी आवाज में कहा जिससे पता चलता था कि वह सचमुच मजाक नही कर रहा है।

"अरे! लुकाश्का-उर्वान, तुम यहाँ!" सिर ऊपर उठाते हुए चचा वोला, "यह कज्जाक कहाँ शिकार कर रहा था ?"

"वाह चचा! तुमने अभी तक मुझे देखा भी नही ? जान पडता

---

* घर की वनी काकेशिया की शराव—अनु०

है मैं तुम्हारे लिए वहुत छोटा हूँ?" लुकाश्का वोला और फिर सिर हिलाते हुए कुछ गम्भीरता से कहने लगा, "विल्कुल खाई के पास। हम लोग खाई से होकर जा रहे थे कि हमें कुछ खटर-पटर सुनाई दी। मेरी वन्दूक केस में ही थी कि ईल्या ने उसे भाग जाने दिया परन्तु मैं तुम्हे वह जगह दिखाऊँगा, दूर नही है। थोडा इन्तज़ार करो। मै उनका एक एक रास्ता जानता हूँ। चचा मोसेव," घूमते हुए और कारपोरल को आज्ञा देने के लहजे मे उसने कहा, "पहरा खत्म होने का वक्त हो गया," और कन्धे पर वन्दूक लटकाते हुए वह आज्ञा की प्रतीक्षा किये विना मचान से उतरने लगा।

"नीचे चले आओ," कारपोरल ने आज्ञा दी, परन्तु लुकाश्का उससे पहले ही चल चुका था। कारपोरल ने अपने चारो ओर नज़र डाली।

"गुरका, अव तुम्हारी वारी है न? तुम ऊपर जाओ सच्ची वात है, लुकाश्का तो असली शिकारी हो रहा है," वूढे को सुनाता हुआ वह कहता गया, "तुम्हारी ही तरह वह भी घूमता रहता है। घर पर कभी नही टिकता। अभी उसी दिन उसने एक सुअर मारा था।"

७

सूर्य डूव चुका था और रात्रि का धुंधलका जैसे जगल से वढता चला आ रहा था। कज्ज़ाको ने घेरे के इर्द-गिर्द के सारे कार्य समाप्त कर लिये थे और अव वे भोजन के लिए झोपडी में एकत्र हो रहे थे। केवल वूढे चचा ही पेड के नीचे वैठे हुए वाज़ को देखने में व्यस्त थे। चचा अपनी मुर्ग़ी के पैरो में वधे हुए डोरे को कभी खीचते, कभी ढीला करते।

पेड पर बाज़ था ज़रूर परन्तु चचा की सारी कोशिशो के बावजूद वह नीचे नही उतर रहा था। लुकाश्का एक के बाद एक गाने गाता हुआ तीतरो को पकडने के लिए घनी झाडियो में जाल बिछाये आराम से बैठा था। कद लम्बा और हाथ बडे होते हुए भी उसे सभी अच्छे-बुरे कामो में कामयाबी हो जाती थी।

"ओ लुका!" पास की झाडी से नज़ारका की तीखी तेज़ आवाज़ सुनाई दी, "कज़्ज़ाक खाने जा चुके हैं!" और वह अपनी बगल में एक ज़िन्दा तीतर छिपाये झाडियो से होता हुआ पगडण्डी पर आ गया।

"ओहो!" गाने की कडी तोडते हुए लुकाश्का बोला, "यह तीतर कहाँ से मार लाये, यार? मैं समझता हूँ मेरे ही जाल में फँसा था।"

नज़ारका की उम्र लगभग लुकाश्का के बराबर ही थी। वह अभी पिछले वसन्त से ही युद्ध के हरावल में भर्ती हुआ था। सीधे-सादे, दुबले-पतले इस जवान की आवाज़ कर्कश थी जो शीघ्र ही दूसरो के कानो में गूंज उठती थी। वे पडोसी भी थे और साथी भी। लुकाश्का घास पर बैठा था और तातारो की भाँति उसका एक पर दूसरे पर चढा था। वह अपना जाल सँभाल रहा था।

"मुझे पता नही किसका था—मैं समझता हूँ तुम्हारा।"

"क्या गड्ढे के उस तरफ पेड के पास पडा था? तब तो यह मेरा है। मैंने कल रात ही जाल बिछा दिये थे।"

लुकाश्का उठा और तीतर को सावधानी से देखने-भालने लगा। पक्षी ने भय के मारे अपनी आँखें निकाल दी थी और गर्दन फैला दी थी। लुकाश्का ने उसका काला और चिकना सिर उगलियो से थपथपाया और पक्षी को दोनो हाथो में दबा लिया।

"आज हम इसका पुलाव पकायगे। जाओ इसे मार कर पकाओ।"

"क्या इसे हम लोग ही खायेंगे या कारपोरल को भी देंगे?"

"उसके पास तो बहुत हैं।"

"मैं उन्हे मारना पसन्द नही करता," नज़ारका बोला।

"इधर लाओ।"

लुकाश्का ने अपनी कटार के नीचे से एक छोटा चाकू निकाला और उसे झटके से पक्षी के सिर पर चला दिया। पक्षी तड़पने लगा, परन्तु इसके पहले कि वह अपने पख फैला सके उसका रक्तिम सिर झुक गया और वह जड हो गया।

"ऐसे करना चाहिए!" तीतर को एक ओर डालते हुए लुकाश्का बोला, "इसका बनेगा बढिया पुलाव।"

नज़ारका ने पक्षी की ओर देखा और काँप गया।

"लुकाश्का, मैं कहता हूँ वह बदमाश आज रात फिर हमें झाडियो में भेजेगा," पक्षी को हाथो में उठाते हुए उसने कहा (उसका मतलब कारपोरल से था)। "उसने फोमुश्किन को शराब लेने भेजा है। शायद आज उसी की बारी रही होगी। इसी प्रकार हमें हर रात उसका एक न एक काम करना पडता है। वह हमसे ऐसे ही काम लेता है।"

लुकाश्का सीटी बजाता हुआ घेरे तक गया। "डोरी अपने साथ ले लेना!" वह चिल्लाया। नज़ारका ने आज्ञा का पालन किया।

"आज मैं उससे बाते करूँगा, ज़रूर करूँगा," नज़ारका बोला, "हम यही कहेंगे कि हम नही जाएगे, हम थक चुके है और बस बात ख़त्म हो जायगी! नही, तुम उससे कहना ज़रूर। वह तुम्हारी बात सुनेगा। भला यह भी कोई बात हुई!"

"हुँह, यह ऐसी बात नही जिसपर हुज्जत की जाय," लुकाश्का बोला। उसका दिमाग़ किसी दूसरी ओर था। "छि, अगर उसने हमें इन्ही

समय रात में गाँव से बाहर चले जाने को कहा तो पहले बुरा तो लगेगा मगर वहाँ कुछ वक्त तो मज़े में कटेगा, लेकिन यहाँ क्या है? एक ही बात है, चाहे घेरे में रहें चाहे झाडी में! कैसी लडकपन की बाते करते हो!"

"और क्या तुम गाँव जा रहे हो?"

"मै उत्सव में जाऊँगा।"

"गुरका कहता है कि तुम्हारी दुनैका फोमुश्किन के साथ रगरेलियाँ कर रही है," नज़ारका सहसा पूछ बैठा।

"जाय जहन्नुम में," लुकाश्का बोला और खीसे निकाल दी, "मानो मुझे कोई दूसरी मिलेगी ही नही।"

"गुरका कहता है कि वह उसके घर गया था। उस समय उसका पति कही बाहर था परन्तु वहाँ फोमुश्किन बैठा हुआ कचौडियाँ उडा रहा था। गुरका थोडी देर तो रहा परन्तु तुरन्त वहाँ से उठकर चला गया। जाते समय खिडकी के पास से उसने दुनैका को कहते हुए सुना था, 'चला गया शैतान तुम कचौडी क्यो नही खाते, मेरे प्यारे? आज रात तुम्हे अपने घर नही जाना है,' और खिडकी के नीचे से गुरका कहता है 'मुझे पसन्द है!'"

"तुम बाते बना रहे हो!"

"नही, भगवान जानता है, ठीक कहता हूँ।"

"खैर, अगर उसे कोई दूसरा मिल गया है तो जाय जहन्नुम में," थोडा ठहरकर लुकाश्का बोला, "यहाँ लौंडियो की क्या कमी और सच पूछो तो मैं भी उससे तग आ गया था।"

"कैसे आदमी हो यार," नज़ारका ने कहा, "तुम कार्नेट की बेटी, मर्यान्का से ही टिप्पस भिडाओ। वह क्यो किसी के साथ घूमने-घामने नही जाती?"

लुकाश्का का मुँह लाल हो गया। "हुँह, मर्यान्का! सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।" उसने कहा।

"कोशिश करो "

"तुम क्या समझते हो? क्या गाँव में लडकियो की कमी है?"

और लुकाश्का सीटी बजाता रहा। वह घेरे तक गया और रास्ते में झाडियो की पत्तियाँ तोडता और गिराता रहा।

सहसा एक छोटे-से पौधे पर उसकी निगाह पडी। उसने अपनी कटार के हैंडिल से एक चाकू निकाला और पौधा काट लिया। "इसी से बन्दूक़ की नली साफ करूँगा!" उसने कहा और पौधे को हवा में उडा दिया।

कज्ज़ाक झोपडे के भीतर मिट्टी से पुते हुए एक कमरे में एक नीची तातारी मेज़ के चारो ओर जमा थे। उस समय यह प्रश्न छिडा था कि आज झाडी में किसके लेटने की बारी है।

"आज रात कौन जायगा?" एक कज्ज़ाक ने खुले हुए दरवाजे में से कारपोरल से चिल्लाकर पूछा। वह पासवाले कमरे में ही था।

"हाँ, कौन जायगा?" कारपोरल ने वहीं से आवाज़ लगाई, "चचा बुरलाक जा चुके है और फोमुश्किन भी जा चुका है," उसने सदेह प्रकट करते हुए कहा।

"अच्छा तो तुम दोनो जाओ, तुम और नज़ारका," उसने लुकाश्का को सम्बोधित करते हुए कहा, "और येरगुशोव भी जायगा। इस समय तक उसने अच्छी नीद ले ली होगी।"

"तू खुद तो सोता नहीं, वह सोयेगा?" नीची आवाज़ में नज़ारका बोला।

कज्ज़ाक हँसने लगे।

येरगुशोव एक कज्ज़ाक था जो नशे में धुत्त झोपडे के पास पडा सो

रहा था। वह उसी समय आँखें मलता और लडखडाता हुआ कमरे में आ गया।

लुकाश्का उठ चुका था और अपनी बन्दूक सँभाल रहा था।

"बस जाने की तैयारी करो। खाना खाओ और चल दो," कारपोरल ने कहा और बिना हाँ-ना की प्रतीक्षा किये हुए उसने दरवाजा बन्द कर लिया। शायद उसे यह आशा न थी कि कज्जाक आज्ञा मान लेगे। उसने वही से फिर कहा—"बेशक यदि मुझे हुक्म न मिला होता तो मैं किसी को भी न भेजता। परन्तु किसी भी समय कोई अफसर आ सकता है। फिर यह भी सुनने में आया है कि आठ अब्रेक घुस आये है।"

"मै समझता हूँ कि हमें जाना चाहिए," येरगुशोव बोला, "यह एक नियम है जिसे ऐसे मौको पर नही तोडा जा सकता। मैं कहता हूँ हमें जाना चाहिए।"

इस बीच लुकाश्का खाने में मस्त था। वह तीतर का एक बडा-सा टुकडा, दोनो हाथो से पकडे, मुँह से लगाये था और कभी नज़ारका की ओर और कभी कारपोरल की ओर देखता जाता था। ऐसा लगता था कि जो कुछ हो गया है उससे उसे कोई सरोकार नही। वह उन दोनो पर हँस रहा था। इसके पहले कि कज्जाक झाडी में घुसने की तैयारी करे चचा येरोश्का उस अँधेरे कमरे में चला आया। अभी तक वह वृक्ष के नीचे बाघ की राह देख रहा था, पर उसे न उतरना था तो न उतरा, और रात हो गई।

"अच्छा छोकरो," उसकी तेज़ आवाज़ नीची छत वाले उस कमरे में इतनी ज़ोरो से फैली कि अन्य सारी बाते उसी में विलीन हो गईं। "मै तुम लोगो के साथ चल रहा हूँ। तुम चेचेनो को देखना और मै सुअरो की खबर लूँगा!"

८

जिस समय चचा येरोश्का और तीनो कज़्ज़ाक अपने अपने लवादे डाटे और कन्धो पर बन्दूकें लटकाये घेरे से बाहर निकलकर तेरेक स्थित उस स्थान की ओर चले, जहाँ उन्हे झाडियो में लेटना था, उस समय बिल्कुल अँधेरा हो चुका था।

नज़ारका तो जाना ही न चाहता था परन्तु लुकाश्का ने उसे डाँट पिलाई और तीनो चल दिये। चुपचाप थोडी दूर चल लेने के बाद वे खाई से एक ओर मुडे और उन्होने वह रास्ता पकडा जो नरकटो के कारण प्राय छिप-सा गया था। अब वे नदी तक पहुँच गये थे। किनारे पर एक मोटा काला लट्ठा पडा था जिसे शायद नदी बहाकर लाई थी। उसके आस-पास की झाड़ियाँ दब गई थी।

"क्या हम यही लेटेंगे?" नज़ारका ने पूछा।

"क्यो नही?" लुकाश्का ने उत्तर दिया, "तुम सब यही बैठ जाओ। मैं अभी एक मिनट में आया। मैं चचा को बता दूं कि उन्हें कहाँ जाना चाहिए।"

"यही सबसे अच्छी जगह है। यहाँ से हम तो सब कुछ देख सकते हैं परन्तु हमें कोई नही देख सकता। इसलिए हम यही लेटेंगे। यही ठीक जगह है।" येरगुशोव ने कहा।

नज़ारका और येरगुशोव ने अपने अपने लबादे बिछा दिये और लट्ठे के पीछे जम गये। लुकाश्का चचा येरोश्का के साथ चल दिया।

"चचा, वह जगह यहाँ से दूर नही," बूढे के ऐन सामने आकर लुकाश्का बोला, "मै तुम्हे दिखाऊँगा कि सुअर कहाँ थे। अकेला मैं ही वह जगह जानता हूँ।"

"यह बात है! तुम बहुत भले आदमी हो, सच्चे उर्वान!" बूढे ने फुसफुसाते हुए कहा।

कुछ दूर जाने के बाद लुकाश्का रुका, पोखरे के पास कुछ झुका और फिर सीटी बजाने लगा—"यही वे पानी पीने आये थे। देख रहे हो न?" खुरो के निशानो की ओर इशारा करते हुए उसने धीमी आवाज़ से कहा।

"भगवान तुम्हे बनाये रखे," बूढ़े ने जवाब दिया, "सुअर खाई के उस पार छिछले में होगा। मैं उसकी खबर लूंगा। तुम जा सकते हो।"

लुकाश्का ने अपना लबादा खिसकाया और अकेला लौट पडा। कभी वह बाईं ओर नरकटो की पक्ति की तरफ देखता और कभी तट के नीचे तेज़ी से बहती हुई तेरेक पर। "मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि वहाँ कोई न कोई है ज़रूर, चाहे वह किसी को देख रहा हो या सरक रहा हो।" और उसके दिमाग में एक चेचेन पार्वतीय की आकृति घूमने लगी। सहसा सी-सी जैसी एक तेज़ आवाज़ और पानी में छपाक जैसा कोई शब्द सुनाई दिया। वह सतर्क हो गया और उसने दोनो हाथो में बन्दूक सँभाल ली। दूसरे ही क्षण गुर्राता हुआ एक सुअर तट के नीचे से निकला और भागकर नरकटो में घुस गया। पानी से निकलते समय उसके काले शरीर की परछाईं एक क्षण के लिए शीशे जैसे जल पर पडकर तुरन्त ग़ायब हो गई थी। लुकाश्का ने अपनी बन्दूक तान दी, परन्तु उसके गोली चलाने के पूर्व ही वह झाडी में ओझल हो चुका था। लुकाश्का झुझला उठा और उसने अपनी राह ली। एक छिपने के स्थान पर पहुँचकर वह फिर रुका और उसने हल्की-सी सीटी बजाई। सीटी का जवाब उसे सीटी में मिला और वह अपने साथियो की ओर चल दिया।

नज़ारका लबादे पर लुढका हुआ खर्राटे भर रहा था। येरगुशोव पैर पर पैर पसारे आराम से बैठा था। लुकाश्का को देखते ही वह उसे जगह देने के लिए एक ओर थोडा-सा खिसक गया।

"झाडी में छिपना कितना अच्छा है! सचमुच यह एक अच्छी जगह है," उसने कहा, "क्या तुम चचा को वही छोड आये?"

"मैंने उन्हे जगह दिखा दी है," अपना लवादा फैलाते हुए लुकाश्का ने जवाव दिया, "मगर मैंने कितना वडा सुअर हकाया था, पानी के ठीक नीचे से। मै समझता हूँ वही रहा होगा! तुमने उसकी आवाज़ सुनी होगी?"

"सुनी थी और मैं तुरन्त समझ गया था कि कोई शिकार होगा। मैंने मन में सोच लिया था कि 'लुकाश्का ने किसी जानवर को डरा कर भगा दिया होगा," येरगुशोव अपने चारो ओर लवादा लपेटते हुए वोला, "अव मैं सोऊँगा। जव मुर्गा वोले तव जगा देना। हमें कायदे मे रहना चाहिए। पहले मैं लेटकर थोडी झपकी लूंगा, और तव देखभाल करूँगा, और तुम सो लेना। यही ठीक होगा।"

"मैं सोना नही चाहता," लुकाश्का ने जवाव दिया।

रात अँधेरी थी, गर्म और शान्त। सितारे आकाश के केवल एक ओर ही चमक रहे थे। दूसरी ओर आसमान का अधिकाश एक वृहदाकार काले वादल मे घिरा था जो पहाडो के शिखरो के आगे तक फैला हुआ था। वायु शान्त थी और वादल पहाड से सटा हुआ अपनी झुकी हुई कोरो को आगे वढाता तारो भरे आकाश में गहराई से उभर आया था। सामने की ओर खडा हुआ कज़्ज़ाक तेरेक नदी और उसके पार तक का अन्दाज़ लगा सकता था। परन्तु पीछे नरकटो की कतारे थी जो दोनो ओर तक फैली हुई थी। प्राय अकारण ही नरकट हिलने और एक दूसरे से टकरा टकराकर विशेप प्रकार की आवाज़ें करने लगते। नीचे से देखने पर स्वच्छ आकाश की पृष्ठभूमि मे नरकटो की हिलती हुई टहनियां वृक्षो की परदार शाखाओ की भाँति प्रतीत होती थी। लुकाश्का के पास ही नदी-तट था जहाँ तेज़ लहरें उठ रही थी। कुछ आगे वढकर चमकीला भूरा

जल घूम घूमकर हिलोरे ले रहा था और उठता-गिरता तथा सगीतात्मक ध्वनि उत्पन्न करता हुआ तट से टकरा रहा था। कुछ और आगे, जल का प्रवाह, तट और वादल तीनो ही अभेद्य अन्धकार में विलीन हो गये थे। पानी की सतह पर काली काली परछाइयाँ-सी दिखाई पडती जिनपर निगाह पडते ही कज्ज़ाक की अनुभवी आँखें फौरन वता देती कि वे वडे वडे लट्टे है जो प्रवाह के साथ वढते चले जा रहे है। यदा-कदा जव विजली काले दर्पण की भाँति जल में चमकती तो दूसरी ओर का ढलवाँ किनारा दिखाई दे जाता। रात्रि की सगीतात्मक ध्वनियाँ, नरकटो की सरसराहट, कज्ज़ाको के खर्राटे, मच्छडो की भनभनाहट और जल की कलकल जब-तव दूर पर चलाई गई गोली से, अथवा किनारे की मिट्टी धसकने से हुई पानी की छलछलाहट से, अथवा किसी वडी मछली की छपाक से या जगल में उगने वाली घनी झाडियो में से आती हुई किसी जानवर की खरखराहट से भग हो जाती थी। एक बार तेरेक के किनारे किनारे एक उल्लू उडा, जिसके परो की फडफडाहट कुछ इतनी क्रमवद्ध, कुछ इतनी नियमित थी कि उसमें सगीत-स्वरो के उतार चढाव जैसा आनन्द आ रहा था। वह कज्ज़ाको के सिरो के ठीक ऊपर से घूमता हुआ जगल की ओर उडा, फिर पख फडफडाकर एक पुराने सीधे पेड की ओर वढा और देर तक पत्तो को खडखडा चुकने के वाद एक शाख पर जम गया। पहरा देनेवाला कज्ज़ाक इन सभी अप्रत्याशित ध्वनियो को ध्यानपूर्वक सुनता और कभी कभी चौकन्ना होकर वन्दूक पर हाथ रख लेता।

रात्रि का अधिकाश व्यतीत हो चला था। पश्चिम की ओर वढने वाला काला वादल अव छट चुका था और स्वच्छ तारक-जटित आकाश निकल आया था। पर्वत शिखरो के ऊपर सुनहले चन्द्र की तिरछी कला अरुणाभ होकर चमकने लगी थी। सर्दी भी वढने लगी थी। नज़ारका जगा, कुछ वडवडाया और फिर सो गया। लुकाश्का ऊव चुका था। अव वह

उठ खड़ा हुआ, उसने अपना छोटा चाकू निकाला और अपनी छड़ी नुकीली करने में लग गया। इस समय उसके मस्तिष्क में पहाड़ो पर रहनेवाले चेचेन ही घूम रहे थे। वह सोच रहा था उनके वहादुर वेटो के वारे में जो नदी पार करके इस ओर आते और जिन्हे कज्ज़ाको से कोई डर न लगता। कभी कभी उसके दिमाग में यह वात भी आ जाती कि कही चेचेन इसी समय तो किसी स्थान पर नदी नही पार कर रहे हैं। कई वार वह अपनी छिपने की जगह से वाहर निकला और उसने नदी के किनारे किनारे दूर तक निगाह डाली, परन्तु कुछ दिखाई न दिया। चाँदनी रात के कारण दूसरी ओर के किनारे तथा नदी के जल में कोई विशेप फर्क नहीं लग रहा था। और जव वह नदी अथवा उसके सामने वाले तट की ओर देखता तो उसका ध्यान चेचेनो की ओर नही अपितु इस वात की ओर जाता कि कव वक्त पूरा हो, कव वह अपने साथियो को जगाये और कव घर की राह ले। गाँव का विचार आते ही उसकी कल्पना दुन्या पर केन्द्रित हो गई। वह उसकी नन्ही-सी जान थी—कज्ज़ाक अपनी रखेलियो को इसी नाम से पुकारते थे। दुन्या का ख्याल आते ही उसे परेशानी-सी होने लगी। अव चाँदी-जैसा कोहरा पड़ने लगा था जो पानी के ऊपर शीशे की भाँति चमक रहा था। यह आनेवाले प्रभात का सूचक था। उससे थोड़ी ही दूर पर चीले चे-चे करती हुई पर फड़फड़ा रही थीं। अन्त में, दूर के गाँव से आती हुई मुर्ग़े की 'कुकड़ूँकूँ' उसके कान में पड़ी। उसके वाद दूसरे मुर्गे ने एक लवी वाँग दी और उसके उत्तर में अनेक वाँगें एक दूसरे के पश्चात् सुनाई देने लगी।

"उन्हें जगाने का वक्त हो चुका," लुकाश्का ने वन्दूक़ की नली साफ करते हुए सोचा। उसकी आँखें भारी हो रही थीं। वह अपने साथियो की ओर मुड़ा और मुश्किल से यह समझ पाया था कि कौनसी टाँगें किसकी हैं कि उसे लगा मानो उसने तेरेक के दूसरी ओर से छपाक जैसी

कोई आवाज सुनी हो। उसने पहाड़ियों के उस पार क्षितिज की ओर देखा जहाँ चन्द्रिका के घूघट से ऊषा झाँकने लगी थी। उसने तेरेक के दूसरे तट पर भी निगाह दौडाई। अब धारा के सहारे सहारे बढनेवाला लट्ठा साफ़ दिखने लगा था। एक क्षण के लिए उसे ऐसा लगा कि मै वह रहा हूँ परन्तु लट्ठा ठहरा है। उसने फिर बाहर देखा। उसका ध्यान एक बडे लट्ठे की ओर आकृष्ट हुआ जिसमें एक शाखा निकली-सी लग रही थी। यह लट्ठा सीधे धारा के बीच में होकर यक विचित्र ढग से बढ रहा था। न तो वह लुढकता-पुढकता था और न पानी में कोई चक्कर ही लगाता था। स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि वह धारा के साथ नही बढ रहा है अपितु छिछले पानी की दिशा में नदी पार कर रहा है। लुकाश्का ने गर्दन उठाई और लट्ठे पर दृष्टि जमा दी। लट्ठा छिछली तरफ बह रहा था। कभी वह रुकता और कभी विचित्र ढग से आगे बढने लगता। लुकाश्का को लगा जैसे उसने नीचे से निकला हुआ एक हाथ देखा हो।

"मान लो मै स्वय एक अब्रेक को मार गिराऊँ," उसने विचार किया, और तुरन्त ही अपनी बन्दूक उतारी, उसे एक लकडी के सहारे रखा और निशाना बाँधकर उसे तान दिया। उसकी उगलियाँ बन्दूक के घोडे पर थी। वह साँस रोके मक्खी में से निशाना साध रहा था। उसकी आँखें अधेरे में कुछ ढूँढ रही थी।

"मैं उन्हे नही जगाऊँगा," उसने सोचा। परन्तु उसका हृदय इतने जोर से धडकने लगा कि उसे घबडाहट होने लगी। उसके कान नदी की ओर लगे थे। सहसा लट्ठे ने डुबकी लगाई। अब वह धारा को काटता हुआ उसी की ओर बढ रहा था।

"मुझे चूकना नही चाहिए " उसने सोचा। उसे हल्की चाँदनी में तैरते हुए उस लट्ठे के सामने एक तातार का सिर दिखाई पड रहा था। उसने सीधे सिर पर निशाना बाँधा। सिर उसे बहुत नजदीक लगा, उसकी

वन्दूक के ठीक दूसरे सिरे पर। उसने एक क्षण के लिए आँखें ऊपर उठाईं। "बिल्कुल ठीक, अब्रेक ही है!" वह प्रसन्न था। सहसा अपने घुटनों पर बैठकर वह फिर निशाना साधने लगा। अब निशाना उसकी वन्दूक के दूसरे सिरे पर सध चुका था। वह अपने लक्ष्य को अच्छी तरह देखता रहा। उसने आवाज़ लगाई "पिता और पुत्र के नाम"—उसने बचपन में सीखी हुई यह बात एक विचित्र कज्ज़ाकी ढग से कही—और घोडा दवा दिया। एक क्षण के लिए नरकटों और जल दोनों ही में प्रकाश फैला और वन्दूक की आवाज़ नदी के पार बहुत दूर तक गूंज गई। अब लट्ठा इस ओर तैरकर आता हुआ नहीं लग रहा था। वह धारा के साथ लुढक-पुढक रहा था।

"पकडो, पकडो, मैं कहता हूँ!" अपनी वन्दूक ढूंढते तथा उस लट्ठे के नीचे से, जहाँ वह लेटा था, सिर उठाते हुए येरगुशोव चिल्लाया।

"वकवास वन्द कर, शैतान!" लुकाश्का दाँत पीसते हुए फुसफुसाया, "अब्रेक!"

"तुमने किसपर गोली चलाई, लुकाश्का? वह कौन था?" नज़ारका ने पूछा।

लुकाश्का मौन रहा। वह वन्दूक में गोलियाँ भर रहा था और तैरते हुए लट्ठे को देखता जा रहा था। थोडी दूर आगे वह एक रेतीले किनारे पर रुका और उसके पीछे से कोई बहुत वडी चीज निकलकर पानी में गिरती हुई दिखाई दी।

"तुमने किसपर गोली चलाई? बोलते क्यों नहीं?" कज्ज़ाकों ने फिर पूछा।

"कह तो रहा हूँ, अब्रेक!" लुकाश्का ने कहा।

"ऊल-जलूल मत बको! वन्दूक अपने आप तो नहीं दग गई?"

"मैंने एक अब्रेक मारा है, हाँ हाँ, अब्रेक मारा है!" पैरो पर उछलते हुए उत्तेजनापूर्ण आवाज़ में लुकाश्का ने कहा। "एक आदमी तैरता हुआ आ रहा था " उसने रेतीले किनारे की ओर इशारा करते हुए कहा, "मैंने उसे मार डाला। वहाँ देखो।"

"यही कहानी सुनानी रह गई थी!" आँखें मलते हुए येरगुशोव ने फिर पूछा।

"क्या? मैं कहता हूँ। वहाँ देखो!" लुकाश्का बोला और उसने येरगुशोव के कधो को इतनी ज़ोर से झकझोरा और उसे इतनी ताकत से अपनी ओर खीचा कि बेचारा मिमियाने लगा।

उसने उधर देखा जिधर लुकाश्का ने इशारा किया था। मृत शरीर देखकर उसकी बोली के चढाव-उतार में भी अन्तर आ गया।

"अरे बाप रे! परन्तु अभी और भी बहुत से आयेंगे! विश्वास करो!" उसने धीरे से कहा और अपनी बन्दूक सभालने लगा।

"वह अवश्य एक स्काउट था और इसी ओर आ रहा था। मैं कहता हूँ या तो दूसरे लोग पहले से ही यहाँ हैं या उस ओर बहुत दूर नही हैं। मेरा विश्वास करो!"

लुकाश्का अपनी पेटी ढीली कर रहा था और अपना चेरकेसियन कोट उतारने जा रहा था।

"क्या कर रहे हो, बेवकूफ?" येरगुशोव चिल्लाया। "अगर यहाँ शेखी बघारी तो कुछ हाथ न लगेगा। शायद जान से भी हाथ धोना पडे और बेकार ही! मेरी बात मानो! अगर तुमने उसे मार ही डाला है तो वह भागेगा नही। मेरी बन्दूक के लिए कुछ बारूद तो देना? है या नही? नज़ारका! तुम घेरे को लौट जाओ। घबडाओ मत। परन्तु किनारे किनारे मत जाना वरना जान से हाथ धोना पडेगा, मेरा विश्वास करो।"

"अकेले जाने के लिए मैं ही रह गया हूँ क्या! खुद ही जाओ न!" गुस्से में आकर नज़ारका बोला।

लुकाश्का ने अपना कोट उतार दिया और किनारे की ओर जाने लगा।

"मैं कहता हूँ वहाँ मत जाओ!" बन्दूक ठीक करते हुए येरगुशोव बोला, "देखो वह हिल-डुल नही रहा है। मै देख सकता हूँ। यह सुबह का वक्त है। जब तक लोग घेरे से नही आ जाते तब तक यही इन्तज़ार करो। तुम लौट जाओ नजारका! तुम डर गये हो। डरने की कोई बात नही, मै कहता हूँ।"

"लुका, भाई लुकाश्का! मुझे बताओ तुमने यह सब कैसे किया, कैसे किया?" नज़ारका ने पूछा।

लुकाश्का ने पानी में घुसने का अपना इरादा बदल दिया।

"तुम लोग तुरन्त घेरे में जाओ। यहाँ की निगरानी मैं रखूंगा। कज़्ज़ाको से कहना कि सहायता के लिए कुछ लोगो को फौरन भेजें। अगर अब्रेक इस तरफ है तो उन्हे पकडना होगा।"

"यही तो मैं भी कह रहा हूँ। वे भाग जायेंगे," येरगुशोव ने उठते हुए कहा, "उन्हे ज़रूर पकडना चाहिए!"

येरगुशोव और नज़ारका उठ खडे हुए और सलीब का निशान बनाकर घेरे के लिए चलने को तैयार हो गये, नदी के किनारे किनारे नही वरन् झाड-झखाडो से होते हुए जगल के एक रास्ते से।

"*ध्यान रहे, लुकाश्का, यहाँ से हिलना-डुलना मत*। वे यहाँ तुम्हे चोट पहुँचा सकते हैं। इसलिए ज़रा सावधानी से देखभाल रखना!" जाते हुए येरगुशोव बोला।

"तुम जाओ, मैं सब समझता हूँ," लुकाश्का बडबडाया और अपनी बन्दूक की देखभाल कर चुकने के बाद फिर लट्ठे के पीछे दुबक रहा।

लुकाश्का अकेला रह गया था। वह नदी की छिछली ओर देखता रहा और उसके कान कज्ज़ाको की आहट की तरफ लगे रहे। परन्तु घेरा कुछ दूर था और उसके सयम के बाँध टूट रहे थे। वह यही सोचता रहा कि अब वे दूसरे अब्रेक, जो मेरी गोली से मारे गए आदमी के साथ थे, ज़रूर भाग जायेंगे। उसे भागनेवाले अब्रेको पर वैसा ही गुस्सा आ रहा था जैसा कि कल शाम उस सुअर पर आया था जो हाथ से निकल गया था। उसने चारो तरफ और सामने किनारे की ओर देखा। प्रत्येक क्षण उसे किसी न किसी व्यक्ति के दिखाई पड जाने की आशा बधती और वह अपनी वन्दूक़ पर हाथ रख देता और लगता जैसे गोली चला देगा। यह विचार तो कभी उसके दिमाग में भी न आया कि स्वय वह भी गोली का निशाना वन सकता है।

६

प्रकाश वढ रहा था। अब चेचेन का मृत शरीर छिछले जल में उतराता हुआ साफ दिखाई पड रहा था। सहसा समीप के नरकटो में सरसराहट सुनाई दी। लुका ने किसी की पगध्वनि सुनी और उसे नरकटो की पत्तियाँ हिलती-डुलती दिखने लगी। उसने अपनी वन्दूक पर हाथ रखा और वुदवुदा उठा "पिता और पुत्र के नाम"। और गोली छूट गई। पैरो की आवाज़ शान्त हो गई।

"अरे भाई कज्ज़ाको! अपने ही चचा को तो न मारो।" एक शान्त और गहरी आवाज़ लुकाश्का के कानो में पडी और नरकटो को हटाते हटाते चचा येरोश्का वरामद हो गया।

"मैंने तो तुम्हे मार ही डाला था चचा। भगवान कसम मार डाला था!" लुकाश्का वोला।

"तुमने किसपर गोली चलाई थी ?" वढे ने प्रश्न किया। उसकी मेघ-गम्भीर आवाज़ जगलो में और नदी के उस पार तक व्याप्त हो गई। ऐसा लग रहा था कि रात्रि की नीरवता सहसा भग हो गई है और प्रत्येक वस्तु साफ नज़र आने लगी है।

"चचा, वहाँ तुमने कुछ नही देखा। मैंने एक जानवर मारा है," लुकाश्का ने उठते और वन्दूक का घोडा हाथ से छोडते हुए कहा।

बूढा लाश की तरफ घूर रहा था। लाश अब साफ साफ दिखाई पड रही थी। तेरेक का जल उसे चारो ओर से लपेटे हुए था।

"वह अपनी पीठ पर लट्ठा लिये तैर रहा था। मैंने उसे देख लिया और फिर वहाँ देखो। वह नीला पतलून पहने है, वन्दूक लिये है, मैं समझता हूँ क्या तुम देख रहे हो ?" लुका वोला।

"वेशक देख रहा हूँ!" बूढे ने क्रोध में आकर कहा और उसका मुँह गम्भीर और कर्कश हो गया, "तुमने एक जिगीत को मार डाला है," उसने खेद से कहा।

"मैं यहाँ वैठा था कि सहसा मुझे दूसरी ओर कोई काली काली चीज दिखाई दी। जब वह वहीं पर थी तभी मैंने उसे देख लिया था। साफ समझ में आ रहा था कि कोई आदमी आया और नदी मे कूदा। 'विचित्र वात है,' मैंने सोचा। और तभी एक अच्छा-खासा वडा-सा लट्ठा तैरता हुआ आता है, धारा के साथ नही वरन् उसे काटता हुआ। और मै क्या देखता हूँ कि उसके नीचे मे एक सिर झांक रहा है। बडी विचित्र वात है! मैंने नरकटो में से वाहर की ओर देखा। मुझे कुछ दिखाई नही दिया। तव मै उठ खडा हुआ—उस वदमाश ने मेरी आहट जरूर सुनी होगी—वह छिछले में गया और वहाँ से देखने लगा। जैसे ही उसने ज़मीन पर पाँव रखा और चारो ओर निगाह डाली कि मैंने मन ही मन कहा 'नही, वच्चू, तुम वच कर नहीं निकल सकते! भाग भी नहीं सकते!

(और मुझे ऐसा लगा मानो मेरा दम घुटा जा रहा है!) मैंने अपनी वन्दूक सभाली परन्तु मै हिला-डुला नही, वस वाहर की तरफ देखता रहा। उसने कुछ देर प्रतीक्षा की और फिर तैरने लगा और जव वह चाँदनी की तरफ आया तो मै उसकी पूरी पीठ देख रहा था। 'पिता और पुत्र तथा पवित्र आत्मा के नाम में' और धुएँ में से मैंने देखा कि वह तडप रहा था। वह कराहा था, कम से कम मुझे ऐसा ही लग रहा था। 'ओफ', मैंने सोचा, शुक्र है भगवान का। मैंने उसे मार डाला!' और जव वह रेतीले तट की ओर वह रहा था उस समय मैंने उसे साफ साफ देखा। उसने उठने की कोशिश की परन्तु उठ न सका। थोडी देर तक वह तडपा और फिर शान्त हो गया। मैंने सव कुछ देखा। देखो वह हिल-डुल नही रहा है। वह जरूर मर गया होगा। वाकी लोग घेरे तक जा चुके है इस ख्याल से कि दूसरे अब्रेक भाग न जाये!"

"इस प्रकार तुम उन्हे नही पकड सकोगे," वूढे ने कहा, "मेरे वच्चे! अव वे तुमसे वहुत दूर जा चुके है, वहुत दूर " और फिर जैसे उदास होकर उसने अपना सिर हिलाया।

इसी समय उन्हे टूटती हुई झाडियो और कज्जाको की तेज़ आवाज़ें सुनाई दी। ये लोग नदी के किनारे किनारे घोडो पर या पैदल आ रहे थे।

"तुम लोग नाव लाये?" लुकाश्का चिल्लाया।

"कितने वहादुर हो लुका। आओ किनारे चले!" एक कज्जाक चिल्लाया।

नाव की प्रतीक्षा किये विना लुकाश्का कपडे उतारने लगा। वह अपने शिकार की ओर देखता जा रहा था।

"जरा ठहरो। नज़ारका नाव ला रहा है!" कारपोरल चिल्लाया।

"अरे वेवकूफ! कौन जाने वह जिन्दा ही हो और वन रहा

हो। अपने साथ कटार ले लो!" दूसरा कज्ज़ाक तेज़ आवाज़ में चिल्लाया।

"बको मत!" लुका चीख़ पडा। उसने अपना पतलून तथा बाक़ी कपडे उतार डाले और सलीब का निशान बनाकर छलांग मारते हुए नदी में कूद पडा। वह दोनो हाथों से पानी हटाता और तैरता हुआ आगे बढने लगा। कभी कभी वह गहरी साँस लेता और फिर तैरना आरम्भ कर देता। वह तेरेक के प्रवाह को काटता हुआ छिछले की ओर बढ रहा था। कज्ज़ाकों की भीड किनारे पर जमा थी और वे सब ज़ोर ज़ोर से बाते कर रहे थे। तीन घुडसवार गश्त लगा रहे थे। इस समय तक मोड पर आती हुई नाव दिखाई पडने लगी थी। लुकाश्का रेतीले तट पर खडा होकर अब्रेक के शरीर पर झुक गया। फिर उसने उसे दो बार हिलाया-डुलाया और तेज़ आवाज़ में कहने लगा "मर चुका है!"

चेचेन के सिर में गोली लगी थी। वह नीला पतलून, एक कमीज़ तथा एक चेरकेसियन कोट पहने था और उसकी कमर में एक बन्दूक़, और एक कटार बधी थी। इन सबके अतिरिक्त उसी कमर में एक बडी-सी शाख भी बधी थी जिसे देखकर पहले पहले लुकाश्का को भ्रम हुआ था।

"कितना बडा शिकार मारा है!" एक कज्ज़ाक चिल्लाया। मृत शरीर नाव में से हटाया गया और उसे घास पर नदी के किनारे रख दिया गया। सारे कज्ज़ाक घेरा बनाये लाश के चारो ओर खडे तमाशा देख रहे थे।

"कितना पीला पड गया है वह!" दूसरा बोला।

"हमारे अन्य साथी कहाँ कहाँ ढूंढने गये है? मैं समझता हूँ बाक़ी लोग दूसरे किनारे पर होगे। यदि यह स्काउट न होता तो इस प्रकार तैरकर न चला आता। अकेले तैरकर आने का और क्या मतलब था?" तीसरे कज्ज़ाक ने कहा।

"दूसरो से पहले अपनी जान जोखिम में डालनेवाला यही एक बहादुर निकला, एक सच्चा जिगीत," किनारे पर सर्दी के कारण काँपते तथा गीले कपडो को निचोड़ते हुए लुकाश्का ने व्यग्य किया, "उसकी दाढी रगी हुई है और कटी हुई भी।"

"उसने अपना कोट एक थैले में टाँग रखा था ताकि उसे तैरने में कठिनाई न हो," किसी ने कहा।

"लुकाश्का, यहाँ देखो," कारपोरल ने कहा। उसने मृत व्यक्ति की कटार और बन्दूक अपने हाथ में ले ली थी।

"कटार अपने पास रख लो और कोट भी। परन्तु मै तुम्हे बन्दूक के लिए चाँदी के तीन रूबल दूँगा। तुम खुद देखो बैरेल कोई खास अच्छा तो है नही," नली में फूंक मारते हुए वह बोला, "मैं तो इसे केवल स्मृति-चिन्ह के रूप में चाहता हूँ।"

लुकाश्का ने कोई उत्तर न दिया। इस प्रकार की याचना से उसे क्रोध हो आया था परन्तु वह जानता था कि उसे करना वही होगा जो कारपोरल चाहता था।

"शैतान कही का," गुस्से में चेचेन का कोट एक ओर फेंकते हुए वह बोला, "अगर कोट ही होता तो कम से कम ढग का तो होता। यह तो चिथडा है, चिथडा।"

"इस समय लकडी का इन्तज़ाम पहले होना चाहिए," एक कज़्ज़ाक ने कहा।

"मोसेव, मै घर जाऊँगा," लुकाश्का ने कहा। वह अपनी परेशानी भूल चुका था और चाहता था कि अधिकारी को तोहफा देने के बदले मे उससे कुछ तो लाभ उठाये।

"बहुत ठीक, तुम जा सकते हो।"

"लाश घेरे में ले जाओ, छोकरो," बन्दूक की जाँच-पड़ताल करते हुए कारपोरल बोला, "और धूप से बचाये रखने के लिए उसपर

साये का कोई इन्तज़ाम ज़रूर कर देना। हो सकता है उसकी वापसी के लिए पहाड़ो से कोई मोटी रकम भेजी जाय।"

"इस समय गर्मी नही है," किसी ने कहा।

"अगर कोई सियार उसे खा भी जाय तो भी क्या? बोलो, ठीक कहता हूँ न?" दूसरे कज़्ज़ाक ने कहा।

"हम सब उसपर निगरानी रखेंगे। उसे नुचवा डालना ठीक नही। मान लो वे लोग उसे खरीदने ही आ जाय।"

"खैर, लुकाश्का, तुम्हारी क्या राय है? तुम्हे इस खुशी में अपने साथियो को डटकर शराब पिलानी चाहिए," कारपोरल बोला। वह प्रसन्न था।

"बेशक! कायदा तो यही है," कज़्ज़ाक एक स्वर से बोले, "तुम्ही देखो कैसी सिकन्दर तकदीर लेकर आये हो। अभी मूँछें तक तो मसियाई नही और शिकार कर मारा अब्रेक का।"

"लो कटार और कोट दोनो ही खरीद लो। लालची मत बनो। मै पतलून भी दे दूंगा, बस," लुकाश्का ने कहा, "पतलून मुझे बहुत तग होती है। सीक-सलाई जैसा तो आदमी था।"

एक ने एक रूबल में कोट और दूसरे ने शराब की दो बाल्टिया में कटार खरीद ली।

"दोस्तो, पियो! मै तुम्हे पूरी एक बालटी पिलाऊँगा और तुम्हारे लिए गाँव मे खरीद कर लाऊँगा," लुकाश्का बोला।

"और पतलून काटकर लौंडियो के लिए रूमाल बनाऊँगा," नज़ारका ने चोट की।

कज़्ज़ाक हँस पडे।

"हँसी-मज़ाक हो चुका," कारपोरल बोला, "अब लाश ले जाओ। क्या तुम इस निकम्मी चीज़ को झोपडी के पास रखने जा रहे हो?"

"खडे खडे मुँह क्या ताक रहे हो? ले भी जाओ, मेरे मिट्टी के शेरो!" लुकाश्का ने आज्ञा-सी देते हुए कज्जाको से कहा। उन्होने अनिच्छा से लाश उठाई और उसका उसी प्रकार हुक्म माना मानो वही उनका अफसर हो। थोडी दूर तक लाश घसीट चुकने के पश्चात् उन्होने उसकी टाँगें जमीन में गिरा दी। अब कज्जाक उसे छोडकर अलग खडे हो गये। नज़ारका वढा और उसने लाश का एक ओर लुढका हुआ सिर सीधा कर दिया। उसके सिर का घाव तथा चेहरा साफ दिख रहा था।

"देखो तो गोली माथा पार करती हुई कैसी साफ निकल गई है। लाश विगडेगी नही। उसके हकदार उसे देखते ही पहचान लेगे," उसने कहा।

किसी ने कोई उत्तर न दिया। कज्जाक एक वार फिर मौन हो गये।

अब सूर्य काफी चढ आया था। उसकी किरणें ओस में डूवी हुई हरियाली पर विखर रही थी। पास ही के जगल में तेरेक कलकल करती हुई वह रही थी, पक्षी परस्पर किलोले करते हुए प्रातःकाल का स्वागत कर रहे थे। कज्जाक लाश को चारो ओर से घेरे शान्त और मौन खडे उसकी ओर ताक रहे थे। लाश का रग भूरा था। शरीर पर उस गीले नीले पतलून के अलावा और कुछ न था जो दुवले-पतले पेट पर कमरवन्द से वधी थी। आदमी सुन्दर और सुगढ था। उसकी भरी-पूरी भुजाएँ शिथिल पड गई थी। ऐसा लग रहा था कि सिर अभी हाल ही में मुंडाया गया है। सिर के एक ओर घाव था जो अव सूख चुका था। उसका चिकना और लाल माथा हाल के मुंडे सिर के नीले भाग की तुलना में दूसरा ही प्रतीत हो रहा था। उसकी आँखें पथरा चुकी थी और जडवत् पुतलियाँ ऐसी लग रही थी मानो

टकटकी लगाकर सभी कुछ देख रही हो। लाल ग्रौर मुंडी हुई मूछों के नीचे सुन्दर ग्रोठ थे जो हँसी की मुद्रा में एक ग्रोर से दूसरी ग्रोर तक खिच गये थे। पतली कलाइयो पर छोटे छोटे लाल वाल दिखाई पड रहे थे, उगलियाँ एक ग्रोर मुडी थी ग्रौर नाखून लाल रग में रँगे थे।

लुकाश्का ने ग्रभी तक कपडे नही पहने थे। वह भीगा खडा था। उसकी गरदन लाल थी ग्रौर ग्रांखो में पहले से ग्रधिक चमक थी। उसके चौडे चौडे गालो में कम्पन हो रहा था ग्रौर हृष्ट-पुष्ट शरीर से क्वचित् दृश्यमान धूम उठकर प्रात कालीन नव समीर से मिल रहा था।

"वह भी ग्रादमी था!" प्रत्यक्षत लाश की प्रशसा करते हुए वह वोला।

"जी हाँ, यदि तुम उसके हत्थे पड जाते तो वह ज़रा भी दया न करता," एक कज्ज़ाक वोल उठा।

ग्रव कज्ज़ाको का मौन टूट रहा था। वे शोर मचाने तथा परस्पर वातचीत करने में लग गये। दो तो सायवान वनाने के लिए लकडी काटने चले गये ग्रौर वाकी घेरे की तरफ खिसक ग्राये। लुकाश्का तथा नज़ारका गाँव जाने की तैयारी करने के लिए भागे।

ग्राधे घटे वाद लुकाश्का ग्रौर नज़ारका घर की ग्रोर चल पडे। रास्ते में उनकी वाते खत्म होने ही न ग्रा रही थी। वे गाँव ग्रौर तेरेक के वीच के जगल से होकर प्राय दौडे चले जा रहे थे।

"ग्रच्छी तरह समझ लो। उसे यह न वताना कि मैंने तुम्हें भेजा है। सिर्फ वहाँ जाग्रो ग्रौर पता चलाग्रो कि उसका पति घर पर है या नही।" लुकाश्का ग्रपनी तीखी ग्रावाज़ में कहता जा रहा था।

"और मैं यामका भी जाऊँगा," नज़ारका बोला, "वहाँ रगरलियाँ रहेगी? कहो ठीक है न?"

"अगर आज भी आनन्द न मनाया तो क्या आकवत में मनायेंगे?" लुकाश्का ने उत्तर दिया।

गाँव पहुँचकर उन्होने इतनी पी कि शाम तक धुत्त पड़े रहे।

१०

ऊपर जिन घटनाओ का वर्णन किया गया है उनमे तीसरे दिन काकेशियाई सेना के दो दस्ते नवोमलिन्स्काया के कज्ज़ाक गाँव में आये। घोडो की ज़ीने उतार दी गईं और दस्तो की गाडियाँ एक चौक में खडी कर दी गईं। रसोइयो ने ज़मीन में एक बडा-सा गड्ढा खोदकर एक चूल्हा बना लिया और कुछ अहातो से (जहाँ ढेरो ईंधन जमाकर लिया गया था) लकडियाँ बटोर बटोरकर उसमें आग लगा दी। अब वे भोजन पकाने में जुट हुए थे। सारजेंट हाज़िरी ले रहे थे। सेवा-दल के लोग घोडे बाँधने के लिए खूटे गाड रहे थे और क्वार्टरमास्टर सडको पर इस आज़ादी से घूम रहे थे जैसे अपने घर में हो। वे अधिकारियो और सैनिको को उनके क्वार्टर दिखा रहे थे।

एक पंक्ति में गोले-बारूद के हरे हरे सन्दूक रखे थे। वही दस्तो की गाडियाँ तथा घोडे थे और पास ही बडी बडी कडाहियो में दलिया पक रहा था। वहाँ एक कप्तान, एक लेफ्टीनेन्ट और एक सारजेंट-मेजर, ओनिसिम मिखाइलोविच, था। और चूंकि यह सब एक कज्ज़ाक गाँव में हो रहा था, जहाँ, जैसी कि सूचना मिली थी, दस्ते के सैनिको को अपने अपने क्वार्टरो मे रहने के आदेश मिल चुके थे, इसीलिए सभी को ऐसा लग रहा था मानो वे अपने अपने घरो में हो।

परन्तु उन्होंने वही क्यो अड्डा जमाया? वे कज्ज़ाक कौन थे और क्या वे यह चाहते थे कि सेना वही रहे, और क्या वे पुराने विश्वासवादी थे या नही—ये सब ऐसी बाते थी जिनका कोई अर्थ न था। सैनिक अपनी ड्यूटी पर से होकर आये थे, थके-मादे और धूल-धूसरित। अतएव शोर-गुल मचाते हुए तथा वे कही बस जाने की फिराक में मधुमक्खियो की तरह सडको और मैदानो मे फैल गये और, बिना इस बात पर ध्यान दिये कि कज्ज़ाक बुरा मानेंगे, गपशप करते तथा बन्दूकें खटखटाते हुए दो-दो तीन-तीन की टोली में झोपडो में घुस गये। वहाँ उन्होंने गठरियाँ खोली और औरतो से हँसी-मज़ाक शुरू कर दिया। दलिया के देग के पास ढेरो सैनिक जम गये। दाँतो मे छोटे छोटे पाइप दबाये कभी वे उस धुएँ की तरफ देखते जो कडाही मे उठकर सीधा सफेद आसमान की ओर जाता, और कभी शिविरो के उस अलाव की ओर जिसकी लौ पिघले हुए शीशे की भाँति कभी इधर हिलती, कभी उधर। वे कज्ज़ाक नर-नारियो से भी परिहास करते और उनका मज़ाक उडाते, क्योकि उनका रहन-सहन रूसियो जैसा न था। सभी अहातो में सैनिक भर गये थे जिनकी हँसी वातावरण में गूँज रही थी। घरो मे से उन कज्ज़ाक स्त्रियो की भी त्रस्त और तेज चिल्लाहटें सुनाई पड रही थी जो इन सैनिको से अपने मकानो की रक्षा करने में व्यस्त थी और उन्हे पानी अथवा खाना बनाने के बरतन देने मे इनकार कर रही थी। छोटे छोटे लडके-लडकियाँ एक दूसरे से अथवा अपनी माताओं से चिपटे हुए सैनिको की कारस्तानियाँ देख रहे थे (ऐसा उन्होंने उसके पहले कभी नही देखा था)। वे डर गये थे और उनसे दूर रहने के लिए इधर-उधर भागे भागे फिर रहे थे। पुराने कज्ज़ाको के मुँह पर मुर्दनी छाई हुई थी। वे अपने अपने घरो के इर्द-गिर्द मिट्टी के चबूतरो पर बैठे बैठे सैनिको की हरकते ऐसे देख

रहे थे मानो कुछ समझ ही न पा रहे हो, अथवा इस सबका क्या नतीजा होगा इसका उन्हे कोई ख्याल न था।

ओलेनिन एक कैडेट के रूप में केवल तीन महीने पहले ही सेना में भर्ती हुआ था। वह गाँव के सबसे अच्छे घरो में से एक में ठहराया गया था। यह कार्नेट ईल्या वसील्येविच, अर्थात् श्रीमती उलित्का, का मकान था।

"ईश्वर जाने, कैसा होगा दिमीत्री अन्द्रेयेविच," हाँफते हुए वन्यूशा ने ओलेनिन से कहा। ओलेनिन चेरकेसियन कोट पहने एक कवर्दा घोडे पर सवार था। यह घोडा उसने ग्रोज़नया में खरीदा था। इस समय जब वह पूरे पाँच घटो की चलाई के बाद अपने लिए निश्चित क्वार्टर में पहुँचा तो उसका उत्साह बढ गया था और वह खुश नज़र आ रहा था।

"क्यो, क्या बात है?" उसने पूछा। वह अपने घोडे को पुचकारता जा रहा था और थके, चिन्तित तथा परेशान वन्यूशा की ओर देख रहा था। वन्यूशा सामान की गाडियो के साथ आया था और पेटियाँ खोल रहा था।

सम्प्रति ओलेनिन एक दूसरा ही आदमी लग रहा था। सफाचट हजामत और बाहर निकले हुए ओठो और ठुड्डी के बजाय जवानो-जैसी मूछें और छोटी-सी दाढी। रात रात भर जागते रहने के कारण उसके पीले पडे हुए चेहरे-मोहरे के स्थान पर अब उसके गाल, उसका माथा और उसके कानो के पीछे की खाल, धूप में रहते रहते लाल हो गई थी। काले नये लूम कोट की जगह अब वह ढेरो चुन्नटवाला एक मैला-सा चेरकेसियन कोट पहने था। उसके कन्धे पर बन्दूक थी। तुरन्त लोहा किये हुए कलफदार कालर की जगह उसके गले में रेशमी बेशमेत का एक लाल फीता बधा था। यद्यपि उसकी पोशाक चेरकेसियन थी

फिर भी उसके पहनने का ढग निराला था जिसे देखकर कोई भी कह सकता था कि वह रूसी है, जिगीत नही। वात यही थी यद्यपि सही नही थी। परन्तु, इन सवके होते हुए भी, देखनेवाले कह मकते थे कि वह स्वस्थ है, खुश है और उसे आत्मसतोष है।

"हाँ तुम्हे विचित्र ज़रूर लगता होगा," वन्यूशा वोला, "परन्तु ज़रा इन लोगो से खुद वातचीत करके तो देखो। वे तुमसे वात न करेंगे वल्कि तुम्हारी मुखालिफत करेंगे। तुम उनसे एक वात भी नही कहला सकते!" दहलीज़ पर वाल्टी फेंकते हुए वन्यूशा ने कहा, "कुछ भी हो वे रूसी-जैसे तो नही लगते।"

"तुम्हे गाँव के मुखिया से कहना चाहिए।"

"लेकिन मुझे क्या मालूम वह कहाँ रहता है?" उसने चिढी हुई आवाज़ में कहा।

"मगर किसने तुम्हे इतना घवडा दिया है?" चारो ओर निगाह डालते हुए ओलेनिन ने पूछा।

"शैतान ही जाने! हुँह। यहाँ कोई असली मालिक नही। लोगो का कहना है कि वह किमी 'क्रिगा'* में गया है। और वह वुढिया! वह तो पूरी चुडैल है। हे भगवान रक्षा करो, रक्षा करो!" सिर प हाथ रखकर वन्यूशा वोला, "मैं नहीं जानता कि हम यहाँ कैसे रहेंगे। मुझे यकीन है कि ये लोग तातारो मे भी गये-वीते हैं, और कहते हैं अपने को ईसाई! तातार वुरा जरूर है परन्तु होता उदार है। 'क्रिगा गया है', हुँह। उनका यह 'क्रिगा' क्या वला है मैं नही जानता," वन्यूशा वोला और उसने दूसरी ओर मुँह फेर लिया।

---

* नदी के किनारे पर एक स्थान जिसे मछली मारने के लिए चारो ओर से घेर दिया जाता है।

"ये घर वसे भी तो नही जैसे हमारे यहाँ नौकरो के होते हैं," विना घोडे से उतरे हुए ओलेनिन ने कहा।

"क्या मैं आपका घोडा ले सकता हूँ?" वन्यूशा ने प्रश्न किया। स्पष्ट था कि वह इस नये वातावरण से घबडा उठा था। परन्तु उसने सब कुछ भाग्य के भरोसे छोड रखा था।

"तातार ज्यादा उदार है, क्यो वन्यूशा?" ओलेनिन ने घोडे से उतरते तथा ज़ीन थपथपाते हुए कहा।

"आप हँस रहे हैं। आप समझते हैं यह मज़ाक है?" वन्यूशा क्रोध में वडवडा रहा था।

"जाने भी दो! नाराज़ न हो वन्यूशा," ओलेनिन ने उत्तर दिया। वह अभी तक मुस्करा रहा था। "थोडा ठहरो। मैं अन्दर जाऊँगा और घर के लोगो से वाते करूँगा। देखना, मैं सब ठीक कर लूँगा। तुम्हें पता भी है यहाँ हम कितने प्रसन्न और हँसी-खुशी से रहेगे। वस घवडाना भर मत।"

वन्यूशा ने कोई जवाव न दिया। उसने आँखें तरेर कर अपने मालिक को घृणा से देखा और सिर हिला दिया। सच वात तो यह थी कि वन्यूशा ओलेनिन को सिर्फ मालिक और ओलेनिन उसे सिर्फ नौकर समझता था। यदि कोई उनमें से किसी से भी यह कह देता कि वे मित्र हैं तो दोनो ही को आश्चर्य होता। परन्तु अनजाने दोनो ही एक दूसरे के मित्र थे। वन्यूशा अपने मालिक के घर पहले-पहल उस समय आया था जव वह ग्यारह वर्ष का था। उस समय ओलेनिन की भी कोई इतनी ही उम्र रही होगी। जव ओलेनिन पन्द्रह वर्ष का था तो उसने वन्यूशा को पढाया भी था। विशेष रूप से ओलेनिन ने वन्यूशा को फ्रेंच सिखाई थी। वन्यूशा को अपनी फ्रेंच पर गर्व था। जव वह मौज में आता तो फ्रेंच शब्दो का ही

इस्तेमाल किया करता और ऐसा करते समय बेवकूफों जैसी हँसी हँस देता।

ओलेनिन दालान की सीढियों तक दौड गया और धक्का देकर उसने मकान का दरवाज़ा खोल दिया। मर्यान्का उस समय एक गुलाबी फ्राक में थी वैसी ही फ्राक में जैसी कज़्ज़ाक स्त्रियाँ प्राय घरों में पहनती हैं। वह डरकर दरवाज़े से अन्दर की ओर भागी और दीवाल के सहारे खडे होकर उसने मुँह का निचला भाग अपनी चौडी चौडी आस्तीनों से ढक लिया। ओलेनिन ने दरवाज़ा पूरा खोल दिया और गलियारे के धुंधलके में उसे युवा कज़्ज़ाक सुन्दरी की एक लम्बी सुगढ आकृति दिखाई दे गयी। युवावस्था की चचलता और उत्सुकता के कारण उसने अनायास उस सुन्दरी के सुअगों पर दृष्टि डाली और उसकी गुलाबी फ्राक में से झाँकते हुए यौवन को देखकर मन्त्रमुग्ध रह गया। सुन्दरी की सलोनी काली काली आँखें बाल सुलभ उत्सुकता और भय से उसे देखती ही रह गई।

"यही है वह," ओलेनिन ने सोचा। "परन्तु उसकी जैसी और भी तो बहुत-सी यही होंगी," तुरन्त उसे ख्याल आया और उसने भीतरी दरवाज़ा खोल दिया।

बूढी श्रीमती उलित्का उस समय एक घरेलू फ्राक पहने, झुकी हुई, फर्श पर झाड़ू दे रही थी। उसकी पीठ ओलेनिन की ओर थी।

"नमस्कार माता जी, मैं यहाँ ठहरने आया हूँ," उसने कहना शुरू किया।

कज़्ज़ाक महिला ने वैसे ही झुके झुके अपना कर्कश तथा सुन्दर चेहरा उसकी ओर फेर दिया।

"यहाँ क्यों आये हो? हमारी खिल्ली उडाना चाहते हो! ओफ! मैं तुम्हें इसका मजा चखाऊँगी। काली महामारी तुझे समेट ले जाय!"

वह चिल्लाई। वह क्रोध में थी, फिर भी कनखियो से नवागत को घूरती जा रही थी।

पहले तो ओलेनिन ने मोचा था कि रास्ते की थकी-माँदी और वीर काकेशियाई सेना का (जिसका वह एक सदस्य था) सभी जगह सहर्ष स्वागत किया जायगा और कज्ज़ाक उन्हे देखकर वडे प्रसन्न होंगे क्योकि उन्होने लडाई में सदा उनका साथ दिया है। लेकिन जब उसका स्वागत इम प्रकार हुआ तो वह उलझन में पड गया। परन्तु उसने अपना सतुलन न खोया और स्पष्ट करने का प्रयत्न किया कि वह अपने रहने-सहने का खर्च उठाने को तैयार है। मगर बूढी कुछ भी सुनने को तैयार न थी।

"आखिर तुम यहाँ आये किस लिए? तुम्हारे जैसे कीडे-मकोडो की परवाह कौन करता है? शीशे में मुंह तो देखो! जरा ठहरो। जब मालिक आयेगा तो अकल ठिकाने कर देगा। तुम्हारा गन्दा पैसा मुझे नही चाहिए। हुँह! पैसा! जैसे हमने कभी देखा ही न हो। तमाखू चर चर कर तो तुम हमारा सारा घर गन्दा कर दोगे। पैसा क्या उसे ठीक कर देगा? क्या तुम्हारी जैसी जोके हमने पहले नही देखी थी! ईश्वर करे, कुत्ते की मौत मरो, कुत्ते की मौत!" बुढिया बराबर चिल्लाती गई, जली-कटी वकती गई और उमने ओलेनिन को जरा भी बोलने का मौका न दिया।

"लगता है, वन्यूशा ठीक कहता था," उसने मोचा, "तातार कही अधिक उदार होगा।" और श्रीमती उलित्का की फटकार खाकर वह उल्टे पैरों वाहर लौट पडा। जब वह वाहर जा रहा था तो मर्यान्का उमी गलियारे मे होती हुई सर्र से उसके पास से निकल गई। वह अपना वही गुलावी फ्राक पहने थी, परन्तु आँखो तक उमका मुंह एक सफेद रूमाल मे ढका था। नगे पैरो जल्दी जल्दी सीढियाँ उतरती हुई वह

दालान से होकर भागी, एक मिनट के लिए रुकी और युवक पर एक उड़ती हुई हँसती-सी नज़र डालकर घर के एक कोने में जाकर गायब हो गई।

यौवन के भार से दबी हुई उसकी चचल पद-गति, तथा सफेद रूमाल के भीतर से झाँकती हुई उसकी अल्हड चितवन और उसके कसे हुए शरीर की सुडौल बनावट ने ओलेनिन को पहले से भी अधिक मुग्ध कर दिया था।

"हाँ, वह है एक," उसने सोचा और रहने-सहने की समस्या भूलकर केवल मर्यान्का के बारे में सोचने लगा। और, वन्यूशा की ओर आते समय वह मुड मुडकर पीछे भी देखता गया—शायद उसे मर्यान्का की झलक फिर दिखाई पड जाय।

"अब आप खुद ही देखिये न? लडकी ही कैसी खूखार है, जैसे जगली घोडी!" वन्यूशा ने कहा। यद्यपि वह अभी तक सामान ही धरने-उठाने में लगा था, फिर भी इस समय खुश था। "ला फाम," उसने कुछ तेज़ आवाज़ में कहा और अट्टहास कर उठा।

११

शाम के समय मछलियाँ पकडने के बाद घर के मालिक तशरीफ़ लाये और जब उन्हे पता चला कि कैडेट रहने के लिए किराया देगा तो उन्होंने बूढी को मना लिया और वन्यूशा की माँगें मान ली।

हर चीज़ नये मकान में करीने से सजा दी गई। मालिक मकान अपने जाडे के मकान में चले गये और गर्मी का मकान उन्होंने तीन रूबल महीने किराये पर उठा दिया था। ओलेनिन ने थोडा खा पीकर

किसी प्रकार अपनी भूख शान्त की और सोने चला गया। लगभग शाम के समय वह जागा, उसने हाथ मुंह धोया और कपडे आदि पहन कर खाना खाने वैठ गया। फिर उसने सिगरेट जलाई और खिडकी के पास आकर जम गया। खिडकी सडक की ओर खुलती थी। हवा में ठढक थी। मकान तथा उसकी दीवालो की तिरछी परछाईं धूल भरी सडक पर पडती और कभी कभी सामने के उस मकान की दीवालो पर चढ जाती, जिसकी नरकटो के फूसवाली ढालू छत अस्ताचलगामी सूर्य की किरणो में चमक चमक उठती। वायु स्वच्छ थी। गाँव का वातावरण शान्त और मौन हो गया था। सैनिक घरो में वस चुके थे और अव उनमें कोई होहल्ला नही रह गया था। मवेशी अपने अपने घरो को वापस नही आये थे और लोग भी अभी तक नही लौटे थे।

ओलेनिन का घर करीव करीव गाँव के छोर पर था। इस वक्त रह रहकर तेरेक के उस पार, काफी दूर से, गोलेवारी की हल्की हल्की आवाजे सुनाई दे रही थी। ओलेनिन वही से होकर तो आया था (चेचेन पहाडो अथवा कुमुक के मैदान पर से)। वह पडावो की तीन महीने की जिन्दगी से तग आ चुका था। लेकिन अव उसे थोडा आराम मिल रहा था। अभी अभी धोया हुआ उसका चेहरा ताजा और मजवत शरीर स्वच्छ लग रहा था। मोर्चे के वाद उसे कुछ ऐसी राहत मिल रही थी जिसका उसे पहले कोई अनुभव नही हुआ था। इस समय विश्राम के कारण उसका अग-प्रत्यग सुखी था और उसे शान्ति तथा सवलता की अनुभूति हो रही थी। उसका मस्तिष्क भी ताजा हो चुका था। और, अव वह मोर्चे तथा पिछली विपत्तियो के वारे में सोच रहा था। उसे याद आया कि उसे अन्य व्यक्तियो से कम कठिनाइयाँ नही झेलनी पडी थी और वीर काकेशिया निवासियो के वीच वह अग्रणी सेनानी माना जाने लगा था। मास्को की उसकी स्मृतियाँ पीछे रह गई

थी, ईश्वर जाने कितने पीछे। पुराना जीवन समाप्त हो चुका था और नये का आरम्भ हो गया था। इस नये जीवन में अभी तक कोई खामियाँ न आई थीं। यहाँ नये नये व्यक्तियों के बीच, एक नये व्यक्ति के रूप में, वह नई और अच्छी ख्याति पैदा कर सकता था। वह यौवनोन्मत्त तथा विवेकहीन जीवनोल्लास के प्रति जागरूक था। वह खिड़की के बाहर कभी उन लड़कों की ओर देखता जो मकान के साये में लट्टू नचाते और कभी अपने छोटे-से घर के चारों ओर, और सोचता कि मैं इस नये कज्जाक गाँव में प्रसन्नतापूर्वक रह सकूँगा, रहूँगा और यहाँ का जीवन अपनाऊँगा। कभी वह पहाड़ों की ओर देखता, कभी आसमान की ओर। प्रकृति के इस अपूर्व सौन्दर्य का पान करने के साथ ही साथ वह अपने संस्मरणों तथा स्वप्नों का भी मानसिक साक्षात्कार कर लेता। उसका नव जीवन आरम्भ हो चुका था उस तरह से नहीं जैसा कि उसने मास्को छोड़ते समय सोच रखा था परन्तु उससे भी कहीं अच्छी तरह जिसकी उसे आशा भी न थी। पहाड़ पहाड़ पहाड़। उस समय पहाड़ ही उसके समस्त विचारों तथा उसकी अनुभूतियों के केन्द्र बने हुए थे।

"उन्होंने अपना कुत्ता चूम लिया और सुराही चाट ली! चचा येरोश्का ने अपना कुत्ता चूम लिया, कुत्ता चूम लिया!" सहसा खिड़की के नीचे लट्टू नचाते हुए कज्जाकों के बच्चे सड़क की ओर देख कर चिल्लाने लगे। "उन्होंने कुत्ता चूमा और कटार बेचकर शराब पी गये, शराब पी गये!" एक साथ इकट्ठे होकर और साथ ही पीछे हटकर बच्चे ज़ोरों का शोर मचाने लगे।

शोर इसलिए मच रहा था कि उन्होंने चचा येरोश्का को देख लिया था। चचा कन्धे पर बन्दूक रखे और कमर में कुछ तीतर लटकाये शिकार से घर लौट रहा था।

"गलती हो गई, भाई अब रहने भी दो!" तेज़ी से हाथ झुलाते और सड़क के दोनों ओर की खिड़कियों पर निगाह डालते हुए बूढ़ा बोला,

"मैंने कुत्ते को शराव पीने छोड दिया था, वस यही गलती की थी," उसने कहा। वह परेशान दिखाई पड रहा था, परन्तु वाहर से ऐसा वन रहा था मानो उसे कोई चिन्ता ही न हो।

लडके वूढे शिकारी से जैसा व्यवहार कर रहे थे उसे देखकर ओलेनिन को आश्चर्य हो रहा था। परन्तु वह चचा येरोश्का के वद्धि-प्रखर चेहरे और शक्तिशाली शरीर को देखकर वडा प्रभावित हुआ।

"अरे चचा इधर, भाई कज्जाक इधर!" ओलेनिन वोल उठा, "जरा इधर आ जाइये न, चचा, इधर, इधर।"

वूढे ने खिडकी की ओर देखा और रुक गया।

"नमस्ते, दोस्त," सफाचट्ट खोपडी पर से टोप उठाते हुए उसने कहा।

"नमस्ते, मेरे अच्छे दोस्त," ओलेनिन ने उत्तर दिया, "ये वच्चे आप को देखकर शोर क्यो मचा रहे है?"

चचा येरोश्का खिडकी तक पहुँच चुका था। "वे एक वूढे को तग कर रहे है। वम। कोई वात नही। मुझे यह सव अच्छा लगता है। कर ले वे अपने वूढे चचा को तग। आखिर वच्चे ही है न," चचा की आवाज में कुछ ऐसा सगीतात्मक उतार-चढाव और आकर्षण था जो प्राय वडे-वूढो की वातो में रहता है। "क्या तुम दस्तो के कमाण्डर हो?" उसने सवाल किया।

"नही, सिर्फ कैडेट हूँ। आपने ये तीतर कहाँ मारे?" ओलेनिन ने पूछा।

"ये तीन मैने जगलो में मारे हैं," वूढे चचा ने जवाव दिया और तीतर दिखाने के लिए घूमकर पीठ खिडकी के सामने कर दी। तीतर पीठ से लटके थे। उनके मुंह उसकी पेटी में घुसे थे। चचा के कोट पर कई जगह तीतरो के खून के धव्वे भी पटे थे।

"क्या तुमने इन्हे कभी नही देखा?" चचा ने पूछा, "अगर चाहो तो दो-एक ले लो! हाँ, हाँ, ये रहे," और उसने दो तीतर खिड़की की तरफ बढा दिये। "आप शिकारी हैं?" उसने प्रश्न किया।

"जरूर। मोर्चे के वक्त मैंने चार मारे थे।"

"चार! ये तो बहुत हुए!" बूढे ने व्यग्य किया, "तुम्हें पीने-पिलाने का भी शौक है? चिखीर पीते हो?"

"क्यो नही? मुझे शराब अच्छी लगती है।"

"अरे, कितने अच्छे हो तुम। हम कुनक* है–तुम और मैं, मै और तुम," चचा येरोश्का बोला।

"चले आइये," ओलेनिन ने कहा, "चिखीर ढलेगी।"

"मैं, खैर पी लूँगा," बूढे ने कहा, "परन्तु ये तीतर थामो।" बूढे के चेहरे से लग रहा था कि आदमी उसे पसन्द है। उसे तुरन्त मालूम हो गया कि यहाँ उसे मुफ्त की पीने को मिल सकती है, और तीतर की जोडी देना बेकार न होगा।

शीघ्र ही येरोश्का घर में दाखिल हो गया, और तब ओलेनिन ने निकट मे देखा कि इस व्यक्ति का आकार कितना विशाल, शरीर की बनावट कितनी गठी हुई और चौडी सफेद दाढी वाले उसके सुगई चेहरे पर उम्र और श्रम की रेखाएँ कितनी गहरी खिची हुई है। उसके पैरो, भुजाओ और कन्धो की मासपेशियाँ उसकी वृद्धावस्था को देखते हुए अधिक भरी-पूरी और हृष्ट-पुष्ट थी। उसके सिर पर, थोडे थोडे घुटे हुए बालो के नीचे गहरे निशान थे। उसकी गठी हुई और पुष्ट गर्दन में बैलो जैसी झुर्रियाँ थी जो एक दूसरे को

---

* शपथ लेकर बनाया गया मित्र जिसके लिए कोई भी त्याग बहुत बडा नहीं समझा जाता–अनु०

काटती हुई दिखाई पडती थी। उसके सीग जैसे हाथो मे इधर-उधर खरोंचे और हल्की चोटें-सी लगी थी। आराम के साथ उसने देहलीज पार की, बन्दूक उतारी, उसे एक कोने में खडा किया, कमरे के चारो ओर एक सरसरी निगाह डाली, मन ही मन यह अन्दाज लगाया कि इस घर में कितने मूल्य का सामान होगा और फिर कच्चे चमडे वाली अपनी मामूली-सी चप्पल पहने कमरे के बीचोबीच आ गया। उसके आते ही एक तेज़ किस्म की शराब, चिखीर, कुछ बारूद और कुछ जमे हुए खून की गन्ध भी कमरे भर में फैल गई।

चचा येरोश्का देव-प्रतिमा की ओर देखकर झुक गया, उसने अपनी दाढी पर हाथ फेरा और फिर अपना भरा-पूरा और भूरा हाथ फैला दिया। "कोशकिल्दी," वह बोला, "नमस्ते के लिए तातारी मे यही कहते हैं—'शान्ति लाभ करो', उनकी भाषा में इसके यही अर्थ है।"

"कोशकिल्दी! मै जानता हूँ," ओलेनिन ने हाथ मिलाते हुए जवाब दिया।

"नही, तुम नही जानते! तुम ठीक तरीका नही जानते, नासमझ हो।" तिरस्कार सूचक ढग मे खोपडी नचाते हुए चचा बोला, "अगर कोई तुमसे 'कोशकिल्दी' कहे तो तुम्हें जवाब देना चाहिए 'अल्लाह रज़ी वो मुन' यानी 'ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे'। यह तरीका है, 'कोशकिल्दी' भर कह देना काफी नही। परन्तु मै तुम्हे यह सब सिखाऊँगा। हमारा एक दोस्त था, ईल्या मोसेइच। वह एक रूसी था। वह और मै कुनक थे। क्या लाजवाब आदमी था—शराबी, चोर, शिकारी। और शिकारी भी कैसा! मैने उसे सब कुछ सिखाया था।"

"और मुझे क्या क्या सिखाओगे चचा?" ओलेनिन ने पूछा। वह इस बूढे में अधिक मे अधिक दिलचस्पी दिखा रहा था।

"मैं तुम्हे शिकार पर ले चलूंगा। तुम्हे मछली मारना सिखाऊँगा, चेचेनो को दिखाऊँगा और अगर कहोगे तो तुम्हारे लिए एक लडकी भी ढूंढ दूंगा। मैं तो इसी तरह का आदमी हूँ—मसखरा, हँसोड।" और बूढा हँस पडा, "मैं बैठूंगा। थक गया हूँ। करगा?" उसने उत्सुकता से कहा।

"यह 'करगा' क्या बला है?" ओलेनिन ने प्रश्न किया।

"क्यो जार्जियाई भाषा में इसका मतलब है 'बहुत ठीक'। पर मैं इसी तरह से कहता हूँ, कुछ जबान पर ही चढ गया है—करगा, करगा। मैं ऐसे ही कहता हूँ, मजाक में! खैर, दोस्त! चिखीर के लिए आर्डर नही दोगे क्या? तुम्हारे पास तो अर्दली होगा, नही है? अरे, इवान!" बूढे ने पुकारा, "तुम्हारे सभी सैनिक इवान है! तुम्हारा अर्दली भी इवान है?"

"ठीक कहते हो उसका नाम है इवान—वन्यूशा*। वन्यूशा! हमारी मालकिन से थोडी चिखीर तो माँग लाना।

"इवान या वन्यूशा, एक ही बात है। तुम्हारे सारे सैनिक इवान ही क्यो हैं? इवान!" बूढा बोला, "तुम उनसे कहो कि वे तुम्हे उस पीपे में से शराब दें जो उन्होने अभी अभी खोला है। गाँव मे उनके पास सबसे अच्छी चिखीर है। लेकिन उसके लिए तीस कोपेक से ज्यादा मत देना, समझे, क्योकि इतने मे ही बुढिया बहुत खुश हो जायगी हमारे लोग भी कैसे बेवकूफ है, कैसे खर दिमाग!" चचा येरोश्का ने वन्यूशा के चले जाने के बाद चुपके से फिर कहना शुरू किया, "वे तुम्हे आदमी की तरह भी नही समझते, उनकी निगाह में तुम तातार से भी गये-बीते हो। 'दुनियावी रूसी' वे तुम लोगो को ऐसा कहते हैं। लेकिन जहाँ तक मेरी बात है हालाकि

---

* वन्यूशा—इवान का संक्षिप्त रूप है।

तुम सैनिक हो फिर भी मै तुम्हें आदमी समझता हूँ। तुम्हारे दिल तो है, आत्मा तो है। है न? ईल्या मोसेइच एक सैनिक था परन्तु आदमियो में हीरा था। दोस्त, मैं ठीक कह रहा हूँ? यही वजह है कि यहाँ के लोग मुझे नही चाहते। मगर मुझे इसकी चिन्ता नही। मै हँसोड-फसोड आदमी ठहरा। मुझे सभी अच्छे लगते है। मैं येरोश्का हूँ येरोश्का, मेरे दोस्त।"

और बूढे कज्ज़ाक ने वडे प्रेम से युवक की पीठ थपथपाई।

१२

इस समय तक वन्यूशा ने घर का काम-काज पूरा कर लिया था, वह कम्पनी के नाई से हजामत वनवा चुका था और अपने ऊँचे बूटो में से पतलून निकाल चुका था—इसके माने थे कि कम्पनी के लोग आरामदेह मकानो में रह रहे हैं। इस समय वह वहुत खुश था। उसने येरोश्का को वडे ध्यान से देखा, वैसे नही जैसे किसी दयालु धर्मात्मा को देखा जाता है परन्तु ऐसे जैसे पहले-पहल किसी जगली जानवर को देखा जाता है। उसने उस फर्श को देखकर अपना सिर हिलाया जिसे बूढा गन्दा कर चुका था, वेंच के नीचे से दो वोतले उठाई और मालकिन के पास चल दिया।

"नमस्ते, मेहरवान दोस्तो," उसने वात आरम्भ की। उसने निश्चय कर लिया था कि वह विनम्र रहेगा, "मेरे मालिक ने मुझे आपके पास कुछ चिखीर लेने भेजा है। देंगे न थोडी-सी?"

बूढी ने कोई उत्तर न दिया। एक लडकी ने चुपचाप वन्यूशा की ओर देखा। वह एक तातारी दर्पण के सामने अपने सिर पर रूमाल लपेट रही थी।

"दोस्तो, मैं इसके लिए पैसा दूंगा!" जेब में कोपेक खनखनाता हुआ वन्यूशा बोला, "हम पर मेहरबानी करो, और हम भी तुम पर मेहरबानी करेंगे।"

"कितनी चाहिए?" बूढ़ी ने रुखाई से पूछा।

"एक गैलन।"

"जाओ और इनके लिए थोड़ी शराब खींच दो। उसी बर्तन में से उडेल लेना जिसमें वह अब तक थोड़ी बहुत बन चुकी होगी, मेरी लाडली," श्रीमती उलित्का ने अपनी पुत्री से कहा।

लडकी ने चाबियाँ और नितारनी उठाई और वन्यूशा के साथ घर से बाहर निकल गई।

"चचा, ज़रा यह तो बताना कि यह लडकी है कौन?" ओलेनिन ने खिडकी से होकर गुज़रती हुई मर्यान्का की तरफ इशारा करते हुए चचा येरोश्का से पूछा। चचा ने आँख मारते हुए उसे अपनी कोहनी से कोंचा।

"तनिक ठहरो," उसने कहा और खिडकी के बाहर निकल गया, "अह-हाह!" वह खाँसा और फिर कहना शुरू कर दिया, "मर्यान्का, प्यारी मर्यान्का, मेरी जान, क्या मुझे प्यार न करोगी? मैं जोकर हूँ, जोकर!" अन्तिम शब्द उसने फुसफुसाते हुए ओलेनिन से कहे थे।

बिना सिर इधर-उधर मोडे और अपने हाथों को बराबर तेज़ी से झुलाती हुई वह खिडकी से होकर निकल गई। उसमें कज़्ज़ाक महिलाओं जैसी दृढता थी। फिर उसने धीरे धीरे आँखें बूढे की तरफ फेरी।

"मुझसे प्यार करो तो खुश हो जाओगी, मेरी जान!" येरोश्का चिल्लाया। उसने ओलेनिन को आँख मारी और उसकी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। "मैं भी कितने गज़ब का आदमी हूँ! जोकर जो हूँ।" उसने कहा। "वह तो डंके की चोट रानी है, रानी।"

"वह सुन्दर है," ओलेनिन बोला, "उसे किसी तरह यहाँ बुलाओ न!"

"नही, नही," बूढे ने कहा, "उसका लुकाश्का से ब्याह होनेवाला है। वह एक अच्छा कज्ज़ाक है और बहादुर भी। अभी उसी दिन उसने एक अब्रेक को ढेर किया है। मैं तुम्हारे लिए इससे भी अच्छी लडकी ढूढ दूंगा। ऐसी लडकी बताऊँगा जो रेशम और रूपे में सजी-सवरी विहार करेगी। जब मैंने एक बार कह दिया है तो जरूर करूँगा। मै तुम्हें बहुत सुन्दर लडकी दूंगा, बहुत सुन्दर।"

"आप, एक बुजुर्ग आदमी, ऐसी बाते कहते है," ओलेनिन बोला, "क्यो! यह तो पाप है।"

"पाप? पाप है कहाँ?" बूढे ने ज़ोर देते हुए कहा, "किसी अच्छी लडकी को देखना, यह पाप है? उससे हँस बोल लेना, यह पाप है? क्या तुम्हारे प्रदेश में ऐसा ही होता है? नही, मेरे दोस्त, यह पाप नही, यह तो मुक्ति है मुक्ति। ईश्वर ने तुम्हे पैदा किया और एक लडकी को भी। उसने सभी को बनाया है। इसलिए एक सुन्दर लडकी की ओर देखना कोई पाप नही। वह इसीलिए तो बनाई गई है कि लोग उसे प्यार करे और वह इधर-उधर मौज-बहार बाँटती फिरे। मैं तो यही समझता हूँ, दोस्त।"

अहाता पार करके मर्यान्का एक ठढे, अँधियारे गोदाम में घुसी जहाँ शराब के पीपो के अम्बार लगे थे। वह एक पीपे के पास गई और प्रार्थना कर चुकने के पश्चात् उसमें एक कुप्पी डुबो दी। वन्यूशा दरवाज़े पर खडा खडा हँस रहा था और उसकी ओर देखता जा रहा था। वह सिर्फ एक फ्राक पहने थी जो पीछे से मटी और सामने से उठी हुई थी। यह बात वन्यूशा को बडी विचित्र लगी। उसके गले में चाँदी की मुद्राओ की माला होना तो वन्यूशा को और भी अद्भुत लगा। उसने इसे बिल्कुल गैर-रूसी समझा। उसके दिमाग मे यह बात आई कि अगर हमारे यहाँ भूदासो के

क्वार्टरो में ऐमी लडकी दिख जाय तो सभी उसपर हँमेंगे। "क्या वटिया चीज़ है लडकी भी, रौनक लाने के लिये। मैं अपने मालिक से इसका ज़िक्र करूँगा," उसने सोचा।

"अरे वुद्धू, वहाँ रोशनी में खडे खडे क्या मटर भुना रहे हो?" लडकी चिल्ला उठी, "मुझे कटर क्यो नही दे देते!"

मर्यान्का ने ठढी लाल शराव कटर मे भरकर वन्यूशा को दे दी।

"पैसा माता जी को दो जाकर," उसने रुपये वाला हाथ एक ओर हटाते हुए कहा।

वन्यूशा हँस दिया, "मेरी जान, इतनी नाराज़ क्यो हो रही हो?" उसने कुछ मस्ती में आकर और पैर सहलाते हुए कहा। मर्यान्का उम समय पीपा वन्द कर रही थी।

वह हँसने लगी।

"और तुम, तुम वडे मेहरवान हो क्या?"

"हम यानी मैं और मेरे मालिक दोनो ही वडे मेहरवान हैं," वन्यूशा ने दृढता से उत्तर दिया, "हम इतने मेहरवान हैं कि जहाँ जहाँ हम ठहरे मेजवान हमारे अहसानमद वने रहे। और इसकी वजह यही है कि हमारे मालिक वडे ही भले आदमी हैं।"

लडकी खडी खडी सुनती रही।

"और क्या तुम्हारे मालिक का व्याह हो गया?" उमने पूछा।

"नही, हमारे मालिक अभी छोटे हैं और उनका व्याह नही हुआ है क्योकि अच्छे लोग छोटी उम्र में व्याह नही करते," वन्यूशा ने उसे समझाते हुए कहा।

"वहुत छोटे, क्या कहने! हैं तो मोटे भैंसे जैमे और व्याह के लिए छोटे है! क्या वही तुम सवके मुखिया हैं?" उमने पूछा।

"मेरे मालिक एक कैडेट है। इसका मतलव यह हुआ कि अभी तक वे अफसर नही है। लेकिन उनकी वकत जनरल से ज्यादा है—वे इज्जतदार आदमी है। हमारा कर्नल और खुद जार भी उन्हे जानते हैं," वन्यूशा ने वडे गर्व के साथ उसे समझाया, "हम लाइन रेजीमेंट के दूसरे भिखारियो की तरह नही। उनके पिता सिनेटर थे। उनके पास एक हजार से भी अधिक भूदास थे, सव उनके अपने। और वे हमें एक वक्त में एक एक हजार रूवल भेजते हैं। यही वजह है कि सभी हमें चाहते है। कोई कप्तान हो और उसके पास पैमा न हो तो उसे कौन चाहेगा?"

"अच्छा अव जाओ। मुझे यहाँ ताला लगाना है," वात काटते हुए लडकी वोली।

वन्यूशा शराव लेकर ओलेनिन के पास आ गया। उसने फ्रेंच में कहा कि लडकी मजेदार है, फिर वेवकूफो की तरह हँसा और वाहर निकल गया।

१३

इसी वीच गाँव के चौक में सैनिको की वुलाहट के लिए ढोल-नगाडे पिटने लगे। लोग अपने अपने काम पर से वापस आ चुके थे। मवेशी भी सुनहरी धूल के वादलो में से होकर चले आ रहे थे। वे गाँव के फाटक तक पहुँचते पहुँचते डकरने लग गये। और, लडकियाँ और स्त्रियाँ अपने अपने पशुओ को हाँकती-रगडाती सडको और अहातो में भागती हुई दिखाई देने लगी। सूर्य दूर हिमावृत शिखरो के पीछे छिप चुका था और पृथ्वी और आकाश दोनो ही पर हल्के नीले रग का अन्धकार छा गया था। आसमान में अधेरे फलोद्यानो के ऊपर तारे टिमटिमा रहे थे और गाँव का कोलाहल धीरे धीरे शान्त हो रहा था। मवेशियो की देखरेख खत्म हो चुकी थी

और वे रात भर आराम करने के लिए अपने अपने खूंटो से बाँधे जा चुके थे। औरते घरो से निकल निकलकर सडको के किनारे जमा होने लगी थी और दाँतो से सूर्यमुखी के वीज तोडती हुई अपने मकानो के चवूतरो पर वैठती जा रही थी। वाद में एक भैंस और दो गायो को दुह चुकने के वाद मर्यान्का भी इनमें से एक टोली मे शामिल हो गई। इस टोली में कुछ औरते और लडकियाँ थी। एक वूढा कज्जाक भी था। वे मृत अब्रेक के वारे में वातचीत कर रहे थे। कज्जाक किस्सा सुना रहा था और औरते उससे प्रश्न कर रही थी।

"मैं समझती हूँ उसे अच्छा-खासा इनाम मिलेगा," एक औरत वोली।

"वेशक, सुनने में आया है उसे पदक मिलेगा।"

"मोसेव उसे झाँसा देना चाहता था। उसने उससे वन्दूक ले भी ली थी। लेकिन किज्ल्यार अधिकारियो को इसका पता चल गया।"

"मोसेव, कितना दुष्ट है!"

"कहते है लुकाश्का घर आ गया," एक लडकी ने कहा।

"वह और नजारका यामका के यहाँ मौज कर रहे हैं" (यामका एक कुख्यात अविवाहिता कज्जाक महिला थी जिसकी शराव की एक दूकान थी)। "मैंने सुना है कि वे आधी वाल्टी शराव पी गये।"

"कैसी तकदीर है उस उर्वान की," एक औरत वोली, "सचमुच वह वहादुर है। इससे भी इनकार नही किया जा सकता कि वह अच्छा लडका है—समझदार और फुर्तीला। उसका वाप, चचा कियाँक, भी वैसा ही था। वेटा वाप को पडा है। जव कियाँक मारा गया तो सारा गाँव रोया था। देखो, वे रहे," कुछ कज्जाको की ओर, जो सामने से उनकी तरफ चले आ रहे थे, इशारा करते हुए वह वोली। "और येरगुशोव भी उनके साथ आ रहा है! वह शरावी!"

लुकाश्का, नजारका और येरगुशोव आधी वाल्टी शराव पी चुकने के वाद लडकियो की ओर खिंचे चले आ रहे थे। तीनो के चेहरे, खास तौर से बूढे कज्जाक का चेहरा, साधारण से अधिक लाल थे। येरगुशोव वरावर लडखडाता और कभी कभी नजारका की पसलियाँ कोचता जा रहा था।

"तुम लोग गाती क्यो नही?" वह लडकियो पर चिल्लाया, "हमारी खुशी के लिए गाओ न!"

"दिन भर खूब गुलछर्रे रहे! खव गुलछर्रे रहे?" इन शब्दो से उनका स्वागत किया गया।

"हम क्यो गायें? आज छुट्टी तो है नही?" एक औरत वोली, "तुम मौज में हो तो जाओ और अलापो।"

येरगुशोव ने कहकहा लगाया और नजारका को गुदगुदाया। "अच्छा तुम्ही शुरू कर दो गाना। फिर मैं भी शुरू करूगा। मैं इस मामले में ज्यादा चतुर हूँ। वताये देता हूँ।"

"क्या सो गईं, सुन्दरियो?" नजारका ने कहा। "हम घेरे से यहाँ खुशियाँ मनाने आये हैं। हमने लुकाश्का के स्वास्थ्य की कामना में शराव के प्याले उतारे हैं।"

जव लुकाश्का उस टोली के पास पहुँचा तो उसने अपनी टोपी उठाई और लडकियो के सामने खडा हो गया। उसका कपोल-पार्श्व और गला लाल था। वह धीरे धीरे और गम्भीरता से वोल रहा था। परन्तु उसकी निश्चलता और गम्भीरता में नजारका के चिविल्लेपन और वकवास से अधिक उत्साह था, अधिक वल था। उसे देखकर उस घोडे के वछेडे की याद आ जाया करती जो कभी कभी हिनहिनाता और दुम हिलाता हुआ एकाएक खड़ा होकर ऐसा पत्थर हो जाता मानो उसके चारो पैर कीलो से ज़मीन पर जड दिये गये हो। लुकाश्का लडकियो के सामने

शान्त खडा था। उसकी आँखें हँस रही थी, लेकिन जव कभी वह शराव के नशे में चूर अपने साथियो और पाम खडी हुई लडकियो को देखता तो वहुत कम वोलता था।

जव मर्यान्का आकर टोली में खडी हुई तो लुकाश्का ने अपनी टोपी सिर से उठाई, थोडी हिलायी और फिर सिर पर रख ली। उसने कुछ हटकर उसे रास्ता दिया और आगे वढकर उसके पास आ गया। इस समय उसका एक पैर सामने था, उगलियाँ पेटी में थी और हाथ कटार से खेल रहे थे। अभिवादन के उत्तर में मर्यान्का ने अपना सिर झुका दिया, चवूतरे पर वैठ गई और अपनी फ्राक में से वीज निकाल निकाल कर छीलने लगी। लुकाश्का की नजर मर्यान्का पर ही जमी रही। वह भी वीजो को मुँह में रखता, उन्हे चट्ट से तोडता और छिलको को थूकता रहा। जव मर्यान्का यहाँ आई थी उस समय सारी टोली में सन्नाटा छा गया था।

"वहुत दिनो के लिए आये हो क्या?" मौन तोडते हुए एक औरत ने पूछा।

"सिर्फ कल सुवह तक के लिए," लुकाश्का ने वडी गम्भीरता से उत्तर दिया।

"तकदीरवाले हो," वूढे कज्ज़ाक ने कहा, "मुझे तुम्हे देखकर खुशी होती है। यही मैं अभी अभी कह रहा था।"

"और यही तो मै भी कहता हूँ," नशे में येरगुशोव हँसते हुए वडवडाया, "हमारे यहाँ कितने मेहमान है," उसने सामने से गुज़रते हुए एक सैनिक की ओर इशारा करते हुए कहा, "सैनिको की शराव अच्छी है-मुझे पसन्द है।"

"उन्होने मेरे यहाँ भी तीन शैतान भेज दिये है," एक औरत वोली, "वावा गाँव के वुजुर्गो के पास भी गये थे और वे कहते है कुछ नहीं हो सकता।"

"ग्रह हाह! फस गईं मुसीबत में, फँसी कि नही?" येरगुशोव ने कहा।

"मै समझती हूँ तुम्हे तो उन्होने तम्वाकू के साथ पीकर उडा भी दिया होगा?" दूसरी ने कहा, "ग्रहाते में चाहे जितनी तम्वाकू पी लो लेकिन मै कहती हूँ, घर के भीतर हम नही पीने देंगे। भले ही मुखिया क्यो न ग्रा जायँ, मै ऐसा न होने दूंगी। ग्रौर कौन जाने वे तुम्हे लूट-खसोट कर ही चल दें! उसने ग्रपने घर म किसी को भी नहीं ठहराया, इसलिए उसे क्या डर। शैतान का वच्चा!"

"तुम्हे यह पसन्द नही, हुँह!" येरगुशोव ने फिर शुरू किया।

"ग्रौर मैने तो यहाँ तक सुना है कि लडकियाँ सिपाहियो का विस्तरा लगायेंगी, उन्हे चिखीर ग्रौर शहद पिलायेंगी," नज़ारका ने कहा। लुकाश्का की तरह उसका भी एक पैर ग्रागे था ग्रौर टोपी तिरछी।

येरगुशोव ने ज़ोरो का कहकहा लगाया ग्रौर सबसे पास खडी हुई एक लडकी को ग्रपनी भुजाग्रो में भर लिया, "मै तुमसे सच कहता हूँ।"

"फिर वही, शैतान!" लडकी चीखी, "मै तुम्हारी वुढिया से कहूँगी।"

"जरूर कह दो," वह चिल्लाया, "नज़ारका ने जो कुछ कहा है वह ठीक है। एक गश्ती खत घुमा दिया गया है। जानती हो वह पढ सकता है। विल्कुल ठीक है!" ग्रौर वह दूसरी लडकी का ग्रालिगन करने लगा।

"कहाँ जायगा, वदमाश!" हँसती ग्रौर चाँटा रसीद करने की गरज से हाथ उठाती हुई उस्नेन्का चिल्लाई। उसका मुंह गुलाव जैसा लाल ग्रौर गोल था।

कज्जाक एक तरफ हट गया और करीब करीब लडखडा पडा। "लो
कहते हैं लडकियो में ताकत नही होती लेकिन तुमने तो मुझे मार ही डाल
था।"

"भाग जा, पाजी कही का! कौन शैतान तुझे घेरे से यहाँ ले आया?"
उस्तेन्का ने कहा और उससे कुछ परे हटकर फिर हँसने लगी
"तुम सो गये थे और अब्रेक चला आ रहा था। ठीक है न? मान लो व
तुम पर टूट पडता तो अब तक प्राण पखेरू उड गये होते। वडा अच्छ
होता!"

"और तुम तो डर के मारे चीखने ही लगती," नजारका ने हँस
हुए कहा।

"चीखने लगती! तुम्हारी तरह डरपोक हूँ क्या?"

"जरा देखना, कही नजर न लग जाय, सामना पड जाता तो चिल्लाते
चिल्लाते आसमान सिर पर उठा लेती। है न, नजारका?" येरगुशोव
वोला।

लुकाश्का अभी तक वरावर मर्यान्का को ही देखे जा रहा था।
वह चुप था। उसके इस प्रकार देखते रहने से वह कुछ सकपका-सी
गई।

"मर्यान्का, मैंने सुना है कि उन्होंने अपना एक चीफ तुम्हारे यहाँ
टिकाया है," थोडा पास आते हुए उसने कहा।

मर्यान्का, जैसा उसका स्वभाव पड गया था, उत्तर देने के पहले
कुछ रुकी और फिर उसने कज्जाकों की तरफ धीरे धीरे निगाह उठाई।
लुकाश्का की आँखें हँस रही थी मानो जो कुछ कहा गया था उसके अलावा
भी कोई खास वात उसके और मर्यान्का के वीच घट रही थी।

"हाँ, इन लोगो के लिए तो ठीक है। इनके दो दो मकान है,"
मर्यान्का की तरफ से एक वुढिया ने उत्तर दिया, "परन्तु फोमुश्किन

के यहाँ भी उन्होंने एक चीफ ठहराया है और कहते हैं कि उसके सामान से घर का घर भर गया है। अब घर वाले जाय तो कहा जाय? क्या ऐसी बात पहले कभी सुनी गई थी कि एक छोटे से गाँव में पलटन की पलटन बसा दी जाय?" उसने कहा, "और ये शैतान यहाँ करेंगे क्या?"

"मैंने सुना है कि वे तेरेक पर एक पुल बनायेंगे," एक लडकी बोली।

"और मैंने सुना है कि वे एक बडा सा गढा खोदेंगे जिसमें सारी लडकियाँ भर दी जायगी क्योकि वे हम छोकरो को प्यार नही करती," उस्तेन्का के समीप आते हुए नज़ारका ने कहा। और फिर उसने ऐसी मुद्रा बनाई कि सभी हँस पडे और येरगुशोव, मर्यान्का के पास से निकल कर बगल में खडी हुई एक बुढिया का आलिगन करने लगा।

"मर्यान्का को क्यो नही चिपटाते? वह तो पास ही मे है," नज़ारका बोला।

"नही, बुढिया में मिठास ज्यादा है," अपने आप को छुडाने का प्रयत्न करती हुई बुढिया को चूमते हुए कज़्ज़ाक चिल्लाया।

"तू तो मेरा गला घोट देगा," हँसती हुई बुढिया चीखी।

सडक के दूसरी ओर से आती हुई पैरो की आवाज़ से उनकी हँसी रुक गई। तीन सिपाही लबादे पहने और कन्धे पर बन्दूके रखे मार्च कर रहे थे। वे गोला-बारूद वाली गाडी पर पहरा बदलने जा रहे थे। कारपोरल एक पुराना फौजी था। उसने कज्जाकों को क्रोध से घूरा और अपने आदमियों को सीधे उस ओर ले गया जहाँ लुकाश्का और नज़ारका सडक के बीचोबीच खडे थे। उसके ऐसा करने का मतलब शायद यही था कि लोग रास्ते से हट जाय। नजारका तो हट गया लेकिन लुकाश्का की भौंहो में बल पड गये। उसने अपना कन्धा जरूर एक तरफ कर दिया परन्तु अपनी जगह

से नही हिला। "लोग यहाँ खडे हैं इसलिए आप लोग घूम कर जाय," वह बुदबुदाया और अपना सिर थोडा-सा घुमा दिया। वह सिपाहियो का घृणा से देख रहा था। सिपाही शान्ति से गुज़रते रहे और उनके कदम धूल भरी सडक पर बराबर और नियमित रूप मे पडते रहे। मर्यान्का हँसने लगी और दूसरी सभी लडकियो ने भी उसका साथ दिया।

"बाँकपन तो देखो!" नज़ारका बोला, "जैसे सब के सब पादरी हो।" और सिपाहियो की नकल करता लेफ्ट-राइट, लेफ्ट-राइट करके कुछ दूर तक खुद भी मार्च करता रहा। हँसी का फौवारा फिर छूटने लगा।

लुकाश्का धीरे धीरे मर्यान्का के पास आ चुका था। "और तुमने चीफ को ठहराया कहाँ?" उसने पूछा।

मर्यान्का ने एक क्षण विचार किया। "हमने उसे नया घर दे दिया," वह बोली।

"वह बूढा है या जवान?" पास बैठते हुए लुकाश्का ने प्रश्न किया।

"तुम समझते हो मैंने उससे यह बात भी पूछी है?" लडकी ने उत्तर दिया, "जब मैं चिखीर लेने जा रही थी उस समय वह चचा येरोश्का के साथ खिडकी पर बैठा था। वहाँ से ऐसा लगता था जैसे उसका सिर लाल हो। वे लोग गाडी भर सामान लाये हैं।" और उसने आँखें झुका ली।

"मैं कितना खुश हूँ कि घेरे से निकल आया!" लडकी के निकट सरकते और उसकी आँखो में आँखें डालते हुए लुकाश्का बोला।

"बहुत दिनो के लिए आये हो क्या?" मुस्कराते हुए मर्यान्का ने पूछा।

"सिर्फ़ सुबह तक के लिए। कुछ बीज तो देना," कहते हुए उसने अपना हाथ फैला दिया।

मर्यान्का अब खुलकर मुस्करा दी। फ्राक का गलवन्द खोलते हुए उसने कहा "सभी मत ले लेना।"

"विना तुम्हारे मैं अपने को कितना अकेला समझ रहा था, मर्यान्का। हाँ, तुम्हारी कसम!" उसने दबी ज़बान से धीरे से कहा और फ्राक में हाथ डाल कर बीज निकालने लगा। अब वह उसके ऊपर थोडा और झुका और हँसते हुए धीरे धीरे बातें करने लगा।

"मैं कह देती हूँ, मैं नही आऊँगी," उससे एक ओर हटते हुए सहसा तेज़ आवाज़ में मर्यान्का बोल उठी।

"नही, सचमुच मैं तुमसे कुछ कहना चाहता था," लुकाश्का ने कान में कहा, "आना ज़रूर।"

मर्यान्का ने इन्कार किया, लेकिन फिर मुस्करा दी।

"मर्यान्का, मर्यान्का, माँ बुला रही है। खाने का वक्त हो गया," टोली की ओर भाग कर आता हुआ मर्यान्का का छोटा भाई पुकारने लगा।

"आ रही हूँ," लडकी बोली, "चलो, चलो, अभी आई।"

लुकाश्का खडा हो गया और टोपी उठा दी।

"मैं समझता हूँ, मुझे घर जाना चाहिए। यही ठीक है," उसने कहा। वह कुछ ऐसा बन रहा था मानो उससे और किसी चीज़ से कोई मतलब ही नहीं। परन्तु वह अपनी हँसी न दबा सका और मुस्कराता हुआ घर के कोने में जाकर गायब हो गया।

रात फैल चुकी थी। अँधियारे आकाश मे सितारे टिमटिमा रहे थे। सडकें अधेरी और सुनसान हो चुकी थी। नजारका किनारे पर कुछ औरतों के साथ रह गया। उनकी हँसी अभी तक सुनाई पड रही थी। लुकाश्का धीरे धीरे लडकियों के पास से हट गया और बिल्ली की भाँति दुम दबा कर एक ओर बैठ गया। सहसा वह धीरे धीरे दौडने लगा। उसने अपनी कटार हाथ में थाम ली। वह घर की तरफ नही

कार्नेट के मकान की तरफ बढ रहा था। दो सडके पार कर चुकने के बाद वह एक गली में घुसा और अपने कोट का निचला भाग दोना हाथो से उठाते हुए एक झाडी की छाया में बैठ गया। "कार्नेट की साहबजादी!" उसने मर्यान्का के सम्बन्ध मे सोचा, "थोडा मनबहलाव भी पसद नही – शैतान कही की! जरा ठहरना!"

किसी औरत के आने की पगध्वनि सुनाई पड रही थी। वह उसे सुनने और मन ही मन हँसने लगा।

मर्यान्का सिर झुकाये और बाडे के कटघरे को झिटकती हुई कदम बढाती सीधे लुकाश्का की ओर चली आ रही थी। लुकाश्का उठ खडा हुआ। मर्यान्का एकदम रुक गई।

"शैतान कही के! तुमने तो मुझे डरा ही दिया! तो अभी तक तुम घर नही गये।" उसने कहा और जोर से हँस पडी।

लुकाश्का ने एक हाथ उसकी कमर में डाला और दूसरे से उसका मुह कुछ ऊचा उठाया, "भगवान जानता है, मै तुम से कुछ कहना चाहता था!" उसकी आवाज़ लडखडा रही थी।

"इतनी रात गये यह सब क्या बक रहे हो!" मर्यान्का ने उत्तर दिया। "माता जी मेरा इन्तजार कर रही हैं। अच्छा हो तुम अपनी चहेती के पास चले जाओ!" और उससे अपने को छुडाती हुई वह कुछ कदम भागी, घर के बाडे तक पहुँच कर सहमा रुकी और मुड कर कज्ज़ाक की ओर देखने लगी। वह उसके पीछे पीछे दौडा चला आ रहा था और उससे विनती करता जा रहा था कि वह कुछ देर उसके पास और ठहर जाय।

"खैर, तुम मुझसे क्या कहना चाहते हो, कहो।" और वह फिर हँसने लगी।

"मुझ पर हँसो मत, मर्यान्का! तुम्हे ईश्वर की सौगध। मेरी चहेती है ज़रूर। जैसी है वैसी नही। जहन्नुम में जाय ऐसी चहेती! सिर्फ हाँ कह दो

ग्रौर मैं तुम्ही को प्यार करूगा। जो तुम कहोगी वही करूँगा। इधर सुनो।" और उसने जेब में पडे रुपये खनखना दिये। "अब हम ठाठ से रह सकते है। दूसरे तो मज़े लूटते है और मैं? मेरी तरफ तो तुम बिल्कुल नही देखती, प्यारी मर्यान्का।"

लडकी ने कोई उत्तर न दिया। वह उसके सामने खडी खडी जल्दी जल्दी उगलियो मे लकडी की खपच्ची तोडती रही।

सहमा लुकाश्का ने दाँत पीसे और मुट्ठी बाधी।

"यह सब इन्तज़ार किस लिए? क्या मैं तुम्हे प्यार नही करता? तुम मेरे साथ जो चाहो कर सकती हो," उसके मुह मे सहमा निकल पडा। उसने गुस्से मे उसके दोनो हाथ पकड लिए।

मर्यान्का के चेहरे के शान्त भाव और उसकी धीमी आवाज़ मे कोई अन्तर न आया।

"बनने की कोशिश मत करो लुकाश्का, और मेरी बात सुनो," उसने कहा और अपने हाथो को छुडाने की कोई कोशिश न की। "ठीक है मैं एक लडकी हूँ, परन्तु जो कहती हूँ उसे सुनो। निश्चय करना मेरा काम नही। लेकिन यदि तुम मुझे प्यार करते हो तो तुमसे एक बात कहूँगी। मेरे हाथ छोड दो। मैं अपनी ओर से कह सकती हूँ कि तुमसे विवाह करूँगी। किन्तु तुम मेरे साथ कोई बेजा हरकत नही कर सकते। समझे?" मर्यान्का ने मुँह घुमाये बिना ही उत्तर दिया।

"मेरे साथ विवाह? विवाह हम पर तो निर्भर नही। प्यारी मर्यान्का, मुझे प्यार करो," लुकाश्का ने कहा। अब उसका क्रोध उतर रहा था। वह विनत, विनम्र और शिष्ट हो गया था। इस समय वह उसकी आँखो में आखें डाले मुस्करा रहा था।

मर्यान्का ने उसे अपनी भुजाओ में भर लिया और उसके ओठ कस कर चूम लिये।

"मेरे प्यारे!" उसका और भी कसकर आलिगन करते हुए वह धीरे से बोली। फिर उसने सहसा अपने को छुडाया और बिना इधर उधर देखे हुए अपने घर के फाटक की तरफ दौड गई।

कज्जाक मर्यान्का को क्षण भर रोकने के लिए गिडगिडाता ही रह गया। मगर वह न रुकी।

"अब तुम जाओ," वह चिल्लाई, "हमें कोई देख न ले! मेरा ख्याल है कि हमारे घर ठहरा हुआ शैतान मेहमान यही कही अहाते में घूम रहा होगा।"

"कार्नेट की पुत्री!" लुकाश्का ने सोचा। "वह मुझसे विवाह करेगी। विवाह अच्छी चीज़ है, लेकिन वह मुझे सिर्फ प्यार ही क्यो नही कर सकती?"

यामका के यहाँ उसकी से भेंट नज़ारका हुई। वहाँ थोडी देर तक उसके साथ शराब पीने के बाद वह दुनैका के घर चला गया। यद्यपि दुनैका ने उसे अपनी बेवफाई का सबूत पहले ही दे दिया था फिर भी उसने रात वही बिताई।

१४

यह बात सच थी कि जब मर्यान्का फाटक में घुसी उस समय ओलेनिन अहाते में चहलकदमी कर रहा था और उसने 'शैतान मेहमान' यानी वे शब्द सुन लिये थे जिनका प्रयोग मर्यान्का ने उसके लिए किया था। वह सारी शाम चचा येरोश्का के साथ अपने नये घर की दालान में बैठा बैठा चाय की चुस्कियो तथा सिगार के धुएँ के बीच चचा येरोश्का से गप्प लडाता रहा। कभी कभी तो मेज़ पर रखी हुई मोमबत्ती के प्रकाश में वहाँ शराब के दौर भी चलने लगते। उसने बैठे बैठे

चचा येरोश्का की गप्पो का आनन्द लिया था। उस समय हवा शान्त थी, फिर भी मोमबत्ती की लौ प्राय झिलमिलाने लगती और कभी उसका प्रकाश दालान के खभो पर, कभी मेज़ पर, कभी उस पर रखे हुए प्लेट-प्यालो पर और कभी बूढे के घुटे हुए सिर पर पडने लगता। वत्ती के चारो ओर पतगे चक्कर लगाते और जव वे मेज़ पर उडते तो उनके परो की धूल या तो उसी पर झड पडती या पास रखे हुए गिलासो में। कभी वे वत्ती की लौ में प्रवेश करके अपने प्राणो की वलि देते और कभी सामने के अन्धकार में उड कर गायव हो जाते। ओलेनिन और येरोश्का चिखीर की पाच वोतले खाली कर चुके थे। प्रत्येक वार येरोश्का एक गिलास भर कर ओलेनिन को देता और एक स्वय लेता और उसके स्वास्थ्य की कामना करते हुए उसे गटक जाता। और, फिर अपनी गप्पें शुरू कर देता। उसने ओलेनिन को पुराने ज़माने के कज्ज़ाक-जीवन की घटनाएँ सुनाई, अपने पिता 'हट्टे-कट्टे' के वारे में भी कुछ कहा जो तीन तीन सौ हडरवेट तक के सुअर अपनी पीठ पर लाद लेते थे और एक एक वार में दो दो वाल्टी शराव पी जाते थे। उसने अपने ज़माने की भी वाते वताई और अपने मित्र गिरचिक का उल्लेख भी किया जिसके साथ प्लेग के दिनो में वह तेरेक के उस पार से चोरी चोरी नमदे के लवादे लाया करता था। उसने वताया कि एक दिन प्रात काल उसने दो हिरनो का शिकार किया था। उसने अपनी प्रियतमा के वारे में भी वताया जो रात में भाग कर घेरे में उसके पास आया करती थी। ये सव वाते उसने कुछ इतना मज़ा ले लेकर तथा इतने रोचक ढग से कही कि ओलेनिन को पता ही न चल पाया कि समय वीत कैसे गया।

"हा दोस्त तुम क्या जानो कि जवानी में मै क्या था। उस समय मिलते तो तुम्हे कुछ दिखाता भी। आज 'येरोश्का जूठन चाटता है' परन्तु उस समय सारी फौज में मशहूर था। किसका घोडा सवसे अच्छा था?

किसके पास गुर्दा* तलवार थी? कौन पी कर सबसे अधिक मस्त रहता था? अहमद-खाँ को मारने के लिए पहाड़ो पर किसे भेजा जाय? हमेशा जवाब होता था—येरोश्का। लड़कियो को कौन प्यार करता था? इसका जवाब भी हमेशा येरोश्का को ही देना पड़ता। चूँकि मैं एक असली जिगीत था, पियक्कड़ था, चोर था (मैं पहाड़ो में से लोगो के घोड़े छीन लाया करता था), गवैया था, इसलिए हर काम में मेरा हाथ हो सकता था। अब वैसे कज्ज़ाक रह कहाँ गये। अब तो उनकी तरफ देखने की भी तबीयत नहीं होती। जब वे इतने से ही होते हैं (येरोश्का ने ज़मीन से लगभग तीन फुट की उचाई तक हाथ उठा कर सकेत किया) तभी मसख़रो जैसे जूते पहनने लगते हैं और उन जूतो को इस लोभी दृष्टि से देखते हैं कि उनके लिए सिवा जूतो के दुनिया में कुछ है ही नहीं। या फिर शराब पीते है, और शराब भी कोई आदमियो की तरह थोड़े ही पीते है, अजी जानवरो की तरह ढकोसते हैं, जानवरो की तरह। और मैं कौन था? मै था येरोश्का—चोर। गाँवो और पहाड़ो में सभी जगह मेरा नाम था। राजकुमार मुझसे मिलने आते थे। वे मेरे कुनक थे। मै भी सभी का कुनक होता था। तातार के साथ तातार जैसा, आरमीनियाई के साथ आरमीनियाई जैसा, सिपाही के साथ सिपाही जैसा, अफसर के साथ अफसर जैसा! बस उसे पियक्कड़ भर रहना चाहिए और चाहे जो हो। लोग कहते है 'इस मायामोह को छोड़ो। सिपाहियो के साथ शराब मत पियो। तातारो के साथ खाना मत खाओ'।"

"ऐसा कौन कहता है?" ओलेनिन ने पूछा।

---

* काकेशिया में सबसे अधिक प्रसिद्ध तलवारे या कटारे उनके निर्माता—गुर्दा—के नाम से प्रसिद्ध थी—सपादक।

"क्यो, हमारे ये पादरी। किन्तु किसी मुल्ला या तातार काज़ी की बात सुनो। वह कहेगा 'तुम क़ाफिर! तुम सुग्रर का गोश्त क्यो खाते हो?' इसका अर्थ है हर एक की अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग। परन्तु मै समझता हूँ कि सब एक है। भगवान ने जो कुछ बनाया है वह मनुष्य के आराम के लिए, उसके उपभोग के लिए। और इसमे पाप की क्या बात! मिसाल के लिए आप एक पशु को ही ले लीजिए। वह तातार के जगलो में भी रहता है और हमारे जगलो में भी। वह चाहे जहाँ जाये वही उसका घर है। भगवान जो भी उसे दे देता है वही खा लेता है। लेकिन हमारे लोग कहते है कि इन सबके लिए तुम्हे नर्क में जलती हुई कढाइयो में भूना जायगा। और मै समझता हूँ यह सब गप है," उसने थोडा ठहर कर कहा।

"क्या गप है?" ओलेनिन ने पूछा।

"क्यो, पादरी क्या कहते है? हमारे साथ चेर्वलेनया मे एक फौजी कप्तान था। वह मेरा कुनक था और भला आदमी था, मेरे ही जैसा। वह चेचना में मारा गया। कहा करता था कि ये सब बाते पादरियो और उपदेशको के दिमागो की उपज है। 'जब तुम मरोगे तो तुम्हारी क़ब्र पर भी घास ही उगेगी और कुछ नहीं!' वह कहा करता था।" बूढा हँस दिया। "वह एक ढीठ आदमी था।"

"तुम्हारी क्या उम्र है?" ओलेनिन ने पूछा।

"भगवान ही जाने! यही कोई सत्तर वर्ष। जब तुम्हारे यहाँ ज़ारिना राज्य करती थी उस समय मै बहुत छोटा नही था। इसलिए तुम हिसाब लगा सकते हो। मैं सत्तर वर्ष का ही हूँगा।"

"हा, जरूर होगे। किन्तु अब भी तुम आदमी मज़ेदार हो।"

"भगवान की कृपा है। मै अब भी तन्दुरुस्त हू। बराबर तन्दुरुस्त रहा हूँ। सिर्फ एक औरत ने बीच में कुछ गडबड कर दिया, बस "

"सो क्या ?"

"हाँ, उसी ने सब गडबड किया।"

"और इसलिए जब तुम मरोगे तो तुम्हारी कब्र पर भी घास ही उगेगी ?" ओलेनिन ने वे शब्द दुहराये।

येरोश्का नही चाहता था कि अपने विचारो को स्पष्ट रूप मे कहे। वह कुछ देर तक मौन रहा।

"और तुम क्या सोचते हो? अमाँ पियो भी!" और उसने हँसते हँसते ओलेनिन को शराब का गिलास थमा दिया।

१५

"तो मै क्या कह रहा था ?" सोचने की कोशिश करते हुए उसने अपनी बात फिर शुरू की। "हाँ, तो मै ऐसा आदमी हूँ। मै शिकारी हूँ और फौज भर में मुझसे अच्छा दूसरा शिकारी कोई है भी नही। मैं किसी भी जानवर या किसी भी चिडिया का पता लगा सकता हूँ। मैं तुम्हे दिखा दूगा। ये जानवर क्या करते है, कहाँ जाते है मै सब जानता हूँ। मेरे पास कुत्ते है, दो बन्दूके है, जाल है, परदा है, बाज है। भगवान का दिया सब कुछ है। अगर तुम सच्चे शिकारी हो और सिर्फ शेखी ही नही बघारते तो मैं तुम्हे सब कुछ दिखा दूगा। तुम्हें मालूम है कि मैं कैसा आदमी हूँ ? मैं पैरो के निशान देख भर लूं कि जान लूंगा जानवर कौनसा होगा, कहाँ बैठेगा, कहाँ पानी पियेगा और कहाँ लोटे-पोटेगा। मैं एक अड्डा बना लेता हूँ और रात भर वहाँ बैठा बैठा अपने शिकार पर निगाह रखता हूँ। घर पर ठहरने से क्या लाभ! घर बैठे बैठे शरारत ही तो सूझती है या फिर शराब दिखाई देती है। औरते आती हैं, बकबक करती हैं। बच्चे आते हैं, सिर खाते

है। यह सब किमी की भी खोपडी खाली कर देने के
काफी है।

"मायकाल घर के वाहर निकल जाने की वात ही दूमरी
नरकटो को दवाते हुए आप उनपर बैठ जाते है और भलेमानुसो
तरह इन्तज़ार करते है, जगलो मे जो कुछ हो रहा है उस पर सर
निगाह डालते हैं, आसमान ताकते है, मितारो को आते-जाते देखते
और आपको पता चल जाता है कि इस समय क्या वजा है। आप ज
के चारो ओर देखने लगते है—जगल में आपको सी-मी जैसी आ
सुनाई पडती है, और वहाँ आप वैठे वैठे इन्तज़ार करते
और काफी देर के वाद आपको झाडियो में खडखडाहट सुनाई देती
और आप समझने लगते है कि अव कोई सुअर निकलेगा और कीचड
लोटेगा। चीलो के वच्चे चेचे करते है, मुर्गे गाँव में वाग
है और वत्तखें चिचियाती है। जव आप वत्तखो की वोली सुनते
तो इसका अर्थ यह है कि अभी आधी रात नही हुई। और
ऐमी मभी चीज़ो के वारे मे मालूम है। अथवा, आप कही दूर ग
दगने की कोई आवाज़ मुनते है और मोच में पड जाते है। कौन ग
चला रहा है? क्या वह आप ही जैमा कोई दूसरा कज़्ज़ाक तो नही,
किसी जानवर की टोह में कही छिपा हो। और क्या उसने शिकार
भी? हो मकता है उसने उमे घायल ही किया हो और वेचारा जा
लगडाता लगडाता नरकटो के वीच घूम रहा हो और अपने पीछे
खून की बूंदें टपकाता जाता हो। तो उमकी मेहनत वेकार ही हुई
मुझे यह मव पमन्द नही! ओफ ये मव वाते मुझे कितनी नापमन्द
किसी जानवर को आप घायल क्यो करे? वेवकूफ! वेवकूफ! अथवा
सोचने लगते है कि 'हो मकता है किसी अब्रेक ने किसी वेव
नवयुवक कज़्ज़ाक को ही मार डाला हो' और आपके मस्तिष्क में

प्रकार के विचार आते रहते हैं। और एक बार जब मैं किसी जानवर की टोह में बैठा इन्तजार कर रहा था तो क्या देखता हूँ कि एक पालना तैरता हुआ चला आ रहा है। पालना बिल्कुल ठीक था, बस उसका एक कोना थोडा-सा टूटा था। उस समय मेरे दिमाग में बहुत से विचार आने-जाने लगे थे! किसका पालना हो सकता है यह? मैंने सोचा कि तुम्हारे ही कुछ सिपाही, वे शैतान, किसी औल में घुस गये होंगे और उन्होंने चेचेन महिलाओं को पकड लिया होगा, फिर किसी शैतान ने किसी बच्चे को मार डाला होगा, उसकी टांगें पकडी होगी और सिर दीवाल से दे मारा होगा। क्या वे यह सब नही करते? ओफ, आदमी सचमुच निर्दय और हृदयहीन होता है। और मेरे दिमाग में ऐसे ऐसे विचार आये जिन्होंने मेरे कठोर हृदय में भी करुणा भर दी। हाँ, मैंने सोचा, उन लोगों ने पालना फेंक दिया होगा, पत्नी को निकाल बाहर किया होगा और घर फूक दिया होगा। और अब उस अबला का पति बन्दूक लेकर हमारे इलाके में हमें लूटने आया है। जब आप वहाँ बैठते हैं तो न जाने कितने विचार आते हैं, जाते हैं। जब आप कोई ऐसी आवाज़ सुनते हैं जिससे आपको लगता है कि कोई जानवर झाडी से होकर गुज़र रहा है तो आपके हृदय मे गुदगुदी होने लगती है। काश वह इधर आ जाता! परन्तु तुरन्त ही आप सोचते हैं कि कही उसी को आपका सुराग़ न मिल जाय। आप बैठे रहते हैं, अपनी जगह मे हिलते तक नहीं और आपका दिल धडकने लगता है। आप हवा में उडने लगते हैं। इसी वसन्त की बात है। एक दिन ऐसा लगा जैसे कोई जानवर मेरे बिल्कुल ही पास आ गया। मुझे कोई काली काली चीज़ दिखाई दी। 'पिता और पुत्र के नाम' मैंने ये शब्द मुँह से निकाले ही थे और गोली चलाने ही वाला था कि एक शूकरी घुरघुरा दी। 'बच्चो, यहाँ खतरा है,' वह कहती है, 'यहाँ कोई आदमी है' और फिर झाडियो को चीरते-फाडते वे सब के

सब भाग गये। मुझे इतना गुस्सा आया कि जी हुआ कि शूकरी को दातों मे नोच डालूँ।"

"शूकरी अपने बच्चों से यह कैसे कह सकती थी कि वहाँ कोई आदमी था?" ओलेनिन ने पूछा।

"क्यों नही कह सकती। तुम समझते हो जानवर बेवकूफ होते है? नहीं, शूकरी आदमी से अधिक बुद्धिमान होती है, यद्यपि आप उसे कहते सुअर ही हैं! वह सब कुछ जानती है। मिसाल के तौर पर यही बात ले लीजिये। यदि मनुष्य मनुष्यों के पैरों के निशान देखे तो उन पर ध्यान न देगा। परन्तु जब कोई शूकरी आपके पैरों के निशान देखती है तो उन्हे सूंघती है और भाग जाती है। इससे पता चलता है कि उसे बुद्धि है। बोलो, ठीक कहता हूँ न? आपको अपनी महक भले ही न लगे परन्तु वह उसे पहचानती है। आप उसका शिकार करना चाहेंगे लेकिन वह जगल में भाग जायगी और आप टापते रह जायेंगे। आपका कानून दूसरा है और उसका दूसरा। वह शूकरी जरूर है परन्तु आपसे गई-बीती नही है। हम सब ईश्वर के बनाये है। दोस्त! आदमी क्या है–बेवकूफ, बेवकूफ, बेवकूफ!" बूढे ने कई बार यह बात दुहराई और फिर सिर लटकाकर कुछ सोचने लगा।

ओलेनिन की मुद्रा भी विचारशील हो गयी। वह पीठ पीछे दोनों हाथ रख कर दालान से बाहर आया और अहाते मे इधर उधर टहलने लगा।

अब येरोश्का ने अपना सिर उठाया और मोमबत्ती की झिलमिलाती हुई लौ पर गिरते तथा अपनी बलि देते हुए पतगों को ताकने लगा।

"बेवकूफो, बेवकूफो!" उसने कहा, "किधर उडे जा रहे हो? तुम सब बेवकूफ हो!" वह उठा और अपनी मोटी उगलियों से पतगे उडाने में जुट गया।

"अरे बेवकूफ! अपने को जला डालेगा क्या! इधर उड। यहां बहुत जगह पडी है," वह बडी कोमलता से बोला। उसने अपनी मोटी उगलियो मे कुछ पतगे पकडे और उडा दिये। "तुम सब अपने को जला रहे हो। मुझे तुम्हारी बुद्धि पर तरस आता है।"

वह बडी देर तक गपशप करता और शराब की चुस्कियाँ लेता रहा। ओलेनिन अहाने में चहलकदमी कर रहा था। सहसा उसने फाटक के बाहर कुछ फुसफुसाहट सुनी। साँस रोके हुए उसने किसी स्त्री की हँसी, किसी पुरुष की आवाज़ और चुम्बन की ध्वनि सुनी। पैरो से घास रौंदते और उसमें चरचराहट पैदा करते हुए वह अहाते को पार करके उसके दूसरी ओर आ गया। परन्तु थोडी ही देर बाद फाटक बन्द होने की आवाज़ सुनाई दी। गहरा चेरकेसियन कोट पहने और भेड की खाल की सफेद टोपी लगाये एक कज़्ज़ाक युवक बाडे के दूसरी ओर से गुज़रा (यह लुकाश्का था) और सिर पर सफेद रूमाल लपेटे एक लम्बी युवती ओलेनिन के पास से होकर निकल गई। ऐसा लगता था जैसे मर्यान्का के कठोर कदम कह रहे हो "हमारा तुम्हारा एक दूसरे से कोई मतलब नही।" उसकी आँखें घर के दालान तक उसका पीछा करती रही। खिडकी में से उसने यह भी देखा कि उसने मुंह पर से रूमाल उतारा और बैठ गई। और सहसा एकाकीपन की अनुभूतियो, अस्पष्ट इच्छाओं और आशाओं तथा किसी न किसी के प्रति ईर्ष्या के भावो ने उस युवक की आत्मा को अभिभूत कर लिया।

मकानो की आखिरी बत्तियाँ बुझा दी गई थी। शोरगुल ख़त्म हो गया था। ऐसा लगता था कि बाडो के टट्टर, अहातो में दिखाई पडने वाले मवेशी, मकानो की छते और गर्वोन्नत चिनार इन सभी पर शान्त, स्वस्थ निद्रा का प्रभाव पड चुका है। कही दूर से आती हुई मेढको की 'टर्र-टर्र' को छोड कर बाकी सब कुछ शान्त था। पूर्व की ओर टिमटिमाते

हुए सितारो की सख्या कम होती जा रही थी और लगता था कि वे बढते हुए प्रकाश में विलीन हुए जा रहे है। किन्तु सिर के ठीक ऊपर वे पहले से अधिक गझे हुए और चमकदार लग रहे थे। बूढा अपना सिर हाथो पर रखे ऊँघ रहा था। अहाते के दूसरी ओर से मुर्गे की कुकडूकूँ सुनाई दी। परन्तु ओलेनिन विचारो में खोया हुआ अहाते में टहलता रहा, कभी इस ओर, कभी उस ओर। उसके कानो मे एक समूह गान की धुन पडी। वह बाडे के टट्टरो के पास तक बढ आया और सुनने लगा। कुछ नवयुवक कज्जाक झूमते हुए गा रहे थे। इनमें से एक आवाज़ ऐसी थी जो दूर से ही स्पष्ट सुनाई पड रही थी।

"तुम जानते हो वहाँ कौन गा रहा है?" बूढे ने उठते हुए कहा, "वह है बहादुर लुकाश्का। उसने एक चेचेन को मारा है और अब जशन मना रहा है। परन्तु इसमें खुशियाँ मनाने की क्या बात? बेवकूफ, बेवकूफ!"

"क्या तुमने कभी किसी आदमी को भी मारा है?" ओलेनिन ने प्रश्न किया।

बूढा एकाएक अपनी दोनो कुहनियो के बल उठा और ओलेनिन के मुँह के पास मुँह ले जाकर कहने लगा। "शैतान कहीं के!" उसकी आवाज़ तेज होती जा रही थी। "क्या पूछ रहे हो? इसका ज़िक्र मत करो। यह बात इतनी गम्भीर है कि मनुष्य को पतन की किसी भी सीमा तक ले जा सकती है उफ, यह बात बडी गम्भीर है! अच्छा, दोस्त, नमस्ते। तुम्हारे भोजन और तुम्हारी शराब में मजा आ गया।" और उठते उठते उसने पूछा "मै कल आऊँ, चलोगे शिकार खेलने?"

"हाँ, जरूर।"

"मगर यह ध्यान रहे। उठना जल्दी है अगर ज्यादा देर तक सोते रहे तो जुर्माना देना होगा!"

"डरो मत, मैं तुमसे पहले उठूंगा।"

बूढा चला गया। गाना भी वन्द हो गया। परन्तु अभी तक पगध्वनियाँ और हँसी खुशी की बातें सुनाई पड रही थी। थोडी देर बाद गाना फिर शुरू हुआ। अब येरोश्का की तेज़ आवाज भी सुनाई पडी।

"कैसे लोग है! कैसा जीवन!" ओलेनिन ने सोचा। उसने एक आह भरी और अपने कमरे में चला गया—अकेले।

१६

चचा येरोश्का नौकरी छोड चुका था और अकेला रहता था क्योंकि बीस साल पहले उसकी पत्नी ईसाइन बन चुकी थी और उसने उन्हे छोड कर एक रूसी सार्जेंट-मेजर से विवाह कर लिया था। येरोश्का के कोई बच्चा न था। जब उसने कहा था कि अपनी जवानी में मैं सबसे बहादुर था तब वह कोई शेखी नही मार रहा था। सेना में सभी लोग उसका पराक्रम जानते थे। एक से अधिक रूसियों और चेचेनो की मृत्यु ने उसकी आत्मा पर गहरा प्रभाव डाला था। वह लूट-मार करने के लिए पहाडो में जाया करता था। उसने रूसियो को लूटा भी था और इसके लिए उसे दो बार जेल भी काटनी पडी थी। उसके जीवन का अधिकाश जगलो मे शिकार खेलते बीता था। वहाँ कई कई दिनो तक तो वह सिर्फ रोटी पानी पर रहा करता था। परन्तु जब कभी गाँव मे होता तो सुबह से शाम तक मौज उडाता। ओलेनिन के पास से आने के बाद वह दो-एक घटे सोया और फिर रोशनी होने से पहले पहले उठ गया। वह बिस्तर पर पडा पडा उस व्यक्ति के बारे मे सोच रहा था जिससे उसका अभी शाम को ही परिचय हुआ था। ओलेनिन की सादगी (सादगी इस माने

में कि उसने उसे शराब पिलाई थी) ने उसे मुग्ध कर दिया था। स्वय ओलेनिन के व्यक्तित्व का भी उसपर प्रभाव पडा था। उसे आश्चर्य होता था कि ये रूसी 'सीधे-सादे' क्यो होते हैं, इतने धनी क्यो होते है, और ऐसा क्यो कि वे जानते तो कुछ भी नही परन्तु फिर भी खूब पढे-लिखे होते हैं। वह इन सभी प्रश्नो पर मनन करता रहा और सोचता रहा कि ओलेनिन के सम्पर्क मे वह क्या लाभ उठा सकता है।

चचा येरोश्का का मकान बडा था और पुराना भी न था। परन्तु उसमें प्रवेश करते ही स्पष्ट प्रतीत हो जाता कि वह 'बिन घरनी घर भूत का डेरा' बना हुआ है। कज्जाक अपनी स्वच्छता-सफाई के लिए प्रसिद्ध रहा है। परन्तु यह सारे का सारा मकान गन्दा और बेतरतीब था। कही मेज़ पर एक कोट पडा था जिसपर खून के धब्बे साफ साफ दिखाई पड रहे थे, कही कटा-कटाया कोई कौआ पडा था, जो वह बाज़ को खिलाया करता था, और कही आटे और शक्कर का बना आधा लड्डू पडा था। बेंचो पर कच्चे चमडे की चप्पले, एक बन्दूक, एक कटार, गीले कपडे और कुछ चीथडे इधर-उधर बिखरे पडे थे। एक कोने में एक नांद थी जिसमें बदबूदार पानी था। उसी में एक जोडी चप्पले भी पडी थीं। पास ही एक रायफल और शिकारी परदा तना था। फर्श पर एक जाल फिका पडा था जिसमें कई मरे हुए तीतर लपटे थे और टांग बधी एक मुर्गी मेज़ के आस-पास धूल मे सनी फुदक रही थी। बुझी हुई अगीठी पर एक टूटा बर्तन चढा था जिसमें दूध की तरह का कोई सफेद द्रव पडा था। अगीठी के सिरे पर एक श्येन चिनचिना रहा था और उस डोरे को तोडने का प्रयत्न कर रहा था जिससे वह बधा था। अगीठी के एक किनारे एक बाज़ बैठा था जिसके पर फैले हुए थे। वह पास खडी हुई एक मुर्गी को कनखियो मे घूर रहा था और कभी अपना सिर इधर घुमाता, कभी उधर।

चचा येरोश्का एक साधारण सी कमीज पहने स्टोव और दीवाल के बीच रखे हुए एक छोटे से पलग पर औंधा लेटा था। उसकी टाँगें स्टोव पर थी। वह अपनी मोटी उगलियो से उन खरोचो को सहला रहा था जो वाज ने उसके बायें हाथ में मार दिये थे—उसे बिना दस्ताना पहने ही बाज को अपने हाथो पर बिठाने का अभ्यास था। सारे कमरे, और मुख्यतया, बूढे के आस-पास की जगह से एक विचित्र प्रकार की तेज गध-सी आ रही थी। चचा स्वय इस गध को अपने शरीर पर लादे लादे फिरा करता था।

"यूदे-मा, चाचा?" (क्या चचा अन्दर है?) खिडकी में से एक तेज आवाज सुनाई पडी। बूढे ने उसे पहचान लिया। आवाज लुकाश्का की थी।

"यूदे, यूदे, यूदे! मैं यहाँ हूँ!" बूढा चिल्लाया। "आ जाओ, पडोसी मार्का, लुका मार्का। तुम्हारा यह चचा तुम्हारे लिये क्या कर सकता है? क्या घेरे की तरफ जा रहे हो?"

मालिक की चिल्लाहट सुनकर बाज ने अपने पख फडफडाये और अपनी डोरी पर खिच गया।

बूढा लुकाश्का को पसन्द करता था क्योकि एक वही व्यक्ति रह गया था जिसे चचा ने जवान कज्जाको से, जिनमे वह साधारणतया घृणा करता था, भिन्न समझा था। इसके अतिरिक्त पडोसी होने के नाते लुकाश्का और उसकी माँ उसे कभी शराब, कभी मलाई और कभी घर की बनी ऐसी चीजें दे दिया करती जो उसके पास न होती। चचा येरोश्का जीवन भर बहकता ही रहा था। वह अपनी बेवकूफी वाली बात भी एक व्यवहारिक दृष्टिकोण से समझाया करता। "वे क्यो न दें? वे देने में समर्थ जो है," वह मन ही मन कहता था, "मैं उन्हे कुछ ताजा गोश्त या कोई चिडिया दे दूँगा और फिर वे अपने चचा को कभी न भूलेंगे। कभी कभी वे भी अपने चचा को केक या कचौडी समोसा दे दिया करेंगे।"

"नमस्ते, मार्का! तुमसे मिलकर बडी खुशी हुई," बूढा खुशी से चिल्ला उठा और अपने नगे पैरो को अगीठी से उतारते हुए पलग से नीचे कूद पडा, चरमराते हुए फर्श पर एक-दो कदम चला, पैरो की मुडी हुई उगलियो पर एक निगाह डाली और पैरो की शकल देख कर मुस्करा दिया। फिर, उसने जमीन पर एडी जमाई और झट से घूम गया।

"इसे कहते है कौशल!" उसने कहा और उसकी छोटी छोटी आँखें चमक उठी। लुकाश्का धीरे से मुस्करा दिया।

"घेरे पर जा रहे हो?" बूढे ने पूछा।

"मै तुम्हारे लिए चिखीर लाया हूँ। तुम्हे याद होगा जब मैं घेरे में था तो मैने तुम्हे पिलाने का वादा किया था।"

"भगवान भला करे!" बूढे ने दुआ दी और फर्श पर पडी बडी बडी मोहरी वाली अपनी पतलून और बेशमेत पहनी, कमर में पेटी लगाई, मिट्टी के घडे से कुछ पानी हाथ पर ढरकाया, हाथ पतलून में पोछे, कघे से दाढी चिकनी की और लुकाश्का के सामने आकर खडा हो गया। "तैयार," उसने कहा।

लुकाश्का ने एक गिलास उठाया, उसे धोया, उसमें शराब उडेली और बूढे को पकडा दी।

"तुम्हारे स्वास्थ्य की कामना करते हुए! पिता और पुत्र के नाम!" गम्भीरतापूर्वक शराब स्वीकार करते हुए बूढा बोला, "तुम्हारी मनोकामना पूरी हो, हमेशा वीर बने रहो और पदक प्राप्त करो।"

लुकाश्का ने भी कुछ बुदबुदाते हुए थोडी सी पी और बाकी मेज पर रख दी।

बूढा उठा, कुछ सूखी हुई मछलियाँ बटोरी, उन्हे फर्श पर रखा, छडी से पीटा और अपने सींग जैसे हाथो से उन्हे एक नीली तश्तरी में (उसके पास यही एक तश्तरी थी) रखते हुए मेज की तरफ बढा दिया।

"जो कुछ मुझे चाहिए मेरे पास सब है। खाने की चीजें भी हैं। भगवान की दया है," वह गर्व से बोला, "मोसेव के बारे में क्या रहा?" उसने पूछा।

लुकाश्का ने बूढे की राय जानने के उद्देश्य से उसे बताया कि किस प्रकार कारपोरल ने उससे बन्दूक हथिया ली थी।

"बन्दूक की चिन्ता मत करो," बूढा बोला, "अगर बन्दूक नही दोगे तो इनाम नही मिलेगा।"

"परन्तु, चचा, लोग कहते है कि जब तक कज्जाक घुडसवार सैनिक नही होता तब तक उसे बहुत थोडा इनाम मिलता है। बन्दूक बढिया है, ८० रूबल की।"

"अरे जाने भी दो! मुझसे भी एक अफसर से ऐसा ही झगडा हो गया था—वह मेरा घोडा चाहता था। 'मुझे इसे दे दो और तुम कार्नेट बना दिये जाओगे,' वह कहता था। मैने घोडा नही दिया और मैं कुछ नही बना।"

"हाँ, चचा, परन्तु मुझे एक घोडा खरीदना है। लोग कहते हैं कि नदी के उस पार भी कोई घोडा ५० रूबल से कम नही मिलेगा, और माता जी है कि उन्होने अभी तक हमारी शराब ही नही बेची।"

"अरे मुझे तो कभी इसकी चिन्ता नही रही," बूढा बोला, "जब चाचा येरोश्का तुम्हारी उम्र के थे तभी नगई लोगो से ढेर के ढेर घोडे चुरा कर तेरेक के इस पार हाक लाते थे और अक्सर हम एक आध गिलास शराब या एक लबादे में लोगो को बढिया से बढिया घोडे दे देते थे।"

"इतने सस्ते क्यो?" लुकाश्का ने पूछा।

"तुम नासमझ हो, पूरे नासमझ, मार्का," बूढे ने घृणा से कहा, "क्यो, मनुष्य चोरी इसीलिए तो करता है कि कजूस न बने। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है मैं समझता हूँ तुम्हें तो यह भी न मालूम होगा कि चोरी की कैसे जाती है? बोलते क्यो नही?"

"मै क्या कह सकता हूँ, चचा?" लुकाश्का ने जवाव दिया, "लगता है हम तुम दोनो एक धातु के नही वने है।"

"तुम वेवकूफ हो, मार्का। पूरे वुद्धू! एक धातु के नही!" कज्ज़ाक छोकरे को मुह विराते हुए वूढे ने कहा, "भाई, जव मैं तुम्हारी उम्र का था उस समय मै वैसा कज्ज़ाक नही था।"

"यह कैसे?" लुकाश्का ने पूछा।

वूढे ने घृणा से गर्दन हिला दी।

"चचा येरोश्का सीधा-सादा था। उसने कभी किसी से ईर्ष्या न की। इसीलिए मै सव चेचेनो का कुनक था। जव कभी कोई कुनक मुझ से मिलने आता तो मै उसे शराव पिला कर खुश कर देता और सोने के लिए अपना पलग दे दिया करता और जव मैं उससे मिलने जाता तो उसे तोहफे दिया करता। मिलने-जुलने का यही एक तरीका है वैसा नही जैसा कि आजकल आप लोग अपनाए हुए है। आपका मन-वहलाव ही क्या—वीजे तोडिये और छिलके थूकिये!" वूढे ने वात खत्म की और आजकल के उन कज्ज़ाको की नकल करने लगा जो सूर्यमुखी के वीज फोडते और छिलके थूका करते थे।

"हाँ, मै जानता हूँ" लुकाश्का वोला, "तुम ठीक कहते हो।"

"अगर तुम ढग के आदमी वनना चाहते हो तो जिगीत वनो, किसान नही! किसान भी एक घोडा खरीद सकता है—वह रुपया दे दे और घोडा ले ले।"

दोनो कुछ देर के लिए चुप हो गये।

"गाव और घेरे दोनो ही जगह वडा सन्नाटा है, चचा, परन्तु ऐसी भी तो कोई जगह नही जहाँ खेल-कूद में ही आदमी थोडा दिल वहला ले। हमारे सभी छोकरे तो डरपोक है। नज़ारवा को ही ले लो। अभी उसी दिन, जव हम औल गये थे, हमें गिरेई-खाँ ने कुछ घोडे लेने के लिए नगई वुलाया था। परन्तु कोई भी नही गया। मै अकेले कैसे जाता?"

"तुम्हारे चचा तो है? तुम समझते हो कि मुझमें कोई जोश बाकी नही रहा? नही, ऐसी बात नही। मुझे एक घोडा दो और मैं तुरन्त नगई चला जाऊँगा।"

"बेवकूफी की बातो मे क्या फायदा!" लुकाश्का ने कहा, "मुझे तो यह बताओ कि अब गिरेई-खाँ से कैसे निबटा जाय। उसका कहना है, 'सिर्फ तेरेक तक घोडे ले आओ फिर उनकी सख्या चाहे जितनी ही हो मैं उन्हे रखने की जगह बना लूगा'। वह चेचेन है, मालूम है। उसकी बात का कोई ठिकाना नही।"

"तुम गिरेई-खाँ का विश्वास कर सकते हो। उसके खानदान के सभी लोग अच्छे है। उसका पिता मेरा कुनक था। परन्तु अपने चचा की सुनो, वह तुम्हें गलत राय न देगा। गिरेई-खाँ को कसम खिला दो और तब सब कुछ ठीक हो जायगा, और अगर तुम उसके साथ जाओ तो साथ में पिस्तौल भी तैयार रखना, खासकर उस समय के लिए जब घोडे बाटने का सवाल उठे। एक बार एक चेचेन ने तो इस प्रकार मुझे मार ही डाला था। मै उससे एक घोडे के १० रूबल चाहता था। विश्वास करना अच्छी बात है, परन्तु बिना बन्दूक के सोने मत जाना।"

लुकाश्का बूढे की बात बडे ध्यान से सुन रहा था।

"मै पूछता हूँ, चचा, तुम्हारे पास पत्थर-तोड घास है?" कुछ क्षणो के बाद उसने प्रश्न किया।

"मेरे पास तो नही पर मैं तुम्हे बता सकता हूँ कि वह मिल कैसे सकती है। तुम एक अच्छे छोकरे हो। इस बूढे को मत भूलना तो क्या मैं तुम्हे बताऊ?"

"बताओ, चचा।"

"कछुआ देखा है? कितना भयकर जीव है, जानते हो?"

"जानता हूँ!"

"किसी प्रकार उसके रहने का ठिकाना मालूम करो और उसे वाडे मे घेर दो ताकि वह अन्दर न जा सके। वह वहाँ आयेगा, उसका चक्कर लगायेगा और पत्थर-तोड घास की फिराक में वापस चला जायेगा। शीघ्र ही वह घास लेकर लौटेगा और वाडा तोड देगा। ध्यान रहे कि तुम अगले दिन ज़रा तडके वहाँ पहुँचना। जहाँ वाडा टूटा हुआ मिलेगा वही पत्थर-तोट घास भी होगी। इसे तुम जहाँ चाहो ले जा सकते हो।"

"क्या तुमने स्वय यह तरीका इस्तेमाल किया है, चचा?"

"जहाँ तक इस्तेमाल करने की वात है तो भाई मैंने नही किया। परन्तु यह वात मुझे भले लोगो ने ही वताई है। मै तो केवल एक ही जादू इस्तेमाल करता था यानी जव मैं घोडे पर चढता था तो ज़ोर से चिल्लाता था 'जय वोलो' और फिर मुझे कभी किसी ने भी मौत के घाट नही उतारा।"

"यह 'जय वोलो' क्या है, चचा?"

"क्या तुम यह भी नही जानते? कैसे आदमी हो! चचा से पूछते हो ठीक करते हो। अव सुनो और मेरे साथ दोहराओ—

जय वोलो! ओ ज़ियाँ-निवासी!
करो दिव्य दर्शन राजा के
हम अश्वारोहण अभिलाषी।
सफोनियाँ के अश्रु गिरे,
जहारियस के वैन फिरे,
पिता महान मान्द्रिच हैं जो
मानवता-प्रिय चिर विश्वासी।
जय वोलो! ओ ज़ियाँ-निवासी!*

---

* हिन्दी रूपांतरकार डॉ० राम कुमार वर्मा।

"मानवता-प्रिय चिर विश्वासी," बूढे ने दुहराया। "अब समझ गये न? इस तरीके का इस्तेमाल करो।"

लुकाश्का हँस पडा।

"बताओ, चचा, क्या इसीलिए उन्होने तुम्हारी जान बख्श दी थी? हो सकता है यह सिर्फ इत्तिफाक की ही बात रही हो।"

"तुम बडे चतुर होते जा रहे हो। इसे जबानी याद कर लो और फिर कहो। इससे तुम्हे कोई नुकसान न होगा। केवल यही गाये जाना 'जय बोलो' और तुम्हारा सब काम बन जायेगा," और खुद बूढा भी हँसने लगा, "लुका, अच्छा हो तुम नगई न जाओ।"

"क्यो न जाऊँ?"

"अब समय बदल गया है। तुम लोग भी अब वैसे आदमी नही रहे। आजकल तुम सारे कज्जाक पाखण्डी हो गये हो। और यह भी देखो कि कितने रूसी हमारे सिर पर सवार हो गये हैं। वे तुरन्त तुम्हे अदालत मे खडा कर देंगे। जाने दो, यह विचार छोड दो। यह तुम्हारे बस का नही। गिरचिक और मैं, हम दोनो " और बूढा अपनी अनन्त गाथा सुनाने जा ही रहा था कि लुकाश्का ने खिडकी की ओर देखते हुए उसकी बात काटी।

"चचा, सूर्य निकल चुका है। अब मुझे जाना चाहिए। किसी दिन हमसे मिलने आओ न।"

"भगवान भला करे। मैं उस फौजी के पास जा रहा हूँ। मैंने वादा किया है कि उसे शिकार पर ले जाऊँगा। भला आदमी लगता है।"

१७

येरोश्का के मकान से निकलकर लुकाश्का सीधे घर गया। जमीन से कुहरा उठ उठ कर सम्पूर्ण गाँव को ढके ले रहा था। मवेशी तो दिखाई नही पड रहे थे फिर भी सभी ओर से ऐसी ऐसी आवाजें आती

सुनाई पड रही थी जिनसे प्रतीत होता था कि उनमें भी रेल-पेल शुरू हो गई है। मुर्गे एक दूसरे की बाँग का उत्तर-प्रत्युत्तर क्रमश जल्दी जल्दी देने लगे थे। रोशनी बढ रही थी और गांव के लोग उठने लग गए थे। जब तक वह अपने घर के बिलकुल नजदीक न पहुँच गया तब तक उसे अपने अहाते के टट्टर तक का अन्दाज़ नही लग पाया क्योंकि सभी जगह कुहरा ही कुहरा था, क्या मकान का दालान और क्या खुला सायबान। अपने कुहरावृत अहाते से उसने कुल्हाडी से काटी जाती हुई लकडी की चर्र-चर्र सुनी। वह घर में घुस गया। उसकी माँ जाग चुकी थी और अगीठी के पास खडी खडी उसमें लकडियाँ लगा रही थी। उसकी छोटी बहन अभी तक बिस्तरे में पडी पडी खर्राटे ले रही थी।

"देखो लुकाश्का, तुम काफी छुट्टी मना चुके हो?" उसकी माँ ने धीरे से पूछा, "रात कहाँ बिताई?"

"गांव में था," पुत्र ने अनिच्छा से उत्तर दिया और थैले में से अपनी बन्दूक निकाल कर उलटने-पुलटने लगा।

माँ ने भी सिर हिला दिया। लुकाश्का ने थोडी सी बारूद एक बर्तन में रखी, फिर एक थैली ली, उसमें से कुछ ख़ाली कारतूस निकाले और उन्हे भरने लगा। साथ ही वह उनमें एक एक गोली भी भरता रहा। गोलियाँ एक चिथडे में लिपटी थी। तब, भरे हुए कारतूसों को दाँतो से परीक्षा कर लेने के बाद उसने थैली एक ओर रख दी।

"माँ, मैंने तुमसे कहा था न कि थैलियो में मरम्मत की जरूरत है। हो गई मरम्मत?" उसने पूछा।

"हाँ, हाँ, हमारी गूँगी कल रात कुछ उधेड-बुन कर तो रही थी। क्यो, घेरे में जाने का वक्त हो गया क्या? मैंने तो तुम्हारी कोई चीज नही देखी।"

"हाँ, जैसे ही तयार हो जाऊँगा, वैसे ही जाना होगा," बारूद बाधते बाधते लुकाश्का ने जवाब दिया, "और हमारी गूंगी कहाँ है, बाहर?"

"मैं समझती हूँ लकडी काट रही है। वह तुम्हारे लिए परेशान हो रही थी। 'मैं उससे बात भी नही करूगी,' उसने मुझसे सकेत से कहा था। वह अपने मुंह पर ऐसे हाथ रखती है, ज़बान ऐसे चटखाती है और अपने दिल पर यो हाथ धरती है मानो उसका हृदय कह रहा हो 'काश मैं उससे मिल सकती!' मैं उसे यहाँ बुला लूँ क्या? उसे अब्रेक की सारी दास्तान मालूम हो चुकी है।"

"बुला लो," लुकाश्का ने कहा, "और मेरे पास कुछ चिकनई रखी थी, उसे भी ले आना। मुझे अपनी तलवार चिकनी करनी है।"

बूढी चली गई और थोडी ही देर बाद लुकाश्का की गूंगी-बहरी बहन पट-पट करती हुई कमरे में दाखिल हो गई। वह अपने भाई से छ वर्ष बडी थी और यदि उसके चेहरे की भावाभिव्यक्ति में बराबर रूक्षतापूर्ण परिवर्तन न हुआ करता (जैसा कि गूंगे-बहरे लोगो में स्वभावतया देखने को मिलता है) तो वह भी बहुत कुछ उसी के समान होती। वह एक भद्दी सी फ्राक पहने थी जिसपर जगह जगह पैबद लगे थे। उसके पैर नगे और कीचड से सने थे। उसके सिर पर एक पुराना नीला रूमाल कसा था। उसका गला, उसके हाथ और उसका चेहरा सभी मर्दो की तरह मज़बूत थे। उसके कपडो और आकृति-प्रकृति से पता चलता था कि वह सख्त किस्म की, पुरुषो जैसी, मेहनत की आदी थी।

वह दोनो हाथो में थोडी सी लकडियाँ लाई और अगीठी के पास फेंक कर अपने भाई के पास चली आई। उसका चेहरा प्रसन्नता से खिल

उठा। उसने उसके कंधे पर हाथ रखा और हाथ, मुँह और सारे शरीर से जल्दी जल्दी संकेत करने लगी।

"ठीक है, ठीक है, तुम बहुत अच्छी लड़की हो, स्तेप्का!" भाई ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया, "तुम सब कुछ ले आईं, तुमने सारी चीजों की मरम्मत कर दी। तुम बहुत अच्छी हो! यह लो!" उसने दो मीठी रोटियाँ अपनी जेब से निकालीं और उसे दे दीं।

गूँगी का चेहरा मारे प्रसन्नता के दमक उठा। वह खुशी में नाच उठी। रोटी पाकर तो वह और भी जल्दी जल्दी इशारे करने लगी। प्राय वह एक विशेष दिशा की ओर संकेत करती और फिर अपनी उंगली कभी भौंहों पर रखती, कभी मुँह पर। लुकाश्का ने उसकी बात समझ ली और ओठों पर हल्की मुस्कराहट लाते हुए सिर हिला दिया। वह कह रही थी कि लुकाश्का लड़कियों को भी कुछ स्वादिष्ट चीजें दे, लड़कियाँ उसे प्यार करती हैं और वह लड़की मर्यान्का जो सबसे सुन्दर है उससे बहुत प्रेम करती है। मर्यान्का की बात बताते हुए उसने उसके घर की दिशा में संकेत किया, अपनी भौंहों और अपने मुँह पर उंगली फेरी, ओठों से चुम्बन जैसा शब्द किया और अपना सिर हिला दिया। "वह तुमसे प्रेम करती है," अपने ही हाथों से अपनी छाती दबाती और किसी का आलिंगन करने जैसे इशारे करती हुई लड़की ने अभिनय किया। उनकी माँ भी अन्दर आ गई। वह भी गूँगी पुत्री की भाषा समझ कर मुस्करा दी और अपना सिर हिलाने लगी। पुत्री ने माँ को रोटी दिखाई और ऐसा शोर करने लगी जिससे प्रकट होता था कि मारे खुशी के पागल हुई जा रही है।

"मैंने पिछले दिन उलित्का से कहा था कि मैं उसके पास विवाह की बात चलाने के लिए किसी मुनासिब आदमी को भेजूंगी," माँ ने कहा, "उसने मेरी बात बड़े क़ायदे से सुनी थी।"

लुकाश्का मौन माँ की ओर देखता रहा। "परन्तु शराब वेचने का क्या रहा, माँ? मुझे एक घोडा चाहिए।"

"जब समय आयेगा मै उसे गाडी पर लदवा दूँगी। मै सब कुछ तैयार रखूँगी," माँ वोली। सम्भवत वह नही चाहती थी कि उसका पुत्र घरेलू मामलो में हाथ डाले।

"जब जाने लगना तो अपने साथ गलियारे में रखा हुआ थैला ले लेना। वह मै अपने पडोसियो से माँग लाई हूँ और उसमें मैने कुछ चीज़ें रख दी है जिन्हे तुम घेरे पर लिये जाना। या कहो तो उसे ज़ीन के साथ वाले थैले में डाल दूँ?"

"ठीक है," लुकाश्का ने जवाव दिया, "और अगर गिरेई-खाँ नदी पार करके इधर आ जाय तो उसे मेरे पास घेरे में भेज देना। अब मुझे वहुत समय तक छुट्टी न मिल सकेगी। मुझे उससे कुछ काम है।"

वह चलने के लिए तैयार होने लगा।

"मै उसे भेज दूँगी," माँ वोली, "तुम सारे वक्त याम्का के घर लफगापन करते रहे? यह वात ठीक है न? रात मे मै मवेशियो की देख-भाल के लिए निकली थी, और मै समझती हूँ कि वह तुम्हारी ही आवाज़ थी। तुम उस वक्त गा रहे थे।"

लुकाश्का ने कोई जवाव न दिया। वह गलियारे में घुसा, थैले अपने कधे पर डाले, कोट के किनारे पेटी मे वाधे, वन्दूक उठाई और दहलीज़ पर एक क्षण के लिए रुक गया।

"नमस्ते, माँ," फाटक वन्द करते करते उसने कहा, "नज़ारका के साथ शराव का एक छोटा सा कनस्तर भिजवा देना। मैने छोकरो को पिलाने का वादा किया है। नज़ारका शराव लेने यही आयेगा।"

"ईश्वर रक्षा करे, लुकाश्का। मैं तुम्हे नये कनस्तर में से थोडी सी भेज दूँगी," टट्टर तक जाते हुए बूढी ने कहा," परन्तु सुनो," टट्टर पर झुकते हुए वह वोली।

, कज्ज़ाक रुक गया।

"यहाँ तुम मस्ती करते रहे हो। खैर ठीक है। जवान ग्रादमी को उसके लिए भी ग्रवकाश क्यो न मिले? भगवान ने तुम्हे तकदीरवाला बनाया है ग्रौर यह बहुत ग्रच्छा है। परन्तु बेटे ग्राँख खोलकर काम करना। हर कदम सोचकर उठाना। किसी व्यसन या शरारत में हाथ न डालना। ग्रपने से बडो की इज्ज़त करना। ये सब बाते भूलना मत। ग्रौर मैं शराब बेच दूँगी ग्रौर घोडे के लिए रुपया जुटा लूँगी। साथ ही मैं उस लडकी से तुम्हारा व्याह भी तय कर दूँगी।"

"ग्रच्छी बात है, ग्रच्छी बात है," पुत्र ने नाक-भौं सिकोडते हुए रूखा-सा जवाब दे दिया।

उसकी गूँगी बहन ने उसका ध्यान ग्राकृष्ट करने के लिए कुछ ग्रावाज़ की। उसने ग्रपने सिर की तरफ इशारा किया ग्रौर ग्रपनी हथेली दिखाई, जिसका ग्रर्थ था कि वह किसी चेचेन के घुटे हुए सिर के बारे मे कुछ कहना चाहती है। फिर उसके चेहरे पर क्रोध के लक्षण दिखाई दिये ग्रौर उसने ऐसे सकेत किये मानो बन्दूक से किसी को निशाना बना रही हो, फिर चिल्लाई ग्रौर जल्दी से ग्रपना शरीर कँपाने ग्रौर सिर हिलाने-डुलाने लगी। इसका मतलब यह था कि लुकाश्का को किसी दूसरे चेचेन को भी मौत के घाट उतारना चाहिए।

लुकाश्का गूँगी का ग्रभिप्राय समझ गया। वह मुस्करा दिया ग्रौर लबादे के नीचे पीठ पर बदूक रखते हुए धीरे धीरे वहाँ से चल दिया, ग्रौर शीघ्र ही घने कुहरे में ग्रदृश्य हो गया।

बूढ़ी भी थोड़ी देर तक वहाँ खडी रहने के बाद घर वापस चली गई ग्रौर काम में लग गई।

१८

ठीक उसी समय, जब लुकाश्का घेरे की ओर चला, चचा येरोश्का ने अपने कुत्ते बुलाने के लिए सीटी बजाई, फिर वह टट्टर के ऊपर चढा और पिछवाडे की गलियो से होते हुए ओलेनिन के घर की ओर चल पडा। शिकार पर जाने के पहले वह औरतो से मिलना बिलकुल पसन्द न करता था।

ओलेनिन सो रहा था। वन्यूशा यद्यपि जगा हुआ था फिर भी अभी तक चारपाई पर ही पडा था और कमरे के चारो ओर यह जानने के लिए निगाह दौडा रहा था कि उठने का समय तो नही हो गया। बस इसी समय कधे पर बन्दूक रखे शिकारी की पोशाक पहने और ज़रूरी अगड-खगड लिए हुए चचा येरोश्का ने दरवाज़ा खोला।

"डडा उठाओ!" वह भारी आवाज़ में चिल्लाया, "विपत्ति आ गई! चेचेनो ने हमपर हमला बोल दिया। इवान! अपने मालिक के लिए समोवर तैयार करो, तुम भी आ जाओ न। जल्दी करो!" बूढा चिल्लाया, "हमारा यही तरीका है, भले आदमी! क्यो! अरे लडकियाँ तक जाग चुकी हैं! खिडकी के बाहर देखो। लडकियाँ पानी भरने जा रही हैं और तुम हो कि अभी तक चारपाई तोड रहे हो।"

ओलेनिन जाग पडा और कूद कर पलग के नीचे आ गया। बूढे की शक्ल देखते और उसकी आवाज़ सुनते ही उसे ताज़गी आई और उसका हृदय हलका हो गया। "वन्यूशा, जल्दी करो, जल्दी करो!" वह चिल्लाया।

"ऐसे ही आप शिकार मारेगे?" बूढा बोला, "दूसरे लोग नाश्ता पानी कर चुके और आप अभी तक स्वप्नलोक की सैर कर रहे है! ल्याम, इधर तो आना!" उसने कुत्ते को आवाज़ लगाई।

"तुम्हारी वन्दूक तैयार है न?" वह इतनी ज़ोर से चिल्लाया मानो कमरे में भीड की भीड इकट्ठी हो।

"मैं मानता हूँ कि गलती मेरी ही है। परन्तु मैं कर ही क्या सकता हूँ? 'बारूद, वन्यूशा, वन्दूक की डाट!'"

"तुम्हे जुर्माना देना होगा!" बूढा चिल्लाया।

"टू ते वुले वू?"* दाँत पीसते हुए वन्यूशा ने पूछा।

"तुम हमारी जाति के नही और तुम्हारी वक-वक भी हमारी वोली की तरह नही, शैतान!" दाँत दिखाते हुए बूढा वन्यूशा पर गुर्राया।

"पहली गलती माफ होनी चाहिए," खुशी के लहजे मे ओलेनिन ने कहा। वह अपने ऊँचे बूट पहनने में लगा था।

"ओह! तो यह पहली गलती है। जाओ माफ की। लेकिन यदि फिर कभी ज्यादा देर तक सोये तो तुमपर एक वाल्टी चिखीर जुर्माना करूँगा। गर्मी बढ जाने पर एक भी हिरन हाथ न लगेगा। समझे?"

"और अगर वह हमें मिल जाय तो हमसे ज्यादा बुद्धिमान होगा," ओलेनिन ने चचा के पिछली शाम के शब्दो को दुहराते हुए कहा, "और तुम उसे धोखा नही दे सकते।"

"हाँ हँस लो, दोस्त, हँस लो! एक मार कर दिखाओ तब बात करना। अच्छा, अब जल्दी करो! वह देखो खुद मालिक मकान तुमसे मिलने आ रहा है," खिडकी के बाहर निगाह डालते हुए येरोश्का बोला, "देखो तो कितना बना-ठना है। नया कोट पहन रखा है, यह दिखाने के लिए कि अफसर है। ओफ, ये लोग, ये आदमी!"

---

* क्या आपको चाय चाहिए?

श्रौर निस्सदेह वन्यूशा श्राया श्रौर उसने वताया कि मालिक मकान श्रोलेनिन से मिलना चाहता है।

"लारर्जां*," वन्यूशा ने उसके श्राने का श्रभिप्राय वताने के उद्देश्य से कहा। उसके पीछे पीछे मकान मालिक भी चला श्राया। वह एक नया चेरकेसियन कोट पहने था, जिसपर कन्धे के स्थान पर श्रफसरो वाली पट्टियाँ थी। वह चमकते हुए जूते भी पहने था (कज्जाको में इतने वढिया जूते शायद श्रौर किसी के पास न थे)। वह इधर-उधर डोलता जा रहा था श्रौर श्रपने मेहमान का स्वागत कर रहा था।

कार्नेट ईल्या वसील्येविच एक पढा-लिखा कज्जाक था। वह मुख्य रूस हो श्राया था, एक श्रध्यापक था श्रौर सवसे श्रच्छी वात यह थी कि भला श्रादमी था। वह चाहता था कि उसकी चाल-ढाल देखकर भी लोग उसे भला श्रादमी ही समझें। परन्तु उसकी चटक-मटक, उसके श्राडम्वर, उसके श्रात्मविश्वास श्रौर वातचीत करने के उसके वेतुके ढग को देखकर देखने वाले समझ लेते थे कि वह चचा येरोश्का का भी चचा है। यह वात उसके धूप से कुम्हलाये हुए चेहरे श्रौर हाथो तथा लाल नाक से भी स्पष्ट हो जाती थी। श्रोलेनिन ने उससे वैठ जाने को कहा।

"नमस्ते, ईल्या वसील्येविच," थोडा सा सिर झुकाते हुए येरोश्का वोला। श्रोलेनिन को लगा कि चचा ने व्यग्य किया है।

"नमस्ते, चचा। तो तुम यहाँ पहले से ही डटे हो," लापरवाही से सिर हिलाते हुए कार्नेट वोला।

कार्नेट लगभग ४० वर्ष का एक श्रधेड व्यक्ति था। उसकी दाढी भूरी श्रौर नुकीली थी। शरीर दुवला-पतला श्रौर सूखा हुश्रा सा, परन्तु खूबसूरत

---

* रूपये।

था। अवस्था को देखते हुए उसमें उल्लास की कमी न थी। वह ओलेनिन से मिलने आया था और उसे डर था कि कही वह उसे मामूली कज्ज़ाक ही न समझ बैठे। वह चाहता था कि ओलेनिन उसके बडप्पन को पहले से ही समझ ले।

"यह रहा हमारा ईजिपशियन-नीमरोद", ओलेनिन को सम्बोधित करते हुए वह कहने लगा और हँसते हुए उसने बूढे की ओर इशारा किया, "आप के सामने एक बहुत बडा शिकारी खडा है, हमारे सब कामो में वह सब से आगे रहता है। मैं देखता हूँ तुम्हारी उसकी जान-पहचान पहले से ही हो चुकी है।"

चचा येरोश्का ने अपने पैरो की ओर देखा, जिनमें वह कच्चे चमडे की चप्पले पहने थे, और कार्नेट की योग्यता तथा विद्वत्ता देखकर विचारशील मुद्रा में अपना सिर हिलाने और बडबडाने लगे, "जीप्शियन नीमरोद! ऐसी बाते वह सोचता है!"

"हाँ हम शिकार पर जाने की तैयारी में है," ओलेनिन ने उत्तर दिया।

"महाशय, वही तो मैं देख रहा हूँ," कार्नेट बोला, "परन्तु मुझे आप से कुछ काम की बाते करनी है।"

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"यह देखते हुए कि आप एक भले आदमी है," कार्नेट ने कहना शुरू किया, "और चूकि मै भी अपने को एक अफसर के पद का समझता हूँ, इसलिए हम भले आदमियो की तरह आपस में बातें कर सकते है." (वह कुछ रुका और मुस्कराते हुए उसने ओलेनिन और बूढे की तरफ देखा।) "मेरी पत्नी हमारी जाति की एक नासमझ औरत है। वह आपके कल के शब्दों को अच्छी तरह समझ नही पाई। मै कहता हूँ कि बिना अस्तबल के ही मेरे क्वार्टर रेजीमेंटल ऐडजूटैंट को छ रूबल

माहवार पर उठायें जा सकते है, लेकिन मैं अपनी तरफ से तो क्वार्टर किराये पर देना नही चाहता। परन्तु, चूकि आप घर चाहते हैं इसलिए मैं खुद अफसर के पद का और इस ज़िले का निवासी होने के कारण, न कि अपने रीति-रिवाजो के अनुसार, किसी भी विषय पर आपके साथ कोई भी करार कर सकता हूँ, और हर दशा में शर्तों का पालन कर सकता हूँ ”

“बोलता साफ है!” बूढा बुदबुदाया।

कार्नेट बडी देर तक इसी लहजे में बातचीत करता रहा। अन्त में, बडी मुश्किल से ओलेनिन की समझ में यह बात आई कि वह अपना क्वार्टर छ रूबल महीने पर उठाना चाहता है। ओलेनिन ने तुरन्त उसे स्वीकार कर लिया और उससे चाय पीने का आग्रह किया। कार्नेट ने इनकार कर दिया।

“अपने गन्दे रीति-रिवाजो के अनुसार हम दुनिया भर के जूठे लोटे गिलास में कोई चीज़ पीना हराम समझते हैं,” उसने कहा, “यद्यपि अपनी शिक्षा-दीक्षा के कारण मैं तो समझ सकता हूँ परन्तु अपनी इन्सानी कमज़ोरियो के कारण मेरी पत्नी ”

“अच्छा तो आप थोडी सी चाय पियेंगे?”

“यदि आप मुझे इजाज़त दें तो मैं अपना गिलास ले आऊँ,' कार्नेट ने जवाब दिया और बाहर निकल कर दालान में आ गया।

“मेरा गिलास तो लेते आना!” उसने आवाज़ दी।

कुछ ही मिनटो में दरवाज़ा खुला और गुलाबी आस्तीन में एक मूँगई हाथ ने गिलास बढा दिया। कार्नेट ने आगे बढ कर उसे ले लिया, और अपनी पुत्री के कान में कुछ फुसफुसाया। ओलेनिन ने कार्नेट के लिए चाय उसके ख़ास गिलास में, और येरोश्का के लिए एक दुनिया भर के जूठे गिलास मे उडेल दी।

"मै आपको रोकना नही चाहता," गिलास खाली करते और ओठो पर जीभ फेरते हुए कार्नेट बोला, "मुझे भी मछली मारने का बडा शौक है और जब मुझे अपने कामो मे कुछ दिनो की छुट्टी मिल जाती है तो मन बहलाने के लिए यहाँ आ जाता हूँ। मुझे भी तकदीर आजमाने की इच्छा है। मै देखना चाहता हूँ कि मेरे हिस्से में भी तेरेक की कुछ भेंटें पडती है या नही। मै चाहता हूँ कि किसी दिन आप हमारे यहाँ आयें और हमारे गाँव के रीति-रिवाजो के अनुसार हमारे साथ शराब पियें," कार्नेट ने सिर झुकाया, ओलेनिन मे हाथ मिलाया और बाहर चला गया। जब ओलेनिन तैयार हो रहा था उस समय उसके कानो में कार्नेट की आवाज़ पडी। वह अधिकारपूर्ण ढग से अपने परिवारवालो को हुक्म दे रहा था। कुछ ही मिनटो बाद उसने देखा कि वह एक फटा-सा कोट पहने, घुटनो तक पतलून मोडे और कधो पर मछली मारने का जाल रखे खिडकी से गुज़रता हुआ निकल गया।

"बदमाश!" अपना दुनिया भर का गिलास खाली करते हुए चचा येरोश्का बोला। "क्या सचमुच तुम उसे छ रूबल दोगे? क्या ऐसी बात पहले कभी सुनी गई थी? गांव में सब से अच्छा घर तुम्हे दो रूबल महीने पर मिल सकता है। पाजी कही का! क्यो, तीन रूबल में तो मै अपना ही घर उठा सकता हूँ?"

"नही, मैं यही रहूँगा," ओलेनिन बोला।

"छ रूबल! यह तो रुपया फेकना हुआ, फेकना।" बूढे ने आह भरी, "आओ कुछ चिखीर ही पी जाय, इवान!"

रास्ते भर के लिए थोडा-बहुत खाना पेट में डालने और एक एक गिलास शराब उडेल लेने के बाद ओलेनिन और चचा येरोश्का आठ बजे से पहले पहले घर से निकल पडे। फाटक पर उन्हे एक बैलगाडी मिली जिसे मर्यान्का हाँक रही थी। उस समय वह अपने सिर के चारो तरफ

ग्राँख के पास तक एक रुमाल लपेटे थी और फ्राक के ऊपर एक कोट और पैरो में ऊँचे जूते पहने थी। हाथ में एक चावुक लिए हुए वह टिक टिक करती चली आ रही थी।

"कितनी सुन्दर है यह!" बूढे ने कहा और अपने दोनो हाथ ऐसे फैला दिये जैसे उसे पकड ही तो लेगा।

मर्यान्का ने अपना चावुक उसकी ओर फेरा और अपनी सलोनी आँखो से दोनो को देखने लगी।

ओलेनिन को लगा कि उसका हृदय और भी हल्का हो गया है।

"वढे आओ, चलते चलो!" वन्दूक कन्धे पर फेकते हुए वह वोला। उसे वरावर ऐसा लगता रहा कि लडकी की आँखे उसपर गडी हुई है।

वैलो को सम्वोधित करती हुई मर्यान्का की आवाज़ पीछे से गूँज रही थी और साथ ही चलती हुई गाडी की चूँ-चर्र भी सुनाई पड रही थी।

उनका रास्ता गाँव के पीछे चरागाहो से होकर था। येरोश्का वरावर वाते करता रहा। वह कार्नेट को न भूला था और उसे वरावर गालियाँ देता जा रहा था।

"उससे तुम इतने नाराज़ क्यो हो?" ओलेनिन ने पूछा।

"वह कमीना है। और, यह वात मुझे पसन्द नही," बूढे ने जवाव दिया, "जव मरेगा तो सव यही छोड जायेगा! तव किसके लिए वचा रहा है? दो दो मकान वनवा लिये है और भाई से मुकदमा लडकर उसका एक वाग़ भी हथिया लिया है। कागज़ की नाव चलाता है कुत्ता है, कुत्ता! दूसरे गाव से लोग उससे अपने कागज़-पत्र लिखवाने आते है और जो कुछ वह लिख देता है वही हो जाता है। वह ऐसा ही करता है। परन्तु वह धन वचा किसके लिए रहा है? उसके एक लडका है और एक लडकी और जव लडकी की शादी हो जायगी तव रह कौन जायगा?"

"हो सकता है वह दहेज देने के लिए जोड रहा हो," ओलेनिन बोला।

"दहेज? क्या बात करते हो? लडकी को खुद लोग घेरते हैं। बडी सुन्दर है! परन्तु वह इतना पाजी है कि उसका ब्याह किसी अमीर से ही करेगा। वह उसकी अच्छी कीमत वसूल करना चाहता है। यहाँ एक कज्जाक है, लुका। मेरा पडोसी है, मेरा भतीजा है और एक अच्छा लडका है। उसी ने चेचेन को मारा था। बेचारा बहुत दिनो से उसका दीवाना है, मगर यह पाजी अपनी लडकी उसे नही देगा। इसके लिए वह बहाने पर बहाने गढता जा रहा है, कहता है 'लडकी छोटी है' लेकिन मै जानता हूँ कि वह क्या सोच रहा है। वह चाहता है कि वे लोग उसके आगे झुकते रहे और घिघियाते रहे। आज इस लडकी के कारण कितनी शर्म उठानी पडी! फिर भी वे लोग लडकी लुकाश्का को दिलायेंगे क्योकि गाँव में वही सबसे अच्छा कज्जाक है, जिगीत है। उसी ने एक अब्रेक को मारा है, और उसे पदक भी मिलनेवाला है।"

"मगर यह कैसे? जब पिछली रात मै अहाते में घूम रहा था तो मैंने मालिक मकान की लडकी और एक कज्जाक को आपस में एक दूसरे का चुम्बन करते देखा था," ओलेनिन बोला।

"मुझे तुम्हारी बात का कोई यकीन नही!" रुकते हुए बूढा कहने लगा। उसकी आवाज तेज़ थी।

"मै अपनी कसम खाता हूँ," ओलेनिन बोला।

"बडी वेश्या है," येरोश्का ने कहा और विचारो मे डूब गया, "लेकिन वह कज्जाक था कौन?"

"मै नही देख सका।"

"खैर, कैसी टोपी पहिने था, सफेद?"

"हाँ।"

"और लाल कोट? तुम्हारे ही इतना लम्बा था?"

"नही, कुछ अधिक।"

"तब तो वही था!" और येरोश्का हँसते हँसते लोटपोट हो गया, "वह तो मार्का ही था। उसका नाम लुका है, लेकिन मै उसे मजाक मजाक में मार्का कहता हूँ, मार्का। मै उसे चाहता हूँ। मै भी ठीक उसी की तरह था। इसमें बुराई क्या है? मेरी प्रेमिका अपनी माँ और ननद के पास सोया करती थी, परन्तु मै किसी न किसी प्रकार उस तक पहुँच जाता था। वह ऊपर कोठे पर सोती थी। उसकी माँ क्या थी, पूरी चुडैल। वह मुझमे कितनी नफरत करती थी! मै अपने दोस्त के साथ जाता था। उसका नाम था गिरचिक। हम लोग उसकी खिडकी के नीचे पहुच जाते। मै अपने दोस्त के कन्धो पर चढ जाता, खिडकी में धक्का मारता और सिर अन्दर करके देखने लगता। वह भी वही एक बेंच पर मोया करती। एक दिन मैने उसे जगा दिया और वह करीब करीब चिल्ला पडी। उसने मुझे पहचाना न था। 'कौन है?' उसने पूछा था और मै जवाब भी न दे पाया। उसकी माँ भी अगडाई लेने लगी थी जिसे देखकर मैने अपना टोप उतारा और उमके मुंह पर रख दिया। उसने तुरन्त टोप पहचान लिया क्योकि वह फटा था। और, फिर दौडी मेरे पीछे। उन दिनो मै जिम चीज़ की भी इच्छा करता वह मुझे मिल जाया करती। वह लडकी मेरे लिए मलाई लाती, अगूर लाती और न जाने क्या क्या लाती!" येरोश्का ने अपने खास लहजे में कहा, "और फिर काई वही अकेली तो थी नही। अजी वह जिन्दगी थी!"

"और अब क्या है?"

"अब हमें कुत्ते के पीछे लगना है। तीतर को पेड पर बैठ जाने दो, फिर तुम गोली चला मकते हो।"

"मर्यान्का के लिए कोशिश क्यो नही करते?"

अपने कुत्ते, ल्याम, की ओर सकेत करते हुए बूढे ने कहा, "कुत्ते पर नज़र रखना! आज तुम्हे उसकी बानगी दिखाऊँगा!"

थोडी देर ठहर चुकने के बाद लगभग सौ कदम तक वे फिर बातो में लगे रहे। तभी बूढा रुका और उसने सडक के उस पार पडी हुई एक टहनी की तरफ इशारा किया।

"उसके बारे में क्या सोचते हो?" उसने पूछा, "तुम समझते हो यह कोई बात ही नही? टहनी इस तरह नही पडी रहनी चाहिए। समझे! यह असगुन होता है।"

"असगुन क्यो होता है?"

बूढा हँस पडा। उसकी हँसी में तिरस्कार की भावना व्यक्त हो रही थी।

"अरे तुम कुछ नही जानते। मेरी बात सुनो। जब कभी कोई टहनी इस तरह पडी दिखाई दे तो उसे कभी लाँघकर मत जाओ। तुम्हे उससे घूमकर जाना चाहिए अथवा उसे रास्ते से हटाकर फेंक देना चाहिए, फिर कहना चाहिए 'पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा' और तब भगवान् के आशीर्वाद से आगे बढना चाहिए। तुम्हे कुछ नही होगा। बुजुर्ग मुझे यही सिखाते रहे हैं।"

"आओ, क्या अट-सट बक रहे हो!" ओलेनिन ने कहा। "मुझे मर्यान्का के बारे में कुछ और बताओ। क्या लुकाश्का से उनकी मुहब्बत चल रही है?"

"हुश . अब चुप रहो!" बूढे ने फुसफुसाते हुए फिर बात काटी। "सिर्फ सुनते जाओ। हम जगल से होकर जायेंगे।"

और बूढे ने, जिसकी चप्पलो की आहट तक न सुनाई पड रही थी, एक सकरे रास्ते से होकर घने जगल में प्रवेश किया। कभी कभी वह त्योरियाँ चढाकर ओलेनिन की तरफ भी घूर लेता जो अपने भारी भारी जूतो से

चर्र-मर्र की आवाज़ करता चला जा रहा था। वह अपनी बन्दूक भी बडी लापरवाही से थामे था और प्राय रास्ते में मिलनेवाली टहनियों से उलझ जाता था।

"इतना शोर मत करो। धीरे धीरे कदम रखो, दोस्त!" बूढा गुस्से मे फुसफुसा उठा।

हवा से ऐसा लग रहा था कि सूर्योदय हो चुका है। कोहरा छट रहा था यद्यपि वह अभी तक पेडो के ऊँचे से ऊँचे सिरो को ढके था। जहाँ तक निगाह जाती थी वन की जबर्दस्त उँचाई ही नजर आती थी। कदम कदम पर दृश्य परिवर्तित हो रहे थे। दूर से जो पौधा वृक्ष जैसा लगता वही पास जाकर झाडी निकलता, और इसी प्रकार नरकट, एक पेड जैसा।

१६

कोहरा कुछ कुछ हट गया था। अब छतो की नम फूस दिखाई पडने लगी थी। कही कहीं उसने ओस का भी रूप ले लिया था। सडक तथा बाडो के इर्द-गिर्द की घास भीग गई थी। जगह जगह चिमनियो से धुआँ उठ रहा था। लोग गाँव से बाहर जाने लगे थे—कुछ काम पर, कुछ नदी की ओर और कुछ चौकियो की तरफ। शिकारी नम और घास वाली सडको के किनारे-किनारे चहलकदमी कर रहे थे। कुत्ते दुम हिलाते और अपने मालिको की ओर पीछे देखते हुए उनके इर्द-गिर्द दौड रहे थे। असख्यो मच्छड हवा में उड उडकर शिकारियो पर हमले बोल रहे थे और उनकी पीठो, हाथो और आँखो को टके ले रहे थे। वातावरण में घास की गन्ध और वन की नमी फैल रही थी। ओलेनिन बराबर उस गाडी को देखता रहा जिसपर बैठी हुई मर्यान्का बैलो पर एक टहनी से चाबुक जमा रही थी।

चारो ओर नीरवता थी। पहले जो आवाजें गाँवो से आती हुई सुनाई पड रही थीं अब वे बन्द हो चुकी थीं। जब कुत्ते कँटीली झाडियो में से होकर दौडते तो वे खडखडाने लगतीं। कभी कभी पक्षी भी एक दूसरे पर चहचहाते हुए सुनाई पडते। ओलेनिन जानता था कि जगलो में हमेशा खतरा रहता है क्योंकि ऐसी ही जगहो में अब्रेक छिपा करते हैं। परन्तु वह यह भी समझता था कि जगल में पैदल चलनेवाले मनुष्य की सबसे बडी सुरक्षा उसकी बन्दूक है। यह बात नहीं थी कि वह डर रहा था परन्तु वह यह समझता था कि यदि उसके स्थान पर कोई दूसरा होता तो शायद डर जाता। वह नम एव कुहरे से ढके हुए वन को देख रहा था और दूर से आती हुई हल्की और विचित्र-सी लगनेवाली आवाज बडे ध्यान से सुन रहा था। अब उसने बन्दूक ढीली कर दी और उसे एक ऐसी सुखद अनुभूति होने लगी जो उसके लिए नई थी। चचा येरोश्का आगे आगे चल रहा था और कभी कभी रुककर ऐसे स्थानो का सूक्ष्म निरीक्षण-सा करने लगता जहाँ उसे जानवरो के पैरों के दुहरे निशान दिखाई पड जाते। वह इन निशानो को ओलेनिन को भी दिखाता चलता। वह शायद ही कभी बोलता था। जब उसे कोई बात कहनी होती तो फुसफुसा भर देता। जिस रास्ते से होकर वे चल रहे थे वह कभी गाडियो की वजह से बन गया था। परन्तु, अब वहाँ घास उग आई थी। दोनो ओर देवदार तथा प्लेन वृक्षों का इतना घना वन था और वहा लताएँ इतनी अधिक फैली हुई थीं कि उनमें से कुछ भी देख पाना असम्भव था। शायद ही कोई ऐसा वृक्ष रहा हो जिसपर नीचे से लेकर ऊपर तक अगूर की वन-लताएँ न लिपटी हों। कँटीली झाडिया जमीन पर बिछी हुई थीं। जगल के छोटे से छोटे खुले स्थान पर भी काली बेरी की झाडियाँ और [illegible] के रसदार [illegible] उगे हुए थे। कहीं कहीं मृग के बडे बडे निशान और भागते हुए तीतरो के पद-चिन्ह रास्ते से होकर [illegible] झाडियो तक दिखाई पड जाते थे। जगल में उगी हुई घनी

झाडियो, लताओ तथा वृक्षो आदि से होकर कभी कोई मवेशी न गुज़रे थे। वन का यह सौन्दर्य ओलेनिन पर छाता जा रहा था क्योंकि इसके पहले उसने प्रकृति का यह रूप कभी न देखा था। यह जगल, यह विपत्ति, यह वूढा और उसकी विचित्र फुसफुसाहट, नखशिख-सौन्दर्य की मूर्ति यह मर्यान्का और यह पहाड उसे स्वप्न जैसे लग रहे थे।

"एक तीतर वैठ गया," चारो ओर निगाह डालते और अपने चेहरे पर टोपी खीचते हुए वूढा फुसफुसाया, "जल्दी से मुँह ढँक लो! यह रहा तीतर!" उसने ओलेनिन को तीखी नज़रो से देखा और हाथो तथा पैरो के सहारे जानवरो की भाँति चुपके चुपके आगे वढने लगा। "उसे मनुष्य का मुँह अच्छा नही लगता।"

ओलेनिन पीछे ही था कि वूढा रुका और एक पेड की जाँच-पडताल करने लगा। पेड पर चढा हुआ एक मुर्ग-तीतर गुर्राते हुए कुत्ते को देखकर कुकुडाने लगा। ओलेनिन ने भी पक्षी को देखा और उसी क्षण येरोश्का की वन्दूक की 'धाँय' उसके कानो में पडी। पक्षी फडफडाया, उसके कुछ पर टूटे और वह ज़मीन पर आकर धम्म से गिर पडा। जैसे ही ओलेनिन वूढे की ओर वढा कि उसने दूसरे मुर्ग-तीतर को भी उडा दिया। ओलेनिन ने तुरन्त अपनी वन्दूक उठाई, निशाना साधा और दन्न मे गोली दाग दी। क्षण भर को तीतर उडा, फिर गिरते हुए उसने कुछ शाखाएँ पकडने की कोशिश की और ज़मीन पर लुढक पडा।

"वहुत अच्छे!" हँसते हुए वूढा चीखा। उडते हुए पक्षी पर निशाना साधना उसके वश का न था।

उन्होने तीतरो को उठाया और चल दिये। प्रशसा के शब्द सुनकर ओलेनिन का उत्साह वढा और वह वूढे से वाते करने लगा।

"ठहरो, इधर आओ, इस तरफ" येरोश्का ने बात काटी, "मैंने यहाँ कल एक हिरन के पैरो के निशान देखे थे।"

जगल में करीब तीन सौ कदम चल चुकने के बाद वे एक झाडी के समीप पहुँचे जहाँ नरकटो की बहुतायत थी और चारो ओर पानी भरा था। ओलेनिन बूढे शिकारी के साथ न रह सका। वह पिछड गया। शीघ्र ही येरोश्का, जो लगभग बीस कदम आगे था, रुका और सिर और हाथ हिलाने लगा। पास आने पर ओलेनिन ने देखा कि येरोश्का आदमी के पैरो के निशानो की तरफ इशारा कर रहा है।

"देख रहे हो न?"

"हाँ," ओलेनिन ने धीरे से बोलने का प्रयत्न करते हुए कहा, "आदमी के पैरो के निशान।"

अनायास ओलेनिन के दिमाग में कूपर कृत "पथ-अनुसधानकर्ता" और अब्रेक घूम गये। परन्तु यह देख कर कि बूढा कितने विचित्र ढग से आगे बढ रहा है उसे उससे कुछ भी पूछने में सकोच हुआ। उसे सन्देह हो रहा था कि यह वैचित्र्य खतरे के भय के कारण है अथवा शिकार की उत्सुकता के कारण।

"नही। ये तो मेरे ही पैरो के निशान हैं," बूढे ने सहज ही उत्तर दिया और उस घास की तरफ इशारा किया जहाँ किसी जानवर के पैरो के निशान दिखाई पड रहे थे।

बूढा चलता गया और ओलेनिन पीछे पीछे लगा रहा। करीब बीस कदम चल चुकने के बाद वे एक नाशपाती के पेड के पास आये जिसके नीचे काली भूमि पर किसी जानवर का ताजा गोबर पडा था। यह स्थान अगूर लताओं से आच्छादित एक कुज की तरह था। यहाँ कुछ कुछ अधेरा था और नमी भी।

"सुबह यह यहीं था," आह भरते हुए बूढा बोला, "मांद अब भी नम है, बिल्कुल ताज़ी।"

सहसा उन्हे जगल में अपने खडे होने के स्थान से लगभग दस क़दम पर एक भयानक चरमराहट की आवाज़ सुनाई दी। दोनो चौंक पडे। उन्होने अपनी अपनी बन्दूकें सम्भाल ली। परन्तु उन्हे कुछ दिखाई नही दिया, हाँ शाखाओ के टूटने का शब्द अवश्य कानो में पडा। एक क्षण तक तो उन्हे तेज़ दौड जैसी कोई ध्वनि भी सुनाई दी जो बाद में हलकी आहट मे बदल गई। यह आहट क्रमश दूरातिदूर वन की दिशाओ में ध्वनित और प्रतिध्वनित होती हुई वायु की लहरो में विलीन होती गई। ओलेनिन को ऐसा लगा कि उसके हृदय का कोई तार टूट गया। उसने हरी झाडियो में से झाँकने की कोशिश की परन्तु व्यर्थ। फिर वह बूढे की तरफ मुडा। चचा येरोश्का कधे पर बन्दूक रखे निश्चल खडा था। उसकी टोपी पीछे खिसक गई थी, उसकी आँखो में असाधारण चमक आ गई थी और उसका मुँह खुला का खुला रह गया था। उसके घिसे हुए पीले दाँत क्रोध से बाहर निकल आये थे।

"बारहसिघा!" वह बडबडाया और हतोत्साह अपनी बन्दूक एक तरफ फेंकते हुए अपनी भूरी दाढी पर हाथ फेरने लगा। "वह यही खडा था। हमें उस रास्ते से घमकर आना चाहिए था बेवकफ! बेवकूफ!" और गुस्से से उसने अपनी दाढी नोच ली। "बेवकूफ, सुअर!" दाढी से लडते हुए वह बडबडाने लगा।

जगल में कुहरे से होकर कोई चीज़ उडती हुई सी लगी और भागते हुए बारहसिंघे की आवाज़ दूर दूर तक प्रतिध्वनित हो उठी।

जब भूखा-प्यासा, थका-माँदा परन्तु स्फूर्ति से भरा हुआ ओलेनिन बूढे के साथ घर लौटा उस समय शाम का धुधलका छा चुका था। खाना तैयार था। उसने बूढे के साथ खाना खाया, शराब पी और तब कहीं जाकर उसे गर्मी आई, उसका चित्त ठिकाने हुआ। अब वह दालान मे गया। यहाँ, सूर्यास्त के समय, पहाड एक बार फिर उसकी निगाह

के सामने घूम गये, एक वार फिर बूढे ने अंग्रेको, प्रेमिकाओं, और वन्य, साहसिक तथा निश्चिन्त जीवन की अपनी अनन्त कहानियाँ शुरू की, एक वार फिर मर्यान्का अन्दर आई, वाहर गई और अहाते के पार भागी, और एक वार फिर उसका वक्षोन्नत यौवन उसके झीने फ्राक में से झाँक उठा।

२०

दूसरे दिन ओलेनिन अकेले उस स्थान की ओर गया जहाँ चचा येरोश्का ने वारहसिंघे को भडका दिया था। फाटक से होकर जाने के लिए लम्बा चक्कर लगाने के वजाय वह झाडियो के टट्टरो पर चढ गया, जैसा कि दूसरे लोग करते थे, और इसके पहले कि वह अपने कोट में चुभे हुए काँटे निकालता उसका कुत्ता सामने की तरफ दौडा और उसने दो तीतर उडा दिये। मुश्किल से वह कँटीली झाडियो तक पहुँचा होगा कि चलते-फिरते तीतर क़दम कदम पर दिखाई देने लगे। (बूढे ने उसे यह जगह कल शायद इसलिए नही दिखाई थी कि वह वहाँ परदे की ओट में शिकार करना चाहता था।) ओलेनिन ने बारह वार गोलियाँ चलाई और पाँच तीतर मार गिराये। परन्तु कँटीली झाडियों पर चढने-उतरने के कारण वह इतना थक गया कि पसीने से तर हो गया। उसने अपने कुत्ते को पुकारा, वन्दूक से कारतूस निकाले, उसके छोटे छेद में थोडी-सी गोलियाँ रखी और अपने चेरकेसियन कोट की चौडी आस्तीन से मच्छरों को हटाता हुआ वह उस स्थान की ओर बढने लगा जहाँ वे लोग अभी कल ही गये थे। परन्तु कुत्ते को पीछे रखना असम्भव था। वह रास्ते भर जानवरों के पद-चिन्ह ढूंढता चल रहा था। ओलेनिन ने दो तीतर और मारे। इस प्रकार जो अपने गन्तव्य स्थान तक पहुँचते पहुँचते करीब करीब दोपहर हो गई।

इस समय दिन शान्त, स्वच्छ और गर्म था। प्रातःकाल की आर्द्रता वन तक में सूख चली थी। असख्यो मच्छर उसके मुंह, पीठ और हाथो पर चक्कर लगा रहे थे। उसके कुत्ते का रग भी काले से भूरा हो गया था क्योकि उसके शरीर पर मच्छर ही मच्छर दिखाई दे रहे थे। यही दशा ओलेनिन के कोट की भी थी जिसमें से ये कीडे डक मारने का प्रयत्न कर रहे थे। ओलेनिन वहाँ से भाग निकलने को तैयार खडा था। उसने यह अनुभव करना शुरू कर दिया कि इस गाँव में गर्मियो में रहना असम्भव है। एक बार वह घर वापस जाने के लिए मुडा भी परन्तु यह याद करके कि आखिर दूसरे लोग भी तो ये कठिनाइयाँ बरदाश्त करते हैं, उसने उन्हे सहन करने का निश्चय किया और फिर आगे बढने के लिए कमर कसी। आश्चर्य यह था कि दोपहर तक वह बडा खुश दिखाई देने लगा। उसे ऐसा अनुभव हुआ मानो मच्छरो से भरे हुए अपने इस चतुर्दिक वातावरण के बिना, पसीने से मिले हुए मच्छड-निमित अगराग के बिना जिसे हाथ अनायास ही मुख पर चुपड देते थे और सारे शरीर की अनवरत खुजलाहट के बिना जगल का सारा आकर्षण और मज़ा ही किरकिरा हो जायेगा। ये असख्य कीडे अत्यधिक परिमाण में इधर-उधर बिखरी हुई वन्य वनस्पतियो, वनो में रहनेवाले लाखो पशुपक्षियो, अधेरे लता-कुजो, आर्द्रता से पूर्ण वायु, तेरेक से मिलने वाले मटमैले पानी के पोखरो के, जिसपर झुकी हुई पेडो की पत्तियाँ अपना अद्भुत सौंदर्य बिखेर रही थीं, इतने अनुकूल थे कि वही चीज जो उसे आरम्भ में भयानक और असह्य लग रही थी, अब आकर्षक लगने लगी थी। उस स्थान पर पहुँचकर, जहाँ कल उन्हे बारहसिंघे का भ्रम हुआ था, और जहाँ इस समय कुछ भी न था, उसने आराम करने की सोची। सूर्य इस समय सिर के ठीक ऊपर था और जब कभी ओलेनिन किसी खुली झाडी या सडक पर आ जाता तो सूर्य की सीधी किरणें उसकी

पीठ और सिर पर पड़ने लगती। सात भारी भारी तीतरों को लटकाये लटकाये उसकी कमर दुखने लगी थी। बारहसिंघे के पद-चिन्हों को देखकर वह एक झाड़ी में घुस गया ठीक उसी जगह जहां बारहसिंघा लेटा था। और, उसकी माँद में पड़ रहा। उसने अपने चारों ओर के झुरमुटों को देखा, उस स्थान पर निगाह डाली जहाँ बारहसिंघा पसीने पसीने हुआ होगा, और सूखा हुआ गोबर, बारहसिंघे के घुटनों के निशान, थोड़ी काली मिट्टी, जिसे उसने पैरों से तोड़ दिया था, और कल के अपने पैरों के निशान भी देखे। इस समय वह स्वस्थ था, मस्त था और उसके दिमाग़ में न तो कोई विचार ही घूम रहे थे और न हृदय में कोई आकांक्षाएँ ही। सहसा उसे किसी अकारण प्रसन्नता और चारों तरफ के मनमोहक आकर्षण की ऐसी अद्भुत अनुभूति हुई कि अपने बचपन की एक पुरानी आदत के अनुसार वह सलीब का निशान बनाने और किसी अज्ञात व्यक्ति को धन्यवाद देने लग गया। अकस्मात् उसका ध्यान किसी दूसरी बात की ओर गया और वह सोचने लगा कि "यहाँ मैं हूँ, दिमीत्री ओलेनिन, एक ऐसा आदमी जो किसी भी दूसरे व्यक्ति से भिन्न है, बिल्कुल अकेला—एकाकी। भगवान ही जाने कि यहां रहनेवाले बारहसिंघे ने कभी आदमी का चेहरा देखा भी है या नहीं। और मैं इस समय वहां हूं जहां कभी कोई मनुष्य न बैठा था, जहां किसी के मस्तिष्क में ऐसे विचार आये तक न थे। यहीं मैं हूँ, मेरे चारों ओर छोटे-बड़े वृक्ष हैं, बड़ी-बड़ी अंगूर-लताएं हैं और तीतर फुदक रहे हैं जो एक दूसरे को खदेड़ रहे हैं और शायद अपने उन भाई-बन्दों की तरफ से लड़ रहे हैं, जिन्हें मैंने मारा है।" उसने अपने तीतरों पर हाथ फेरा, उन्हें दबा-भाला और हाथ में लगा हुआ ताजा खून अपने कोट में पोंछ लिया। "शायद गीदड़ों को भी उनकी महक मिल जाती है और फलतः शायद वे दूसरी दिशा में चल देते हैं। मेरे ऊपर, पत्तियों के बीच

उड़ते हुए मच्छड़ों को ये पत्तियाँ बड़े बड़े द्वीपों की तरह लगती हैं। वे हवा में झूमते हैं, भनभनाते हैं, एक, दो, तीन, चार, सौ, हज़ार, लाख मच्छड़। और, सभी कुछ न कुछ भनभनाते हैं, और प्रत्येक अपने में दिमीत्री ओलेनिन है जो अन्य सभी से उतना ही भिन्न है जैसा मैं खुद हूँ।" मच्छड़ क्या भनभनाते हैं इसकी भी उसने स्पष्ट कल्पना कर ली थी—"इधर, इधर, अरे छोकरो! यहाँ कोई ऐसी चीज है जिसे हम खा सकते हैं!" वे भनभनाये और उसे काटने लगे। और उसे लगा कि वह रूसी अभिजात्य नहीं, मास्को समाज का सदस्य नहीं, अमुक और अमुक का मित्र या सम्बन्धी नहीं, वह सिर्फ एक मच्छड़ है या एक तीतर या हिरन, ठीक वैसे ही जैसे कि वे इस समय उसके चारों ओर थे। "जैसे वे हैं, जैसे चचा येरोश्का हैं, मैं भी ठीक वैसे ही कुछ क्षण जिऊँगा फिर मर जाऊँगा और, जैसा वह कहता है, हमारी कब्र पर घास ही उगेगी और कुछ नहीं।"

"घास उगती है तो उगे इसमें क्या?" वह विचारने लगा, "फिर भी मुझे ज़िन्दा रहना चाहिए, प्रसन्न रहना चाहिए क्योंकि आखिर मैं क्या चाहता हूँ—प्रसन्नता ही तो। परवाह नहीं मैं कुछ ही क्यों न हूँ—बाकी सब की तरह पशु ही सही, जिनके ऊपर घास उगेगी और सिर्फ घास, या एक ऐसा चौखटा जिसमें ईश्वर का कोई अंश जुड़ा है—फिर भी मुझे अच्छी से अच्छी तरह रहना चाहिए। इसलिए खुश रहने के लिए मुझे कैसे रहना चाहिए? और, मैं पहले क्यों प्रसन्न नहीं था?" और वह अपने पूर्व जीवन की याद करने लगा और उसे अपने से निराशा होने लगी। उसे लगा मानो उसकी आकाक्षाएँ बुरी तरह बढ़ रही हैं और वह स्वार्थी बनता जा रहा है, यद्यपि सच पूछा जाय तो अभी तक उसे अपने लिए किसी चीज़ की भी आवश्यकता न पड़ी थी। वह लता-कुंजों, उनसे छनती हुई रोशनी, डूबते हुए सूरज और

स्वच्छ आकाश की ओर देखता रहा। उसे इस समय उतनी ही प्रसन्नता हो रही थी जितनी पहले हुई थी।

"इस समय मैं क्यों खुश हूँ और पहले मेरे जीने का क्या उद्देश्य था?" उसने विचार किया, "मैंने अपने से कितना कुछ चाहा था, कितनी योजनाएँ बनाई थी फिर भी सिवा दुख और शर्म के मुझे मिला क्या? और अब, खुश रहने के लिए मुझे कुछ नहीं चाहिए।" और सहसा उसे अपने भीतर एक नये प्रकाश का अनुभव हुआ। "यही प्रसन्नता है!" उसने मन ही मन में कहा। "दूसरो के लिए जिन्दा रहना यही प्रसन्नता है। यह बात बिल्कुल साफ है। खुश रहने की इच्छा प्रत्येक मनुष्य में है। इसलिए वह मान्य है। स्वार्थपरता के साथ इस इच्छा की पूर्ति के प्रयत्न में—अर्थात् अपने लिए धन, यश, आराम और प्यार की तलाश में—यह भी हो सकता है कि ऐसी परिस्थितियाँ आ जायँ जिनसे इन इच्छाओं की पूर्ति ही असम्भव हो जाय। इसका अर्थ यह हुआ कि ये इच्छाएँ अनुचित हैं, सुखी बनने की आवश्यकता अनुचित नहीं। किन्तु बाह्य परिस्थितियो के बावजूद किन किन इच्छाओं की पूर्ति सदैव ही सम्भव है? प्रेम की, आत्म-त्याग की!" जब उसे इन बातों का ज्ञान हुआ (और यह उसे एक नया सत्य प्रतीत हुआ) तो वह इतना प्रसन्न और उत्तेजित हो उठा कि उछल पडा और बडी बेसब्री से किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश की बात सोचने लगा जिसके लिए वह अपना बलिदान कर सके, या जिसकी वह कोई भलाई कर सके या जिसे वह प्यार कर सके। "चूँकि मैं अपने लिए कुछ नहीं चाहता," उसने विचार किया, "इसलिए मैं दूसरों के लिए ही क्यों न जिन्दा रहूँ?"

उसने बन्दूक उठाई और इस योजना पर विचार करने तथा भलाई करने का अवसर ढूंढने के लिए तुरन्त लौट जाने का निश्चय किया और झाडी से होकर घर की राह ली।

खुली जगह में पहुँचकर उसने अपने चारो ओर एक निगाह डाली
सूर्य पेडो के सिरो के ऊपर से जा चुका था। ठढ बढ रही थी और व
स्थान उसे बिल्कुल नया-सा लग रहा था—गाँव के आसपास के क्षेत्र व
भाँति नही। ऐसा प्रतीत होता था कि मौसम और जगल की आकृति
सभी कुछ बदल गई है—आसमान बादलो से ढका था, हवा पेडो
सिरो से टकरा टकराकर सनसना रही थी और सभी तरफ सि
नरकटो और गिरे-गिराये पेडो के और कुछ भी दिखाई न पडता था
उसका कुत्ता किसी जानवर के पीछे पीछे भाग गया था। उसने कुत्ते क
पुकारा और उसकी आवाज़ वैसे ही लौट आई जैसे रेगिस्तान
लौटती है। और एकाएक उसमें भय का सचार हुआ। वह डर गया।
उसे अब्रेको की याद आई और याद आई उन हत्याओ की जो अब्रेको
की थी। बराबर उसे ऐसा लगता रहा कि न जाने किस क्षण झाडी
पीछे से कौन अब्रेक उसपर झपट पडे और फिर उसे अपनी जिन्दगी के लाले
पड जाये, अथवा मौत को गले लगाना पडे, अथवा कायरता ही दिखाना पडे।
कौन जाने! अब उसका ध्यान भगवान और मरणोपरान्त प्राप्त होनेवाले
दूसरे जीवन की ओर गया जिसके विषय में उसने बहुत समय से कुछ भी
सोचा-विचारा न था। उसके चारो तरफ अवकाश्मय, कठोर और वन्य
प्रकृति का साम्राज्य था। उसने विचार किया, "जब तुम किसी भी क्षण
मर सकते हो और किसी के प्रति बिना कोई भलाई किये ही मर सकते
हो और वह भी इस प्रकार कि किसी को पता भी न चले तो क्या
तुम्हे स्वय अपने लिए जीना मुनासिब है, उचित है?" वह उस दिशा
की ओर बढा जहाँ उसने कल्पना की थी कि गांव होगा। शिकार का
ध्यान उसके दिमाग से उतर चुका था। वह थक चुका था और प्रत्येक
झाडी तथा प्रत्येक पेड की ओर बडे ध्यान से झाँकता जा रहा था। वह
डर रहा था। प्रत्येक क्षण उसे यही आशा हो रही थी कि न जाने कब

कौन उसकी जान का दुश्मन निकल आये। काफी समय तक घूम फिर लेने के बाद वह एक खाई के पास आया जिसमे तेरेक से बहकर आता हुआ ठंडा और मटमैला जल भरा था। रास्ता भूल जाने के भय से उसने उसी के किनारे किनारे चलने का निश्चय किया। वह चलता गया बिना यह जाने हुए कि खाई उसे कहाँ ले जायगी। सहसा उसके पीछे के नरकटो में खडखडाहट हुई। वह काँप गया और उसने बन्दूक सभाल ली। अगले ही क्षण वह शर्म के मारे पानी पानी हो गया। उत्तेजित कुत्ता गहरी गहरी साँसे लेता हुआ आकर सीधा खाई के पानी में घुस गया और उसे हिलोरने लगा।

उसने भी पानी पिया और कुत्ते के पीछे हो लिया यह सोचकर कि वह उसे सीधे गाँव ले जायगा। कुत्ते के साथ रहने पर भी उसे ऐसा लगा कि उसके चारो ओर की प्रत्येक चीज़ किसी सकटापन्न भविष्य की आशका बढा रही है। अब जगल और भी अधकारपूर्ण होता जा रहा था और टूटे हुए वृक्षो के सिरो पर हवा सनसनाती हुई तेजी से चल रही थी। चिडियाँ उन पेडो पर अपने घोसलो के चारो ओर उड रही थी, चक्कर लगा रही थी, चहचहा रही थी। अब बनस्पति की हरियाली क्षीण होती गई और वह हवा के कारण सनसनाते हुए नरकटो और उन रेतीले स्थानो के बीच पहुँच गया जहाँ जानवरो के पद-चिन्ह दिखाई पड रहे थे। हवा की तेज़ आवाज़ के साथ ही दिल दहला देने वाली एक दूसरी गरज भी सुनाई दी। अब वह काफी निराश हो चला था। पीछे हाथ बढाकर उसने अपने तीतर टटोले। एक गायब था। शायद कही गिर पडा था। खून से लथपथ उसकी गरदन और सिर पेटी में ही चिपका रह गया था। अब उसे पहले से अधिक डर लगने लगा। वह भगवान की रट लगाने लगा। उसे केवल यही भय था कि वह बिना कोई भलाई किये या किसी पर दया दिखाये हुए ही मर जायगा। मगर उसमें जीने की उत्कट अभिलाषा थी। वह इसलिए जीना चाहता था कि आत्म-बलिदान का एक महान कार्य पूरा कर सके।

२१

सहसा उसे लगा जैसे उसकी आत्मा में सूर्य का प्रकाश छा गया हो। उसे रूसी भाषा में कही हुई बाते सुनाई पडी, साथ ही तेरेक का कलकल भी। कुछ कदम आगे अपने सामने उसने नदी की भूरी भूरी किन्तु चलती-फिरती सतह देखी। उसे उसके किनारो और छिछले स्थानो पर जमी भूरी और गीली बालू दिखाई पडी । उसने पानी के बहुत ऊपर निकली हुई घेरे की मचान, झाडियो में जीन वगैरह से लैस एक मजबूत घोडा और सामने ऊँचे ऊँचे पहाड देखे। एक क्षण के लिए बादलो के नीचे से रक्त-वर्ण सूर्य के भी दर्शन हुए और उसकी अन्तिम किरणें नदी, नरकटो, मचान और कज्जाको के झुड पर पडती हुई विलीन होने लगी। इसी समय उसने अपने सामने लुकाश्का की आवेशपूर्ण आकृति भी देखी।

ओलेनिन को लगा कि फिर उसे अकारण प्रसन्नता हो रही है। वह नदी के दूसरी ओर एक शान्त औल के सामने तेरेक की निज्ने-प्रतोत्स्की चौकी तक पहुँच गया। उसने कज्जाको को नमस्कार किया, परन्तु अभी तक किसी की भलाई करने का कोई अवसर न मिलने के कारण वह एक घर में घुस गया। वहाँ भी उसे इसका कोई मौका न मिला। कज्जाक उसके साथ बडी रुखाई से पेश आये। घर में दाखिल होने पर उसने एक सिगरेट जलाई। मगर कज्जाको ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया, क्योंकि एक तो वह सिगरेट पी रहा था और दूसरे उन्हें उस शाम व्यस्त रखने के लिए अन्य काम भी थे। जो अब्रेक मारा गया था उसके कुछ सम्बन्धी चेचेन मुआवजा देकर उसकी लाश लेने के लिए पहाडो से आये थे। कज्जाक गाँव से अपने अफसर के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। मृत अब्रेक का

भाई शान्त था। वह एक लम्बा हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था और उसकी लाल रग में रगी हुई छोटी दाढी दूर से ही चमक रही थी। वह एक फटा-सा कोट पहने और मामूली-सी टोपी दिये था, फिर भी उसकी आन-वान सम्राटो जैसी लग रही थी। उसका चेहरा बहुत कुछ मरे हुए अब्रेक जैसा ही था। उसने न तो किसी की ओर देखने का प्रयत्न किया और न लाश पर ही नज़र डाली। वह साये मे उकडूं बैठा हुआ अपना हुक्का पीता और थूकता जा रहा था। कभी कभी वह अपने साथियो को भारी स्वर मे कुछ हुक्म दे देता जिसकी तामील पूरे अदब और पूरी फुर्ती के साथ होती। प्रत्यक्षत वह एक जिगीत था जिसका भिन्न भिन्न परिस्थितियो में एकाधिक बार रूसियो मे मुकावला हो चुका था। उसे इन रूसियो की न तो किसी वात से आश्चर्य ही होता था और न वह उनमें कोई दिलचस्पी ही दिखाता था। ओलेनिन लाश के पास गया और उसे देखने लगा। मृत अब्रेक का भाई शायद इसे सहन न कर सका। वह ओलेनिन को तिरस्कारसूचक दृष्टि से देख रहा था और जल्दी जल्दी और गुस्से में कुछ कहे जा रहा था। साथी स्काउट तुरन्त अपने कोट से लाश का मुँह ढकने के लिए वढा। ओलेनिन उस जिगीत का शानदार और कठोर चेहरा देखकर वडा प्रभावित हुआ। वह उससे वाते करने लगा और पूछने लगा कि वह किस गाँव से आया है। परन्तु चेचेन उसकी ओर न देखते हुए घृणा की मुद्रा से वरावर थूकता ही रहा। उसने अपनी गर्दन एक ओर फेर ली। ओलेनिन को चेचेन की यह उपेक्षा देखकर इतना आश्चर्य हुआ कि उसने यही अन्दाज़ लगाया कि वह रूसी नही जानता और वेवकूफ है। इसलिए वह स्काउट की तरफ घूमा जो दुभापिया था और अपने मालिक को उसकी रूसी भाषा का तात्पर्य अपनी भाषा में समझा सकता था। स्काउट के शरीर पर कोई अच्छे कपडे न थे। दूसरे की तरह वह भी फटे-हाल था।

परन्तु भूरे बालो के स्थान पर उसके काले काले बाल, काली चमकदार आँखें और मोती जैसे दांत थे। स्काउट ने प्रसन्नतापूर्वक बातचीत में भाग लिया और एक सिगरेट माँगी।

अपनी टूटी-फूटी रूसी में उसने कहना शुरू किया, "उसके पाँच भाई थे। यह तीसरा भाई है जिसे रूसियो ने मार डाला। अब सिर्फ दो बचे हैं। वह जिगीत है, एक महान जिगीत!" चेचेन की तरफ़ इशारा करते हुए उसने कहा, "जब उन्होंने अहमद-खाँ को, जो अब मर गया है, अपनी गोली का निशाना बनाया उस समय यह नदी के उस पार नरकटो के बीच बैठा था। उसने सब कुछ देख लिया था। उसने देखा था कि उसे नाव पर रखा और किनारे की तरफ ले जाया गया। वह वहाँ रात भर बैठा रहा और चाहता था कि बूढे को मार डाले परन्तु दूसरो ने उसे ऐसा न करने दिया।"

लुकाश्का दुभापिये के पास आकर बैठ गया।

"किस औल से आ रहे हो?" उसने पूछा।

"वहाँ, पहाडो पर से," तेरेक के उस पार हल्के नीले रग के कुहरे की तरफ इशारा करते हुए स्काउट ने कहा, "क्या तुमने 'सुयूक-सू' का नाम सुना है? हमारा गाँव उससे भी आठ मील आगे है।"

"तुम्हारा गिरेई-खाँ से भी कोई परिचय है? वह 'सुयूक-सू' में ही रहता है," लुकाश्का बोला। उसे उसके साथ परिचित होने पर गर्व था, "वह मेरा कुनक है।"

"वह मेरा पडोसी है," स्काउट ने उत्तर दिया।

"अच्छा आदमी है।" और लुकाश्का, जिसे अब इन बातो में दिलचस्पी आती जा रही थी, स्काउट के साथ तातारी में बातें करने लगा।

शीघ्र ही एक कज्ज़ाक लेफ्टीनेट और गाँव का मुखिया अपने अपने घोडो पर आ गये। उनके साथ दो कज्ज़ाक और थे। लेफ्टीनेट एक कज्ज़ाक अफसर था, जिसे हाल ही में कमीशन मिला था। उसने कज्ज़ाको के "सुस्वास्थ्य" की कामना करते हुए उनका अभिवादन किया, परन्तु किसी न भी जवाव में यह नही कहा कि "सरकार, आप स्वास्थ्य लाभ करे" जैसी कि रूमी सेना की रीति है। केवल थोडे से ही लोग ऐसे थे जिन्होने मिर झुकाकर मौन उत्तर दिया। कुछ लोग, जिनमे लुकाश्का भी था, उठे और सावधानी से खडे हो गये। कारपोरल ने वताया कि चौकी पर सव कुछ ठीक है। ओलेनिन को यह सव मजाक लगा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि ये लोग सिपाही का काम खल ममझते है। परन्तु शीघ्र ही इन छोटी-मोटी वातो के वाद काम की वाते आरम्भ हो गई। लेफ्टीनेट एक वीर कज्ज़ाक भी था। वह दुभापिये के साथ धाराप्रवाह तातारी में वात करने लगा। उन्होने कुछ कागज़-पत्र तैयार कर लिये थे, जिन्हे स्काउट को देकर उन्होने कुछ रुपये वसूल किये। अव वे लोग लाश के पास आये।

"तुम लोगो में से लुका गव्रीलोव कौन है?" लेफ्टीनेन्ट ने पूछा।

लुकाश्का ने टोपी उतारी और सामने हाज़िर हो गया।

"मैंने तुम्हारे वारे में कमाडर को रिपोर्ट भेज दी है। पता नही उसका क्या नतीजा हो। मैंने तुम्हे पदक दिये जाने की सिफारिश की है। कारपोरल वनाये जाने के लिए अभी तुम्हारी उम्र कम है। पढ मकते हो?"

"नही, मै पढ नही मकता।"

"किन्तु देखने मे कितना गठीला जवान है!" लेफ्टीनेट आज्ञा के म्वर मे वोला, "टोपी लगाओ। यह किम गव्रीलोव परिवार का है? ब्रॉड का, एँ?"

"उसका भतीजा है," कारपोरल वोला।

"मैं जानता हूँ, जानता हूँ। खैर तुम लोग ज़रा काम में भी हाथ वटाओ," कज्ज़ाको की ओर घूमते हुए उसने कहा। लुकाश्का का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। वह कारपोरल के पास से हट आया और टोपी लगाकर ओलेनिन के पास वैठ गया।

मृत शरीर को नाव पर रख दिया गया। अव उसका चेचेन भाई भी किनारे पर आया। कज्ज़ाक उसे रास्ता देने के लिए स्वय ही एक ओर हट गये। वह कूदकर नाव पर चढ गया और नदी में अपना मज़वूत पैर अडाकर नाव खोल दी। अव ओलेनिन ने देखा कि चेचेन ने पहली वार कज्ज़ाको पर एक सरसरी निगाह डाली और अपने साथी से कुछ पूछा। साथी ने कुछ उत्तर दिया और लुकाश्का की तरफ इशारा कर दिया। चेचेन उसकी ओर देखता रहा और फिर धीरे धीरे उसके पास से निगाह हटाकर दूसरी तरफ का तट देखने लगा। उसकी दृष्टि में घृणा नही अपितु अत्यधिक तिरस्कार की झलक मिलती थी। उसने फिर कुछ कहा।

"क्या कह रहा है?" ओलेनिन ने स्काउट से पूछा।

"तुम्हारे आदमी हमारे आदमियो को मारते हैं, हमारे तुम्हारे आदमियों को। हमेशा यही होता है।" स्काउट ने उत्तर दिया और जव वह कूदकर नाव पर चढने लगा तो हँसी के कारण उसके सफेद सफेद दाँत चमकने लगे।

मृत व्यक्ति का भाई निश्चल वैठा उस पार का तट ताक रहा था। उसका हृदय घृणा और तिरस्कार से इतना भरा हुआ था कि उसके लिए नदी के इस ओर ऐसी कोई भी चीज़ न रह गई थी जिसमें उसे कोई उत्सुकता होती, कोई रुचि होती। स्काउट नाव के एक ओर खडा होकर उसे वढाने के लिए कभी वांस नाव के इस ओर डालता, कभी उस

ओर। वह वरावर बातचीत करता जा रहा था। जैसे जैसे नाव धारा पार करके आगे वढती गई, वैसे वैसे वह छोटी दिखाई पडने लगी और उसमें से आनेवाली आवाजें क्षीण पडती गईं। अन्त मे लोगो ने देखा कि नाव किनारे लगी, जहाँ दो घोडे मुस्तैद खडे थे, लाश उतारी गई और एक घोडे पर लाद दी गई। घोडा चल पडा। ज्यो ज्यो घोडा औल से होकर आगे वढ रहा था त्यो त्यो लाश देखने के लिए वहाँ के लोगो की भीड भी वढती जा रही थी।

नदी के रूसी किनारे के कज्जाक पूरी तरह से सन्तुष्ट और खुश थे। सभी तरफ से हँसी-मजाक के फौवारे छूट रहे थे। लेफ्टीनेंट और मुखिया भी आनन्द मनाने के लिए एक मिट्टी के घर में घुस गये। लुकाश्का अपने प्रफुल्लित चेहरे पर गम्भीरता लाने का व्यर्थ प्रयास करता हुआ ओलेनिन की वगल में घुटनो पर दोनो हाथ रखकर वैठ गया और चाकू से एक छडी काटने लगा।

"तुम तम्वाकू क्यो पीते हो?" उसने उत्सुकता से पूछा, "यह अच्छी वात है क्या?"

प्रत्यक्षत उसके पूछने का एकमात्र कारण यही था कि उसे यह अनुभव हुआ था कि ओलेनिन कुछ खिन्न है और उसकी कज्जाको से पट नही रही है।

"आदत ही तो है," ओलेनिन ने उत्तर दिया, "क्यो?"

"हुँह, यदि हम में से कोई तम्वाकू पीना चाहे तो उसपर मुसीवत आ जाय! उधर देखो, पहाड दूर नही है," लुकाश्का कहता गया, "फिर भी तुम वहाँ नही पहुँच सकते! अकेले लौटोगे कैसे? अधेरा हो रहा है। अगर तुम चाहो तो मै तुम्हे ले चलूँ। कारपोरल से कह दो मुझे छुट्टी दे दे।"

"कितना अच्छा आदमी है!" कज्जाक के प्रफुल्लित चेहरे की ओर देखते हुए ओलेनिन ने सोचा। उसे मर्यान्का की याद हो आई और उस

चुम्बन की भी जिसकी ध्वनि उसने फाटक के पास सुनी थी। उस समय उसने समझा था कि लुकाश्का कितना असभ्य है। "यह सब कैसी उलझन है," उसने विचार किया, "कोई आदमी किसी को मौत के घाट उतारता है और उसे इतना संतोष और प्रसन्नता होती है जैसे उसने कोई बड़ा पड़ाव मार लिया हो। क्या इसके माने यह हैं कि कोई उसे यह बताने नही आता कि 'तुम्हारे लिए आनन्द मनाने का कोई कारण नही और प्रसन्नता मार काट में नही आत्म-बलिदान में है?'"

"खैर, अच्छा हो यदि तुम्हारी उसकी मुलाकात ही न हो, दोस्त!" लुकाश्का की तरफ मुड़ते एक कज्जाक ने कहा जिसने खुलती हुई नाव देखी थी, "तुमने सुना कि वह तुम्हारे बारे में क्या पूछ-ताछ कर रहा था?"

लुकाश्का ने अपना सिर उठाया। "मेरा ईश्वर-पुत्र?" लुकाश्का बोला। उस शब्द से उसका तात्पर्य मृत चेचेन से था।

"तुम्हारा ईश्वर-पुत्र तो न उठेगा मगर वह जो लाल रंगवाला है वह तुम्हारे ईश्वर-पुत्र का भाई है!"

"उससे कहो कि ईश्वर को धन्यवाद दे कि यहाँ से सही सलामत चला गया," लुकाश्का ने उत्तर दिया।

"तुम खुश क्यो हो?" ओलेनिन ने पूछा, "मान लो तुम्हारा ही कोई भाई मारा जाता तो तुम खुश होते क्या?"

आँखो में मुस्कराहट लिये कज्जाक ने ओलेनिन की तरफ देखा। उसने ओलेनिन का अभिप्राय अच्छी तरह समझ लिया था, परन्तु उसकी ओर कोई ध्यान नही दिया।

"हाँ, यह भी होता है। क्या हमारे साथी नही मारे जाते?"

२२

लेफ्टीनेंट और गाँव का मुखिया दोनो ही घोडो पर बैठकर चल दिये। ओलेनिन ने लुकाश्का को खुश करने और घने जगल से अकेले न जाने की गरज़ से कारपोरल से लुकाश्का को छुट्टी दे देने की सिफारिश कर दी। कारपोरल ने छुट्टी दे दी। ओलेनिन ने सोचा कि लुकाश्का मर्यान्का से मिलना चाहता है। उसे प्रसन्नता थी कि उसके साथ इस समय एक खुशदिल और खुशमिज़ाज कज़्ज़ाक है। उसने अपनी कल्पना में अनायास लुकाश्का और मर्यान्का को मिला दिया था और उसे उनके बारे मे सोच सोचकर प्रसन्नता हो रही थी। "वह मर्यान्का को प्यार करता है," ओलेनिन ने सोचा, "मै भी उसे प्यार कर सकता था।" और जब दोनो घर की ओर जा रहे थे तो ओलेनिन में कोमल भावनाओ का उद्रेक हुआ। लुकाश्का को भी प्रसन्नता हुई। ऐसा लगा कि इन दो परस्पर भिन्न व्यक्तियो मे भी स्नेह का कोई सूत्र है जो उन्हे बांध रहा है। जब कभी वे एक दूसरे की तरफ देखते तो उनका जी खुलकर हँसने को करने लगता।

"तुम किन फाटको से होकर जाते हो?" ओलेनिन ने प्रश्न किया।

"बीच वालो से। परन्तु में तुम्हे दलदल तक पहुँचा दूंगा उसके बाद कोई खटका नही।"

ओलेनिन हँस दिया।

"तुम समझते हो मै डरपोक हूँ? तुम वापस जा सकते हो। धन्यवाद। मै अकेला चला जाऊँगा।"

"ठीक है। मुझे क्या करना? और तुम्हारी तो बात ही क्या खुद हम भी डरते है," ओलेनिन की आत्म-भावना को ठेस न पहुँचाने की गरज से वह बोला और हँस पडा।

"तो मेरे साथ आओ। हम बाते करेगे, खाएँ-पियेंगे। सुबह चले जाना।"

"तुम समझते हो कि रात बिताने के लिए मेरे पास कोई ठिकाना नही?" लुकाश्का हँस दिया, "परन्तु कारपोरल ने तो मुझसे लौट आने को कहा है।"

"कल रात मैंने तुम्हे गाते सुना था और देखा भी था।"

"खैर " लुकाश्का ने अपना सिर हिलाया।

"यह ठीक है क्या कि तुम्हारा विवाह हो रहा है?" ओलेनिन ने पूछा।

"माँ मेरा विवाह कर देना चाहती है। परन्तु मेरे पास तो अभी घोडा तक नही!"

"क्या तुम्हारी नौकरी मुस्तकिल नही?"

"सच पूछो तो नही। अभी तो मै भरती ही हुआ हूँ। अभी तक मेरे पास कोई घोडा नही और न मुझे मिल ही सकता है। इसीलिए शादी की बात पक्की नही हो पाती।"

"और घोडा आयेगा कितने का?"

"हम उस दिन नदी पर एक का सौदा पटा रहे थे और वे साठ रूबल से कम चाहते न थे यद्यपि घोडा सिर्फ नगई था।"

"तुम मेरे द्रवान्त* हो सकते हो? मै उसका इन्तज़ाम कर दूँगा और तुम्हे एक घोडा दे दूँगा।" ओलेनिन ने एकाएक कहा, "सचमुच मेरे पास दो घोडे है और मुझे दो की ज़रूरत नही।"

"दो की ज़रूरत नही?" लुकाश्का ने हँसते हुए उसके शब्द दुहराये, "तुम हमें तोहफे में घोडे क्यो दो? ईश्वर ने चाहा तो हम खुद ले लेगे।"

---

*द्रवान्त—एक प्रकार का अर्दली जो अभियान के समय अफसर के साथ रहता है।

"तोहफे में क्यो? तुम द्रवान्त नही वनना चाहते क्या?" ओलेनिन ने कहा। उसे प्रसन्नता थी कि उसके दिमाग में लुकाश्का को एक घोडा देने की वात आई थी, यद्यपि उसे अकारण परेशानी और घवडाहट हो रही थी और उसकी समझ मे न आ रहा था कि वह वात कैसे चलाए।

लुकाश्का ने मौन तोडा। "क्या रूस में तुम्हारा अपना मकान है?"

ओलेनिन को कहना पडा कि वहाँ उसके एक नही कई मकान है।

"अच्छा मकान? हमारे मकानो मे बडा?" लुकाश्का ने मुस्कराते हुए कहा।

"वहुत वडा। इससे दस गुना वडा और तीन मजिल का," ओलेनिन ने उत्तर दिया।

"और क्या तुम्हारे घोडे भी हमारे घोडो की तरह हैं?"

"मेरे पास सौ घोडे है और हर एक तीन तीन सौ चार चार सौ रुवल का है। तीन सौ चाँदी के रूवल। परन्तु वे तुम्हारे जैसे घोडो की तरह नही है! फुदके फिर भी मैं यहाँ के घोडो को वहुत पसन्द करता हूँ।"

"और क्या तुम यहाँ अपनी इच्छा से आये थे या भेजे गये थे?" लुकाश्का ने पूछा। ऐसा प्रतीत होता था कि वह अभी अभी हँस देगा। "देखो! वहाँ तुम रास्ता भूल गये," उसने कहना शुरू किया और उस रास्ते की तरफ इशारा किया जहाँ से होकर वे गुज़र रहे थे, "तुम्हे दाहिनी ओर मुडना था।"

"मै स्वय अपनी इच्छा से आया हूँ। अपने देश का यह इलाका देखने और यहाँ अभियान में भाग लेने की मेरी वडी इच्छा थी," ओलेनिन ने उत्तर दिया।

"मैं तो किसी भी दिन अभियान पर निकल सकता हूँ," लुकाश्का वोला, "उधर गीदडो की चीख सुन रहे हो?" उस ओर कान लगाते हुए उसने कहा।

"मै पूछता हूँ किसी मनुप्य को मारकर क्या तुम्हे कोई डर नही लगता?" ग्रोलेनिन ने पूछा।

"इसमें डरने की क्या वात, परन्तु मै ग्रभियान मे भाग लेना चाहूँगा," लुकाश्का वोला।

"शायद हमें साथ जाना होगा। हमारी कम्पनी छुट्टियो के पहले रवाना हो रही है। तुम्हारे भी सौ ग्रादमी जायेंगे।"

"तुम यहाँ क्यो ग्राना चाहते थे? तुम्हारे घर है, घोडे है, दाम हैं। तुम्हारी जगह मै होता तो सिवा मौज मारने के ग्रौर कुछ न करता। हाँ तुम्हारा पद क्या है?"

"मैं फिलहाल कैडेट हूँ। परन्तु मेरे लिए कमीशन की सिफारिश की जा चुकी है।"

"खैर, ग्रगर तुम ग्रपने घरवार के वारे में शेखी नही वघारते तो यदि तुम्हारी जगह मै होता तो कही दूसरी जगह न जाता। तुम हम लोगो के वीच रहना पसन्द करने हो?"

"हाँ, पसन्द करता हूँ," ग्रोलेनिन ने उत्तर दिया।

गाँव तक पहुँचते पहुँचते काफी ग्रधेरा छा चुका था। ग्रभी तक उन्हे ग्रपने चारो ग्रोर जगल का ही घना ग्रन्धकार नजर ग्रा रहा था। पेडो के ऊपरी सिरो पर हवा मनसना रही थी। ऐसा लगता था कि उसके विल्कुल निकट गीदड चिल्ला रहे है ग्रौर हा-हा हू-हू कर रहे हैं। परन्तु उनके ठीक सामने गाँव में स्त्रियो की ग्रावाजें ग्रौर कुत्तो की भो-भो भी सुनाई पड रही थी। दूर से झोपडे दिखाई पडने लगे थे, रोशनी ग्रा रही थी ग्रौर वायुमण्डल मे किज्याक धुएँ की विचित्र गन्ध छाती जा रही थी। ग्रौर, उस समय ग्रोलेनिन को ऐसा लगा कि इसी गाँव में उसका ग्रपना घर है, ग्रपना परिवार है, वह खुश है ग्रौर जिस तरह वह इस कज्जाक गाँव में रह रहा है वैसा खुश किसी दूसरी जगह नही रह सकेगा।

उस रात वहाँ उसे मभी ग्रच्छे लगे ग्रौर खास तौर मे लुकाश्का। जब वे घर पहुँचे तो ग्रोलेनिन ने मायवान में से, स्वय ग्रपने हाथो से, एक घोडा खोला ग्रौर लुकाश्का को थमा दिया। लुकाश्का ग्राश्चर्यचकित उमे ग्राँख फाड फाडकर देखता रह गया। ग्रोलेनिन ने यह घोडा ग्रोजनाया मे खरीदा था। यह वह घोडा न था जिमपर वह प्राय मवारी करता था। घोडा बहुत जवान न था, फिर भी खराब नही था। उसने घोडा लुकाश्का को दे दिया।

"तुम मुझे सौगात में इसे क्यो दे रहे हो?" लुकाश्का बोला, "मैने ग्रभी तक तुम्हारे लिए कुछ भी तो नही किया।"

"सचमुच यह कोई चीज़ नही," ग्रोलेनिन बोला, "इसे ले लो। एक दिन तुम भी मुझे कोई सौगात दोगे हम शत्रु के खिलाफ ग्रभियान में एक साथ ही तो चलेगे।"

लुकाश्का परेशान-मा हो गया। "इससे तुम्हारा मतलब क्या है? तुम्हे मालूम है घोडा एक कीमती चीज़ है," बिना घोडे की तरफ देखे हुए ही उसने कहा।

"इसे ले जाग्रो! इसे ले जाग्रो! ग्रगर नही लोगे तो मुझे बुरा लगेगा। वन्यूशा! घोडे को इसके घर पहुँचा ग्राग्रो।"

लुकाश्का ने लगाम पकड ली। "ग्रच्छा, तो ग्रनेक धन्यवाद। मै यह जरूर कहूँगा कि यह ऐमी बात है जिसकी मैने कभी ग्राशा न की थी।"

ग्रोलेनिन को इतनी प्रमन्नता हुई जैसे वह बारह वर्ष का बालक हो।

"ग्रभी इमे यहाँ बाँध दो। यह एक ग्रच्छा घोडा है। इसे मैने ग्रोजनाया में खरीदा था। कैमी दुलकी चालता है! वन्यूशा हमारे लिए कुछ चिख़ीर तो लाना। ग्रन्दर ग्रा जाग्रो।"

शराब लाई गई ग्रौर लुकाश्का प्याला लेकर बैठ गया।

"ईश्वर ने चाहा तो मै तुमसे उऋण होने की जुगत निकाल लूँगा,"

शराब का गिलास खाली करते हुए वह बोला, "तुम्हारा नाम क्या है?"

"दिमीत्री अन्द्रेइच।"

"अच्छा दिमीत्री अन्द्रेइच, ईश्वर आपकी रक्षा करे। हम कुनक होंगे। अब तुम हम से मिलने जरूर आना। भले ही हम धनी नही हैं परन्तु कुनक के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए इसे अच्छी तरह जानते हैं। मैं माँ से कह दूँगा कि अगर तुम्हे किसी चीज़ की ज़रूरत हो—जैसे क्रीम या अंगूर की—तो वे तुम्हे दे दें, और अगर तुम घेरे की तरफ आओ तो मैं तुम्हारी सेवा करूँगा, तुम्हारे साथ साथ शिकार का जाऊँगा, नदी पार जाऊँगा और जहाँ कहोगे वहाँ जाऊँगा। अभी उसी दिन की बात है—मैंने एक बडा सुअर मारा था और कज़्ज़ाकों में बाँट दिया था। अगर मुझे मलूम होता तो तुम्हे भी देता, ज़रूर देता।"

"खैर, ठीक है। धन्यवाद! परन्तु घोडे को जोतना मत। वह कभी जोता नही गया।"

"नही नही! हाँ तुमसे एक बात और कहना चाहता हूँ," लुकाश्का धीरे से बोला, "मेरा एक कुनक है गिरेई-खाँ। उसने मुझसे कहा है कि मैं उसके साथ उन झाडियों में लेटा रहूँ जहाँ से लोग पहाडों पर से उतरते हैं। क्या हम साथ चलेगे? मैं तुम्हे धोखा नही दूँगा। मैं तुम्हारा मुरीद* रहूँगा।'

"हाँ हम चलेंगे, किसी दिन, ज़रूर चलेगे।"

अब लुकाश्का अपने को ओलेनिन का घनिष्ठ मित्र समझने लगा था। इसलिए उसे अब किसी प्रकार का सकोच न रह गया था। उसकी शांत प्रकृति और सदाचार से ओलेनिन को आश्चर्य हुआ, कभी कभी तो

---

*मुरीद का तात्पर्य यहाँ शिक्षक से है—अनुवादक।

इसमे उसे खिन्नता भी होने लगती। वे लोग देर तक वाते करते रहे। यद्यपि लुकाश्का ने ढेर-सी शराव पी थी फिर भी वह नशे में न था (वह नशे में कभी न होता था)। काफी देर तक वहाँ ठहर चुकने के वाद अव वह उठा, उसने ओलेनिन से हाथ मिलाया और वाहर चल दिया। ओलेनिन ने खिडकी के वाहर झाँका यह देखने के लिए कि वह अव कर क्या रहा है। लुकाश्का सिर नीचा किये धीरे धीरे चला जा रहा था। फिर घोडे को फाटक से वाहर ले आने के वाद उसने एकाएक अपना सिर हिलाया, उछलकर विल्ली की तरह उसकी पीठ पर सवार हुआ, लगाम हाथ में ली, कुछ टिक टिक की और उसे सडक पर दौडाने लगा।

ओलेनिन ने आशा की थी कि लुकाश्का मर्यान्का के पास जायगा और उसे अपनी प्रसन्नता की वात वताकर खुश करेगा। परन्तु, यद्यपि उसने ऐसा नही किया था फिर भी ओलेनिन की आत्मा को इतनी शान्ति मिली जैसी जिन्दगी में पहले कभी न मिली थी। वह वच्चो की तरह खुश था। उसने वन्यूशा को न केवल यही वताया कि घोडा उसने लुकाश्का को दे दिया है अपितु उससे यह भी कहा कि ऐसा उसने क्यो किया है। और, उसे प्रसन्न रहने का अपना नया सिद्धान्त समझाया।

वन्यूशा ने उसके सिद्धान्त का अनुमोदन नही किया। वह कहने लगा कि "ल'अरजाँ इल न्या पा"* यानी ये सव मूर्खता की वाते हैं।

लुकाश्का घोडे पर सवार घर पहुचा, और उसे अपनी माता को देते हुए वोला कि वह उसे कभी कभी कज्ज़ाको के घोडो के साथ चरने भेज दिया करे। उसे स्वय उसी रात घेरे पर लौटना था। उसकी गूँगी वहन ने घोडे की देख-भाल का ज़िम्मा लिया और इशारो से उसे

---

* "पैसा नही है "

समझाया कि जब वह उस व्यक्ति से मिलेगी जिसने घोडा दिया है तो वह उसके पैरो पर गिरकर उसे प्रणाम करेगी। बूढी ने अपने पुत्र की दास्तान पर सिर्फ सिर हिला दिया और अपने दिल मे समझ लिया कि हो न हो घोडा चोरी का है। इसीलिए उसने अपनी वहरी लड़की को ताक़ीद की कि वह सूर्य निकलने से पहले ही उसे घोडो के झुड में ले जाया करे।

लुकाश्का अकेले घेरे की ओर गया और रास्ते भर ओलेनिन के वारे में विचार करता रहा। उसने घोडे को कोई वहुत अच्छा तो नही समझा था फिर भी वह चालीस रूवल से किसी भी हालत में कम न था। निस्सदेह उसे घोडा मिलने की वडी खुशी थी। परन्तु घोडा उसे क्यो दिया गया इसे वह विल्कुल न समझ सका। इसी कारण उसे कृतज्ञता की कोई अनुभूति न हुई। इसके विपरीत उसके हृदय में अस्पष्ट आशकाएँ उठने लगी कि कैडेट का इरादा उसकी ओर से वुरा है। परन्तु वह कौनसा इरादा हो सकता है वह नही कह सकता था। यह वात भी उसके गले से नही उतरती थी कि एक अपरिचित व्यक्ति चालीस रूवल की कीमत का घोडा ऐसे ही दयावश किसी को दे देगा। यह असम्भव है। हाँ, अगर उसने शराव के नशे में ऐसा किया होता तो वात भी समझ में आती। तव तो यह भी कहा जा सकता था कि उसने शान वघारने के लिए ऐसा किया है। परन्तु कैडेट विल्कुल नशे में न था। वह गम्भीर था। इसलिए सम्भव है उसने घोडा इसलिए मुझे घूस में दिया हो कि मैं किसी अनुचित वात में उसकी सहायता करूँगा। "अरे यह सव वकवास है।" लुकाश्का ने विचार किया "क्या मुझे घोडा मिला नही? ज़रूर मिला है। वाक़ी सव वाद में देखा जायगा। मै कोई वुद्धू थोडे ही हू और हम देखेंगे कि कौन किससे अच्छा है," उसने विचार किया। उसे अव इस वात की ज़रूरत मालूम पड रही थी कि उसे होशियार रहना चाहिए और

ओलेनिन से दोस्ती नही वढानी चाहिए। उसने यह वात किसी से भी नही वताई कि उसे घोडा मिला कैसे। किसी से कहा कि मैंने घोडा मोल लिया है, फिर किसी मे कुछ कहा, किमी से कुछ। मगर मच्ची बात शीघ्र ही गाँव भर में फैल गई, और जब लुकाश्का की माँ मर्यान्का, ईल्या वसील्येविच तथा अन्य कज्ज़ाको को इस वेकार की सौगात का पता चला तो वे परेशान हो उठे और कैडेट से सतर्क रहने लगे। लेकिन अपनी शकाओ के होते हुए भी उसके इस कार्य ने उन लोगो में उसके प्रति समादर की भावना उत्पन्न कर दी थी और वे समझने लगे थे कि आदमी सीधा-सादा है और साथ ही अमीर भी।

"क्या तुमने सुना," एक ने कहा, "कि जो कैडेट ईल्या वसीलिच के मकान में ठहरा है उसने पचास रूवल का घोडा लुकाश्का को योही दे दिया? ज़रूर वह धनी होगा "

"हाँ मैंने सुना है," दूसरा वोला, "जरूर उसने उसका कोई वडा काम किया होगा। पता तो चल ही जायगा कि वात क्या है। उर्वान तकदीर का धनी है।"

"ये कैडेट एक ही खुर्राट होते हैं," तीसरे ने कहा, "देखना कही वह मकान में आग लगाकर ही न रफूचक्कर हो जाय, या कोई दूसरा पाजीपन न कर वैठे।"

२३

ओलेनिन का जीवनक्रम नियमित रूप मे चलता रहा परन्तु वह उसमें नीरसता का अनुभव कर रहा था। अपने कमाडिग अफसरो अथवा अपने साथवालो मे भी उमकी यदा-कदा ही वातचीत होती। काकेशिया में एक धनी कैडेट की स्थिति विशेष रूप से लाभदायक समझी जाती है। उसे न तो काम के लिए ही भेजा गया था और न ट्रेनिग के लिए ही।

अभियान में भाग लेने के फलस्वरूप उसके लिए एक कमीशन की सिफारिश कर दी गई थी और इस बीच उसे शान्ति से रहने के लिए छोड दिया गया था। अधिकारी उसे रईस समझते थे और उसकी इज्ज़त करते थे। ओलेनिन को ताश खेलना अथवा अफसरो के नाच-रग और सिपाहियो के गाने-बजाने में भाग लेना, जिसका उसे सेना में रहने के कारण अच्छा अनुभव हो गया था, पसन्द न था। वह इस समाज तथा गाँव में अफसरो की जीवनचर्या से प्राय अलग ही रहता था। कज़्ज़ाक गाँव में ठहरे हुए इन अफसरो का जीवनक्रम कुछ निश्चित-सा हो चुका था। जैसे किसी किले में प्रत्येक कैडेट या अफसर नियमित रूप से शराब पीता है, ताश खेलता है और अभियानो में भाग लेने के कारण मिलनेवाले पुरस्कारो पर बहस करता है, वैसे ही कज़्ज़ाक गाँव में भी वह नियमित रूप से चिखीर पीता है, लडकियो को मिठाइयाँ और शहद बाँटता है, कज़्ज़ाक महिलाओ के पीछे मारा मारा फिरता है, उन्हे प्यार करता है, और कभी-कभी उनसे शादी भी कर लेता है। ओलेनिन का रास्ता अलग था। उसे पिटे-पिटाये मार्ग से होकर चलना अच्छा न लगता। यहाँ भी उसने वह जीवनक्रम नही अपनाया जिसे काकेशिया में रहनेवाले अफसर अपना रहे थे।

उसका स्वभाव तडके उठ जाने का पड चुका था। चाय पीने तथा अपनी दालान में से दिखाई पडनेवाले पहाडो, प्रभात काल और मर्यान्का की मूक प्रशसा कर चुकने के पश्चात् वह बैल के चमडे का एक पुराना कोट पहनता, भिगोये हुए कच्चे चमडे की चप्पले पैरो में डालता, कटार लटकाता, बन्दूक कन्धे पर फेंकता, एक छोटे से थैले में कुछ सिगरेट और भोजन की सामग्री रखता, अपने कुत्ते को पुकारता और पाँच बजे के ठीक बाद गाँव के बाहर जगल की ओर चल देता। शाम को सात बजे वह थका-माँदा, भूखा-प्यासा घर लौटता, पाँच-छ तीतर

उसकी पेटी से लटके होते (कभी कभी अन्य कोई जानवर भी होता) और उसके खाने तथा भोजन सामग्री का थैला वैसे का वैसा घर वापस आ जाता। यदि थैले में पड़ी हुई सिगरेटो की भाँति ही उसके मस्तिष्क में सचित विचार भी स्थिर पडे रहते तो इस बात का स्पष्ट पता चल जाता कि इन चौदह घण्टो की दौड-धूप के बाद भी कोई विचार अपनी जगह से खिसका नही है।

जब वह घर वापस आता तो तरोताज़ा होता, मज़बूत होता, खुश होता। उस समय वह यह नही कह सकता था कि सारे समय वह क्या क्या सोचता रहा है। उसके मस्तिष्क में जो बाते चक्कर लगाया करती थी वे क्या होती थी—विचार, स्मृतियाँ या स्वप्न? प्राय तीनो ही। कभी-कभी वह अपनी ही विचारधारा में बुरी तरह बह जाता और उसकी कल्पना के समक्ष एक चित्र खडा हो जाता—वह कज्ज़ाको में घुलमिल गया है, अपनी कज्ज़ाक पत्नी के साथ अगूर के खेत में काम कर रहा है, या पहाडो में घूमने-फिरनेवाला अब्रेक बन गया है, अथवा उसके पास से होकर कोई सुअर अभी अभी निकल गया है, और सारे समय वह किसी तीतर, सुअर या हिरन की तरफ झाँकता या उनकी टोह में लगा रहता।

शाम के समय चचा येरोश्का आ टपकता और उसके पास बैठा रहता। वन्यूशा चिखीर से भरा एक कटर ले आता और फिर दोनो बाते करते, शराब पीते और रात होते होते एक दूसरे से अलग हो जाते, और अन्तत सोने चले जाते। फिर दूसरे दिन वही शिकार, वही थकान, शाम के समय का वही वार्तालाप, शराब का वही दौर और वही बिस्तर। कभी कभी छुट्टी या आराम के दिन ओलेनिन सिर्फ घर पर रहता। उस समय उसका मुख्य काम होता एकटक मर्यान्का को निहारना। वह अपनी खिडकी या दालान में से उसकी प्रत्येक गति को सतृष्ण दृष्टि

से देखा करता। वह मर्यान्का की इज्जत करता था, उससे प्रेम करता था (कम से कम वह समझता यही था) ठीक उसी तरह जैसे कि वह पहाडो और आकाश के सौन्दर्य से प्रेम करता था। परन्तु उसने उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध जोडने की बात नही सोची थी। उसे ऐसा लगता था कि उसके तथा मर्यान्का के बीच ऐसे सम्बन्ध नही पैदा हो सकते जैसे कि मर्यान्का और कज्जाक लुकाश्का के बीच थे। फिर वैसे सम्बन्धो का तो कहना ही क्या जो धनी अफसरो और अन्य कज्जाक लडकियो के बीच हुआ करते थे। उसे स्पष्ट लग रहा था कि यदि उसने भी वैसा ही करना आरम्भ कर दिया जैसा कि उसके सहयोगी अफसर किया करते थे तो वह चिन्तन के पूर्णानन्द के स्थान पर क्लेशो, भ्रमजालो और भर्त्सनाओ के नर्क मे ही गिरेगा। इसके अतिरिक्त मर्यान्का के सम्बन्ध में उसमें स्वार्थ-त्याग की जो भावना विकसित हुई थी उससे उसे बडी प्रसन्नता हुई थी। किन्तु एक तरह से वह मर्यान्का से डरता भी था और उससे किसी भी दशा में अपने प्रेम-प्रकाशन के सम्बन्ध में एक शब्द भी नही कह सकता था।

एक बार गर्मी के मौसम में ओलेनिन शिकार पर न जाकर घर ही में था, तभी मास्को का एक परिचित सहसा उसके पास आ खडा हुआ। यह एक नवयुवक था जिससे मास्को के समाज में उसकी मित्रता हुई थी।

"आह, 'मोन शेर', प्रिय दोस्त, जब मैंने सुना कि तुम यहाँ हो उस समय मुझे बडी प्रसन्नता हुई!" उसने मास्को में बोली जानेवाली फ्रेंच में कहना शुरु किया और अपनी बातचीत मे फ्रेंच शब्दो का प्रयोग करता गया। "उन्होंने कहा था, 'ओलेनिन'। कौन ओलेनिन? और मुझे कितनी खुशी हुई थी   भाग्य से हम दोनों यहाँ मिल सके हैं। कैसा सयोग है! खैर, तुम्हारे हालचाल कैसे है? कैसे

हो? क्यो?" और राजकुमार वेलेत्स्की ने सारी कथा कह सुनाई कि किस प्रकार अस्थायी रूप से वह सेना में भरती हुआ, किस प्रकार कमाडर-इन-चीफ ने उसे अगरक्षक के कार्य पर लगाने का प्रस्ताव किया और किस प्रकार अभियान के पश्चात् वह उस पद को सभालेगा, यद्यपि सच पूछा जाय तो वह इसके प्रति बिल्कुल उदासीन था।

"यहाँ इस कोने में रहते हुए मनुष्य को अपना आगामी जीवन, भविष्य, सुधारना चाहिए—पदक या कोई पद प्राप्त करना चाहिए अथवा 'गार्ड' के रूप में स्थानान्तरित कर दिया जाना चाहिए। यह अनिवार्य है, मेरे लिए नही अपितु मेरे मित्रो और सगे-सम्बन्धियो के लिए। राजकुमार ने मेरी बडी आवभगत की थी। वह अच्छा आदमी है," वेलेत्स्की बोला और आगे कहता गया, "अभियान के लिए मुझे 'सेट आन्ना पदक' दिये जाने की सिफारिश की जा चुकी है। अब मैं यहाँ उस समय तक ठहरूँगा जब तक कि अभियान के लिए न चल दूं। यह तो राजधानी की तरह है। कैसी स्त्रियाँ हैं! खैर तुम्हारी कैसी बीत रही है? हमारे कप्तान स्तारत्सेव ने बताया था, तुम जानते हो वही न जो रहम-दिल है परन्तु है बेवकूफ खैर, उसने कहा था कि तुम यहाँ वहशियो की तरह रह रहे हो, न किसी से मिलते-जुलते हो, न बात करते हो। मै यह बात भली भाँति समझ सकता हूँ कि यहाँ पर जिस प्रकार के अफसर आ गये है उनसे मिलना-जलना तुम्हे अच्छा न लगता होगा। मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हे और मुझे एक दूसरे को जानने-समझने और साथ साथ उठने-बैठने का मौका मिलेगा। मै कारपोरल के मकान में ठहरा हूँ। वहाँ एक लडकी है, उस्तेन्का! बडी सुन्दर है।"

और उस दुनिया के, जिसे ओलेनिन ने समझा था कि वह छोड चुका है, ढेरो फ्रेच और रूसी शब्द बराबर बरसते गये, झरते गये।

वेलेत्स्की के बारे मे लोगो की आम राय यह थी कि वह एक

अच्छे स्वभाववाला व्यक्ति है। शायद वह था भी अच्छा। फिर भी, यद्यपि उसका चेहरा आकर्षक और सुन्दर था, ओलेनिन ने उसे अपने लिए बड़ा असुखकर समझा। उसे ऐसा लगा कि उसका मित्र उसी आवारागर्दी का बखान कर रहा है जिसे वह छोड चुका है। सबसे अधिक तो वह यह समझकर परेशान हुआ कि वह इस व्यक्ति को, जो उस दुनिया से आया है, न तो फटकार ही सकता है और न उसमें—यदि वह ऐसा करना चाहे तो भी—वैसा करने की शक्ति ही है। वह जिस पुरानी दुनिया से छूटकर आया है उसी में फँस रहा है, जकड रहा है। ओलेनिन को अपने तथा वेलेत्स्की दोनों के ही ऊपर क्रोध आया, फिर भी अपनी इच्छा के प्रतिकूल अपनी बातचीत में उसे फ्रेंच शब्दावली का प्रयोग करना पडा, कमांडर-इन-चीफ और मास्को के अपने परिचितों के बारे में रुचि दिखानी पडी। और चूँकि वह तथा वेलेत्स्की यही दो इस कज्ज़ाक गाँव में फ्रेंच बोल सकते थे इसलिए उसने अपने सहयोगी अफसरों और कज्ज़ाकों के बारे में तिरस्कारसूचक शब्दों में बातचीत की, उससे मिलते-जुलते रहने का वादा किया और उसे कभी कभी मिलने के लिए आते रहने का निमंत्रण भी दिया। मगर ओलेनिन खुद कभी मिलने के लिए वेलेत्स्की के पास नहीं गया।

वन्यूशा को वेलेत्स्की का स्वभाव अच्छा लगा। उसने तो यहाँ तक कह डाला कि यह व्यक्ति सचमुच बडा सज्जन है।

वेलेत्स्की ने तुरन्त ही उस प्रकार का जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दिया जैसा कि कज्ज़ाक गाँव में धनी अफसर प्राय व्यतीत किया करते थे।

ओलेनिन के देखते देखते एक ही महीने में वह इस गाँव में इतना प्रसिद्ध हो गया जैसे यहाँ का पुराना निवासी हो, वह गाँव के बड़े-बूढ़ों को शराब पिलाता, सायंकालीन पार्टियों का आयोजन करता, लडकियों

द्वारा दी जानेवाली पार्टियो मे भाग लेता और उनकी सफलताओ पर उनकी झूठी बडाई करता। स्त्रियाँ और लडकियाँ उसे किसी अज्ञात कारण से 'दादा' कहकर सम्बोधित करती। और स्वय कज्जाक भी, जो ऐसे व्यक्ति को अच्छी तरह समझते थे, जिसे सुरा और सुन्दरी से प्यार होता था, उसके मुरीद हो गये और उसे ओलेनिन से भी अधिक चाहने लगे, क्योकि ओलेनिन उनके लिए अभी तक एक पहेली बना हुआ था।

२४

सुबह के पाँच बजे थे। वन्यूशा दालान में समोवर जला रहा था, और लम्बे बूट का एक पैर लेकर उसपर हवा कर रहा था। ओलेनिन तेरेक में स्नान करने के लिए घर मे जा चुका था। (हाल ही में उसने अपने मनोविनोद का एक नया साधन, ढूँढ लिया था – नदी में घोडे को नहलाना।) उसकी मकान-मालिकन घर में थी और उसके कमरे की जलती हुई भट्ठी का धुआँ चिमनी से निकलकर आसमान में उड रहा था। उसकी लडकी सायवान में बैठी भैंस दुह रही थी। "चुडैल, ठीक से खडी भी नही रह सकती!" उसकी यह आवाज़ कभी कभी कानो मे पडने लगती और बालटी में गिरते हुए दूध की छलछल वायुमण्डल में विलीन हो जाती।

मकान के सामने की सडक से दौडते हुए घोडे की टापें सुनाई दी और बिना जीनवाले एक भीगे और चमचमाते हुए गहरे भूरे रग के घोडे पर आता हुआ ओलेनिन दिखाई पडा। वह फाटक तक पहुँच चुका था। मर्यान्का ने रुमाल मे लपटा हुआ अपना सिर एक क्षण के लिए सायवान से बाहर निकाला और फिर अन्दर कर लिया। ओलेनिन रेशम की एक लाल कमीज़ और सफेद चेरकेसियन कोट पहने था, जिसके चारो ओर पेटी बधी थी और उसमे एक कटार लटक रही थी। उसके सिर पर एक ऊँचा-सा हैट था।

वह अपने भीगे और तन्दुरुस्त घोड़े पर बैठा हुआ और कन्धे पर बन्दूक रखे फाटक खोलने के लिए झुका। उसके बाल अभी तक गीले थे और यौवन तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर के कारण उसका चेहरा दमक रहा था। उसने अपने को खूबसूरत, फुरतीला और जिगीत की तरह का जवान समझा परन्तु वह गलती पर था। कोई भी अनुभवी काकेशियाई उसे एक ही नज़र में देख कर कह सकता था कि वह अभी तक सिर्फ एक सिपाही है और कुछ नही।

जब उसने लडकी को सिर बाहर निकालते देखा तो वह फुर्ती से झुका और लगाम ढीली करते हुए उसने अपना चाबुक फटकारा और अहाते में घुस गया। "वन्यूशा, चाय तैयार है?" उसने सायबान के दरवाज़े की तरफ न देखते हुए आवाज़ दी। उसने इस बात पर भी ध्यान दिया कि उसका सुन्दर घोडा अपनी पिछली टाँगों पर कितनी खूबसूरती के साथ खडा हुआ, हिनहिनाया, अपनी माँस-पेशियाँ सिकोडी, फैलाईं और शान के साथ अहाते की कडी मिट्टी खदने लगा। ऐसा लगता था कि वह टट्टर से बाहर फाँद जाने के लिए तैयार खडा है। "से प्रे!"* वन्यूशा ने उत्तर दिया। ओलेनिन को ऐसा लगा कि मर्यान्का का सुन्दर खूबसूरत सिर अभी भी सायबान के बाहर निकला हुआ है, परन्तु वह उसकी ओर देखने के लिए भी न मुडा। जैसे ही वह घोडे से नीचे कूदा कि उसकी बन्दूक बरामदे से टकरा गई। वह विचित्र ढग से ठिटका और उसने सायबान की तरफ़ एक डरती-सी नजर डाली, जहाँ दिखाई तो कोई न पडता था, हाँ दुहे जाने की छलछल अवश्य सुनाई पडती थी।

घर में प्रवेश करने के तुरन्त बाद वह पुस्तक और हुक्का लेकर बाहर आ गया और दालान में चाय पीने बैठ गया। अभी तक यहाँ सूर्य

---

* "तैयार है!"

की किरणें नही पड रही थी। उसने तय कर लिया था कि उस दिन वह दोपहर के पहले कही भी न जायेगा और केवल पत्र ही लिखेगा क्योकि वहुत समय से उसने पत्र नही लिखे थे। परन्तु कारण चाहे जो भी हो उसे दालान में अपनी जगह छोडना अच्छा न लगा। घर के भीतर तो उसे ऐसा लग रहा था मानो जेल हो। इस समय तक घर की मालकिन ने अगीठी जला दी थी। लडकी मवेशी खदेड चुकने के वाद वापस आ गई थी और 'किज्याक' इकट्ठे करके टट्टर के पास जमा करती जा रही थी। ओलेनिन पढ रहा था, परन्तु पुस्तक में जो कुछ लिखा था उसकी एक पक्ति भी उसकी समझ में न आ रही थी। वह पुस्तक से वार वार आँखें उठाकर उस हृष्ट-पुष्ट नवयुवती की ओर देखता जो अहाते मे टहलती टहलती कभी मकान की तरल पात कालीन छाँह में जाती और कभी अहाते में फैली हुई चमचमाती हुई धूप में। प्रखर रगो की पोशाक में उसका सुपमा-सम्पन्न शरीर धूप में निखर उठता और उसकी एक श्यामल छाया पडने लगती। ओलेनिन को भय होता कि उसकी दृष्टि से कही उसकी कोई भाव-भगिमा अनदेखी तो नही रह गई? ओलेनिन खिल उठता जव वह देखता कि किस प्रकार उसका शरीर ऋजुता और शोभा के साथ भूमि की ओर झुकता है, उसका एकमात्र वस्त्र, गुलाबी फ्राक, उसके उरोजो से ढरकता हुआ उसके सुन्दर पैरो तक कितनी सिलवटें डालता है, अगडाई लेते समय साँसो से आन्दोलित उसका वक्षस्थल उसके कसे हुए फ्राक में कितनी गहरी रेखाओ में उभरता है, पुरानी लाल स्लीपरो मे उसकी कोमल एडियाँ पृथ्वी चूमते समय किस प्रकार अपना आकार वनाये रखती हैं, वाँह चढाये हुए उसकी सुदृढ भुजाएँ अपनी माँस-पेशियो की शक्ति से किस प्रकार क्रोध जैसी मुद्रा में कुदाल उठाती हैं और किस प्रकार उसकी गहरी काली काली आँखें उसकी आँखो मे चार होती हैं। यद्यपि उसकी कोमल भौंहो में वल पड जाने, फिर

भी उसकी आँखो से आनन्द की वर्षा होती और उन्हे देखकर ऐसा लगता कि उन्हे अपने सौन्दर्य का पूरा-पूरा ज्ञान है।

"ओलेनिन, मै पूछ रहा हूँ—तुम आज बहुत जल्दी उठ गये थे क्या?" काकेशियाई अफसर का कोट पहने अहाते में प्रवेश करते हुए वेलेत्स्की ने पूछा।

"वेलेत्स्की!" ओलेनिन ने अपना हाथ बढाते हुए जवाब दिया, "आज क्या बात है जो इतनी जल्दी निकल पडे?"

"हाँ, मुझे जल्दी निकलना पडा। यो कहो निकाल दिया गया। आज रात हमारे यहाँ बालडान्स है। मर्यान्का, तुम तो उस्तेन्का के यहाँ आओगी ही?" लडकी की ओर मुडते हुए वह बोला। ओलेनिन को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वेलेत्स्की किस आसानी से इस लडकी से बात कर रहा है। परन्तु मर्यान्का ने जैसे कुछ सुना ही न हो। उसने अपना सिर झुका लिया और कुदाल कन्धे पर डालती हुई मरदानी चाल से अपने घर की ओर चल दी।

"वह लजीली है, दोस्त, लजीली," उसके जाने के बाद वेलेत्स्की बोला, "तुम से लजाती है," उसने कहा और हँसता हुआ दालान की सीढियो की ओर दौड गया।

"आखिर बात क्या है कि तुम्हारे यहाँ नृत्य भी है और तुम निकाल भी दिये गये? मेरी तो कुछ समझ में नही आता!"

"भाई, नाच है उस्तेन्का के यहाँ। वह हमारी मकान-मालकिन है। और तुम्हारा निमन्त्रण है। और नाच के माने है शराब के दौर और लडकियो के जमघट।"

"परन्तु हम वहाँ क्या करेगे?"

वेलेत्स्की मुस्करा दिया और उसने उस दिशा की ओर देखते हुए, जहाँ जाकर मर्यान्का ओझल हो गई थी, अपना सिर हिलाया और आँख मारी।

ओलेनिन ने कन्धे उचका दिये। शर्म के मारे उसका मुंह लाल हो गया। "सचमुच तुम विचित्र आदमी हो!" वह बोला।

"अच्छा अब आओ, ज्यादा बनो मत!"

ओलेनिन की भृकुटियाँ चढ़ रही थी और वेलेत्स्की देख देखकर मुस्कराये जा रहा था।

"अरे, आओ भी, मतलब भी नही समझते?" उसने कहा, "एक ही मकान में रहना—और इतनी आकर्षक, इतनी मजेदार रमणी, सौन्दर्य की साकार मूर्ति "

"सच कहते हो, गजब की सुन्दरी है! मैंने तो इसके पहले किसी में इतना सौन्दर्य देखा भी न था," ओलेनिन बोला।

"तब फिर?" वेलेत्स्की बोला। परिस्थिति उसकी समझ में न आ रही थी।

"बात भले ही अजीब हो," ओलेनिन ने उत्तर दिया, "परन्तु अगर कोई सत्य है तो उसे मैं क्यो न कहूँ? चूँकि मैं यहाँ रह रहा हूँ इसलिए मुझे तो ऐसा लगता है मानो औरते मेरे लिए हैं ही नही। और यह सब कितना अच्छा है, सचमुच कितना अच्छा! हाँ हममें और ऐसी औरतो में क्या समानता हो सकती है? येरोश्का—खैर वह आदमी ही दूसरे ढग का है! उसका और मेरा एक ही नशा है—वह भी शिकारी है और मैं भी।"

"ठीक, समानता का चक्कर। अच्छा, अमालिया इवानोवना से मेरी क्या समानता है, तुम्ही बताओ, क्या समानता है? बात सब एक है! हाँ यह कह सकते हो कि ये लोग साफ-सुथरे नही है, बस। यह बात मैं मानता हूँ अ ला गेर कोम अ ला गेर!"*

---

*"जैसा देस तैसा भेस"—अनु०

"परन्तु मेरी जान-पहचान तो किसी भी अमालिया इवानोवना से नही रही और मैं यह भी नही जानता कि इस प्रकार की औरतों से कैसे व्यवहार करना चाहिये," ओलेनिन बोला, "उनकी कोई इज्जत नही कर सकता, परन्तु मैं ज़रूर करता हूँ।"

"ज़रूर करो। तुम्हे रोकता कौन है?"

ओलेनिन ने कोई जवाब न दिया। वस्तुत वह अपनी उस बात को कह देना चाहता था जो उसने अभी अभी शुरू की थी क्योंकि वह उसके दिल की आवाज़ थी।

"मैं जानता हूँ कि मैं अपवादस्वरूप हूँ" उसे कुछ उलझन महसूस हुई। "परन्तु मेरी जिन्दगी का ढर्रा कुछ इस तरह चलने लगा है कि अगर मैं तुम्हारी तरह रहना चाहूँ भी तो नही रह सकता। मैं अपने सिद्धान्तो का त्याग करने की आवश्यकता नही समझता। अकेले रहना मुझे प्रिय है। यही कारण है कि इन लोगो को मैं उस नज़र से नही देख पाता जिस नज़र से तुम देखते हो।"

वेलेत्स्की ने आँखें ऊपर की और उसे सन्देह की दृष्टि से देखा। "कुछ भी हो, आज शाम को आना ज़रूर। वहाँ मर्यान्का भी होगी। मैं तुम्हारा उससे परिचय करा दूँगा। आना ज़रूर! अगर मन न लगे तो लौट आना। आओगे न?"

"आऊँगा परन्तु सच पूछो तो मुझे इस बात का डर है कि मैं बहक न जाऊँ।"

"हो, हो, हो!" वेलेत्स्की चिल्लाया। "बस आ भर जाओ, बाद में तुम्हारी देख-भाल का जिम्मा मेरा। आओगे न? सच कहते हो?"

"आऊँगा! मगर भाई, मुझे वहाँ करना क्या होगा, कौनसा पार्ट अदा करना होगा!"

"तुमसे याचना कर रहा हूँ, दोस्त, आना अवश्य, भूलना मत!"

"हाँ, शायद आऊँगा," ओलेनिन बोला।

"सुन्दरता की चलती-फिरती मूर्तियाँ देखने को मिलती कहाँ है। और, ब्रह्मचारी की ज़िन्दगी! क्या आदर्श है प्यारे। क्यो ज़िन्दगी तबाह कर रहे हो? जो मिल रहा है उससे हाथ धोना कहाँ की बुद्धिमानी है? तुमने यह भी सुना है क्या कि हमारी कम्पनी को वज्दीजेन्स्काया जाने की आज्ञा हुई है?"

"ऐसी सम्भावना तो कम है। मैंने तो सुना था कि आठवीं कम्पनी वहाँ भेजी जायेगी," ओलेनिन बोला।

"नही मुझे अगरक्षक का एक पत्र मिला है जिसमें उसने लिखा है कि स्वय राजकुमार अभियान मे भाग लेगे। मुझे प्रसन्नता है कि मुझे उनकी बानगी भी देखने को मिलेगी। अब तो इस जगह से मै ऊबता-सा जा रहा हूँ।"

"मैने सुना है कि हमे शीघ्र ही हमला बोलना होगा।"

"इसके बारे में मैंने कुछ नही सुना। हाँ यह खबर ज़रूर है कि क्निोवित्सिन को हमला करने के लिए 'सेंट आन्ना पदक' मिल चुका है। उसे आशा थी कि वह लेफ्टीनेंट बना दिया जायेगा।" बेलेत्स्की हँसते हुए बोला, "कैसी बेवकूफी! वह इसके लिए प्रधान कार्यालय भी गया था"

झुटपुटा हो रहा था। अब ओलेनिन पार्टी के बारे में सोचने लगा। उसे जो निमत्रण मिला था उससे उसे चिन्ता हो गई थी। वह जाना तो चाहता था परन्तु उसे लग रहा था कि वहाँ जो कुछ घटेगा वह बडा विचित्र, भद्दा और शायद भयपद भी होगा। वह जानता था कि न तो वहाँ कज्ज़ाक होंगे, न वृद्धाएँ होंगी और न लडकियो को छोडकर और ही कोई होगा। भगवान जाने क्या हो? उसे कैसा व्यवहार करना चाहिए? वे लोग क्या क्या बाते करेंगे? उसका और उन कज्ज़ाक लडकियो का क्या

सम्वन्ध है? वेलेत्स्की ने उसे ऐसे ऐसे विचित्र, सनकी और साथ ही कई मज़बूत सम्वन्धो के वारे में बहुत कुछ वताया था। उसे यह विचार ही वडा विचित्र लग रहा था कि एक ही कमरे में वह भी होगा और मर्यान्का भी। और शायद उसे उससे बातें भी करनी पडे। जब उसे उसका शानदार व्यक्तित्व याद आया तो यह बात उसे असम्भव-सी लगी। परन्तु वेलेत्स्की ने तो इस प्रकार बात की थी मानो यह सब वडी मामूली चीज हो! "क्या यह सम्भव है कि वेलेत्स्की मर्यान्का के साथ भी वैसा ही व्यवहार करेगा? बात दिलचस्प है," उसने विचार किया, "नही, अच्छा है वहाँ जाऊँ ही नही। यह सब कितना वेतुका है, कितना भद्दा—फिर इससे लाभ ही क्या!" परन्तु फिर उसे यह सोचकर घवडाहट हुई कि वहाँ क्या होगा। न जाने क्या हो! और अब तो वह वचनवद्ध भी हो चुका है। वह विना इधर-उधर का कोई निश्चय किये हुए ही चल पडा। वह वेलेत्स्की के मकान तक पहुँचा और भीतर चला गया।

जिस मकान में वेलेत्स्की रह रहा था वह ओलेनिन की ही तरह का था और ज़मीन से पाँच फीट ऊपर लकडी के लट्ठो पर वना था। उसमें दो कमरे थे। पहले में (जिसमें ओलेनिन सीधे सीढियाँ चढकर घुसा था) परो के पलग, कम्वल, घुस्से और कुशन खूबसूरती से कज्ज़ाक फैशन में सजाये हुए मुख्य दीवाल से सटे रखे थे। वगल की छोटी दीवालो पर जलपात्र थे हथियार टँगे थे, और फर्श पर, एक वेंच के नीचे, कुछ तरबूज़ और कद्दू रखे थे। दूसरे कमरे में लकडी की एक वडी अगीठी, एक मेज़, कुछ वेंचे और कुछ मूर्तियाँ थी। यही वेलेत्स्की रहता था और यही उसका पलग, उसका सामान और उसका ट्रक था। उसके हथियार इसी कमरे की एक दीवाल पर लटके हुए थे। उनके पीछे एक कम्वल टगा था। मेज पर कघा, शीशा, तेल आदि शृगार सामग्री और कुछ चित्र रखे थे। एक वेंच पर एक रेशमी गाउन भी फिका पडा था।

इस समय बेलेत्स्की खुश था और मामूली कपडे पहने पलग पर लेटा हुआ 'ले त्रुआ मास्केतेयर'* पढ रहा था।

वह उछल पडा।

"वहाँ देखो, मैंने हर चीज़ का कैसा इन्तज़ाम किया है! कैसा बढिया प्रबन्ध है! है न? मुझे खुशी है कि तुम आ गये। सब के सब जी तोडकर लगे हैं। मालूम है केक काहे के बने हैं? उसमें सुअर का मांस है, अगूर है और भी बहुत-सी चीज़ें हैं। परन्तु यही सब कुछ तो है नही। उधर देखो कैसी हलचल मची है!"

और सचमुच खिडकी के बाहर उन्होंने देखा कि मकान में बडी चहल-पहल है। लडकियाँ कभी भीतर भागती है, कभी बाहर, कभी यह चीज़ लेने, कभी वह।

"क्या सब कुछ जल्दी ही तैयार हो जायगा या अभी इन्तज़ार करना पडेगा?" बेलेत्स्की ने वही से आवाज़ लगाई।

"बहुत जल्दी! क्यो? ज़ोर की भूख लग आई?" और अन्दर मे एक साथ कहकहो की आवाज़ें आने लगी।

छोटे कद की, गुलाबी गालोवाली और चचल सुन्दरी उस्तेन्का बाहे चढाये बेलेत्स्की के कमरे में घुस आई। उसे कुछ तश्तरियाँ लेनी थी।

"परे हटो नही तो फोड दूँगी तश्तरियाँ!" बेलेत्स्की से बचती हुई महीन आवाज में वह बोली, "यह तो होता नही कि आयें और हमारी मदद करे," ओलेनिन की ओर देखकर हँसती हुई वह बोल उठी, "और लडकियो के जलपान की बात मत भूलना" (जलपान से अर्थ था मसालेदार रोटियाँ और मिठाइयां)।

---

*'तीन बन्दूकचियें'—अनु०

"मर्यान्का आ गई क्या ?"

"क्यो नही! और अपने साथ आटा भी गूंधकर लाई है।"

"जानते हो," वेलेत्स्की वोला, "अगर उस्तेन्का को वढ़िया कपडे पहना दिये जायें और मुंह पर थोडी पालिश कर दी जाय तो वह हमारी सारी सुन्दरियो से सुन्दर निकलेगी। क्या तुमने कभी उस कज्जाक औरत को देखा है जिसने एक कर्नल के साथ व्याह किया है? कितनी सुन्दर थी! वोर्शचेवा। कैसी शान थी उसकी! कहाँ से वटोर लाती हैं इतनी सुन्दरता ये सब?"

"वोर्शचेवा को तो मैंने देखा नही, लेकिन मैं समझता हूँ कि उस पोशाक से अच्छी कोई चीज नहीं जिसे वे यहाँ पहनती है।"

"अरे मुझमें यही तो खासियत है कि मैं किसी तरह के जीवन में भी घुलमिल सकता हूँ," आराम की सांस लेते हुए वेलेत्स्की ने कहा, "मैं जाकर देखूंगा कि वे सब क्या कर रही है।" उसने गाउन कन्धे पर डाला और चिल्लाता हुआ दौड पडा, "और तुम 'जलपान' का ध्यान रखना।"

ओलेनिन ने वेलेत्स्की के अर्दली को मसालेदार रोटियाँ और शहद लेने भेजा। परन्तु रुपया देने में उसे कुछ इतना सकोच हो रहा था (मानो वह किसी को घूस दे रहा हो) कि जव अर्दली ने पूछा कि "पिपरमिंट के साथ कितनी रोटियाँ होगी और शहद के साथ कितनी?" तो ओलेनिन को कोई जवाव न सूझा।

"जितनी तुम चाहो।"

"क्या सव पैसा खर्च कर डालूं?" वूढे सिपाही ने प्रश्न किया, "पिपरमिट महँगी है—सोलह कोपेक की।"

"हाँ, हाँ सव खर्च कर डालो," ओलेनिन ने उत्तर दिया और खिडकी के पास वैठ गया। उसका हृदय इतने जोरो से धडक रहा था

मानो कोई गम्भीर अपराध करने जा रहा हो। जब बेलेत्स्की लडकियों के कमरे में था उस समय ओलेनिन ने वहाँ कुछ चीखें-चिल्लाहटें सुनी और कुछ ही क्षणो बाद उसने कहकहो और चिल्लपो के बीच उसे सीढियाँ उतरते देखा। "निकाल दिया गया," वह बोला।

थोडी ही देर बाद उस्तेन्का अन्दर आई और उसने खबर दी कि सब कुछ तैयार है।

कमरे में आने पर उन्होंने देखा कि सचमुच सब कुछ तैयार है। उस्तेन्का कुशनो को दीवाल से लगा लगाकर ठीक से रख रही थी। पास ही मेज़ पर एक छोटा-सा मेज़पोश पडा था जिसपर चिखीर का एक कटर और कुछ सूखी हुई मछलियाँ रखी थी। कमरे में गुथे हुए आटे और अगूर की महक आ रही थी। लगभग आधी दर्जन लडकियाँ चुस्त वेशमेते पहने और मुह बिना रूमाल से लपेटे (प्राय लडकियाँ अपना मुँह रूमाल से लपेटे रहा करती थी) अगीठी के पीछे एक कोने में खडी गुपचुप कर रही थी और कभी कभी हँसी के मारे लोटपोट भी हो रही थी।

"मै बडी नम्रतापूर्वक आप सबसे प्रार्थना करती हूँ कि आप लोग हमारे सन्त पेट्रन को इज्जत बख्शें," अपने अतिथियो को मेज़ पर आमन्त्रित करती हुई उस्तेन्का बोली।

ओलेनिन ने देखा कि मर्यान्का भी उन्ही लडकियो के दल में थी। सभी सुन्दर थी। उसे ऐसी विषम परिस्थितियो मे मर्यान्का से मिलने में घबडाहट हो रही थी। ऐसी दशा में उसने वही करने का निश्चय किया जो बेलेत्स्की ने किया था। बेलेत्स्की गम्भीरतापूर्वक मेज़ के पास गया था, उसने उस्तेन्का के स्वास्थ्य की कामना करते हुए गिलास भर शराब पी और दूसरो को भी वैसा ही करने के

लिए कहा। उस्तेन्का ने घोषणा की कि लडकियाँ शराव नहीं पीती।

टोली की एक लडकी वोली "हम थोडा शहद ले लेगे।"

अर्दली शहद और मसालेदार रोटियाँ लेकर लौट आया।

उसने उन लोगो की ओर कनखियों से देखा (चाहे घृणा से कहिए या ईर्ष्या से) जो उसकी राय में शराव और नाच-रग में मस्त थे और उन्हे रद्दी कागज में लपेटा हुआ शहद तथा रोटियाँ देकर उनके मूल्य और रेज़गारी आदि का हिसाव समझाने लगा। परन्तु वेलेत्स्की ने उसे भगा दिया। शराव के गिलासो में शहद मिलाकर और तीन पौंड रोटियाँ मेज पर लगाकर वेलेत्स्की ने लडकियों को कोने से खीचकर मेज़ के पास विठा दिया और रोटियाँ वाँटने लगा। ओलेनिन ने अनायास देखा कि किस प्रकार मर्यान्का ने हाथ वढाकर एक भूरे रग का और दो पिपरमिट के केक उठा लिये और अव वह समझ नही पा रही थी कि उनका क्या करे। उस्तेन्का और वेलेत्स्की एक दूसरे के साथ घुल घुलकर वाते कर रहे थे और यद्यपि दोनो ही चाहते थे कि मजलिस में जान आये, फिर भी आपसी वातचीत फीकी थी और किसी को भी उसमें कोई आनन्द न आ रहा था। ओलेनिन ने, यह समझकर कि वह खुद न वोल कर लडकियों में उत्सुकता को ही वढावा दे रहा है और शायद वे उसका मूक परिहास कर रही है और वहुत सम्भव है कि दूसरो पर भी इस भीरुता का असर पड रहा हो, कुछ वोलने का प्रयत्न किया। शर्म के मारे उसके गालो पर गुलावी छा रही थी और उसे ऐसा लग रहा था कि मर्यान्का परेशान है। "शायद वे हम लोगो से यह आशा कर रही होगी कि हम उन्हे कुछ पैसा दें," उसने विचार किया, "मगर हम यह करे कैसे? और ऐसा करने और फिर निकल जाने का सवसे सरल तरीका है क्या?"

२५

"आखिर वात क्या है कि तुम अपने ही घर में रहनेवाले को नही जानती?" वेलेत्स्की ने मर्यान्का को सम्वोधित करते हुए प्रश्न किया।

"जव वह कभी हमसे मिलने नही आते तो मैं उन्हे कैसे जान सकती हूँ?" ओलेनिन की ओर देखते हुए मर्यान्का ने उत्तर दिया।

ओलेनिन को ऐसा लगा कि उसे भय लग रहा है। परन्तु, किस चीज़ का भय, यह वह न जान सका। वह विह्वल हो गया और विना यह जाने हुए कि वह क्या कह रहा है उसने कहना शुरू किया—

"मुझे तुम्हारी माँ से डर लगता है। पहले ही दिन जव मै तुम्हारे घर गया था तो उसने मुझे वह करारी फटकार सुनाई थी कि छठी का दूध याद आ गया था।"

मर्यान्का ठठाकर हँस पडी।

"और तुम डर गये?" उसने कहा और उसपर एक सरसरी निगाह डाली और तुरन्त हटा ली।

यह पहला अवसर था जव ओलेनिन ने उसका सुन्दर चेहरा आँख भर कर देखा था। उसके पहले तक तो उसने उसे मुँह पर रूमाल लपेटे हुए ही देखा था। इसमें सन्देह नही कि लोग उसे 'गाँव की सुन्दरी' का जो नाम देते थे वह सार्थक था।

उस्तेंन्का भी एक सुन्दर लडकी थी—ठिगनी, लचकीली, गुलावी मुखडेवाली। उसकी आँखें भूरी थी और ओठ लाल, जो या तो हँसते रहते या वातचीत में चलते रहते। इसके विपरीत मर्यान्का लावण्य की प्रतिमा तो नही, हाँ सुन्दरी अवश्य कही जा सकती थी—लम्वा शरीर, गठा हुआ वदन, उन्नत उरोज, भरे भरे कन्धे, धनुषाकार गहरी आँखें और उनपर पडती हुई काली काली भौहो की छाया। यदि उसमें ये गुण न होते

तो शायद उसकी चाल-ढाल और नाक-नक्शे को देखकर उसमें मरदानेपन और कठोरता का भी आभास मिलता। उसमें युवतियो जैसी मुस्कान थी और जब वह हँसती तो देखनेवाले देखते ही रह जाते। परन्तु वह हँसती कम थी। ऐसा ज्ञात होता कि वह कौमार्य की शक्ति एव स्वास्थ्य की किरणें बिखेर रही है। सभी लडकियाँ सुन्दर थी। ये लडकियाँ किन्तु वे स्वय, बेलेत्स्की और अर्दली, जो मसालेदार रोटियाँ लाया था, सभी उसे कनखियो से देखते और जो भी लडकियो से कोई बात कहता वह मर्यान्का को जरूर सम्बोधित करता। ऐसा प्रतीत होता कि मजलिस की रानी वही है।

टोली को ज़िन्दा बनाये रखने की दृष्टि से बेलेत्स्की कभी लडकियो को चिखीर बाँटता, कभी उनसे छेडछाड करता और कभी ओलेनिन से फ्रेंच में मर्यान्का के विषय में छीटेकशी करता, कहता कि यह सुन्दरी तो बस 'तुम्हारी' (ला वोत्र) ही है। उसने ओलेनिन से वैसा ही व्यवहार करने के लिए कहा जैसा वह स्वय कर रहा था। ओलेनिन और भी अधिक व्यग्र होता जा रहा था। वह भागने का बहाना ढूंढ रहा था कि इतने में बेलेत्स्की ने घोषणा की कि उस्तेन्का, जिसके नाम में आज का सारा आयोजन हो रहा था, आदमियो को चिखीर बाँटे और उनका चुम्बन करे। वह राज़ी हो गई मगर शर्त यह थी कि, जैसा विवाह के अवसरो पर हुआ करता है, वे उसकी तश्तरी में रुपया डालते जायें।

"मैं इस नामाकूल दावत में आया ही क्यो!" ओलेनिन ने सोचा। वह भाग खडा होने के लिए उठने लगा।

"कहाँ खिसक रहे हो, दोस्त?"

"कुछ तम्बाकू लेने जा रहा हूँ," वह बोला। उसका उद्देश्य वहाँ से हट जाने का था। परन्तु बेलेत्स्की ने उसका हाथ पकड लिया और फ्रेंच में कहा, "मेरे पास रुपया है।"

"तो यहाँ कुछ न कुछ देना ज़रूर होगा। कोई योही नही भाग मकता," ओलेनिन ने विचार किया। उसे अपने ऊपर क्रोध आ रहा था, "क्या मैं सचमुच वेलेत्स्की की भाँति व्यवहार नही कर सकता? मुझे आना ही न चाहिए था लेकिन जव आ ही गया हूँ तो मुझे गुड गोवर तो नही करना चाहिए। मुझे कज्ज़ाक की भाँति पीना चाहिए," और उसने काष्ठपात्र लेकर (जिसमें आठ गिलास रखे थे) उसमें शराव भरी और देखते ही देखते उसे पी गया। लडकियाँ उसकी ओर देखती ही रह गई। एक साथ और इतनी ज्यादा! उन्हे आश्चर्य हो रहा था और डर भी लग रहा था। उन्हे यह वात वडी विचित्र और भद्दी लगी। उस्तेन्का ने उन दोना को एक एक गिलास और दिया और उन्हें चूम लिया।

"प्यारी लडकियो, अव कुछ जशन मनेगा," उस्तेन्का ने उन चार रूवलो को खनखनाते हुए कहा जो लोगो ने तश्तरी में डाले थे। अव ओलेनिन को कोई भी सकोच न रह गया था। वह वातूनी हो रहा था।

"मर्यान्का अव तुम्हारी वारी है। तुम हमें शराव दो और चुम्वन भी," उमका हाथ पकडते हुए वेलेत्स्की वोला।

"हाँ मैं तुम्हे ऐसा चुम्वन दूँगी!" वह वोली मानो तमाचा जडने की तैयारी कर रही हो।

"तुम विना कुछ लिए हुए ही उनका चुम्वन कर सकती हो," एक दूसरी लडकी ने कहा।

"तुम वडी अच्छी लडकी हो," अपने को छुटाती हुई लडकी को चूमते हुए वेलेत्स्को वोला, "नही तुम्हे देना ही होगा," मर्यान्का को मम्बोधित करते हुए उमने ज़िद की, "अपने किरायेदार को भी एक गिलाम दो न।"

और उसका हाथ पकडते हुए, वह उसे बेंच के पास ले गया और ओलेनिन के पास बिठा दिया।

"कैसी सुन्दर है!" उसका सिर घुमाकर उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए उसने कहा।

मर्यान्का ने अब अपने को छुडाने की कोई कोशिश न की और अपनी बडी बडी आँखें ओलेनिन पर गडा दी।

"कितनी सुन्दर!" बेलेत्स्की ने दुहराया और मर्यान्का की दृष्टि से ऐसा लगा मानो कह रही हो "हाँ, देखो, कितनी सुन्दर हूँ मैं।"

बिना यह सोचे-विचारे कि वह क्या कर रहा है, ओलेनिन ने मर्यान्का को छाती से लगा लिया और उसका चुम्बन करने जा ही रहा था कि वह अपने को उसके अंक-पाश से मुक्त करती, बेलेत्स्की को धक्का देती और मेज़ को गिराती हुई अंगीठी की तरफ भागी। सभी चिल्लाने और कहकहे लगाने लगे। तभी बेलेत्स्की ने लडकियों के कान में कुछ फूंका और वे सहसा गलियारे में भाग गईं और दरवाज़ा बन्द हो गया।

"तुमने बेलेत्स्की को क्यो चूमा? मुझे क्यो नही चूमती थी?" ओलेनिन बोला।

"ऐसे ही! मैं नहीं चाहती। बस।" ओठ काटते और त्यौरियाँ चढाते हुए वह बोली, "वह 'दादा' है," उसने मुस्कराते हुए कहा। वह दरवाजे की ओर लपकी और उसे भडभडाने लगी, "अरी चुडैलो, दरवाज़ा क्यों बन्द कर लिया?"

"खैर, उन्हे वहाँ रहने दो और हम यहाँ रहेंगे," उसके और भी निकट आते हुए ओलेनिन बोला।

मर्यान्का ने भौंहे कसी और उसे हाथ से धक्का देकर एक ओर हटा दिया, और एक बार फिर ओलेनिन को वह इतनी महान,

इतनी सुन्दर लगी कि वह अपने होश में आ गया और उसे अपने किये पर शर्म आने लगी। वह खुद दरवाज़े तक गया और उसे खीचने लगा।

"वेलेत्स्की! दरवाज़ा खोलो! यह क्या बेवकूफी है!"

मर्यान्का फिर मधुरता से हँस दी। उसका चेहरा दमक रहा था।

"अरे तुम तो मुझसे डरते हो?"

"वाकई डरता हूँ। आखिर अपनी माँ की बेटी हो, न!"

"तुम्हे अपना अधिक समय येरोश्का के साथ बिताना चाहिए। वही तुम्हे लडकियो से प्रेम करवाएगा।" और वह सीधे उसकी आँखो में देखती हुई मुस्करा दी।

ओलेनिन को नही मालूम था कि वह क्या उत्तर दे। "और अगर मै तुमसे मिलने आऊँ "

"वह बात दूसरी है," सिर हिलाते हुए वह बोली।

उसी क्षण वेलेत्स्की ने धक्के से दरवाजा खोल दिया और मर्यान्का उसके पास से कूदकर भाग गई। उसकी जाँघ ओलेनिन के पैर से छू गई।

"प्रेम, स्वार्थत्याग और लुकाश्का वगैरह के बारे में मै जो कुछ सोचता रहा हूँ वह सब बेवकूफी है। प्रसन्नता दूसरी ही चीज़ है। जो प्रसन्न है वही ठीक है, ठीक रास्ते पर है।" ओलेनिन ने सोचा और पूरी ताकत से मर्यान्का को पकड कर पहले उसकी कनपटी के पास चुम्बन किया, फिर उसके गाल पर। मर्यान्का को कोई क्रोध न आया। वह जोर से हँस पडी और दूसरी लडकियो के पास भाग गई।

पार्टी समाप्त हो चुकी थी। उस्तेन्का की माँ काम पर से लौटी, उसने लडकियो को फटकारा और बाहर निकाल दिया।

२६

"हाँ," ओलेनिन ने सोचा। वह घर की ओर बढा जा रहा था। "मुझे थोडी लगाम ढीली करने की ज़रूरत है, फिर मैं उस कज्जाक लडकी से बुरी तरह प्रेम करने लगूँगा," यही विचार लेकर वह सोने चला परन्तु वह समझता था कि ये विचार पानी के बुलबुले हैं। नही, वह पहले की ही तरह रहना आरम्भ करेगा। परन्तु यह बात न हुई। मर्यान्का के साथ उसके सम्बन्धो में परिवर्तन हुआ। जो दीवाल उन्हे अलग कर रही थी वह ढह चुकी थी। अब जब कभी दोनो मिलते तो ओलेनिन उसे नमस्कार कर लेता।

मालिक मकान को ओलेनिन के धनी और उदार होने का पता चल गया था। एक दिन जब वह किराया वसूल करने आया तो चलते-चलाते उसे अपने घर आने का निमत्रण भी देता गया। पार्टीवाले दिन के बाद से मर्यान्का की माँ उससे बडे तपाक से मिलने लगी थी। कभी कभी सायकाल वह मेज़बानो के साथ बैठता और बडी रात तक गप्पें मारा करता। ऐसा लगता कि गाँव में वह पहले की ही तरह रह रहा है, परन्तु उसके अन्तस् का सब कुछ बदल चुका था। पहले ही की तरह अब भी वह दिन दिन भर जगलो में रहता और सायकाल आठ बजे के करीब अकेले अथवा चचा येरोश्का के साथ अपने मेज़बानो से मिलने चल पडता। वे भी उसके आने-जाने के इतने अभ्यस्त हो गये थे कि जिस दिन वह न आता उस दिन उन्हे आश्चर्य होता। वह शराब की अच्छी कीमत देता। वह शान्त व्यक्ति था। वन्यूशा उसके लिए चाय लाता और वह अगीठी के पास एक कोने में बैठ जाता। बूढी इस ओर बिल्कुल ध्यान न देती और अपने काम में लगी रहती। और वे चिख़ीर के जाम या चाय के प्याले की चुस्कियाँ लेते हुए कभी कज्जाको के बारे में, कभी पडोसियो के बारे में और कभी

रूस के बारे में बातें किया करते। दूसरे लोग प्रश्न करते और ओलेनिन उत्तर देता। कभी कभी वह कोई पुस्तक ले आता और उसे पढा करता। मर्यान्का बकरी की तरह सिकुडी हुई कभी अगीठी के ऊपर और कभी कोने में पैर सिकोडे बैठी रहती। वह बातचीत में कोई भाग न लेती। ओलेनिन उसकी आँखें और सुन्दर चेहरा निहारा करता। कभी उसके कानो में उसके चलने-फिरने की और कभी बीज फोडने की आवाज़ पडा करती। ओलेनिन को ऐसा लगता कि जब जब वह कुछ बोलता तब तब मर्यान्का पूरे ध्यान से उसकी बाते सुना करती। और जब वह मन ही मन कुछ पढता तो उसे उसकी उपस्थिति का भान होता रहता। कभी कभी वह सोचता कि मर्यान्का की आँखें उसी पर गडी हैं। और, वह भी उनके तेज मे प्रकाशित होने के लिए उसे चुपचाप निहारा करता। उस समय वह तुरन्त अपने चेहरे को छिपा लेती और वह भी ऐसा बन जाता मानो बुढिया से कुछ गूढ विषय पर बडी गम्भीरता से बातचीत कर रहा है। परन्तु अपनी समस्त मन शक्ति को एक ओर केन्द्रित करते हुए वह पूरे समय उसकी चलती हुई सांस और आने-जाने की आवाज सुना करता और इस बात की प्रतीक्षा किया करता कि वह उसकी ओर अब देखे तब देखे। दूसरो की मौजूदगी में वह उसके साथ सामान्यतया चचल और खुश रहती, परन्तु जब दोनो अकेले होते उस समय वह लजीली और रूखी हो जाती। कभी कभी वह मर्यान्का के घर वापस आने से पहले ही वहाँ पहुँच जाता और तब एकाएक उसके कानो में उसके आने की पग-ध्वनि पडती और खुले हुए दरवाजे पर उसकी नीली सूती फ्राक उसकी आँखो में चमक जाती। तब वह मकान में प्रवेश करती, उसपर एक नजर डालती, थोडा-सा मुस्कराती और कुछ प्रसन्न और डरी हुई सी चल देती।

न तो वह उससे कुछ चाहता ही था और न उसकी कोई आकाक्षा ही थी। परन्तु प्रतिदिन उसके लिए मर्यान्का की उपस्थिति अनिवार्य-सी बनती गई।

ओलेनिन कज्जाक गाँव के जीवन में इतना रम गया था कि उसे अपनी पुरानी जीवन-चर्या विस्मृत-सी हो गई। उसे भविष्य के लिए, और विशेष रूप से वह जिस दुनिया में सम्प्रति रह रहा था उससे वाहर की दुनिया के लिए, न तो कोई चिन्ता ही थी और न उसमें उसे रुचि ही रह गई थी। जव उसे घर से, सम्वन्धियो से या अपने दोस्तो से पत्र प्राप्त होते जिनमें यह चिन्ता व्यक्त की जाती थी कि उनके लिए वह अव एक खोया हुआ सा व्यक्ति हो गया है तो उसे परेशानी हो जाती और क्रोध भी आ जाता। वह इस गाँव में रहते हुए उन लोगो को खोया हुआ समझता जो उसकी तरह नही रह रहे थे। उसे विश्वास था कि अपने पूर्व जीवन और वातावरण से मुँह मोडकर उसने जो यह नया ग्राम्य जीवन अपनाया है और अव वह जितना स्वच्छन्द एव मौलिक जीवन व्यतीत कर रहा है उसके लिए उसे कोई पश्चात्ताप न होगा। जव उसने अभियानो में भाग लिया था और उसे एक किले में रहना पडा था तव भी वह प्रसन्न था, परन्तु यहाँ चचा येरोश्का के साथ उठते-वैठते, जगलो में शिकार करते, गाँव के एक कोने में स्थित अपने मकान में आराम से रहते और लुकाश्का तथा मर्यान्का के वारे में सोचते हुए उसे अपना पूर्व जीवन कृत्रिम और हास्यास्पद-सा लग रहा था। अपने पूर्व जीवन की कृत्रिमता पर पहले भी उसे क्रोध आता था परन्तु इस समय तो उससे वेहद घृणा हो रही थी। यहाँ वह अपने को दिन प्रतिदिन स्वतत्र अनुभव करता और समझता कि वह भी आदमी है। काकेशिया इस समय उसकी कल्पना के काकेशिया से विल्कुल भिन्न था। यहाँ उसे काकेशिया का वह रूप देखने को नही मिला जो उसने पढा और सुना था। उसने अपने स्वप्नो के अनुरूप यहाँ कोई भी वात न देखी। "यहाँ काकेशिया के वे दृश्य, वे चट्टानें, अमालत-वेक, नायक, खल नायक कुछ भी तो नही," उसने सोचा, "यहाँ लोग प्राकृतिक ढग पर रहते है, फलते-फलते हैं—पैदा होते है, मरते है,

मिलते-जुलते हैं, लडते हैं, खाते हैं, जीते हैं, आनन्द मनाते है और मर जाते हैं। यहाँ उनपर कोई प्रतिवन्ध नही सिवा उन प्रतिवन्धो के, जो प्रकृति ने सूर्य और घास, जानवरो और वृक्षो पर लगाये है। उनके दूसरे कोई भी कानून नही।" इसलिए अपनी तुलना में ये व्यक्ति उसे खूवसूरत, मजवूत और स्वतत्र लगे, जिन्हे देखकर उसे अपने ऊपर शर्म आती और आत्मा को दुख होता। प्राय वह सोचने लगता कि वह सव कुछ छोड-छाड दे और कज्जाक हो जाय, एक घर और कुछ मवेशी खरीद ले, किसी कज्जाक महिला से शादी कर ले (सिर्फ मर्यान्का से नही क्योकि वह उसे लुकाश्का की सम्पत्ति समझने लगा था), चचा येरोश्का के साथ रहे और उसके साथ शिकार खेलने अथवा मछली मारने, या कज्जाको के साथ उनके अभियानो पर, जाया करे। "परन्तु मैं यह सव कर क्यो नही डालता? किसका इन्तज़ार कर रहा हूँ?" उसने अपने से प्रश्न किया और उसे अपने ही पर शर्म आई, "क्या मुझे वह सव कुछ करने में डर लगता है जिसे मैं उचित और ठीक समझता हूँ? क्या साधारण कज्जाक होने, प्रकृति के निकट रहने, किसी को हानि न पहुँचाने और लोगो की भलाई करने की मेरी आकाक्षा मेरे उन पूर्व स्वप्नो से अधिक मूर्खतापूर्ण है जिनमे मैं राज्य का मत्री या कर्नल वन जाने की कल्पना किया करता था?" और उसे ऐसा लगता कि कोई आवाज़ उसके कान में कह रही है कि अभी उसे इन्तज़ार करना चाहिए और कोई निर्णय नही कर लेना चाहिए। उसे कभी कभी यह खटका वना रहता कि वह अभी येरोश्का और लुकाश्का की तरह नही रह सकेगा क्योकि प्रसन्नता के विषय में उसके विचार उन दोनो से भिन्न थे। वह समझता था कि सच्ची प्रसन्नता स्वार्थ-त्याग में है। उसने लुकाश्का के लिए जो कुछ भी किया था उससे उसे वडा सन्तोष और हर्ष हुआ था। वह वरावर दूसरो के लिए अपने स्वार्थो की वलि देने के मौके ढूंढा करता था परन्तु उसे ऐसा एक भी अवसर न मिला। कभी कभी

वह प्रसन्नता के अपने इस नवाविष्कृत सूत्र को भूल जाता और सोचता कि वह चचा येरोश्का की तरह जीवनयापन कर सकता है। परन्तु फिर उसके विचार पलटते और वह स्वार्थ-त्याग की भावना में बहने लगता, और इसी दृष्टिकोण से शान्ति और गर्व के साथ लोगो की भलाई और प्रसन्नता की बाते सोचा करता।

२७

अगूर चुनने की फस्ल के कुछ ही पहले लुकाश्का घोडे पर चढकर ओलेनिन से मिलने आया। इस समय वह हमेशा से अधिक तेज और फुर्तीला लग रहा था।

"दोस्त, सुना है तुम्हारा ब्याह हो रहा है?" उसका प्रसन्नता-पूर्वक स्वागत करते हुए ओलेनिन ने पूछा। लुकाश्का ने कोई सीधा जवाब न दिया।

"मैंने तुम्हारा घोडा नदी के उस पार बदल लिया है। यह रहा नया घोडा, लोव* का कबर्दा पट्ठा है। मैं घोडे पहिचानता हूँ।"

उन्होने नया घोडा देखा और उसे अहाते में घुमाया-फिराया। सचमुच घोडा बहुत अच्छा था। शरीर स्वस्थ और गठा हुआ, खाल चिकनी, पूँछ और सिर के बाल रेशम जैसे मुलायम। उसका पालन-पोषण भली प्रकार हुआ था। उसकी खिलाई-पिलाई इतनी अच्छी हुई थी, जैसा कि लुकाश्का कहता था, कि "आदमी उसकी पीठ पर आराम से सो सकता है।" उसकी टापे, उसकी आँखें, उसके दाँत—सभी की बनावट

---

* लोव फार्म के घोडे काकेशिया में सर्वोत्तम घोडो में समझे जाते थे।

वहुत सुन्दर थी जैसी वढिया नस्ल के घोडो की होती है। घोडे की तारीफ किये विना ओलेनिन से न रहा गया। उसने काकेशिया में अभी तक इतना सुन्दर घोडा न देखा था।

"और उसकी चाल कितनी मस्तानी है!" घोडे की गर्दन थपथपाते हुए लुकाश्का वोला। "कैसी दुलकी चलता है! और चतुर इतना कि मालिक के इशारे पर ही नाचता है।"

"क्या इस वदलाई में तुम्हे कुछ देना भी पडा?" ओलेनिन ने पूछा।

"हाँ, कितना! यह मैंने गिना नही था," मुस्कराते हुए लुकाश्का ने जवाव दिया, "मुझे यह एक कुनक से मिला था।"

"वहुत सुन्दर घोडा है! तुम इसका कितना लोगे?" ओलेनिन ने पूछा।

"मुझे इसके एक सौ पचास रूवल मिल रहे थे परन्तु तुम्हे मुफ्त दे दूंगा," लुकाश्का वोला। उसे प्रसन्नता हो रही थी, "हाँ भर कह दो और घोडा तुम्हारा। मै इसे खोल दूंगा और तुम ले जा सकते हो। वस मेरे काम भर के लिए मुझे कोई मामूली-सा दे देना।"

"नही, किसी भी तरह नही।"

"खैर, तुम्हारी मर्जी! मै तुम्हारे लिये यह सौगात लाया हूँ," अपना कमरवन्द खोलकर उसमें लटकती हुई दो कटारो में से एक दिखाते हुए लुकाश्का वोला।

"मुझे यह नदी के उस पार मिली है।"

"धन्यवाद।"

"माँ ने वादा किया है कि वे तुम्हारे लिए कुछ अगूर लायेगी।"

"इतनी तकलीफ की क्या जरूरत? खैर इसका हिसाव हम वाद में

किसी दिन कर लेंगे। मैं तुम्हे इस कटार के लिए कोई रुपया नही दे रहा हूँ।"

"दे भी कैसे सकते हो? हम कुनक जो हैं। नदी के उस पार गिरेई-खाँ रहता है। वह भी मेरा कुनक है। अपने घर ले जाकर कहने लगा, 'जो पसन्द हो उठा लो।' मैंने यह कटार उठा ली। हमारी यही प्रथा है।"

दोनो भीतर गये और दोनो ने थोडी थोडी पी।

"यहाँ कुछ दिनो ठहरोगे भी?" ओलेनिन ने पूछा।

"नही, मैं तो यहाँ तुम सबसे विदा लेने आया हूँ। वे मुझे घेरे से हटाकर तेरेक पार की कम्पनी में भेज रहे हैं। आज रात मैं अपने साथी नज़ारका के साथ वहाँ जा रहा हूँ।"

"और विवाह कब हो रहा है?"

"सगाई के लिए मैं जल्दी लौट आऊँगा और फिर कम्पनी वापस चला जाऊँगा।" अनिच्छापूर्वक लुकाश्का ने जवाब दिया।

"और जिसके साथ सगाई हो रही है उससे नही मिलोगे?"

"देखा जायेगा—मिलने से फायदा ही क्या? अगर कभी तुम्हारा अभियान पर आना हो तो हमारी कम्पनी में लुकाश्का करके पूछ लेना। वहाँ बहुत से सुअर है! दो मैंने भी मारे है। मैं तुम्हे ले चलूँगा।"

"ठीक है, नमस्कार! ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।"

लुकाश्का घोडे पर चढ गया और बिना मर्यान्का से मिले हुए ही खटपट करता सडक पर वहाँ जा पहुँचा, जहाँ नज़ारका खडा उसका इन्तजार कर रहा था।

"मैं पूछता हूँ कि क्या इधर-उधर की कोई खबर नहीं लोगे?" यामका के घर की तरफ़ इशारा करते हुए नज़ारका बोला।

"क्यो नही," लुकाश्का वोला, "मेरा घोडा उसके पास ले जाओ। अगर मै जल्दी न आऊँ तो उसे कुछ चारा डाल देना। सुबह होते ही मैं कम्पनी पहुँच जाऊँगा।"

"क्या कैडेट ने तुम्हे कोई दूसरी चीज़ नही दी?"

"मैंने एक कटार देकर उसका आभार चुका दिया। वह तो घोडा ही माँगने जा रहा था," घोडे से उतरते और उसे नज़ारका को थमाते हुए लुकाश्का बोला।

वह तेज़ी मे अहाते में घुस गया, ओलेनिन की खिडकी से होकर गुज़रा और कार्नेट के मकान की खिडकी तक पहुँच गया। इस समय बिल्कुल अंधेरा था और मर्यान्का अपना फ्राक पहने बालो में कघी कर रही थी। शायद सोने की तैयारी में थी।

"मै हूँ, मै," कज़्ज़ाक धीरे से बोला। मर्यान्का ने सिर घुमाया। उसकी नज़र में तीखापन था। परन्तु जैसे ही उसने लुकाश्का की बोली सुनी कि उसके चेहरे पर रौनक आ गई। उसने खिडकी खोली और बाहर झुकी। उसे प्रसन्नता भी हो रही थी और डर भी लग रहा था।

"क्या है, क्या चाहते हो?" उसने पूछा।

"दरवाजा खोलो!" लुकाश्का धीरे से बोला, "मुझे अन्दर आने दो एक मिनट के लिए। इन्तज़ार करते करते थक गया हूँ।"

उसने खिडकी में से उसका सिर पकड लिया और उसे चूम लिया। "सचमुच खोलो तो!"

"क्या बेवकूफो जैसी बात कह रहे हो? कह तो दिया कि नही, क्या देर तक के लिए आये हो?"

उसने कोई उत्तर न दिया और बराबर उसे चूमता रहा। वह भी कुछ न बोली।

"यहाँ तो मै खिडकी से तुम्हारी कमर में हाथ भी नही डाल सकता।"

"मर्यान्का बेटी!" उसकी माँ की आवाज़ सुनाई दी, "वहाँ तुम्हारे साथ कौन है?"

लुकाश्का ने अपनी टोपी उतार ली ताकि वह पहचाना न जा सके और खिडकी के नीचे छिप गया।

"जाओ, जल्दी करो!" मर्यान्का धीरे से बोली।

"लुकाश्का आ गया है," उसने जवाब दिया, "वह पिताजी को पूछ रहा है।"

"तो उसे यहाँ भेज दो!"

"वह चला गया, कहता था जल्दी में हूँ।"

वास्तव में लुकाश्का खिडकी के नीचे झुका हुआ लम्बे लम्बे डग भरता अहाते से भाग चुका था, और अब यामका के मकान की तरफ जा रहा था। इस समय उसे सिवा ओलेनिन के और किसी ने भी न देखा। दो चापूर* चिखीर पी लेने के बाद वह और नज़ारका चौकी की तरफ चले। रात्रि गर्म, अंधेरी और शान्त थी। दोनों मौन चले जा रहे थे। उन्हें सिवा अपने घोडों की टापों के और कुछ न सुन पडता था। लुकाश्का ने कज़्ज़ाक मिगल के बारे में एक गाना शुरू कर दिया था, परन्तु पहला पद समाप्त करने के पूर्व ही वह रुका और कुछ क्षण बाद नज़ारका की तरफ मुडते हुए बोला, "मैं कहता न था कि वह मुझे अन्दर न आने देगी!"

"अरे?" नज़ारका ने कहा, "मैं जानता था वह न आने देगी। मालूम है यामका ने मुझसे क्या कहा था? कहा था कि कैडेट उनके घर आने-जाने लगा है। चचा येरोश्का कहते हैं कि कैडेट ने उन्हें एक बन्दूक दी है उसे मर्यान्का दिलाने के लिए।"

---

* चापूर—एक पात्र, जिसमें प्राय ८ गिलास शराब आती है—अनु०

"बूढा शैतान झूठ बोलता है!" लुकाश्का गुस्से में बोला, "वह वैसी लडकी नही है। अगर बूढा अपनी हरकते बन्द नही करेगा तो मुझे उसके कान गर्म करने पडेंगे।" और वह अपना प्रिय गान गाने लगा—

इज़माइलोवो गाँव एक था
उसमें थी उपवन-शाला,
उडा बाज़ अपने पिजडे से
रतनारी आँखोवाला।
उसके पीछे युवक शिकारी
घोडे पर दौडा आया,
अपना हाथ वढाकर उसने
पक्षी के सम्मुख गाया—
"आओ बैठो बाज़!
दाहने कर पर, तुम कहना मानो,
यदि तुम आए नही विनय सुन,
तो फिर बस, इतना जानो।
निश्चय ही दे देगा मूली
मुझे ज़ार यह ईसाई,
निश्चय ही दे देगा सूली।"
कहा बाज़ ने—"हे भाई!
सोने के पिजडे में मेरा
पालन क्या तुमने जाना?
और दाहने कर पर मेरा
लालन क्या तुमने जाना?
उड जाऊँगा दूर—

नील सागर तक पख पसारूँगा,
उज्ज्वल राजहस मै अपने-
लिए वहाँ पर मारूँगा।
उसे मारकर मैं अपना
यह जीवन मफल वनाऊँगा,
राजहम का मवुर माँस मैं
खूब पेट भर खाऊँगा।"

२८

सगाई कार्नेट के घर हो रही थी। लुकाश्का गाँव तो लौट आया था परन्तु अभी तक ओलेनिन से मिलने नही गया था। यद्यपि ओलेनिन को आमन्त्रित किया गया था फिर भी वह सगाई में शामिल नही हुआ था। आज वह जितना उदास था उतना इस कज्ज़ाक गाँव में वमने के वाद मे कभी न हुआ था। उसने सायकाल लुकाश्का को अपने सर्वोत्तम वस्त्र पहने माँ के माथ जाते हुए देखा था। वह यह मोचकर परेशान हो रहा था कि लुकाश्का उमके प्रति उदामीन क्यो है। ओलेनिन ने दरवाज़ा वन्द कर लिया और अपनी डायरी में लिखने लगा-

"हाल ही में मैंने वहुत-मी वातो पर विचार किया है और मैं वहुत कुछ वदल गया हूँ," उमने लिखा, "अव मैं 'कापी-वुक मिद्धान्त' पर आ गया हूँ। प्रमन्न रहने का एक तरीका है प्रेम करना, ऐमा प्रेम जिम में स्वार्थ की गव न हो, हर व्यक्ति मे प्रेम करना, हर चीज़ मे प्रेम करना चारो ओर प्रेम का जाल फैलाना और उन मव का स्वागत करना जो उममें फम जायें। इम प्रकार मैंने इम जाल मे वन्यूशा, चचा येरोश्का, लुकाश्का और मर्यान्का को फमा लिया है।"

जैसे ही ओलेनिन ने यह वाक्य पूरा किया कि चचा येरोश्का कमरे में दाखिल हुआ।

येरोश्का इस समय बहुत प्रसन्न था। आज से कुछ पहले एक दिन शाम को ओलेनिन उससे मिलने गया था। उसने देखा था कि चचा येरोश्का खुश है और अहाते में बैठा एक छोटे-से चाकू से एक सुअर की खाल उतार रहा है। कुत्ते (जिनमे उसका प्रिय कुत्ता ल्याम भी एक था) उसके पास बैठे दुम हिला रहे थे और देख रहे थे कि वह कर क्या रहा है। छोटे छोटे बच्चे टट्टर के उस पार से उसे आदर से देख रहे थे और, अपने अभ्यास के प्रतिकूल, उसे तग नही कर रहे थे। उसकी पडोसिनो ने, जो सामान्यतया उसके प्रति अधिक उदारता नही वरतती थी, उसका सत्कार किया—किसी ने उसे चिखीर का प्याला दिया, किसी ने क्रीम और किसी ने थोडा आटा। दूसरे दिन खून के धब्बोवाले कपडे पहने चचा येरोश्का अपने गोदाम में बैठकर सुअर का गोश्त बाँटता दिखाई दिया। वह कीमत के रूप में किसी से कुछ शराब ले लेता और किसी से नकद रुपया। उसके चेहरे से पता चलता था मानो कह रहा हो, "भगवान ने मुझे तकदीरवाला बनाया है। मैंने एक सुअर मारा है। इसलिए अब मेरी भी कद्र है।" इसका परिणाम यह हुआ था कि वह बराबर चार दिनो तक शराब पीता रहा। इस बीच उसने कभी अपना गाँव नही छोडा। इसके अलावा उसे सगाई के दिन भी पीने को मिली थी।

जब वह ओलेनिन के पास आया उस समय नशे में चूर था। मुंह लाल, दाढी उलझी हुई और शरीर पर स्वर्ण-खचित काम की एक नई लाल बेश्मेत। वह अपने साथ एक बलालाइका (तितारा) भी लाया था जो उसे नदी के उस पार मिला था। उसने बहुत पहले ही ओलेनिन से वादा कर रखा था कि किसी दिन वह उनके लिए इसी प्रकार के मन-बहलाव की

व्यवस्था करेगा। और आज जब वह मूड में था तो उसने देखा कि ओलेनिन लिखने की धुन में मस्त है, और वह उदास हो गया।

"लिखे जाओ, लिखे जाओ, दोस्त," वह फुसफुसाया मानो मान रहा हो कि उसके और कागज़ के बीच कोई आत्मा बैठी है। यह आत्मा डरकर कही भाग न जाय। वह चुपके से फर्श पर बैठ गया। जब चचा येरोश्का शराब की मस्ती में होता उस समय उसके बैठने की जगह फ़र्श ही हुआ करती। ओलेनिन ने चारो ओर देखा, शराब लाने का हुक्म दिया और लिखने में जुट गया। इस समय अकेले शराब पीना येरोश्का को हराम लग रहा था। वह बाते करना चाहता था।

"मैं कार्नेट के यहाँ सगाई में गया था। लेकिन वहाँ! सब सुअर के बच्चे हैं! मै उन्हे देखना भी नही चाहता। तुम्हारे पास चला आया।"

"और यह बलालाइका कहाँ से झाड दिया?" ओलेनिन ने पूछा और फिर लिखने लगा।

"दोस्त, मैं नदी के उस पार गया था। इसे वहीं से लाया हूँ," उसने जवाब दिया और फिर धीरे से इतना और कहा, "मैं इस बाजे का उस्ताद हूँ। तातारी या कज्ज़ाकी, भले आदमियोंवाला या सिपाहियाना जो भी गाना तुम्हे पसन्द हो सुना डालो। मै हाज़िर हूँ।"

ओलेनिन ने उसकी ओर देखा, कुछ मुस्कराया और फिर लिखने लग गया।

उसकी मुस्कराहट से बूटे में भी जवानी आ गई।

"अरे यार, छोडो भी। मेरे साथ आओ!" कुछ दृढ़ता से एकाएक उसने कहा, "आओ भी! किसी ने तुम्हे चोट पहुँचाई है, क्या? जाने भी दो उन्हें जहन्नुम में। उनपर खुदा की मार! आओ! लिखना, लिखना लिखना इससे क्या लाभ, क्या फ़ायदा?"

श्रौर वह श्रपनी मोटी श्रगुलियो मे फर्श को थपथपाकर श्रोलेनिन के लिखने की नकल करने श्रौर श्रपना मुँह वनाकर तिरस्कार सूचित करने लगा।

"क्यो लिखे जा रहे हो ये वुझौवले? श्ररे खाश्रो, पियो, मौज करो श्रौर दिखा दो कि तुम भी मर्द हो!"

लिखे जानेवाले विपय के सम्वन्ध में उसके दिमाग में एक ही विचार घूम रहा था—कोई कानूनी दाँवपेच की वात श्रौर वस। श्रोलेनिन हँस पडा श्रौर येरोश्का भी। तभी फर्श पर छलाँग मारते हुए येरोश्का ने वलालाइका पर श्रपना कमाल दिखाना शुरू किया। वह तातारी गीत गाने लगा।

"श्ररे दोस्त, क्यो यह सव माथापच्ची कर रहे हो! छोडो भी! मै गाऊँ, तुम सुनो। मर जाश्रोगे तो ये गाने कहाँ मिलेगे। श्रभी मौका है वहार लूट लो!"

पहले-पहल उसने एक स्वरचित गाना शुरू किया। साथ में वह नाचता भी जा रहा था।

> गह, दी दी दी दी दी दी
> खोजा उसे, कहाँ था जी?
> वह तो हाट श्रौर मेलो मे
> पिनें वेचता-फिरता ही!

पहले जव कभी वह गाया करता था, उस समय उसने श्रपने एक भूतपूर्व सार्जेण्ट-मेजर दोस्त से यह गाना भी सीख लिया था—

> सोमवार को कितने गहरे प्रेम-सिन्धु में डूवा!
> मगल के दिन ठंडी साँसे ले लेकर मैं ऊवा।

बुध के दिन मैंने बढ बढकर अपनी प्रीति बखानी।
प्रेम-पत्र की कठिन प्रतीक्षा गुरु के दिन ही जानी।
शुक्रवार को प्रेम-पत्र का मिला ज़रा अन्दाज़ा,
तब तक निकल चुका था आशाओं का हाय! जनाज़ा।
शनि का दिन आया तो मैंने वीरोचित प्रण ठाना,
बिखरा दूँगा पल भर में जीवन का ताना-बाना।
आया जब रविवार मुक्ति की गूँजी मीठी बोली,
प्रेम-व्रेम सब झूठ, अरे जी, मारो इसको गोली।

और फिर वह गाने लगा—

अह, दी दी दी दी दी दी
खोजा उसे, कहाँ था जी?

और उसके बाद आँख मारते हुए तथा कन्धे मटकाते फिर उसने अपनी तान छेड़ी—

लूँगा चुम्बन और तुम्हे
चिपटा लूगा छाती मे,
बाँधूँगा मै तुम्हे
रेशमी रस्सी बलखाती से।
तुम्हें पुकारूँगा मैं मीठे
स्वर मे मेरी मैना।
झूठ नही, तुम सचमुच मुझमे
प्यार करोगी, है न?

गाते गाते वह इतना उत्तेजित हो उठा कि कमरे भर में नाचने लगा। "ती दी दी" जैसे भले आदमियोंवाले गान उसने ओलेनिन के मन-

वहलाव के लिए गाये थे। परन्तु तीन गिलास चिख़ीर पी चुकने के वाद उसे पुराना ज़माना याद आया और उसने असली कज़्ज़ाकी और तातारी गाने शुरु कर दिये। अपना एक प्रिय गाना गाते गाते उसकी आवाज एकाएक लडखडाई और उसने गाना वन्द कर दिया। परन्तु, अपना तितारा टुनटुनाता रहा।

"अरे, प्यारे दोस्त!" उसने कहा।

उसकी आवाज़ में कुछ अजीब नयापन आ गया था। अव ओलेनिन ने चारो तरफ देखा। वूढा रो रहा था। उसकी आंखो में आंसू भर चुके थे और वह भी रहे थे। "मेरी जवानी के दिन! तुम कहां हो! अव वे मीठे मीठे दिन क्यो लौटेंग, क्यो लौटेंगे?" रोते और सिसकते हुए वह वोला। "पियो, पीते क्यो नही?" विना आंसू पोछे हुए कान फाड देनेवाली आवाज़ में वह चिल्लाया।

एक तातारी गाने ने उसे विशेप रूप से द्रवित कर दिया था। उसमें शव्द कम थे मगर करुणा से ओतप्रोत थे—"आई दाई दला लाई!" येरोश्का ने इस गाने के शव्दो का अनुवाद किया—"एक नवजवान औल से अपनी भेडें हँकाकर पहाडो पर ले गया। रूसी आये और उन्होने औल में आग लगा दी। उन्होने आदमियो को मार डाला और स्त्रियो को गुलाम वना लिया। नवजवान पहाडो से उतरा। जहाँ औल था अव वहाँ सव कुछ वीरान था—उसकी माँ का पता न था, उसके भाइयो का पता न था, उसके मकान का पता न था। सिर्फ एक पेड खडा रो रहा था। नवजवान उसी के नीचे वैठ गया और रोने लगा। 'तेरी ही तरह मै भी ठूँठ हो गया हूँ—विल्कुल अकेला, विल्कुल निरीह।' और गाने लगा—आई दाई दला लाई!" और वूढे ने इस करुण गान को कई वार दुहराया।

गाना समाप्त कर चुकने के बाद येरोश्का सहसा उछल पडा। उसने दीवाल पर टँगी बन्दूक उतारी, भागता भागता अहाते में गया और हवा में गोलियाँ चलाने लगा। फिर उन्ही करुण स्वरो में उसने 'आई दाई दला लाई' शुरू कर दिया। खैर, किसी प्रकार गाना समाप्त हुआ।

ओलेनिन उसके पीछे पीछे भागा और जहाँ गोलियाँ छोडी गई थी वहाँ उसने आसमान की तरफ देखा। कार्नेट के मकान में रोशनी थी और शोरगुल सुनाई पड रहा था। बन्दूक की आवाज़ सुनकर लडकिया मकान के भीतर ही भीतर भागने-दौडने लगी, कभी दालान की ओर दौडती, कभी खिडकियो की ओर, कभी इधर, कभी उधर। कुछ कज्ज़ाक तेज़ी से मकान के बाहर निकल आये और गुल-गपाडा मचाने लगे, मानो यह चिल्चपो चचा येरोश्का के गाने और उसकी बन्दूक की आवाज़ की प्रतिध्वनि हो।

"तुम सगाई के उत्सव में क्यो नही गये?" ओलेनिन ने पूछा।

"उसकी चिन्ता न करो! परवाह मत करो।" बूढा बडबडाया। ऐसा लगता था कि उसे वहाँ होनेवाली किसी बात पर क्रोध आ रहा था। "मुझे वे पसन्द नहीं, बिल्कुल नही। वे लोग, हुँह! चलो घर वापस चले! वे अपनी बहार लूटें, हम अपनी।"

और ओलेनिन अन्दर चला आया।

"और लुकाश्का? वह तो खुश है? क्या वह मुझसे मिलने नहीं आयेगा?"

"लुकाश्का! लुकाश्का क्या? वे लोग उससे झूठ बोले है और उन्होंने कहा है कि मैं उस लडकी को तुम्हे दिलाना चाहता हूँ," बूढा कहता गया, "लेकिन क्या लडकी है? अगर हम चाहे तो वह अब भी हमारी हो सकती है। काफी रुपये की जरूरत है और फिर वह हमारी, हमारे बाप की! मैं उसे तुम्हारे लिए तय करूँगा। मेरा विश्वास करो, ज़रूर करूँगा।"

"नही चचा, अगर वह मुझसे प्रेम नही करती तो रुपया कुछ नही कर सकता! अच्छा हो अगर तुम ऐसी बाते न करो!"

"वे हमें, यानी मुझे और तुम्हे, प्यार नही करते। हम अनाथ हैं," एकाएक चचा येरोश्का बोला और फिर चिल्लाने लगा।

बूढे की बात सुनकर ओलेनिन ने भी शराब चढाई और इस समय रोज़ से अधिक पी गया। "मेरा लुकाश्का खुश है," उसने सोचा। फिर भी वह दुखी हो रहा था। उस दिन बूढे ने इतनी अधिक पी रखी थी कि फर्श पर ही लोट गया और वन्यूशा को अपनी मदद के लिए सिपाही बुलवाने पडे। जब वे उसे घसीटकर बाहर लिये जा रहे थे तो वन्यूशा को उबकाइयाँ आ रही थी और वह बराबर थूके जा रहा था। वह बूढे के इस बुरे व्यवहार से इतना क्रुद्ध था कि फ्रेंच में गाली देना भी भूल गया।

२६

अगस्त का महीना था। पिछले कई दिनो से आसमान में एक बादल तक न दिखाई दिया था। धूप में असह्य जलन थी। इन दिनो प्रात काल से ही गर्म हवा चलनी आरम्भ हो जाती और रेत के टीलो और सडको से होकर चलनेवाली बालू की झझाएँ पेड, पौधो और गाँवो को मिट्टी मे ढक देती।

घास और पेडो की पत्तियो पर धूल ही धूल छा गई थी। सडको और लवण-पको पर भी उसकी तहे बिछी हुई थी और जब उनपर होकर कोई चलता तो किर्र किर्र की विचित्र आवाज़ सुनाई पडने लगती। तेरेक में पानी बहुत पहले ही कम हो गया था, और खाइयो में भी धीरे धीरे सूखता जा रहा था। गांव के पासवाले पोखरें के लसलसे तटो पर मवेशी घूमते, और प्राय सारे दिन पानी में छपाक छपाक और नहाते हुए

लडके-लडकियों की चीख-पुकार सुनाई देती। स्टेपी के रेत के टीले और पेड-पौधे सूख रहे थे। मवेशी दिन में डकरते हुए खेतों में भाग जाया करते। वन-पशु दूरस्थ नरकटों के जगलों में तथा तेरेक के पार की पहाड़ियों पर भाग गये थे। मच्छड-मक्खियों के झुंड गाँवों और निचली भूमि में मंडराने लगे थे। पर्वत-शिखर भूरे रंग के कोहरे से आच्छादित हो गये थे। हवा झिरझिरी और हल्की हो गई थी। कहा जाता था कि अंग्रेजों ने छिछली नदी पार कर ली है और वे इस ओर आने लगे हैं। हर दिन सायंकाल जब सूर्यास्त होता तो आसमान में लालिमा छा जाती। यह समय वर्ष भर का सबसे व्यस्त समय था। ग्राम निवासी खरबूजों के खेतों और अंगूरों के उद्यानों में आ चुके थे जिनमें प्राय सभी जगह हरियाली थी और चारों ओर शीतल छाया। हर तरफ पके हुए, बड़े बड़े और काले रंग के अंगूरों के गुच्छे बेलों में से लटकते दिखाई पडते। अंगूरों से लदी-फँदी गाडियाँ चर्र-मर्र करती हुई उद्यानों में होकर धूलभरी सडकों पर चलती दिखाई देती। कभी कभी कुछ गुच्छे जमीन पर गिर पडने के कारण पहियों से दब जाते और सडकों पर अपना रस बिखेर देते। लडके लडकियाँ हाथों और मुँहों में अंगूर भरे अपनी माताओं के पीछे पीछे दौडा करते। सडकों पर फटे-हाल मजदूर मजबूत कंधों पर अंगूरों की बाल्टी रखे आते-जाते रहते। और कज्जाक लडकियाँ मुखों पर आँखों तक रूमाल लपेटे फलों से लदी बैलगाडियाँ हाँकती दिखाई पडतीं। कभी कभी रास्ता चलते सिपाही उनसे अंगूरों की माँग करते और वे बिना गाडी रोके मुट्ठी मुट्ठी भर अंगूर उनके कोटों के दामन में फेंक देतीं। कहीं कहीं अंगूरों का रस भी निचोडा जाने लगा था। वहाँ निचुडे हुए अंगूरों की सुगंध सारे वातावरण को सुरभित करती रहती। अहातों के ओसारों में बडी बडी नाँदों में रस निकाला जाता। नगई मजदूर अपने अपने पतलून घुटनों तक मोडे इस काम में लगे रहते और उनके पैर रस से सराबोर रहते। आस-पास खडे हुए सुअर

निचुडे हुए अंगूरो की ताक में लगे रहते और मौका मिलते ही उन्हे चर जाते। मकानो की चौरस छतो पर अंगूरो के काले-काले गुच्छे धूप में सुखाये जाने के लिए फैला दिये जाते। कौवे तथा अन्य पक्षी छतो के चारो ओर मडराते रहते और मौका मिलने पर अपनी अपनी चोचो में गुच्छे लटकाये उड जाया करते।

साल भर की घोर मेहनत के कारण जो फल उगे थे अब उनका संग्रह किया जा रहा था। इस वर्ष अंगूर की फस्ल असाधारण रूप से अच्छी और अधिक हुई थी। अंगूरो के उद्यानो मे, उनकी लताओ की छाया में, चारो ओर स्त्रियो के कहकहे और हँसी, तानें और गाने, हर्ष और आह्लाद की धुनें सुनाई पडती और उनकी चमकदार पोशाको की झाँकी दूर से ही दिखाई दे जाती।

ठीक दोपहर के समय मर्यान्का अपने परिवार के एक अंगूर-उद्यान म नाशपाती के पेड की छाया में खडी एक खुली गाडी के नीचे से अपना खाना निकाल रही थी। उसके ठीक सामने, घोडे को ओढाया जानेवाला कपडा बिछाये कार्नेट बैठा था (वह अभी स्कूल से लौटा था) और एक छोटे-से लोटे में से पानी उडेल उडेलकर हाथ धो रहा था। मर्यान्का का छोटा भाई पोखरे से नहाकर भागता हुआ सीधा यही आ गया था। वह हाँप रहा था और अपनी चौडी चौडी आस्तीनो से मुंह पोछकर खाने की फिराक में अपनी माँ और बहन को घूर रहा था। बूढी माँ आस्तीनें चढाये एक नीची गोल तातारी मेज़ पर अंगूर, सुखाई हुई मछली, क्रीम और रोटी करीने से लगा रही थी। कार्नेट ने हाथ पोछकर टोपी उतारी और सलीब का निशान बनाकर मेज पर जम गया। लडके ने लोटा उठाया और मुंह से लगा लिया। माँ और बेटी घुटने समेटकर मेज़ पर बैठ गई। छाया में भी असह्य गर्मी थी। सारे उद्यान में एक अरुचिकर गंध फैल रही थी और यद्यपि उद्यान में इधर-उधर लगे हुए आडू, नाशपाती और शहतूत के वृक्षो को झकझोरती

हुई तेज़ गर्म हवा बह रही थी, फिर भी वहाँ शीतलता का नामोनिशान न था। कार्नेट ने एक और सलीब बनाकर चिखीर का गिलास उठाया, जो अंगूर की पत्ती में ढका हुआ उसके ठीक पीछे रखा था, और उसे पी गया। बाद में गिलास उसने बूढ़ी को थमा दिया। वह केवल एक कुर्ता पहने था जो गले के पास खुला था और जिससे उसका गठीला सीना दिखाई पड़ रहा था। इस समय वह खुश था, और न तो उसके रुख से और न शब्दों से ही उसके उस चातुर्य का पता चलता था जिसका वह अभ्यस्त था। वह प्रसन्नचित और स्वाभाविक मुद्रा में था।

"क्या हम आज रात मायवान का अपना काम पूरा कर लेंगे?" भीगी हुई दाढ़ी पोंछते हुए कार्नेट ने पूछा।

"ज़रूर पूरा कर लेंगे," पत्नी ने उत्तर दिया, "अगर केवल मौसम बाधा न पहुँचाये। डेमकिनो ने तो अभी आधा काम भी नहीं पूरा किया," उसने कहा, "उस्तेन्का अकेली ही काम कर रही है। बेचारी थक गई होगी।"

"उनसे और क्या आशा की जाय?" बूढ़े ने गर्व से कहा।

"प्यारी मर्यान्का, यह लो, तुम भी पी लो," बूढ़ी ने गिलास लड़की की ओर बढ़ाते हुए कहा, "ईश्वर ने चाहा तो शादी की दावत के लिए हमारे पास काफी पैसा हो जायेगा।"

"अभी फिलहाल कहाँ से हो जायेगा," भौंहे चढ़ाते हुए कार्नेट बोला। लड़की ने सिर नीचा कर लिया।

"तो हम इसकी बात भी न करें? क्यों?" बूढ़ी बोली, "बात पक्की हो चुकी है और वक्त नज़दीक आता जा रहा है।"

"दूर के पुल अभी न बांधो," कार्नेट ने कहा, "अभी हमें इस फ़स्ल से ही निपटना है"।

"क्या तुमने लुकाश्का का नया घोडा देखा?" बूढी ने पूछा, "दिमीत्री अन्द्रेइच ने उसे जो घोडा दिया था वह चला गया। लुकाश्का ने उसे दूसरे से बदल लिया।"

"नही, मैंने नही देखा। आज मैंने उसके नौकर से बात की थी," कार्नेट बोला, "और उसने बताया कि उसके मालिक को फिर एक हजार रूबल मिले हैं।"

"दौलत में गोते लगा रहा है और क्या," बूढी बोली।

सारा परिवार खुश था, सन्तुष्ट था। काम ठीक ठीक चल रहा था। इस वर्ष अगूर अधिक थे और अच्छे थे जिसकी उन्होंने आशा भी न की थी।

खा-पी चुकने के बाद मर्यान्का ने बैलो के सामने कुछ घास डाली, बेशमेत की तह लगाकर उसका तकिया बनाया और गाडी के नीचे दबी-दबाई घास पर पड रही। उसके सिर पर रेशम का एक रूमाल था और शरीर पर एक नीली फ्राक। फिर भी गर्मी उससे बर्दाश्त नही हो रही थी। उसका चेहरा तप रहा था और वह समझ न पा रही थी कि अपने पैर कहाँ रखे? उसकी आँखें नीद और थकान से भारी हो रही थी। उसके ओठ बार बार खुल जाते और वह भारी और गहरी साँसे लेने लगती।

लगभग पन्द्रह दिन पूर्व से ही वर्ष का व्यस्त कार्य आरम्भ हो चुका था और लडकी को लगातार भारी श्रम करना पड रहा था। प्रातःकाल वह उठ पडती, ठडे पानी से हाथ मुंह धोती, शाल ओढती और फिर नगे पैर मवेशियो को देखने-भालने निकल जाती। फिर जल्दी जल्दी जूते पहनती, शरीर पर बेशमेत डालती, रोटियो की पिटारी हाथ मे लेती, बैलो को गाडी मे जोतती और दिन भर के लिए उन्हे उद्यान की ओर हांक देती। वहाँ वह अगूर तोडती और पिटारियो में भर भरकर रखा करती। बीच में आराम के लिए वह एक घण्टा निकाल लेती। सायकाल वह एक लम्बे चाबुक से बैलो को हांकती हुई गाँव लौट जाती। इस समय उसके चेहरे पर चमक

होती, थकान के चिन्ह नही। मवेशियो का मानी-भूसा कर चुकने के बाद वह अपनी फ्राक की चौडी आस्तीन में कुछ सूरजमुखी के बीज भरती और सडक के एक कोने पर निकल जाती। वहाँ वह उन्हे फोड फोडकर खाती हुई दूसरी लडकियो से हँसी-मज़ाक कर लिया करती। धुधलका होते ही वह घर लौट आती और अपने माता-पिता और भाई के साथ भोजन कर लेने के बाद स्वस्थ और निश्चिन्त भीतर चली जाती और अगीठी के ऊपर की टाँड पर बैठकर ऊँघती हुई अपने किरायेदार की बाते सुना करती थी। और जब वह चला जाता तो कूदकर बिस्तरे पर आ धमकती और सवेरे तक खुर्राटे लेती रहती। इस प्रकार दिन बीतते गये, मास बीतते गये। सगाई के दिन के बाद से फिर उसने लुकान्का को नही देखा, परन्तु शान्ति के साथ वह विवाह की बाट अवश्य जोह रही थी। वह अपने किरायेदार की बातो की अभ्यस्त हो चुकी थी और उसकी आसवत निगाहो में डूबने-उतराने लगी थी।

३०

गर्मी कडाके की पड रही थी। गाडी के नीचे की थोडी शीतल जगह में ढेरो मच्छड भनभना रहे थे। फिर भी मर्यान्का अपने सिर पर रूमाल डाले मस्त सो रही थी। उसके साथ ही उसका छोटा भाई भी सोया था जो लुढक-पुढक कर उसे ठेल रहा था। एकाएक उसकी पडोसिन उस्तेन्का दौडती हुई आई और गाडी के नीचे लेटी हुई मर्यान्का के पास पड रही।

"सोती रहो, लडकियो, सोती रहो!" गाडी के नीचे आराम से लेटते हुए वह बोली। "जरा ठहरो," उसने कहा, "ऐसे न चलेगा!" और भागती हुई गई, कुछ हरी हरी टहनियाँ तोड लाई, उन्हें गाडी के दोनो पहियो में खोसा और उनपर अपना देशमेंत टाग दिया।

"मुझे भी सोने दो," गाडी के भीतर फिर से घुसती हुई उस्तेन्का ने वहाँ लेटे हुए उस छोटे-से बच्चे से कुछ ऊँची आवाज़ में कहा, "क्या लडकियो के साथ सोने के लिए कज़्ज़ाक को यही जगह मिली है। भाग यहाँ से।" और जब वह गाडी के नीचे अपनी सहेली के साथ अकेली रह गई तो सहसा उसने उसे अपनी दोनो बाहो में भर कर उसके गालो और गले को चूमना शुरू कर दिया।

"प्यारी, प्यारी!" मधुर हँसी और मुस्कराहट की लहरो के बीच वह कहती जा रही थी।

"क्यो, तुमने यह सब 'दादा' से सीख लिया है। इतनी जल्दी," कुडमुडाते हुए मर्यान्का बोली, "यह तमाशा अब बन्द भी करो!"

और दोनो इतने जोर से हँस पडी कि मर्यान्का की माँ उन्हे चुप कराने के लिए वही से उनपर चिल्ला उठी।

"तुम्हे ईर्ष्या हो रही है? है न?" फुसफुसाते हुए उस्तेन्का ने पूछा

"फिजूल की बात! अच्छा, अब सोने दो। तुम आई किस लिए?"

परन्तु उस्तेन्का के हाथ न रुके, "अभी तुम्हे बताऊँगी किस लिए आई हूँ, थोडा ठहरो!"

मर्यान्का अपनी कुहनियो पर उल्टी लेट गई और अपना रूमाल सम्हालने लगी।

"हाँ, अब बताओ क्या बात है?"

"मैं तुम्हारे किरायेदार के बारे में कुछ बाते जानती हूँ!"

"जाननेवाली कोई बात भी हो?" मर्यान्का बोली।

"तू बडी चुडैल है!" कोहनी कोचती और हँसती हुई उस्तेन्का बोली, "बतायेगी नही। वह तेरे पास आता है?"

"आता है। तो इससे क्या?" मर्यान्का बोली और लजा गई।

"देखो, मैं एक सीधी-सादी लडकी हूँ। सारी वात खुले खज़ाने कह देती हूँ। मुझे वनने की क्या ज़रूरत?" उस्तेन्का ने कहा और उसका खिला हुआ गुलावी चेहरा सहसा उदास हो गया, "मैं किसी को कोई नुकसान नही पहुँचती, है न? मैं उसे प्यार करती हूँ। वस उसके वारे में यही कहना है।"

"तुम्हारा मतलब 'दादा' से है?"

"हाँ।"

"लेकिन यह तो पाप है।"

"आह मर्यान्का! लडकी जव आज़ाद रहती है अगर उस समय उसने मौज-वहार न लूटी तो कव लूटेगी? जव मैं किसी कज़्ज़ाक के पल्ले वध जाऊँगी तो वच्चे होगे और होगी मेरी चिन्ताए। क्यो, जव लुकाश्का से व्याह कर लोगी तो मौज-मज़े की वात भी तुम्हारे दिमाग में न चढेगी। सिर्फ वच्चे होगे, सिर्फ काम होगा!"

"क्यो? वहुत-सी तो है जो व्याह के वाद मज़े में ज़िन्दगी विता रही है। क्या फर्क पडता है!" मर्यान्का ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया।

"वस मुझे यह वता दो कि तुम्हारे और लुकाश्का के वीच क्या क्या हो चुका है?"

"क्या क्या हो चुका है? क्या माने? उसने विवाह का प्रस्ताव रखा। पिता जी ने एक साल टाल दिया। लेकिन अव वात तय हो गई है। और वे शरद ऋतु में विवाह करने आयेगे।"

"लेकिन उसने तुमसे कहा क्या?"

मर्यान्का मुस्करा दी।

"क्या कहेगा वेचारा? कहा कि 'मैं तुम्हे प्यार करता हूँ। मेरे साथ अगूर के वाग में चलो।'"

"और तुम नहीं गईं! गई कि नहीं? और अब बहादुर कितना हो गया है। गांव भर को उसपर गर्व है। फौज में भी मज़े लूटता है। उस दिन हमारा फिरका घर आया था। कितना बढ़िया घोड़ा है लुकाश्का के पास—उसने कहा था। मैं समझती हूँ वह तुमपर भी जान देता है। ख़ैर, तो और उसने क्या क्या कहा?"

"सभी बता दूं?" हँसती हुई मर्यान्का बोली, "एक रात वह मेरी खिड़की के पास आया। कुछ शराब के नशे में था। उसने मुझसे ज़िद की कि मैं उसे अन्दर आने दूं।"

"और तुमने नहीं आने दिया?"

"आन देती! क्या कहने! मैं जो बात एक बार कह देती हूँ फिर उसे निभाती हू, उसपर अड़ जाती हूँ चट्टान की तरह," मर्यान्का ने गम्भीरता से उत्तर दिया।

"लेकिन वह तो बहुत अच्छा आदमी है। किसी लड़की की तरफ निगाह भी उठा दे तो वह इन्कार न करे।"

"ख़ैर जिसके पास जाना चाहे जाये," गर्व से मर्यान्का ने उत्तर दिया।

"तुम्हे दुख नहीं होगा?"

"होगा। परन्तु मै कोई बदतमीज़ी नहीं बरदाश्त कर सकती। यह गलत बात है!"

उस्तेन्का ने सहसा अपना सिर अपनी सखी की छाती पर रख दिया, उसे कसकर पकड़ लिया और हँसते हुए झकझोर डाला। "बेवकूफ कहीं की!" एक साँस में वह कह गई, "तू खुश होना नहीं चाहती।" और मर्यान्का को गुदगुदाने लगी।

"मुझे छोड़ भी सखी!" कराह भरी हँसी हँसते हुए मर्यान्का बोली।

"इन चुडैलो की वात सुनो! हवा में उड रही है! अभी तक थकी नही क्या!" गाडी पर मे ऊँघती हुई बूढी की आवाज़ आई।

"तुम खुश रहना नही चाहती," कुछ उठती हुई धीरे से उस्तेन्का वोली। "लेकिन तुम तकदीरवाली हो! सभी तुम्हे कितना प्यार करते हैं। तुम कटीली हो फिर भी वे प्यार करते है। अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो अव तक मैंने तुम्हारे किरायेदार का दिमाग फिरा दिया होता। जव तुम मेरे यहाँ आई थी उस समय मैंने उमे अच्छी तरह देखा था। ऐसा लगता था कि तुम्हे आँखो ही आँखो में पी जायेगा। 'दादा' ने मुझे वहुत कुछ दिया है और लोग कहते है कि 'तुम्हारा वह' तो रूसियो में सवसे धनी है। उसका अर्दली कहता है कि उसके अपने गुलाम ढेरो है।"

मर्यान्का उठी और एक क्षण कुछ सोचने-विचारने के वाद मुस्करा दी।

"तुम्हे मालूम है एक वार उसने मुझसे क्या कहा था?" घास का एक टुकडा दाँत से चवाते हुए वह वोली, "उसने कहा था, 'मैं चाहता हूँ कि लुकाश्का या तुम्हारे भाई लजुतका की तरह मैं भी कज़्ज़ाक हो जाऊँ।' उसका मतलव क्या था कुछ समझ में आया?"

"अरे उसके दिमाग़ में जो पहली वात आई होगी उमने कह मारी होगी," उस्तेन्का ने जवाव दिया, "मेरे 'वह' क्या क्या नही कहते! जैसे पागल हो।"

मर्यान्का न मोडी हुई वेशमेत पर सिर रख दिया, वाँहे उस्तेन्का के कन्धे पर डाल दी, और उसकी आँखें वन्द कर दी। "आज वह अगूर के वाग मे आकर काम करना चाहता था। पिता जी ने भी हाँ कर दी," थोडी देर तक मौन रहने के वाद वह वोली। फिर सो गई।

सूर्य निकल चुका था और उसकी किरणें नाशपाती के वृक्ष की (जिसकी माया में गाडी खडी हुई थी) शाखाओ और उस्तेन्का द्वारा पहियो मे खोसी हुई टहनियो में से होकर मोती हुई लडकियो के चेहरो पर पडी। मर्यान्का जग उठी और अपने मुँह पर रूमाल लपेटने लगी। उसने नाशपाती के वृक्ष के उस ओर देखा और अपने किरायेदार को पिता से वाते करते पाया। उसकी वन्दूक उसके कन्धे पर रखी थी। उसने उस्तेन्का को चिकोटी भरी और मुस्कराते हुए उसकी ओर इशारा किया।

"मैं कल गया था, लेकिन कुछ भी हाथ न लगा," ओलेनिन बोला। वह बेचैन-सा इधर-उधर देख रहा था। शाखाओ में से वह मर्यान्का को न देख सका।

"तुम्हें उधर, उस दिशा में जाना चाहिए। वहाँ एक अगूर का बाग है जो काम में नही आ रहा है। कहते हैं कि वह ऊसर ज़मीन है। वहाँ हमेशा खरगोश मिला करते है," बातचीत का ढग बदलते हुए कार्नेट बोला।

"ऐसे काम के मौको पर खरगोश की तलाश में मारे मारे फिरना कितना अच्छा लगेगा! अरे भाई यही क्यो न रहो और लडकियो के साथ काम करके हमारी मदद करो," बूढी मस्ती में आकर बोली, "अरी छोकरियो, उठो, चलो काम पर जुट जाओ," वह वहीं से चिल्लाई।

मर्यान्का और उस्तेन्का गाडी के नीचे बैठी कानाफूसी कर रही थीं। उनकी हँसी रोके न रुक रही थी।

चूँकि इस समय तक यह बात अच्छी तरह फैल चुकी थी कि

ओलेनिन ने लुकाश्का को पचास रूबल का घोडा मुफ्त दे दिया है, इसलिए उसके मेज़बानो ने उसके प्रति और भी सौजन्य प्रदर्शित करना आरम्भ कर दिया। कार्नेट यह देखकर वडा खुश हुआ कि उसकी पुत्री की दोस्ती ओलेनिन से वढती जा रही है।

"लेकिन मुझे यह तो मालूम ही नही कि ये सव काम किये कैसे हैं?" ओलेनिन ने उत्तर दिया। उसने हरी शाखाओ में से उस गाडी के नीचे देखने का प्रयत्न नही किया, जहाँ उसे मर्यान्का की नीली फ्राक और लाल रूमाल की झलक मिल गई थी।

"आओ, तुम्हे कुछ आड़ू दूँगी," वूढी वोली।

"अतिथि-सत्कार कज्ज़ाको की पुरानी प्रथा है। मेरी वुढिया कुछ वेवकूफ-सी है," कार्नेट ने कहा। वह अपनी पत्नी के शब्दो का अर्थ समझाने और साथ ही उन्हे शुद्ध रूप देने का प्रयत्न कर रहा था। "मै समझता हूँ रूस में आप लोग आड़ू नही शायद अनन्नास का जैम या मुरव्वा ही पसन्द करते होगे।"

"तो तुम्हारा कहना है कि खरगोश अगूर के उस वाग में मिलेंगे जो इस्तेमाल में नही आ रहा है?" ओलेनिन ने पूछा, "मै वहाँ जाऊँगा।" और हरी शाखाओ पर एक सरसरी नज़र डालते हुए उसने अपनी टोपी उठाई तथा अगूर की हरी हरी लताओ में होता हुआ आँखो से ओझल हो गया।

जिस समय ओलेनिन अपने मेज़वान के वाग में लौटा, उस समय सूर्य वाग के वाडे के पीछे डूवता हुआ दिखाई पड रहा था और उसकी हल्की किरणें हरी हरी पत्तियो पर पड रही थी। हवा कम हो गई थी और चारो ओर ताज़गी ही ताज़गी दिखाई दे रही थी। ओलेनिन ने दूर से ही अगूर की लताओ के वीच खडी हुई मर्यान्का की नीली फ्राक देखी, और रास्ते में अगूर चुनता चुनता उसके पास तक पहुँच गया। उसका

थका-मांदा कुत्ता आगे आगे जा रहा था और नीचे लटकते हुए अंगूर के गुच्छे तोड तोडकर मुंह में रख रहा था। मर्यान्का काम में व्यस्त थी और जल्दी जल्दी बडे गुच्छों को काट काटकर एक टोकरी में भरती जा रही थी। उसकी आस्तीनें मुडी हुई थी और रूमाल खिसककर ठुड्डी के नीचे आ गया था। जिस लता को वह पकडे थी उसे छोडे विना वह वही रुक गई और कुछ मुस्कराकर फिर अपने काम में लग गई। ओलेनिन और भी निकट आ गया। अब उसने बन्दूक पीठ पर डाल ली ताकि हाथ खाली हो जाय। "दूसरे लोग कहां है? ईश्वर तुम्हारी सहायता करे! अकेली हो क्या?" उसने कहना चाहा लेकिन कहा नही और चुपचाप अपनी टोपी कुछ ऊपर उठा दी। मर्यान्का के सामने अकेले पडने पर उसे कुछ उलझन-सी होने लगती, लेकिन फिर भी जैसे जान-बूझकर अपने को जलाने के लिए वह उसके पास तक चला ही आया।

"इस तरह बन्दूक डालकर तो तुम औरतों पर गोली ही चला दोगे," मर्यान्का बोली।

"नही, मैं उन्हे गोली से नही उडाऊँगा।"

दोनों चुप हो गये, लेकिन एक ही क्षण बाद वह फिर कहने लगी, "तुम्हे मेरी मदद करनी चाहिए।"

उसने अपना चाकू निकाला और चुपचाप गुच्छे काटने लगा। पत्तियों के नीचे हाथ डालते हुए उसने एक बडा-सा गुच्छा काट लिया। गुच्छे का वजन लगभग तीन पौंड था। इसके अंगूर इतने पास पास थे कि जगह न होने के कारण एक दूसरे को पिचकाए दे रहे थे। उसने गुच्छा मर्यान्का को दिखाया।

"ये सब काट लिये जायें क्या? गुच्छा बहुत कच्चा तो नही?"

"मुझे दीजिये।"

दोनो के हाथो ने एक दूसरे का स्पर्श किया। ओलेनिन ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और वह मुस्कराती हुई उसकी ओर देखती रही।

"क्या जल्दी ही तुम्हारी शादी होनेवाली है?"

मर्यान्का ने कोई जवाव न दिया और चुपचाप विना मुस्कराए एक ओर घूम गई।

"तुम लुकाश्का से प्रेम करती हो?"

"आप से मतलव?"

"मैं ईर्ष्या करता हूँ।"

"ज़रूर करते होगे!"

"नही, सचमुच तुम वहुत सुन्दर हो!" और एकाएक उसे अपने कहे हुए शव्दो पर पश्चात्ताप हुआ। उसे ऐसा लगा कि वे उपयुक्त नही थे। वह कुछ लज्जित हुआ। शायद उसका मन उसके वस में न रह गया था। उसने उसके दोनो हाथ पकड लिये।

"मैं जैसी भी हूँ, तुम्हारे लिए नही हूँ। क्यो मेरा मज़ाक़ उडाते हो?" मर्यान्का वोली। लेकिन उसकी आँखो मे पता चलता था कि वह अच्छी तरह समझ रही है कि ओलेनिन उसका मज़ाक नही उडा रहा है।

"मज़ाक उडाना? अगर तुम यही जानती होती कि मै कैसे ..."

ये शव्द भी उसे जच नही रहे थे, क्योंकि जो कुछ वह अनुभव कर रहा था उसे वे ठीक ठीक व्यक्त नही कर पा रहे थे। फिर भी वह कहता ही गया। "मैं नही जानता कि मैंने तुम्हारे लिए क्या न किया होता ..."

"मुझे अकेली छोड दो!" परन्तु उसका चेहरा, उसकी चमकती हुई आँखें, उसके उभरते हुए उरोज, और उसकी सुडौल जघाएँ कुछ दूसरी ही बात कह रही थी। ओलेनिन को ऐसा लगा कि जो कुछ मैंने कहा है वह कितनी तुच्छ बात है। लेकिन वह तो इनसे परे थी। वह बहुत पहले से ही जानती थी कि मैं क्या कहना चाहता हूँ। फिर भी मैं उससे कहने में असमर्थ था। हाँ, वह सुनना चाहती थी कि मैं उससे यह सारी बाते कैसे कहूँगा। "चूँकि मैं उससे सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि वह क्या है क्या नही, इसलिए वह जान तो जरूर लेगी? परन्तु वह समझना नही चाहती, जवाब देना नही चाहती," उसने सोचा।

"हलो!" लताओ के पीछे से उस्तेन्का की तेज़ आवाज़ सुनाई दी और फिर उसकी मधुर हँसी।

"आइये और मेरी मदद कीजिये, दिमीत्री अन्द्रेइच। मैं बिल्कुल अकेली हूँ," अगूर की लताओं में अपना सिर डालते हुए वह बोली।

ओलेनिन ने कोई उत्तर न दिया, और न वह अपनी जगह से ही हिला।

मर्यान्का गुच्छे काटती गई परन्तु बराबर ओलेनिन की ओर देखती रही। वह कुछ कहना चाहता था, मगर रुक गया। उसने अपने कन्धे उचकाये, बन्दूक की पेटी सभाली और तेजी से बाग के बाहर निकल गया।

३२

वह दो एक बार रुका और उसे मर्यान्का तथा उस्तेन्का की गूंजती हुई हँसी सुनाई दी। दोनो ही उस समय साथ साथ किसी बात पर हँस रही थी, चीख-चिल्ला रही थी। ओलेनिन ने सारी शाम जगल में

शिकार खेलते खेलते बिताई। झुटपुटा होते होते वह खाली हाथ घर लौटा। जैसे ही उसने अहाता पार किया कि उसे बाहरी कमरे का दरवाज़ा खुला हुआ दिखाई दिया। उसने वहाँ नीली फ्राक की झलक फिर देखी। उसने ज़ोरों से वन्यूशा को आवाज़ दी ताकि दूसरों को भी मालूम हो जाय कि वह आ गया है और फिर दालान में उस जगह जाकर जम गया जहाँ हमेशा बैठा करता था। उसके मेज़बान अंगूर के बाग से वापस आ चुके थे और अपने घर में चले गये थे। हाँ उन्होंने ओलेनिन को ज़रूर नहीं बुलाया था। मर्यान्का दो बार फाटक से बाहर भी गई थी। एक बार झुटपुटे में तो उसे ऐसा लगा कि वह उसकी ओर देख रही है। उत्सुक नेत्रों से वह उसकी प्रत्येक गतिविधि देखता रहा परन्तु उस तक पहुँच जाने का निश्चय न कर सका। जब वह घर के भीतर चली गई तो ओलेनिन भी अहाते में इधर-उधर चहलकदमी करने लगा। उसके कान अपने मेज़बान के घर से आती हुई प्रत्येक आवाज़ सुनने में लगे हुए थे। उसने शाम के समय मेज़बानों को बातचीत करते, खाना खाते, बिस्तर निकालते और सोने के लिए जाते हुए सुना। उसने मर्यान्का को किसी बात पर हँसते सुना और फिर धीरे धीरे सब कुछ शान्त हो गया।

कार्नेट और उसकी पत्नी थोड़ी देर तक फुसफुसाती रही और किसी के साँस लेने की आवाज़ सुनाई देती रही। ओलेनिन अपने घर वापस गया और देखा कि वन्यूशा कपड़े पहने ही सो गया है। ओलेनिन को उसपर ईर्ष्या हो रही थी। वह फिर अहाते में चहलकदमी के लिए निकल गया। वह वहाँ किसी आशा से गया था, परन्तु न कोई आया, न कोई हिला-डुला। उसे केवल तीन व्यक्तियों की चलती हुई साँसें सुनाई दे रही थी। वह मर्यान्का की साँस तक से परिचित हो चुका था और इसे तथा अपने धड़कते हुए हृदय को बराबर सुनता जा रहा था।

गांव में सब कुछ शान्त था। चन्द्रमा देर से निकला था। जब उसकी चाँदनी में गहरी साँस लेते हुए पशु धीरे से उठ खडे होते या बैठते तो उन्हे भली भाँति देखा जा सकता था। "मै यहाँ क्या चाहता हूँ?" ओलेनिन ने क्रोध में आकर मन ही मन प्रश्न किया परन्तु फिर भी वह रात्रि की मोहकता के प्रति आँखें न बन्द कर सका। सहसा उसे लगा कि उसने अपने मेजबान के घर का फर्श चरमराते हुए सुना और किसी के पैरो की आहट उसके कानो में पडी। वह दरवाज़े की ओर दौडा। आवाज़ बन्द हो चुकी थी। अब फिर वही साँसे सुनाई पड रही थी। अहाते में भैंस कुडमुडाई, उसने अपने पैर फटकारे, पूँछ समेटी और सूखी मटमैली ज़मीन पर धप्प से आकर कुछ गिर पडा। अब वह चाँदनी रात में फिर लेट गई। ओलेनिन ने सोचा, "मुझे क्या करना चाहिये?" और जाकर सो रहने का निश्चय किया। लेकिन उसने फिर आवाज़ें सुनी और उसकी कल्पना के समक्ष चाँदनी रात में आती हुई मर्यान्का का चित्र घूम गया। वह एक बार फिर उसकी खिडकी के पास दौडा गया और फिर उसे पैर की चापो की आवाज़ सुनाई दी। तडका होने से कुछ ही पहले वह उसकी खिडकी के पास फिर गया, सिटकिनी दबाई और दरवाजे तक पहुँच गया, लेकिन इस बार उसे सचमुच मर्यान्का के पैरो की आहट सुन पडी। उसने सिटकिनी पकडी और दरवाजा खटखटाया। कोई चुपचाप दरवाज़े की ओर बढ रहा था—शायद नगे पैर, धीरे धीरे। सिटकिनी चट्ट से बोली, दरवाज़ा चरमराया और उसकी नाक में सुगधित कुठार और कद्दू की हल्की सुगधि भर गई। मर्यान्का दरवाज़े के पास आती हुई दिखाई दी। उसने उसे चांदनी रात में केवल एक क्षण के लिए ही देखा था। उसने आकर दरवाज़ा बन्द कर लिया और उल्टे पांव लौट गई। ओलेनिन धीरे धीरे खटखटाता रहा परन्तु उसे कोई उत्तर न मिला। वह खिटकी तक

दौडा गया और कान लगाकर सुनने लगा। सहसा वह किसी आदमी की तेज़ आवाज़ सुनकर चौक पडा।

"वहुत अच्छे!" सफेद टोपी पहने हुए एक कज्ज़ाक वोला। वह अहाता पार करके ओलेनिन के पास आ चुका था। "मैंने सब कुछ देख लिया है वहुत अच्छे!"

ओलेनिन ने नज़ारका को पहचान लिया और चुप हो गया। उसे समझ में ही न आ रहा था कि क्या करे, क्या कहे।

"वहुत अच्छे! मैं जाऊँगा और दफ्तरवालो से कहूँगा। और उसके वाप से भी वता दूंगा। वह एक अच्छे कार्नेट की वेटी है। किसी ऐरे-गैरे के लिए नही।"

"तुम मुझसे क्या चाहते हो, क्यो मेरे पीछे पडे हो?" ओलेनिन वोला।

"कुछ नही! जो कुछ मुझे कहना है दफ्तर में कहूँगा।"

नज़ारका ज़ोर ज़ोर से वोल रहा था और ऐसा वह जान-वूझकर कर रहा था। उसने यह भी तुर्रा कसा, "वडे चतुर कैडेट हो, ओ हो।"

ओलेनिन कॉंप गया और पीला पड गया। "इधर आओ। इधर!"

उसने कज्ज़ाक का हाथ पकड लिया और उसे अपने घर तक खींच ले गया। "कुछ भी नही हुआ। उसने मुझे अन्दर आने ही नही दिया। और मैं भी उसे कोई नुक्सान थोडे ही पहुँचाना चाहता था। वह तो वडी अच्छी लडकी है . "

"हमसे इससे कुछ मतलव नही "

"फिर भी मैं तुम्हे कुछ दूंगा। ज़रा इन्तज़ार करना!"

नज़ारका कुछ न वोला। ओलेनिन दौडा हुआ भीतर गया और अन्दर से दस रूवल लेता आया। उसने कज्ज़ाक को वे रूवल थमा दिये।

"वात कुछ भी नही हुई फिर भी दोष मेरा ही था। इसीलिए तुम्हे यह दे रहा हूँ। भगवान के लिए यह वात किसी को न मालूम हो, क्योंकि कोई भी वात नही हुई "

"जियो प्यारे," हँसते हुए नजारका वोला और वहाँ से खिसक गया।

उस रात नजारका लुकाश्का के कहने से गाँव में आया था। उसे एक चोरी का घोडा रखने के लिए कही कोई जगह खोजनी थी। घर जाते समय वह इसी रास्ते मे होकर गुज़रा था कि उसे किसी के पैरो की चाप सुनाई दी थी। जव वह अगले दिन लौटकर अपनी कम्पनी में आया तो उसने अपने दोस्त से डीग मारते हुए कहा कि देखो किस चालाकी मे दस रुवल ऐंठ लाया हूँ।

अगले दिन प्रात काल ओलेनिन अपने मेज़वानो से मिला। उन्हे रात की घटना का कोई भी हाल न मालूम था। वह मर्यान्का से नही वोला। लेकिन जव उसने ओलेनिन को देखा तो थोडा हँस ज़रूर दी। अगली रात भी ओलेनिन ने विना सोये काट दी और अहाते में इधर-उधर वेकार घूमता रहा। दूसरा दिन उसने किसी प्रकार शिकार में विताया और शाम के समय मन वहलाने के लिए वेलेत्स्की के यहाँ चला गया। उसे स्वय अपनी ही अनुभूतियो मे डर लगा रहा था, इसलिए उसने मन ही मन निश्चय कर डाला कि अव से अपने मेजवान के घर न जाऊगा।

अगले दिन रात को सार्जेन्ट-मेजर ने आकर उसे जगाया। उसकी कम्पनी को तुरन्त हमला करने के लिए चल पडने के आदेश हुए थे।

ओलेनिन प्रसन्न था कि शीघ्र ही उसे चल देना होगा। उसने सोच लिया था कि अव फिर वह गांव कभी न लौटेगा।

आक्रमण चार दिनो तक चलता रहा। कमाडर ओलेनिन का सम्बन्धी था। उसने ओलेनिन से मिलने की इच्छा प्रकट की और उसे प्रधान कार्यालय में सहकारियो के साथ रखने का प्रस्ताव किया, परन्तु उसे

ओलेनिन ने अस्वीकार कर दिया। उसने अनुभव किया कि वह गाँव से दूर नही रह सकता और इसीलिए उमने अपने वापस भेज दिये जाने का अनुरोध किया। आक्रमण में भाग लेने के कारण उसे सैनिक पदक मिला था जिसे प्राप्त करने की उसे वडी लालसा थी। अव वह पदक के प्रति भी उदासीन था और अपनी तरक्क़ी के प्रति भी। तरक्की के आदेश उसे अभी तक प्राप्त नही हुए थे, हाँ होनेवाले ज़रूर थे।

वन्यूशा को साथ लेकर वह कम्पनी के आने के कई घण्टे पहले ही वापस घेरे में चला आया। रास्ते में कोई दुर्घटना नही हुई। सारी शाम उसने दालान में वैठे वैठे मर्यान्का को देखते रहने में ही विता दी और फिर निरुद्देश्य सारी रात अहाते में चहलकदमी करता रहा।

३३

जव वह दूसरे दिन जागा तो काफी देर हो चुकी थी। उसके मेज़वान घर पर न थे। वह शिकार खेलने भी न गया। उसने एक पुस्तक उठाई और दालान में चला गया, मगर थोडी ही देर वाद फिर घर के भीतर पलग पर पड रहा। वन्यूशा ने मोचा मालिक वीमार है।

शाम होते होते वह उठ गया। उसने लिखने का दृढ निश्चय कर लिया था और देर तक लिखता ही रहा। उसने एक पत्र लिखा परन्तु उसे डाक में नहीं डाला क्योंकि उसने ममझा कि जो कुछ वह कहना चाहता है उमे कोई समझ न मकेगा। और फिर यह कोई ज़रूरी न था कि उसके अलावा दूसरे उसे समझें ही।

पत्र इस प्रकार था—

"रूस से मुझे समवेदना-पत्र मिला करते है। लोग डरते है कि मै मर जाऊँगा और इन्ही जगलों में कही दफना दिया जाऊँगा। मेरे बारे में वे कहते हैं 'वह रूखे स्वभाव का हो जायेगा, हर बात में ज़माने से दो कदम पीछे रहेगा, पीना शुरू कर देगा और कौन जाने कि किसी कज्ज़ाक लडकी से व्याह ही कर ले।' जनरल येरमोलोव की यह घोषणा निरुद्देश्य नही थी कि 'दस साल तक काकेशिया में काम करने-वाला कोई भी व्यक्ति या तो इतनी पीने लगता है कि मर ही जाता है या किसी दुश्चरित्रा से शादी कर लेता है।' कितनी भयानक बात है! सचमुच जब मै काउण्टेस व का पति बन सकता हूँ, कोर्ट चैम्बरलेन बन सकता हूँ या अपने ज़िले के मरेशाल दे नोबलेम बन सकता हूँ और ज़िन्दगी के मज़े लूट सकता हूँ तो अपने को तबाह कर डालना मेरे लिए उचित नही। ओफ, आप सब मुझे कितने उपेक्षणीय और दयनीय दीख पडते है। मुझे आप पर तरस आता है। आप नही जानते कि जिन्दगी क्या है, जिन्दगी का आनन्द क्या है! ज़रूरी तो यह है कि एक बार आप भी जीवन के समस्त प्राकृतिक सौन्दर्य का अनुभव करे! आप भी वही देखे जो मै देखता हूँ—हिमावृत अगम्य पर्वत शिखर, और प्रागैतिहासिक सुन्दरता से ओतप्रोत एक गरिमा-मण्डित महिला, जिसमें विश्वनियता ने स्त्री के रूप में अपनी प्रथम रचना प्रस्तुत की होगी। यह अनुभव हो जाने के बाद ही पता चलेगा कि कौन अपने को बर्बाद कर रहा है, कौन वास्तविक या मिथ्या जीवन व्यतीत कर रहा है—आप या मै? काश आप जान पाते कि आप अपनी भ्रान्तियो में कितने घृणित और कितने दयनीय है। जब मै अपनी इस झोपडी, अपने प्रेम-व्यापार और अपने वन-उपवन के स्थान पर उन सजी-सजायी बैठकों, अगरागयुक्त कृत्रिम घुघराले बालोंवाली उन स्त्रियों की कल्पना करता हूँ, जिनके ओट तक रगे होते है, जिनके अग-प्रत्यग कमज़ोर होते है, कुरूप होते है, बनावटी होते है,

और कल्पना करता हूँ वैठको की उन 'सभ्यतासूचक अनिवार्य वातची
की जो किसी 'नाम' तक की अधिकारिणी नही है, तो मैं सहम उठता
और मेरे भीतर इन सवके प्रति विद्रोह की भावना उभर आती है।
जब मैं उन चौडे और स्थूल मुखमण्डलवाली धनी सुन्दरियो का ध
करता हूँ जिनकी दृष्टि यह कहती हुई सुनाई पडती है कि 'ठीक
अमीर हूँ सही पर तुम मेरे पास आओ, और पास आओ'—और
वार वार एक ही सीट पर पहले एक तरह फिर दूसरी तरह वैठ
फुदकना, वेशर्मी के साथ जोड-तोड विठाना, वेकार की गपशप, वन
विगडना और फिर वे कायदे-कानून—किसके साथ हाथ मिल
चाहिए, किसे देखकर केवल सिर हिलाना चाहिए, किससे सिर्फ वात
करना चाहिए (और यह सव जान-वूझकर और इस विश्वास के स
किया जाता है कि यह सव ज़रूरी है), पीढियो दर पीढियो से लगा
खून के साथ चली आती हुई उवास और थकावट   उफ मेरा तो
घुटने जाता है। यदि आप लोग सिर्फ एक ही वात समझने और विश्व
करने की कोशिश करे और वह यह कि सत्य क्या है, सौन्दर्य क्या है
इस समय आप जो कुछ कहते है या सोचते है और मेरे वारे में आप
धारणाएँ निश्चित करते हैं वे सव धूल में मिल जायेंगी।

"सच्चा आनन्द क्या है—प्रकृति के साथ रहो, नेत्रो मे उस
पान करो और उससे वातें करो। मैं लोगो को यह कल्पना करते स
सकता हूँ कि 'वह एक साधारण कज्जाक औरत से विवाह कर सक
है (भगवान न करे कि ऐसा हो) और फिर सामाजिक दृष्टि मे सो
सकता है।' मैं कल्पना कर सकता हूँ कि वे मेरे वारे में पूरी ईमानद
और सहानुभूति के साथ सोचते विचारते है। फिर भी मैं आपके
में सचमुच 'खो जाना' चाहता हूँ। मैं कज्जाक स्त्री से विवाह अव

करना चाहता हूँ पर मुझमें वैसी हिम्मत नही क्योंकि वह परमानन्द की ऐसी अवस्था होगी जिसका मै पात्र भी नही हूँ।

"तीन महीने पूर्व मैंने एक कज्ज़ाक स्त्री मर्यान्का को पहले पहल देखा था। उस समय मेरे दिमाग में उस दुनिया के विचार और पूर्वद्वेष ताज़े थे जिसे मैं छोड चुका था। उस समय मैं यह सोच भी नही सकता था कि मै इस स्त्री को कभी प्यार भी कर सकता हूँ। मुझे उसका सौन्दर्य देखकर प्रसन्नता होती थी, सन्तोप होता था ठीक वैसा ही जैसा यहाँ के पर्वत-शिखरो और आसमान को देखकर होता है क्योंकि वह भी इनके समान ही सुन्दर है। मैंने यह अनुभव किया कि उसके सौन्दर्य की एक झलक मेरे जीवन की आवश्यकता बन गई और मैं अपने से यह प्रश्न करने लगा कि क्या मै उसे प्यार नही करता? परन्तु मुझे अपने में उस प्रेम जैसी कोई चीज़ न दिखाई दी जिसकी मैंने कल्पना की थी। मेरे प्रेम का प्रादुर्भाव एकाकीपन की व्यग्रता, अथवा विवाहाकाक्षा अथवा निष्कामता के कारण नही हुआ था और न वह इन्द्रियोपभोग के लिए ही था। मैं उसकी बाते सुनता रहना चाहता हूँ और यह अनुभव करता रहना चाहता हूँ कि वह मेरे बिल्कुल पास है और यदि मै प्रसन्न न भी रहूँ तो भी कम से कम मुझे शान्ति तो मिलती है।

"एक दिन शाम की बैठक के समय जब मै उससे मिला था और मैंने उसका स्पर्श किया था उस समय मुझे लगा था कि मेरे और उस स्त्री के बीच एक ऐसा अकाट्य बंधन है जिसे मै तोड नही सकता, जिसके विरुद्ध कोई सघर्ष नही किया जा सकता। फिर भी मैंने सघर्ष किया। मैंने अपने आपसे प्रश्न किया, 'क्या किसी ऐसी स्त्री से प्यार करना सम्भव है जो कभी भी मेरे हितों को न समझ सकेगी? क्या केवल सुन्दरता के लिये किसी स्त्री को, किसी मूर्ति को, प्यार करना सम्भव है?' किंतु मै उससे प्रेम करने लगा था यद्यपि मुझे अभी तक अपनी अनुभूतियों पर विश्वास न था।

"उस सायकाल के पश्चात्, जब मैंने पहले पहल उससे बातचीत की थी, हमारे सम्बन्धों में परिवर्तन हुआ था। उसके पहले वह मेरे लिए बाह्य प्रकृति की दूरस्थ अपितु गरिमामयी वस्तु थी। परन्तु उसके बाद से उसने मानव का रूप धारण कर लिया। मैं उससे मिलने लगा, उससे बातचीत करने लगा, कभी कभी उसके पिता के लिए काम करने लगा और उन लोगो के साथ सारी की सारी शामें बिताने लगा। और इस निकट के सम्पर्क में भी वह मेरी नजरो में शुद्ध, अप्राप्य और महिमा-मण्डित ही बनी रही। मेरे प्रति उसका बर्ताव सदैव शान्त और मधुर उपेक्षा का बना रहा। कभी कभी वह मित्रवत् व्यवहार करती, परन्तु सामान्यतया उसकी प्रत्येक दृष्टि, प्रत्येक शब्द और प्रत्येक गति मे इस उपेक्षा का परिचय मिलता, तिरस्कार या घृणा का नही। उसका व्यवहार ऐसा था कि मैं मत्रमुग्ध रह जाता। प्रत्येक दिन अपने ओठो पर कृत्रिम मुस्कान लेकर मैं अपना पार्ट अदा करता और हृदय में कामनाओं और आकाक्षाओ का तूफान लिये उससे हँसी-मज़ाक के लहजे में बाते करता। उसने देखा कि मैं विचलित हो रहा हूँ, परन्तु फिर भी वह मुझे सदय और प्रफुल्ल दृष्टि से ही देखती। यह स्थिति भी असह्य हो उठी। मैं उसे धोखा नही देना चाहता था परन्तु यह बता देना चाहता था कि उसके बारे में मैं क्या समझता हूँ, क्या अनुभव करता हूँ। उस समय मै बहुत अस्थिर और अशान्त हो गया था। हम लोग अगूर के बाग में थे जब मैंने उससे उन शब्दो में अपना प्रेम प्रकट करना शुरू किया जिन्हे याद कर अब मुझे शर्म आती है। मुझे शर्म इसलिए आती है कि मुझे उससे इस प्रकार बात नही करनी चाहिए थी क्योंकि उसका स्थान इन शब्दो और उनसे व्यक्त होने वाली अनुभूतियो से कही ऊपर था। मैं चुप तो रह गया परन्तु उस दिन से मेरी स्थिति बडी असह्य हो उठी। मै नही चाहता था कि अपने क्षुद्र सम्बन्ध बराबर कायम रखते हुए मैं स्वय अपना

अनादर करूँ। साथ ही मैंने यह भी अनुभव कर लिया था कि मैं अभी तक उसके साथ सीधे और सरल सम्बन्ध नही स्थापित कर सका। निराश होकर मैंने अपने से प्रश्न किया, 'मुझे क्या करना चाहिए?' अपने मूर्खतापूर्ण स्वप्नो में कभी मैं उसे अपनी स्वामिनी और कभी पत्नी मान वैठता। परन्तु मैंने ये दोनो ही विचार छोड दिये। उसे विलासिनी वनाना मेरी कल्पना से परे था। यह तो उसकी हत्या हुई, हत्या। और उसे एक अच्छी महिला, दिमीत्री अन्द्रेयेविच ओलेनिन की पत्नी का—उस कज्ज़ाक स्त्री की भाँति जिसने हमारे ही एक अफसर के साथ विवाह कर लिया है—रूप देना तो और भी वुरा है। और क्या मैं लुकाश्का की तरह का कज्ज़ाक वन जाऊँ, घोडे चुराया करूँ, चिख़ीर पीकर नशे में भद्दे भद्दे गीत गाया करूँ, लोगो को मौत के घाट उतारा करूँ और नशे में चूर उसकी खिडकी में से भीतर घुसकर रात भर ऐश किया करूँ विना यह सोचे-विचारे कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ, तव तो वात ही और है। तव हम एक दूसरे को समझ सकेगे और शायद तव मुझे खुशी होगी।

"मैंने उस तरह का जीवन विताने का भी प्रयत्न किया परन्तु मुझे सदा अपनी कमज़ोरियो और कृत्रिमता का ध्यान वना रहता। उस समय न मैं अपने को ही भूल सका न अपने विकृत विगत जीवन को ही। भविष्य तो मुझे और भी नैराश्यपूर्ण लगता है। प्रति दिन मैं दूर तक फैले हुए हिमावृत पहाडो और इस महिमामयी और प्रसन्नचित्त स्त्री को देखता हूँ परन्तु दुनिया में केवल मेरे लिए ही खुशी सम्भव नहीं। मैं इस स्त्री को नही पा सकता। सव से भयानक और सव से विचित्र वात तो यह है कि मैं अनुभव करता हूँ कि मैं उसे समझता हूँ, लेकिन वह मुझे कभी नही समझेगी इसलिए नहीं कि वह मुझसे हीन है, उल्टे, उसे मुझे समझना भी न चाहिए। वह सुखी है, वह प्रकृति के समान है—

समरूप, स्थिर, आत्मभरित। और मै, एक कमजोर और कुरूप व्यक्ति, चाहता हूँ कि वह मेरी कुरूपता, मेरी पीडाएँ समझें। मै रात रात भर नही सोया हूँ लेकिन उसकी खिडकी के नीचे निरुद्देश्य बैठे बैठे राते जरूर विताई है। मुझे क्या हो रहा था यह मै स्वय भी नही जानता।

"१८ तारीख को हमारी कम्पनी ने एक आक्रमण के लिए कच किया और मुझे गाँव से वाहर तीन दिन विताने पडे। मैं दुखी था, निरुत्साह था। उस समय मुझे वहाँ के गाने, ताश, शराव के दौर, और रेजीमेंट में पुरस्कारो की वातचीत आदि भी अप्रिय लगती थी। कल मैं घर लौट आया हूँ, और मैंने उसे, अपने घर को, चचा यरोश्का को और सामने फैले हुए हिमावृत शिखरो को फिर से देखा है। मुझे हर्ष की इतनी अधिक अनुभूति हुई कि मैंने वहुत कुछ ज्ञान प्राप्त कर लिया। मै इस स्त्री को प्यार करता हूँ और यह अनुभव करता हूँ कि एक वार सिर्फ एक वार मैंने अपने जीवन में सच्चा प्रेम किया है। मैं जानता हूँ कि मुझ पर क्या क्या वीत चुकी है। इस अनुभूति से अनादृत होने का भी मुझे भय नही। मुझे अपने प्रेम पर शर्म नही आती, गर्व होता है। मै प्यार करता हूँ यह मेरा दोष नही। यह तो मेरी इच्छा के विरुद्ध हुआ है। मैंने आत्म-परित्याग द्वारा इस प्रेम से छुटकारा पाना चाहा था और कज्जाक लुकाश्का और मर्यान्का के प्रेम से ही खुश होने का उपक्रम किया था, परन्तु इससे मेरा प्रेम, मेरी ईर्ष्या ही भडकी। यह वह आदर्श, वह तथाकथित उदार प्रेम नही जिसकी मैंने वहुत पहले कल्पना की थी, यह उस प्रकार का वधन नही जिसमें आप अपने ही प्रेम की प्रशसा करते है और यह अनुभव करते है कि आपकी भावना का स्रोत स्वय आपके भीतर है, और इसीलिए आप स्वय ही सव कुछ करते है। मैंने उसका भी अनुभव किया है। वह आनन्दोपभोग की इच्छा नही, कुछ दूसरी ही चीज है। शायद उसके रूप में मै प्रकृति से प्रेम करता हूँ

क्योंकि वह उस सबकी साकार प्रतिमा है जिसे प्रकृति का सौन्दर्य कहते हैं। फिर भी मैं स्वत अपनी इच्छा से काम नही करता, कोई तात्विक शक्ति मेरे माध्यम से प्रेम करती है। ईश्वर की समस्त रचना, सारी की सारी प्रकृति मेरी आत्मा में इस प्रेम की सृष्टि करती है और कहती है, 'उसे प्यार करो'। और मैं अपने मस्तिष्क से नही अपनी कल्पना से नही, अपने सम्पूर्ण अस्तित्व से उसे प्यार करता हूँ। उसे प्यार करते हुए मुझे लगता है कि मैं उस परमपिता द्वारा सृजित विश्व के आनन्दरूप का एक आवश्यक अंश हूँ।

"मै उन नवीन विश्वासो के बारे में पहले लिख चुका हूँ जिन्होंने मेरे एकाकी जीवन में प्रवेश किया था। परन्तु कोई नही जानता कि उन्होंने मेरे अन्तम् में जो रूप स्थिर किया वह कैसे किया और उनका अनुभव करने में मुझे कितनी प्रसन्नता हुई। मैंने अपने सामने जीवन का एक नया द्वार खुलते हुए देखा। इन विश्वासो से बढकर मुझे कोई भी चीज प्यारी न थी। और अब अब प्रेम का पदार्पण हुआ है और इस समय न तो वे विश्वास ही रह गये हैं और न उनके लिए पश्चात्ताप ही।

"मेरे लिए यह यकीन करना कठिन है कि मै इस एकागी, निरुत्साहित और भावुक मानसिक स्थिति का मूल्याकन कर सका था। सौन्दर्य के प्रादुर्भाव के साथ ही साथ अन्तस् में उठनेवाले द्वन्द्वो का भी समूल नाश हुआ और जो कुछ लोप हो चुका है उसके लिए मुझे अब कोई पश्चात्ताप नही रह गया। आत्म-परित्याग ढकोसला है, बेवकूफ़ी है। यह एक गर्व है, विषाद से बचने का आश्रय-स्थल और दूसरो की प्रसन्नता पर होनेवाली ईर्ष्या से मुक्ति पाने का मार्ग। 'दूसरो के लिए जियो, उपकार करो,'—क्यो?—जब मेरी आत्मा में सिर्फ अपने लिए प्रेम है और उसी प्रेम करने की आकांक्षा है और उसके साथ उसी का जीवन

वसर करने की उत्कठा है। अव मुझे आनन्दोपभोग की इच्छा है लुकाश्का के लिए नही, दूसरो के लिए भी नही। मै उन दूसरो को प्यार नही करता। पहले ही मुझे अपने आपसे कह देना चाहिए था कि यह सव गलत है। मुझे इन प्रश्नो से ही अपनी प्रतारणा करनी चाहिए थी, 'उसका क्या होगा, मेरा क्या होगा, लुकाश्का का क्या होगा?' अव मुझे इन सव की कोई चिन्ता नहीं। मैं स्वत अपनी इच्छा से नही रह रहा हूँ। मेरे अहम् से भी प्रवल कोई दूसरी चीज़ है जो मुझे रास्ता दिखाती है। मैं अव भी पीडा सहन कर रहा हूँ। पहले मैं मृत था और सिर्फ अव जीवित हूँ। आज मैं उसके घर जाऊँगा और अपना हृदय उसके सामने खोल दूंगा।"

३४

पत्र लिख लेने के वाद, अविक शाम वीते ओलेनिन अपने मेज़वानो के घर गया। वूढी अगीठी के पीछे एक वेंच पर वैठी हुई रेशम के कीटो से धागा उतार रही थी। मर्यान्का का सिर खुला था और वह मोमवत्ती की रोशनी में वैठी सिलाई कर रही थी। ओलेनिन पर निगाह पडते ही वह उछल पडी और रूमाल लेकर अगीठी की तरफ़ भागी।

"प्यारी मर्यान्का," माँ वोली, "थोडी देर हम लोगो के पास न वैठेगी क्या?"

"नही, मेरा सिर खुला है," उसने जवाव दिया और कूदकर अगीठी की टाँड पर चढ गई।

ओलेनिन को केवल उसका एक घुटना और अगीठी की टाँड से लटकते हुए उसके सुन्दर पैर ही दिखाई पड रहे थे। ओलेनिन ने वूढ़ी को चाय दी और वूढी ने ओलेनिन के लिए मर्यान्का से मलाई लाने को कहा।

मर्यान्का ने एक प्लेट मलाई लाकर मेज़ पर रख दी और फिर अगीठी पर चढकर वैठ गई। अव ओलेनिन को लगा कि वह उसे वरावर देखे ही जा रही है। वे पारिवारिक मामलो के विपय में वातचीत कर रहे थे। श्रीमती उलित्का को अतिथि-सत्कार में आनन्द आ रहा था। वह ओलेनिन के लिए अगूर लाई, अगूर से वने स्वादिष्ट पदार्थ लाई, अच्छी से अच्छी शराव लाई और उससे खाने की ज़िद करने लगी। उसके अतिथि-सत्कार में ग्राम-समाज की वह भावना प्रकट हो रही थी जो केवल उन्ही लोगों मे देखने को मिलती है जो स्वय मेहनत करके धनोपार्जन करते और गृहस्थी चलाते हैं।

यही वूढी, जिसने पहले पहल अपने रुखे व्यवहार से ओलेनिन को स्तव्ध कर दिया था, अव उसके साथ उसी मृदुता से व्यवहार करती जैसे कि अपनी पुत्री के साथ किया करती थी।

"हां हमें शिकवा-शिकायतें करके ईश्वर को अप्रसन्न नही करना है। उसकी कृपा से हमारे पास हर चीज़ है, और काफी है। हमने वहुत-सी चिखीर निकाली और रख ली है। अगूर के चार-पाँच कनस्तर वेच लेने के वाद भी हमारे पास पीने भर के लिए वहुत वच रहेगी। कही हमारे पास से जल्दी जाने की कोशिश न करने लगना। शादी के समय हम सव मजे उडायेंगे।"

"और शादी कव होगी?" ओलेनिन ने पूछा। ऐसा लगता था कि शरीर भर का खून उसके चेहरे पर चढ़ गया है। उसका हृदय ज़ोरो से धक धक कर रहा था। उसने सुना कि अगीठी पर कोई हिल-डुल रहा है, और फिर वीजफोडने की आवाज उसके कान में पडी।

"तुम्हे मालूम नही? विवाह अगले हफ्ते ही तो है। हमारा इन्तज़ाम पूरा है," वूढी ने यह वात इतने धीरे और इतनी सुगमता से कही जैसे ओलेनिन वहाँ हो ही नहीं, "मैने मर्यान्का के लिए

भी सारी चीज़ें तैयार कर ली हैं। हम उसका कायदे से विवाह करेंगे। सिर्फ एक ही वात है जो ज़रा ठीक नही लगती। पता चला है कि इधर पिछले कुछ दिनो से लुकाश्का की आदते विगडने लगी हैं। वह वहुत ही विगड गया है। तरह तरह की तिकडमें करने लगा है। अभी उसी दिन उसकी कम्पनी का एक कज़्ज़ाक आया था और उसने वताया था कि लुकाश्का नगई गया हुआ है।"

"उसे ध्यान रखना चाहिए कि कही वह पकड न जाय," ओलेनिन ने कहा।

"हाँ, यही तो मैं भी उससे कहती रही हूँ, 'वात मानो लुकाश्का, वुरी हरकते मत अख्तयार करो। मानती हूँ, जवान आदमी कभी कभी उमग में आकर कुछ कर ही वैठना चाहता है, परन्तु हर चीज़ का मौक़ा होता है। मान लो तुमने किसी को पकड ही लिया, कुछ चुरा ही लिया या किसी अब्रेक को ही मार डाला, तो क्या होगा। तुम अच्छे आदमी हो, मैं जानती हूँ। परन्तु अव तुम्हे चाहिए कि ठीक से काम करो, जम कर वैठो, वरना तकलीफ़ उठाओगे'।"

"हाँ मैं उससे एक दो वार डिविज़न में मिला हूँ। हमेशा खुराफ़ातो में लगा रहता था। उसने दूसरा घोडा वेच डाला है," ओलेनिन वोला और अगीठी की तरफ निगाह दौडाई।

दो वडी वड़ी काली आँखें उसकी ओर कठोरता और शत्रुता से घूर रही थी।

वह जो कुछ कह चुका था उसके लिए उसे शर्म आई।

"इससे क्या। वह किसी का कुछ विगाडता तो नही," मर्यान्का एकाएक कह उठी, "वह खुराफात करता है तो अपने पैसे से करता है।" और अगीठी से नीचे कूदकर भाग गई और दरवाज़ा वन्द कर लिया।

ओलेनिन की आँखें बराबर उस समय तक उसके पीछे पीछे लगी रही जब तक वह घर के भीतर रही। फिर उसने दरवाज़े की तरफ देखा और इन्तज़ार किया। श्रीमती उलित्का जो कुछ कहती जा रही थी उसका एक लफ़्ज़ भी उसके पल्ले नही पड रहा था।

कुछ क्षणो बाद कुछ लोग और आ गये—एक बूढा, श्रीमती उलित्का का भाई, चचा येरोश्का और उनके पीछे पीछे मर्यान्का और उस्तेन्का।

"नमस्कार," उस्तेन्का बोली, "अभी तक छुट्टी पर है?" वह ओलेनिन की ओर मुडी।

"हाँ, अभी तक छुट्टी पर हूँ," उसने जवाब दिया और उसे शर्म आ गई और घबडाहट होने लगी। क्यो? कारण वह स्वय न जानता था।

वह चला जाना चाहता था परन्तु नही जा सका। चुप रहना भी उसके लिए असम्भव लग रहा था। बूढे ने उसके लिए शराब माँग कर उसकी सहायता की और सब ने छककर पी। ओलेनिन ने येरोश्का के साथ, अन्य कज्ज़ाकों के साथ और फिर येरोश्का के साथ पी, और उसने जितनी ही अधिक पी उसका दिल उतना ही भारी लगने लगा। परन्तु दोनो बूढे लुत्फ ले रहे थे। लडकियाँ अगीठी पर चढ कर बैठ गई थीं और उन लोगों की ओर देखती जा रही थी जो शाम तक बराबर पीते ही रहे थे। ओलेनिन कुछ न बोला परन्तु उसने दूसरो से अधिक पी। कज्ज़ाक चिल्ला रहे थे, मगर बूढी ने उन्हे चिख़ीर न देने का फैसला कर लिया था। बल्कि वह तो उनसे अपना पिण्ड छुडाना चाहती थी। लडकियाँ चचा येरोश्का पर हँस रही थी और जब सब के सब दालान में पहुँचे तो दस बज चुके थे। बूढो ने उन सब को ओलेनिन के यहाँ मनोविनोद के लिए निमन्त्रित किया। उस्तेन्का घर की ओर भाग

गई और येरोश्का ने बूढे कज्ज़ाक को वन्यूशा के साथ कर दिया। बूढी ओसारा ठीक करने चली गई। सिर्फ मर्यान्का ही अकेली घर में रह गई। ओलेनिन में ताज़गी आई और उसका जी खिल उठा, मानो वह अभी अभी सोकर जगा हो। उसने सभी चीज़ो पर निगाह दौडाई और जव वुज़ुर्ग लोग आगे वढ गये तो उसने मुडकर पीछे देखा। मर्यान्का सोने का इन्तज़ाम करने जा रही थी। वह उसके पास तक गया और उसने कुछ कहना चाहा। परन्तु उसकी आवाज़ टूट गई। वह उससे हटकर, अपनी चारपाई के एक कोने में पैर लटकाकर वैठ गई और डरी हुई नज़रो से ओलेनिन की तरफ देखने लगी। ऐसा लग रहा था कि वह ओलेनिन से डर रही है। ओलेनिन को भी ऐसा ही लगा। उसे खेद हुआ और अपने पर शर्म भी आई। परन्तु उसे इस वात का गर्व था और खुशी भी कि उसने मर्यान्का में कम से कम भय की अनुभूति तो पैदा ही कर दी है।

"मर्यान्का!" वह वोला, "क्या तुम मुझपर कभी तरस न खाओगी? मैं तुम्हे नही वता सकता कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ।"

वह थोडा और परे हट गई, कहने लगी, "सुनो, यह तुम नही तुम्हारी शराव वोल रही है   तुम मुझसे कुछ भी न पा सकोगे।"

"नही, यह शराव नही। लुकाश्का से विवाह न करो। मैं तुमसे विवाह करूँगा   मैं क्या वक रहा हूँ?" इन शव्दो के साथ ही साथ उसने विचार किया, "क्या मैं यही वात कल कह सकूँगा? हाँ, कह सकूँगा, मुझ यकीन है कह सकूँगा और अव मैं उसे दुहराऊँगा," अन्तस् की आवाज़ ने कहा।

"क्या तुम मुझसे विवाह करोगी?"

मर्यान्का ने उसकी ओर गम्भीर दृष्टि डाली। अव उसका भय दूर होता जा रहा था।

"मर्यान्का , मैं पागल हो जाऊँगा! मैं अपने आपे में नही हूँ। तुम जो कुछ कहोगी मैं करूँगा।" और इस पागलपन में उसके मुंह से स्वत मधुर शब्दो की वर्षा होने लगी।

"आखिर क्या बकबक किये जा रहे हो?" मर्यान्का ने बात काटते हुए कहा और एकाएक उसका फैलाया हुआ हाथ पकड लिया। उसने हाथ को धक्का देकर हटाया तो नही परन्तु उसे अपनी मज़बूत और सख्त उगलियो से दबाये रही। "क्या भले आदमी कज्जाक लडकियो से व्याह करते है? भाग जाओ!"

"परन्तु क्या तुम करोगी? हर चीज़ "

"और हम लुकाश्का के साथ क्या करेगे?" हँसते हुए वह बोली।

ओलेनिन ने अपना हाथ छुडा लिया और उसके नवल शरीर को अपनी भुजाओ में भर लिया। परन्तु वह मृगशावक की भाँति उछली और नगे पैर दालान की तरफ भागी। ओलेनिन को होश आया और अपने पर क्रोध भी। उसे फिर लगा कि वह उसकी तुलना में अधिक नीच है और उसकी यह अधमता ऐसी है जिसे व्यक्त नही किया जा सकता। फिर भी वह जो कुछ कह चुका था उसके लिए एक क्षण के लिए भी पश्चात्ताप न करते हुए वह घर गया और बिना उन बूढो पर निगाह डाले हुए, जो उसके कमरे में बैठे शराब पी रहे थे, बिस्तर पर पट रहा। इस बार उसे जितनी गहरी नींद आई उतनी बहुत दिनो से न आई थी।

३५

दूसरे दिन छुट्टी थी। गाँव के प्राय सभी लोग छुट्टियोवाले बुर्राक़ कपडे पहने सडकों पर निकल आये थे। उनके कपडे धूप में चमचमा रहे थे। इस मौसम में पहले मौसमो से ज्यादा शराब खीची गई थी और

लोग अब सख्त मेहनत से विश्राम पा चुके थे। एक महीने में कज्जाको को अभियान-यात्रा पर जाना था। इसलिए बहुत-से परिवारो में शादी विवाह के इन्तज़ाम किये जा रहे थे।

अधिकतर लोग चौक में, कज्जाक गाँव-कार्यालय के सामने, तथा उन दो दूकानो के आगे एकत्र थे जिनमें से एक में मिठाइयाँ तथा कद्दू के बीज बिकते थे और दूसरी में रूमाल तथा छपे हुए वस्त्र। कार्यालय भवन के मिट्टी के चबूतरे पर वृद्ध लोग खडे या बैठे थे जो भूरे या काले रग के ऐसे कोट पहने हुए थे जिनपर न तो सोने का ही काम था और न अन्य किसी प्रकार की सजावट ही। वे लोग नपे-तुले शब्दो में आपस में अनेक विषयों—फसल, नवयुवक, गाँव के मामले, पुराने ज़माने आदि आदि—पर बातचीत कर रहे थे और तरुण पीढी के होनहारो की ओर बडी शान से देख रहे थे। उनके पास से होकर गुज़रते समय स्त्रियाँ और बच्चे एक क्षण के लिए रुक जाते और अपना सिर झुका देते। युवक कज्जाक अपनी चाल धीमी कर देते और चलते चलते सिर से कुछ देर के लिए टोपी ऊपर उठाये रहते। और तब बूढे आपस की बाते बन्द कर देते। कुछ लोग इन गुज़रनेवालो पर तीक्ष्ण दृष्टि] डालते, और कुछ सदय, और कुछ उत्तर में अपनी टोपी उठा देते और फिर लगा लेते।

कज्जाक लड़कियो ने अभी तक अपने खोरोवोद* नृत्य आरम्भ नही किये थे। अपनी अपनी चमकीली बेशमेतें पहने और आँखो तक सिर को रूमालो से ढंके हुए वे टोलियो में या तो ज़मीन पर बैठी थी या घरो के बाहर बने हुए मिट्टी के चबूतरो पर, ऐसे कि उनपर सूर्य की तिरछी

---

* खोरोवोद नृत्य में लड़कियाँ मण्डल बनाकर गाती हुई नाचती है—

किरणें न पड़ें। वे हँस रही थी और अपनी सुरीली आवाज़ में चटर-पटर कर रही थी। छोटे लडके-लडकियाँ चौक में खेलते हुए गेंद आसमान में उछालते और फिर दौडते हुए चीखते-चिल्लाते। कुछ ज्यादा उम्र की लडकियो ने पहले से ही नाच आरम्भ कर दिया था और अब वे अपनी महीन सुरीली आवाज़ में लजाते हुए गाती जा रही थी। क्लर्क, नौकरी न करनेवाले अथवा उत्सव में घर आये हुए छोकरे सुनहले कामवाले सफेद या लाल चेरकेसियन कोट पहने दो-दो या तीन-तीन की टोली में हाथ में हाथ डाले स्त्रियो या लडकियो की एक टोली से दूसरी टोली में घूम रहे थे और उनसे हँसी-मज़ाक करते हुए कुछ देर के लिए कही रुक भी जाते थे। आरमीनियाई दुकानदार सुन्दर नीले कपडे का सुनहले कामवाला कोट पहने अपनी दुकान के दरवाज़े पर वहाँ खडा था जहाँ से तह किये हुए ढेर के ढेर रूमाल दिखाई पड रहे थे। वह एक पूर्वीय व्यापारी की शान से खडा खडा अपने ग्राहको की प्रतीक्षा कर रहा था। लाल दाढ़ीवाले दो नगे पैर चेचेन, जो उत्सव देखने के लिए तेरेक के उस पार से आये हुए थे, एक दोस्त के मकान के वाहर पालथी मारे बैठे थे और अपने छोटे-छोटे हुक्के पीते हुए, ग्रामीणो को देखते ही प्राय थूकने लगते थे या कभी उनसे अपनी भारी आवाज़ में कुछ वातचीत कर लेते थे। कभी कभी कोई सिपाही भी अपना पुराना ओवरकोट पहने इन हँसमुख और अच्छे अच्छे कपडे पहने हुए लोगो की टोली में से होकर निकल जाता था। इधर-उधर उन कज्ज़ाको के गाने भी कान में पड जाया करते थे जो शराव पीकर मस्ती मे समय काट रहे थे। सभी घरो में ताले पडे हुए थे, सारी दालाने पिछले दिन ही साफ की जा चुकी थी। वूढी औरते भी सडक पर निकल आई थी। सारी की सारी सडक कद्दू या खरवूज़ो के वीजो से सजाई गई थी। हवा गर्म और शान्त थी, आसमान साफ़ था

श्रौर उसका रग गहरा हो चला था। छतो के उस पार हल्के सफ़ेद रग के पर्वत-शिखर, जो इस समय विल्कुल नज़दीक दिखाई दे रहे थे, अस्ताचलगामी सूर्य की अरुणिमा से रक्ताभ हो रहे थे। कभी कभी नदी के उस ओर से गोले-वारी की आवाज़ सुनाई दे जाती परन्तु गाँव के ऊपर तो छुट्टियो की मौज-वहार की मिली हुई आवाज़ें ही तैर रही थी।

मर्यान्का की झलक पा जाने के लिए ओलेनिन सारी सुवह अहाते में चहलकदमी करता रहा। और, मर्यान्का वढिया से वढिया कपडे पहने छमछम करती वाहर निकल गई, पहले तो प्रार्थना के लिए गिरजे में गई और फिर मिट्टी के चवूतरे पर आकर लडकियो के साथ उनकी एक टोली में शामिल हो गई। कभी वह वहज वीज फोडती और कभी अपनी सहेलियो के साथ घर की ओर भाग जाती, और प्रत्येक वार ओलेनिन उसे देखता और उसे लगता कि उसकी आँखो में चमक है, दया है। दूसरो के सामने उससे खुलकर वातचीत करने में ओलेनिन को झिझक होती। वह चाहता था कि अपनी वह वात कह डाले जिसका आरम्भ वह पिछली रात को कर चुका था, और फिर मर्यान्का उसे अपना स्पष्ट और निश्चित उत्तर दे। कल शाम की ही तरह उसने फिर प्रतीक्षा की परन्तु उपयुक्त अवसर हाथ न लगा। अव उसे अनुभव हो रहा था कि वह इस अनिश्चित अवस्था में अधिक नही रह सकता। वह फिर सडक पर निकल गई। ओलेनिन भी एक क्षण तक प्रतीक्षा कर चुकने के पश्चात् वाहर चल दिया और विना यह जाने हुए कि कहाँ जा रहा है उसके पीछे लग गया। वह उस कोने से होकर गुज़रा जहाँ वह अपनी चमकदार नीली वेशमेत पहने वैठी थी। उसने अपने पीछे लडकियो की दिल कचोटनेवाली परिहासात्मक हँसी सुनी।

वेलेत्स्की का मकान चौक से दिखाई पड रहा था। जव ओलेनिन वहाँ से होकर गुज़रा तो उसे वेलेत्स्की की आवाज़ सुनाई दी

"अन्दर आ जाओ" और वह भीतर घुस गया। कुछ बातचीत कर चुकने के बाद दोनो खिडकी के पास बैठ गये। थोडी ही देर में नई बेशमेत पहने चचा येरोश्का भी आ गया और आकर उनके पास ही फर्श पर जम गया।

"वहाँ, वह देखो चुलवुलियो की टोली है," मुस्कराते हुए वेलेत्स्की बोला और कोने में बैठी हुई एक टोली की तरफ अपनी सिगरट से सकेत करने लगा, "मेरी भी वही है। उसे देख रहे हो? लाल कपडो में जो नई बेशमेत पहने है। तुम लोग खोरोवोद क्यो नही शुरू कर देती?" खिडकी में से बाहर झाँकते हुए वह चिल्लाया। "थोडा ठहरो। जब अधेरा हो जायेगा तब हम भी चलेगे। तब हम उन्हे उस्तेन्का के यहाँ बुलायेंगे और उनके लिए बालडास का आयोजन करेंगे।"

"और मैं उस्तेन्का के यहाँ पहुँच जाऊँगा। वहाँ मर्यान्का भी होगी क्या?" ओलेनिन बोला।

"'हाँ होगी। जरूर आना," जरा भी आश्चर्य किये बिना वेलेत्स्की ने कहा, "मगर क्या यह तस्वीर की तरह आकर्षक नही?" उसने रग-बिरगी टोली की ओर सकेत करते हुए पूछा।

"हाँ, बहुत!" उपेक्षा का भाव दिखलाते हुए ओलेनिन ने स्वीकार किया। उसने कहा, "इस प्रकार के उत्सवो से मुझे यह आश्चर्य होता है कि ये सब लोग एकाएक सन्तुष्ट और प्रसन्न कैसे दीखने लगते हैं। मसलन, आज ही, केवल इसीलिए कि आज पन्द्रह तारीख है, हर चीज़ में खुशी है, बहार है। आँखें और चेहरे, आवाज़ें और चाले और वस्त्र, हवा और धूप सभी मस्ती में हैं। लेकिन रूस में हमारे यहाँ ऐसे उत्सव नही होते।"

"हाँ," वेलेत्स्की बोला। उसे यह छीटाकशी पसन्द नही आई, "और तुम मेरे बूढे दोस्त, तुम क्यो नही पी रहे हो?" येरोश्का की तरफ घूमते हुए उसने कहा।

येरोश्का ने ओलेनिन को आँख मारी और वेलेत्स्की की ओर इशारा किया। "ओह, तुम्हारा यह कुनक, बडा मस्त-मौला है," वह बोला।

वेलेत्स्की ने अपना गिलास उठाया।

"अल्लाह् विरदी!" गिलास खाली करते हुए उसने कहा। ('अल्लाह् विरदी'—'ईश्वर ने दिया' इन सामान्य शब्दो को काकेशियाई साथ साथ शराब पीते समय प्रथानुसार कहा करते हैं।)

"साऊ वुल" ("तुम्हारे स्वास्थ्य की कामना में") येरोश्का ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया और गिलास खाली कर दिया।

"तुम उसे उत्सव कह सकते हो!" ओलेनिन की ओर मुडते तथा खिडकी के बाहर देखते हुए येरोश्का ने कहा, "यह कैसा उत्सव है? तुमने लोगो को पिछले सालो में आनन्द मनाते हुए देखा होगा! औरतें अपने सुनहले कामवाले मराफान* पहने हुए निकला करती थी। उनके गलो में सोने की मुद्राओ के दो दो हार लटका करते थे, सिरो पर सोने के कामवाले शिरोवस्त्र रहते थे और जब वे चलती थी तो उनके वस्त्रो से सन्न सन्न की आवाज़ होती थी।

"हर स्त्री राजकुमारी लगती थी। कभी कभी वे झुडो में निकलती, एक साथ गाने गाती हुई सारे वातावरण को गुंजा दिया करती और रात रात भर आनन्द मनाया करतीं। और कज्जाक शराब का पूरा का पूरा कनस्तर ज़मीन में लुढका लाते, और फिर सुबह होने तक उनके दौर पर दौर चला करते। कभी कभी वे हाथ में हाथ डाले गाँव भर का चक्कर लगाया करते और जिसे भी पकड पाते अपने साथ ले लेते। और फिर घर

---

* एक प्रकार की पोशाक जो ब्लाउज़ पर पहनी जाती थी।

घर की खाक छानते । कभी कभी लगातार तीन तीन दिनो तक आनन्द मनाया करते । मुझे याद है कि जब पिता जी घर लौटते तो उनका चेहरा लाल होता, सिर पर टोपी न होती और हर चीज़ खोकर आया करते। वे आकर बस पड रहते। और माता जी जानती थी कि ऐसे में क्या करना चाहिए। वे उनके लिए थोडी खटाई और चिखीर लाती और जब वे होश में आ जाते तो उनकी टोपी ढूढने के लिए सारे गाँव का चक्कर लगाती। और तब वे लगातार दो दिन तक डटकर सोते। उस समय के लोग ऐसे होते थे! लेकिन अब! अब की बात कुछ न पूछो!"

"और क्या सराफान पहने हुई लडकियाँ अकेले अकेले आनन्द मनाया करती थी?" बेलेत्स्की ने पूछा।

"अकेले मनाने की नौबत कब आती थी! कभी कभी घोडो पर चढकर, या पैदल, कज़्ज़ाक लोग आया करते और कहते 'हम खोरोवोद तोडकर बढेंगे' और बीच से होकर निकल जाते। तब लडकियाँ सोटा उठाती और पिल पडती। ओवेतिद पर कोई नौजवान घोडा दौडाता आता और वे उसपर भी जुट पडती। लेकिन वह ज़बरदस्ती घुस पडता और अपनी प्रियतमा को उठाकर घोडे पर बिठाता और हवा से बाते करने लगता। और वह उसे कितना प्यार करता था। क्या कहने! उन दिनो की लडकिया क्या थी, अच्छी-खासी रानिया थी, रानिया!"

३६

ठीक उसी समय दो व्यक्ति घोडो पर चौक की ओर आते हुए दिखाई दिये–एक था नज़ारका और दूसरा लुकाश्का। लुकाश्का अपने हृष्ट-पुष्ट घोडे पर एक ओर झुका बैठा था। घोडा सिर हिलाता-डुलाता तथा चिकने अयालो को लहराता दुलकी चाल से दौड रहा था। कन्धे पर

वन्दूक लटकाये, कमर में पिस्तौल खोंसे तथा जीन के पीछे मुडे हुए लवादे को देखकर कोई भी कह सकता था कि लुकाश्का न तो किसी शान्त स्थान से आ रहा है और न कही पास-पडोस से ही। जिस निराले ढग मे वह घोडे पर झुका वैठा था, जिस निश्चिन्त प्रकार से वह उसे एड और चावुक लगा रहा था, जिस प्रकार वह अपनी काली काली अर्ध-निमीलित आँखो से चारो ओर देख रहा था, उस सव से पता चलता था कि उसमें युवको जैसा आत्म-विश्वास है, युवको जैसा वल है। उसकी इधर-उधर देखती हुई आँखें मानो कह रही थी "क्या तुमने इतना अच्छा युवक देखा है?" शानदार घोडा, चाँदी का साज-सामान, ज़ीन, हथियार और उसपर वैठा हुआ स्वय खूवसूरत कज्ज़ाक चौक मे खडे प्रत्येक व्यक्ति के आकर्षण का केन्द्र हो रहा था। दुवला-पतला और छोटे कद का नजारका कुछ अच्छी पोशाक में न था। जव लुकाश्का गाँव के वडे-वूढो के पास मे होकर गुज़रता तो एक क्षण के लिए ठहरता और भेड के सफेद घुघराले वालोवाली अपनी टोपी सिर पर से ऊपर उठा देता।

"क्या अवकी वहुत-से नगई घोडे चुराये है?" एक दुवले-पतले वूढे ने उन्हे घूरते हुए प्रश्न किया।

"वावा, क्या आपने गिने है जो पूछ रहे है?" एक ओर मुडते हुए लुकाश्का ने जवाव दिया।

"यह सव ठीक है परन्तु तुम इस छोकरे को अपने साथ मत रखो," वूढा वडवडाया। उसकी भृकुटियाँ और भी अधिक तन गई थी।

"शैतान का वच्चा, सव कुछ जानता है," लुकाश्का ने मन ही मन कहा और उसके चेहरे पर घवडाहट के चिन्ह दिखाई पडने लगे। परन्तु तभी उसने एक कोने में वहुत-सी कज्ज़ाक लडकियाँ खडी देखी और घोडा उनकी तरफ मोड दिया।

"नमस्ते, छोकरियो!" सहसा घोडा रोकते हुए तेज गूजती हुई

आवाज़ में वह बोला, "अरी चुड़ैलो, मेरे बिना ही तुम सब बूढ़ी हो गई," और वह हँस पड़ा।

"नमस्ते, लुकाश्का, नमस्ते!" लड़कियों ने अपनी सुरीली आवाज़ में उत्तर दिया। "क्या बहुत-सा रुपया लाये हो? लड़कियों के लिए कुछ मिठाइयाँ ख़रीद दो न! ज़्यादा दिनों के लिए आये हो क्या? सच बात तो यह है कि तुम्हे देखे बहुत ज़माना हो गया"

"नज़ारका और मैं रात भर के लिए इधर खिसक आये है," अपना चाबुक उठाते और सीधे लड़कियों की ओर घोड़ा बढ़ाते हुए लुकाश्का ने जवाब दिया।

"क्यों, मर्यान्का तो तुमको भूल ही गई," कोहनी से मर्यान्का को कोंचते और सुरीली आवाज़ में कहकहा लगाते हुए उस्तेन्का बोली।

मर्यान्का घोड़े से हटकर एक ओर खड़ी हो गई और पीछे सिर डालते हुए अपनी बड़ी बड़ी चमकीली आँखों से कज्ज़ाक को देखने लगी।

"ठीक तो है तुम बहुत दिनों से यहाँ नहीं दिखाई पड़े। अरे, घोड़े के टापों के नीचे हमें पीसे क्यों डाल रहे हो?" वह बोली और मुड़ गई।

लुकाश्का ख़ास तौर से ख़ुश दिखाई पड़ रहा था। उसका चेहरा प्रसन्नता से खिला जा रहा था, परन्तु उसपर धृष्टता के लक्षण दिखाई पड़ रहे थे। मर्यान्का के तीखे उत्तर को सुनकर उसकी भौंहों में बल पड़ गये।

"घोड़े पर चढ़ आओ। मैं तुम्हे पहाड़ों पर ले चलूँगा, मेरी छबीली!" जैसे अपनी उदासी दूर करते हुए वह सहसा बोल उठा। मर्यान्का की ओर झुकते हुए उसने उसके कान में कहा, "मैं तुम्हे चूमूँगा। ओह! कैसे चूमूँगा!"

दोनों की आँखें चार हुई। मर्यान्का का चेहरा लाल हो गया और वह एक क़दम पीछे हट गई।

"तुम तो मुझे कुचल ही डालोगे," वह बोली और सिर झुकाते हुए अपने उन सुन्दर पैरो की तरफ देखने लगी जिनमें वह कसे हुए हल्के नीले रग के ऊचे मोज़े और चाँदनी के कामवाली लाल रग की चप्पले पहने थी।

लुकाश्का उस्तेन्का की ओर बढा और मर्यान्का उस स्त्री की बगल में बैठ गई जिसकी गोद में एक बच्चा था। बच्चे ने अपने छोटे और भरे-पूरे हाथ फैलाकर मुद्राओ का हार पकड लिया जो मर्यान्का की नीली बेशमेत पर लटक रहा था। मर्यान्का बच्चे की ओर झुकी और लुकाश्का को तिरछी नज़रो से देखने लगी। लुकाश्का अपने कोट के नीचे से अपनी काली बेशमेत की जेब मे से मिठाइयो तथा बीजो का एक बडल निकाल रहा था।

"यह लो तुम सब को देता हूँ," उस्तेन्का को बडल पकडाते और मर्यान्का की ओर मुस्कराते हुए उसने कहा।

मर्यान्का के चेहरे पर घबडाहट के लक्षण प्रकट हो रहे थे। ऐसा लगता था कि उसकी सुन्दर आँखो के सामने कुहरा छा गया हो। वह अपना रूमाल खीचकर ओठो तक ले आई और अपना सिर उस सुन्दर बच्चे पर, जो अभी तक उसका मुद्राओ का हार पकडे हुए था, झुकाकर उसे चूमने लगी। बच्चे ने अपने छोटे छोटे हाथ उसकी उठी हुई छाती में ठेल दिये और अपना पोपला मुँह फैलाकर चीखने लगा।

"तू तो बच्चे का गला ही घोट देगी!" बच्चे की माँ ने उसे हटाते हुए कहा और बेशमेत खोलकर उसे दूध पिलाने लगी। "चल हट और जाकर अपने छोकरे का मान-मनौअल कर।"

"मैं अभी जाऊँगा, घोडा बाँधूंगा और फिर नज़ारका को साथ लेकर लौट आऊँगा, तब रात भर छनेगी," लुकाश्का बोला। घोडे को चाबुक से छूकर वह लडकियो को छोडकर आगे बढ गया और एक गली मे मुडकर नज़ारका के साथ उन मकानो तक पहुँच गया जो पास पास बने हुए थे।

"लो, हम पहुँच गये! जल्दी करो और शीघ्र वापस आ जाओ!" एक मकान के सामने घोडे से उतरते हुए लुकाश्का ने अपने साथी से कहा और घोडा अपने मकान के फाटक में ले गया।

"हलो, स्तेप्का?" वह अपनी गूंगी बहन से बोला जो दूसरो की भाँति अच्छे अच्छे कपडे पहने घोडा पकडने चली आ रही थी। लुकाश्का ने इशारो से उसे बताया कि वह घोडे को चारे के पास ले जाय लेकिन उसे खोले नही।

गूगी ने भनभनाहट जैसी कुछ आवाज़ की, जो वह प्राय किया करती थी, और घोडे की तरफ इशारा करते हुए उसकी नाक चूम ली। इसका मतलब था कि वह घोडे को प्यार करती है और घोडा बहुत सुन्दर है।

"क्या हाल है माँ? शायद तुम अभी तक वाहर भी नही गईं?" लुकाश्का ने पुकारा और वन्दूक थामते हुए दालान की सीढियाँ चढने लगा। वूढी माँ ने दरवाज़ा खोला। "अरे तुम! मैंने तो कभी सोचा भी न था कि तुम आओगे। मुझे आशा भी न थी," वूढी वोली, "क्यो! किरका ने तो कहा था कि तुम नही आओगे।"

"माँ थोडी चिखीर तो लाओ, नज़ारका आ रहा है। हम सब मिल कर उत्सव मनायेंगे।"

"हाँ, हाँ, लुकाश्का! अभी लाई!" वूढी कहने लगी, "आज तो औरते भी आनन्द मना रही हैं। मै समझती हूँ हमारी गूंगी भी किसी से पीछे नही है।"

माँ ने चाभियाँ ली और जल्दी जल्दी चिखीर लेने चल दी।

घोडा वाँध चुकने तथा कन्धे से वन्दूक उतारने के वाद नज़ारका लुकाश्का के घर लौटा, और भीतर चला गया।

७

"तुम्हारे स्वास्थ्य की कामना करते हुए!" माँ के हाथ से चिखीर भरा प्याला लेते तथा उसे अपने झुके हुए सिर तक उठाते हुए लुकाश्का बोला।

"यह खराब बात है!" नजारका ने कहा, "चचा बुर्लाक ने जो कुछ कहा तुमने सुना? 'क्या तुमने बहुत-से घोडे चुराये हैं?' लगता है उसे मालूम है।"

"पुराना खुर्राट है!" तुरन्त लुकाश्का ने उत्तर दिया, "लेकिन इससे क्या!" सिर हिलाते हुए उसने कहा, "इस समय तक वे नदी के उस पार चले गये होंगे। जाओ और तलाश कर लो।"

"फिर भी हरकत तो बेजा है।"

"क्या बेजा हरकत है? कल उसे थोडी-सी चिखीर पिला देना और फिर सब ठीक। आओ अब जशन मनाएँ। पियो!" लुकाश्का चचा येरोश्का के लहजे में बोला, "हम सडको पर जाकर छोकरियो के साथ आनन्द मनायेंगे। तुम जाओ और थोडा शहद ले आओ। या ठहरो, हम अपनी गूँगी को ही भेज देंगे। हम लोग सुबह तक ऐसा ही जशन मनायेंगे।"

नजारका मुस्करा रहा था। "क्या यहाँ हमें देर तक रुकना है?" उसने पूछा।

"इसके पहले कि हम जशन मनायें तुम दौडकर थोडी वोदका (शराब) तो ले आओ! पैसा यह रहा।"

नजारका सिर झुकाकर यामका के यहाँ से वोदका लाने दौड गया।

शिकारी चिडियों की भाँति चचा येरोश्का और येरगुशोव ने भी सूँघ लिया था कि जशन कहाँ मनाया जा रहा है। एक के बाद एक दोनो आ धमके। दोनो वुत्त थे।

"आधी बाल्टी चिखीर और," दोनो की आवभगत के जवाब में लुकाश्का माँ को सम्बोधित करके चिल्लाया।

"अच्छा अब बता तूने उन्हे कहाँ चुरा रखा है! शैतान कही का!" चचा बोला, "तू अच्छा लडका है। मैं तुझे चाहता हूँ।"

"सच, चचा " हँसते हुए लुकाश्का ने जवाब दिया। "कैडेटो से मिठाइयाँ ले लेकर उन्हे सुन्दरियो को देते हो वडे घिसे हुए हो "

"यह ठीक नही, ठीक नही! ओह मार्का!" और बूढा हँसते हँसते लोट-पोट हो गया, "और वह बदमाश कैसा घिघिया रहा था, कहता था 'जाकर मेरा इन्तज़ाम कर देना।' उसने मुझे एक बन्दूक देने का भी वादा किया था। लेकिन मैं नही लूंगा। मैंने सब ठीक कर लिया है। मुझे बस तुमपर तरस आता है। हाँ, तो बताओ तुम कहाँ कहाँ रहे?" और बूढे ने तातारी बोलना शुरू कर दी।

लुकाश्का ने तड तड जवाव दिया। येरगुशोव, जो अधिक तातारी नही जानता था, कभी कभी एक दो शब्द रूसी में कह देता था।

"मैं कहता हूँ कि उसने घोडे खिसका दिये है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ," वह बोला।

"गिरेई तथा मैं साथ साथ चले।" (कज्ज़ाक समझ रहा था कि गिरेई-खाँ को गिरेई कहना उसकी वहादुरी का सूचक था।) "नदी के ठीक पार वह बराबर यही शेखी मारता रहा कि वह सारा स्टेपी जानता है और ठीक ठीक रास्ता दिखा सकता है। और हम लोग घोडो पर सवार चलते गये, चलते गये और मेरा गिरेई रास्ता भूल गया और इधर-उधर चक्कर काटने लगा, उसे गाँव का रास्ता न मिला। हम लोग बहुत अधिक दाहिने चले गये होगे। हम बराबर आधी रात तक घूमते फिरे, आखिर जब हमने कुत्तो का भौकना सुना तो जान में जान आई।"

"बेवकूफो!" चचा येरोश्का ने कहना शुरू किया, "अरे हम भी स्टेपी

में रास्ता भूला करते थे। कौन नही भूलता? लेकिन मै तो किसी टीले पर चढ जाता था और भेडियो की भाँति इस तरह चिल्लाया करता था।" उसने अपने हाथ मुंह पर रखे और भेडियो जैसी तेज़ वोली वोलने लगा। "फौरन कुत्ते जवाव देंगे हाँ तो आगे क्या हुआ—तुमने उन्हे ढूढा?"

"हमने जल्दी ही उन्हे खदेड दिया! नजारका को तो कुछ नगई औरतो ने पकड ही लिया था।"

"पकड लिया था?" नज़ारका ने आहत होकर कहा। वह अभी अभी आकर खडा ही हुआ था।

"हम फिर आगे वढे और फिर गिरेई रास्ता भूल गया और हम लोगो को रेत के टीलो के पास ले आया। हम समझ रहे थे कि हम तेरेक की तरफ वढ रहे है लेकिन हम तो ठीक उसकी उल्टी दिशा में जा रहे थे।"

"तुम्हे तारे देखकर रास्ता ढूढना था," येरोश्का वोला।

"यही तो मै भी कहता हूँ," येरगुशोव वीच में ही वोल पडा।

"हाँ ठीक कहते हो। जब चारो ओर घोर अन्धकार हो तो देखने मे फायदा भी क्या। मैंने सारे प्रयत्न किये और आखिर एक घोडी को लगाम लगाई और अपना घोडा छोड दिया यह सोचकर कि वह हमें ठीक रास्ते ले चलेगा। और तुम क्या समझते हो कि फिर क्या हुआ! वह एक दो वार जमीन की ओर देखकर हिनहिनाया और फिर तेज़ी मे दौडता हुआ हमें सीधा गाँव ले आया। और यह तो कहो ऐसा भाग्य से ही हुआ क्योकि उस समय सुवह होनेवाली थी। उन्हे जगल मे छिपा देने का हमें मुश्किल मे ही समय मिल सका था। नगीम नदी के पार आ गया था और उन्हे ले गया था।"

येरगुशोव ने अपना सिर हिलाया, "यही तो मैं भी कहता हूँ। बडे होशियार हो। क्या तुम्हे उसकी ज्यादा कीमत मिली?"

"जो मिला वह यह रहा," कहकर उसने अपनी जेब खनखना दी।

इसी समय लुकाश्का की माँ कमरे में आ गई और उसकी वात आधी ही रह गई।

"पियो!" वह चिल्लाया।

"हाँ, मैं और गिरचिक एक बार बहुत रात वीते चले थे, घोडो पर" येरोश्का ने अपनी दास्तान छेड दी।

"वन्द भी करो! इसके खतम होने की नौबत भी आयेगी?" लुकाश्का वोला, "मैं जा रहा हूँ।" और प्याला पी चुकने और पेटी बांध लेने के वाद वह वाहर निकल गया।

३८

जब लुकाश्का सडक पर निकला उस समय अंधेरा हो चुका था। शरदकालीन रात्रि शान्त और स्वच्छ थी। चौक के एक ओर उगे हुए लम्वे और घने चिनार वृक्षो के पीछे से सुनहला चाँद, अपनी सम्पूर्ण ज्योत्स्ना लेकर उदय हो रहा था। धुआँ घरो की चिमनियो से उठ उठकर गाँव में फैल रहा था और कुहरे से एकाकार होकर लुप्त होता जा रहा था। इधर-उधर खिडकियो में से प्रकाश झाँकता दिखाई पड रहा था और हवा में किज्याक, अगूर के गूदो और कुहरे की गध फैल रही थी। गाँव के घरो से हँसी-मज़ाक, गानो और वीजे फोडे जाने की आवाज़ें सडक पर आने-जानेवालो के कानो में पड रही थी, परन्तु वे दिन की अपेक्षा इस समय अधिक स्पष्ट थी। घरो के चारो ओर सफेद सफेद रूमालो और टोपियो की कतारे झलक दे रही थी।

चौकवाली दूकान का दरवाज़ा खुला था और प्रकाश मे जगमगा रहा था। उसके सामने कज्ज़ाक और लडकियो के श्याम गौर शरीर अधेरे में दिखाई पड रहे थे। उनके सुरीले गाने, उनके कहकहे और उनकी बाते दूर से ही कानो में पड रही थी। हाथ में हाथ डाले लडकियो के मण्डल धूल भरे चौक में चक्राकार घूम रहे थे। सब मे साधारण-सी लगनेवाली एक दुबली-पतली लडकी ने एक राग अलापा—

वे आये, वे दोनो आये।
दूर दिशा मे—गहरे वन से,
हरे-भरे शीतल उपवन से,
वे दोनो, दो वीर युवक
अविवाहित, सुन्दर, मन-रजन मे।
चलते चलते ठहर गये
एकाकीपन का भार उठाये।
वे आये, वे दोनो आये।
आई तभी एक सुकुमारी,
जैसे काम-कुज की क्यारी,
बोली—"केवल एक युवक की
बन सकती हूँ प्रेम-दुलारी।"
दोनो ने उसको देखा
कुछ आपस में उलझे-मुस्काये।
वे आये, वे दोनो आये।
सुन्दर युवक बडा कुछ पहले,
हँसी मे, बाल सुनहले,
आया सुकुमारी के उजले

हाथो को हाथो में वह ले।
सभी साथियो को उसने ये
घूम घूमकर वचन सुनाये,
"हम आये, हम दोनो आये।
सुनो साथियो! मेरे प्रियवर!
क्या तुमने अपने जीवन भर
इतनी सुन्दर सुकुमारी से
परिचय का पाया है अवसर?
जिसने मेरी प्रिय पत्नी वन
सुख के ये सव साज सजाये!"
वे आये, वे दोनो आये।

वूढी स्त्रियाँ खडी गाने सुन रही थी। छोटे छोटे लडके-लडकियाँ एक दूसरे के पीछे भाग रहे थे, और युवक चलती-फिरती पुतलियो जैसी सुन्दरियो की ताक-झाँक में लगे थे। कभी कभी तो घेरा तोडकर वे उसमें घुस भी जाते थे। दरवाज़े के अघेरी तरफ अपने अपने चेरकेसियन कोट और भेड की खाल की टोपियाँ पहने वेलेत्स्की और ओलेनिन खडे खडे कज्ज़ाको की कथन-शैली से भिन्न, धीरे धीरे वाते कर रहे थे। और शायद यह जान रहे थे कि लोगो का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट हो रहा है।

लाल वेशमेत पहने छोटी उस्तेन्का और एक नई वेशमेत तथा फ्राक में मर्यान्का, हाथ में हाथ डाले, दूसरी लडकियो के साथ मण्डल वनाकर घूम रही थी। ओलेनिन और वेलेत्स्की इस मसले पर वातचीत कर रहे थे कि उस्तेन्का और मर्यान्का को उस मण्डल से कैसे छीना जाय। वेलेत्स्की सोच रहा था कि ओलेनिन सिर्फ अपना मन-वहलाव चाहता है, जव

कि ओलेनिन अपने भाग्य के फैसले का इन्तज़ार कर रहा था। वह किसी प्रकार मर्यान्का से उस दिन अकेले मिलकर सब कुछ साफ साफ कह देना और उससे यह पूछ लेना चाहता था कि वह उसकी पत्नी हो सकती है या नही और होगी या नही। यद्यपि इस प्रश्न का पहले ही नकारात्मक उत्तर मिल चुका था फिर भी उसे आशा थी कि जब वह उससे अपनी व्यथाएँ कहेगा तो वह उन्हे समझेगी।

"तुमने मुझसे पहले क्यो नही बताया?" बेलेत्स्की बोला, "उस्तेन्का से मै सब कुछ ठीक करवा देता। विचित्र आदमी हो! "

"अब क्या किया जाय! शीघ्र ही किसी दिन मैं तुम्हे इसके बारे में सब कुछ बताऊँगा। ईश्वर के लिए कुछ ऐसा करो कि वह उस्तेन्का के यहाँ आ जाय।"

"ठीक है। यह आसानी से हो सकता है! मर्यान्का, तुम 'किसी सुन्दर मुखवाले युवक की' होना चाहती हो या लुकाश्का की?" मर्यान्का को सम्बोधित करते हुए बेलेत्स्की बोला। परन्तु जब उसे कोई उत्तर न मिला तो उसने उस्तेन्का के पास जाकर उससे मर्यान्का को अपने साथ घर लाने का अनुरोध किया। मुश्किल से उसने अपनी बात पूरी की होगी कि मण्डल के नेता ने दूसरा गाना शुरू कर दिया और लडकियाँ घेरे में एक दूसरे को खीचने लगी। वे गा रही थी—

उपवन के दूसरे छोर से
युवक यहाँ आया, इस ओर,
नगर पार कर, इसी मार्ग से,
आया वह आनन्द-विभोर।
आते ही सकेत किया,
दाहने हाथ से पहली वार,

और दूसरी बार उठाया,
हैट रेशमी फीतेदार।
जब कि तीसरी बार यहाँ
आया तो था बिलकुल चुपचाप,
किन्तु नया-सा दीख रहा था,
उसका सारा कार्य-कलाप।
"मिलने की बस, रही कामना,
हो जाये कुछ तुमसे बात,
क्यो न घूमने आती हो तुम,
इस उपवन में साय-प्रात?
अब से आया करो—कहो
आओगी? ऊपर करो निगाह,
अच्छा, यही कहो, क्या मेरे लिए
हृदय में है कुछ चाह?
कहता हूँ, पछताओगी तुम,
आगे मुझे करोगी याद,
मैंने प्रेम-प्रसाद न पाया
तो होगा फिर तुम्हे विषाद!
मैं तो ऐसा प्रेम करूँगा,
जो चलकर बन जाय विवाह,
मेरे बिना, इन्ही आँखो से,
कहीं न निकले अश्रु-प्रवाह!"
इसका उत्तर मन में तो था,
पर न खुला वाणी का द्वार,
मैं इनकार न कर पाई, हाँ,

ज़रा न कर पाई इनकार।
मैं उपवन में गई घूमने
करने प्रिय से मधुर मिलाप,
आँखें चार हुईं, शरमाईं
और झुका सिर अपने-आप।
कुछ ऐसा सयोग हुआ,
सिर झुकते ही गिर पडा रूमाल,
प्रिय ने देखा, उसे उठाया
और उठाकर हुए निहाल।
बोले—"प्रिये! स्वच्छ हाथो में
ले लो इसे, करो स्वीकार,
कह दो—एक बार ही मैंने
तुमसे पाया है कुछ प्यार!
कुछ भी नही जानता हूँ मैं,
क्या दूंगा तुमको उपहार।
डरता हूँ तुम अपने हाथो
कही न कर दो अस्वीकार।
किन्तु सोचता हूँ मैं अब प्रिय!
ठीक तरह से मन में जाँच,
भेंट करूंगा एक शाल,
बदले में लूंगा चुम्बन पाँच।"

लुकाश्का और नज़ारका घेरे में घुस गये और लडकियो के बीच मटरगश्ती करने लगे। लुकाश्का भी हाथो को झुलाता हुआ गाने लगा। "तुम लोगो में से एक मेरे पास भी आओ न!" वह बोला। लड़कियो ने मर्यान्का

को गुदगुदाया परन्तु वह जाने को राज़ी न हुई। अब हँसी, चुम्बन, चपत और फुसफुसाहट के स्वर भी गाने में अपना योग दे रहे थे।

जब लुकाश्का ओलेनिन के पास से होकर गुज़रा तो उसने उसे देख कर दोस्तो की तरह सिर हिलाया।

"दिमीत्री अन्द्रेइच इधर आकर देखो!" वह बोला।

"अच्छा," ओलेनिन ने रुखाई से जवाब दिया।

बेलेत्स्की झुका और उस्तेन्का के कान म कुछ कहने लगा। उसे उत्तर देने का समय नही था। जब वह चक्र में फिर घूमती हुई आई तो उसने कहा –

"ठीक है हम आयेंगी।"

"और मर्यान्का भी?"

ओलेनिन मर्यान्का की तरफ बढा, "आना ज़रूर, चाहे एक ही मिनट के लिए। मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

"अगर दूसरी लडकियाँ आयेंगी, तो आऊँगी।"

"क्या तुम मेरे प्रश्न का जवाब दोगी?" उसकी ओर झुकते हुए ओलेनिन बोला, "इस समय तुम खुश दीख रही हो।" मर्यान्का उसके पास से हटकर दूसरी ओर चली गई। वह भी उसके पीछे चला आया। "दोगी न?"

"कौनसा प्रश्न?"

"वही जो उस दिन पूछा था," झुकते हुए उसके कान में ओलेनिन ने कहा, "मुझसे विवाह करोगी?"

मर्यान्का ने एक क्षण सोचा, "बताऊँगी," उसने कहा, "आज रात बताऊँगी।" और रात के अंधेरे में उसकी बडी बडी आँखें उसे सदय दृष्टि से देखने लगी।

ओलेनिन फिर उसके पीछ लगा। उसके निकट रहने में उसे आनन्द की अनुभूति हो रही थी।

परन्तु लुकाश्का ने विना गाना वन्द किये हुए ही एकाएक उसे मजबूती से पकडा और घेरे के वीच लाकर खडा कर दिया। ओलेनिन सिर्फ इतना ही कह पाया था कि "उस्तेन्का के यहाँ आना" और फिर अपने साथी के पास चला गया। गाना समाप्त हुआ। लुकाश्का ने अपने ओठ पोछे, मर्यान्का ने भी पोछे और दोनो ने एक दूसरे का चुम्वन किया।

"नही, नही, पाँच चुम्वन!" लुकाश्का वोला। अव नाच-गाने की जगह वातचीत, हँसी-कहकहो और भाग-दौड ने ले ली थी। लुकाश्का ने लडकियो को मिठाइयाँ वाँटनी शुरू की। ऐसा लगता था कि वह ज्यादा पी गया है। "ये सव के लिए है।" गर्व, परिहासात्मक करुणा और आत्म-प्रशसा के साथ वह वोला, "लेकिन जो सिपाहियो के पीछे जाना चाहे वह इस घेरे से निकल जाय!" ओलेनिन पर क्रोधपूर्ण दृष्टि डालते हुए उसने कहा।

लडकियो ने उससे मिठाइयाँ छीन ली और हँसती हुई आपस में झगडने लगी। वेलेत्स्की और ओलेनिन एक तरफ हट गये।

लुकाश्का को मानो अपनी उदारता पर शर्म आ रही थी। उसने अपनी टोपी उतारी और आस्तीन से माथा पोछता हुआ मर्यान्का और उस्तेन्का के पास आकर कहने लगा। "अच्छा, यही कहो—क्या मेरे लिए हृदय में है कुछ चाह?" उसने उस गाने के शव्द दोहराये, जिसे लोग अभी गा चुके थे, और मर्यान्का की तरफ घूमकर उसने क्रोध से वे शव्द फिर दुहराये, "क्या मेरे लिए हृदय में है कुछ चाह? जो चलकर वन जाय विवाह, मेरे विना, इन्ही आँखो से, कही न निकले अश्रु-प्रवाह!" उस्तेन्का और मर्यान्का दोनो का एक साथ आलिगन करते हुए लुकाश्का ने कहा। उस्तेन्का छूटकर अलग हो गई, और हाथ घुमाते हुए उसने लुकाश्का की पीठ पर एक ऐसा घूँसा जडा कि खुद उसी के हाथ में चोट आ गई।

"क्या नाच का दूसरा दौर चलाने की मरजी है?" उसने पूछा।

"दूसरी लड़कियाँ चाहे तो चलायें," उस्तेन्का ने जवाब दिया, "लेकिन मैं घर जा रही हूँ और मर्यान्का भी।"

मर्यान्का की कमर में हाथ डाले डाले लुकाश्का उसे भीड़ से हटाकर एक मकान के अँधेरे कोने की तरफ ले गया।

"मत जाओ, मर्यान्का, मत जाओ," उसने कहा, "हम आखिरी बार जशन मनायेंगे। फिर घर जाना और मैं भी तुम्हारे पास आऊँगा!"

"घर जाकर क्या करूँ? छुट्टियाँ आनन्द मनाने के लिए है। मै उस्तेन्का के यहाँ जा रही हूँ," मर्यान्का बोली।

"तुम्हे मालूम है कि मै इतने पर भी तुमसे विवाह करूँगा!"

"अच्छा, अच्छा," मर्यान्का बोली, "जब वक्त आयेगा तो देखा जायेगा।"

"तो तुम जा रही हो," लुकाश्का ने कर्कशता के साथ कहा और उसे अपने पास खीचते हुए चूम लिया।

"बन्द भी करो यह सब। मुझे जाने दो।" उसके हाथो से अपने को छुड़ाती हुई मर्यान्का एक तरफ हट गई।

"अरी छोकरी, याद रखना इसका नतीजा खराब होगा," उसे फटकारते हुए लुकाश्का बोला और खड़ा खड़ा सिर हिलाता रहा, "मेरे बिना, इन्ही आँखो से, कही न निकले अश्रु-प्रवाह!" और उसके पास से हटते हुए उसने दूसरी लड़कियो से कहना शुरू किया, "आओ दूसरा गाना हो!"

लुकाश्का ने जो कुछ भी कहा था उससे मर्यान्का डर गई और घबड़ा गई।

वह रुकी "काहे का नतीजा खराब होगा?"

"उसी का!"

"किसका?"

"इसका कि उस सिपाही-मेहमान के साथ मौज उडाओ और मेरी चिन्ता न करो।"

"जब तक मैं चाहूँगी तब तक चिन्ता करूँगी। न तुम मेरे बाप हो न माँ। आखिर मुझसे चाहते क्या हो? कह तो दिया जिसे मैं चाहूँगी, उसकी चिन्ता करूँगी।"

"खैर ठीक है" लुकाश्का बोला, "मगर फिर याद रखना।" वह दुकान की तरफ बढा, "अरी छोकरियो रुक क्यो गईं? नाचे जाओ। नज़ारका थोडी चिखीर और लाओ।"

"क्या वे आयगी?" बेलेत्स्की को सम्बोधित करते हुए ओलेनिन ने पूछा। "वे चली आयगी," बेलेत्स्की ने जवाब दिया, "आओ न, हमें 'बाल' की तैयारी करनी है।"

३९

जब ओलेनिन मर्यान्का और उस्तेन्का के पीछे पीछे बेलेत्स्की के मकान से निकला, उस समय काफी रात हो चुकी थी। उसे सामने की अँधेरी गली मे जाती हुई मर्यान्का के सफेद रूमाल की झलक दिखाई पड रही थी। स्वर्णिम चाँद स्टेपी की ओर अस्त हो रहा था। रुपहला कोहरा समस्त गाँव पर छाया हुआ था। सब कुछ शान्त था। कही रोशनी नही थी और सिवा युवतियो के पैरो की चापो के और कही कुछ न सुनाई पडता था। ओलेनिन का हृदय तेज़ी से धडकने लगा। रात्रि की नम हवा ने उसके सन्तप्त चेहरे पर शीतलता बिखेर दी। उसने असीम आकाश की ओर देखा और फिर उस मकान को देखने के लिए पीछे मुडा जहाँ से वह अभी अभी निकला था। बत्ती बुझ चुकी थी। एक बार फिर उसने अधेरे म मे दिखाई देती हुई लडकियो की परछाईं देखी। सफेद रूमाल कोहरे में अदृश्य हो

चुका था। इस समय वह इतना प्रसन्न था कि उसे अकेले रहने में डर लग रहा था। वह दालान से बाहर कूदा और लडकियो के पीछे दौडा।

"जाने भी दो, कोई देख ले तो " उस्तेन्का ने कहा।

"परवाह नही।"

ओलेनिन दौडकर मर्यान्का के पास गया और उसे अपनी भुजाओ में भर लिया। मर्यान्का ने छुडाने की कोई कोशिश न की।

"तुमने काफी चुम्बन तो कर लिये?" उस्तेन्का ने कहा, "विवाह कर लो और तब चाहे जितना चूमना। लेकिन अभी तुम्हे ठहरना होगा।"

"नमस्ते, मर्यान्का, कल मैं तुम्हारे पिता मे मिलने आऊँगा और उनसे वात कर लूंगा। तुम कुछ मत कहना।"

"मैं क्यो कहूँगी?" मर्यान्का वोली।

दोनो लडकियो ने दौडना शुरू कर दिया। ओलेनिन अकेला जा रहा था और जो कुछ हो चुका था उसपर सोचता जा रहा था। वह पूरी शाम उसके साथ अगीठी के पास एक कोने में अकेले बैठा रहा। उस्तेन्का एक क्षण के लिए भी घर के वाहर न गई परन्तु सारे समय दूसरी लडकियो और वेलेत्स्की के साथ मटरगश्ती करती रही। ओलेनिन मर्यान्का के साथ बरावर कानाफूसी करता रहा।

"क्या तुम मुझसे विवाह करोगी?" उमने पूछा था।

"तुम मुझे धोखा दोगे और छोड दोगे," उसने खुशी खुशी उत्तर दिया था।

"परन्तु क्या तुम मुझे प्यार करती हो? ईश्वर के लिए सच सच वताना।"

"क्यो प्यार न करूँ? तुम कोई काने-कुतरे हो क्या," हँसते हुए मर्यान्का ने उत्तर दिया था और उसके हाथो को अपने सख्त हाथो से दवा लिया था। "कैसे सफेद सफेद हाथ हैं तुम्हारे—मक्खन जैसे," वह वोली थी।

"मैं सच सच से पूछ रहा हूँ। बताओ मुझसे व्याह करोगी?"

"क्यो नही, यदि मेरे पिता जी मुझे तुम्हे दे दें तो।"

"तो फिर इतनी बात याद रखना कि अगर तुमने मुझे धोखा दिया तो मै पागल हो जाऊँगा। कल मैं तुम्हारे माँ-बाप से बात करूँगा और उनके सामने विवाह का प्रस्ताव रखूँगा।"

सहसा मर्यान्का हँस पडी।

"क्या बात है?"

"बडी विचित्र बात है!"

"नही, सच कहता हूँ। मै एक अगूर का बाग और मकान खरीदूंगा, और कज्ज़ाको में अपना नाम लिखा लूंगा।"

"मगर फिर यह याद रहे कि तुम्हे दूसरी लडकियो का पीछा नही करना होगा। इस मामले में मैं बडी सख्त हूँ।"

ओलेनिन इन्ही सब बातो को दुहराता हुआ खिल उठता। उनकी स्मृति कभी उसके लिए पीडा का कारण सिद्ध होती और कभी इतनी प्रसन्नता का कि उसकी साँस तक रुक जाती। पीडा का कारण यह था कि जितनी भी देर तक वह उसके पास बाते करती रही उसी तरह शान्त बैठी रही जैसी कि हमेशा रहती थी। वह नई परिस्थितियो से ज़रा भी उत्तेजित हुई हो ऐसा नही लग रहा था। ऐसा प्रतीत होता कि वह उसका विश्वास नही कर रही है और न उसे भविष्य की ही कोई चिन्ता है। उसे लगा कि वह उसे प्यार तो करती है, परन्तु यह प्यार क्षणिक है। शायद आगे चलकर वह उससे कोई सम्बन्ध भी न रखे। वह खुश इसलिए था कि उसकी बात उसे सच लगती थी और उसने उसकी बन जाने की सहमति दे दी थी।

"हाँ," उसने सोचा, "जब वह बिल्कुल मेरी हो जायेगी तब हम एक दूसरे को समझेंगे। ऐसा प्रेम शब्दो से नहीं प्रकट किया जा सकता।

इसके लिए तो जीवन, बल्कि सारे जीवन, की ज़रूरत है। कल सब कुछ ठीक हो जायेगा। मैं अब इस प्रकार नही रह सकता। कल मैं उसके पिता, वेलेत्स्की और गाँव भर से सब कुछ कह दूंगा।"

लुकाश्का पूरी दो राते जाग चुकने के बाद शराब के नशे में अब इतना चूर हो गया था कि ज़िन्दगी में पहली बार उसके पैर उसका साथ नही दे रहे थे और यही कारण था कि वह घर न जाकर यामका के यहाँ ही पड रहा।

४०

अगले दिन ओलेनिन रोज से तडके उठा और उसे जो कुछ भी करना था उसकी उसने अच्छी तरह कल्पना कर ली। उसे याद आ रहे थे वे चुम्बन जो मर्यान्का ने उसपर अंकित किये थे और वे शब्द जो उसने उसके हाथो को अपने हाथ में लेते हुए कहे थे "कितने सफेद है तुम्हारे हाथ।"

वह उछल पडा और उसने तुरन्त अपने मेज़बानो के घर जाने तथा यह कहने की ठान ली कि वे मर्यान्का के साथ मेरे विवाह की स्वीकृति दे दें। सूर्योदय नही हुआ था फिर भी सडक पर असाधारण चहल-पहल थी। लोग पैदल या घोडो पर आ जा रहे थे और आपस मे बाते कर रहे थे। उसने अपना चेरकेसियन कोट पहना और जल्दी जल्दी दालान के बाहर निकला गया। उसके मेज़बान अभी तक सोकर नही उठे थे। पाच कज़्ज़ाक घोडो पर जा रहे थे और ज़ोर ज़ोर से बाते कर रहे थे। सबसे सामने की ओर चौडी पीठवाले अपने कबर्दा घोडे पर चढा हुआ लुकाश्का था। सभी कज़्ज़ाक एक ही साथ बोल रहे थे, चिल्ला रहे थे। इसलिए वे क्या कह रहे थे यह समझ पाना प्राय असम्भव था।

"उस ऊपरवाले खम्भे तक जाओ," एक चिल्लाया।

"घोडे पर ज़ीन कसो और जल्दी जल्दी हमारे पीछे चले आओ," दूसरा बोला।

"दूसरे फाटक से नजदीक पडेगा।"

"तुम लोग क्या बकबक कर रहे हो," लुकाश्का चिल्लाया, "बेशक हमें बीचवाले फाटक में से जाना चाहिए।"

"हाँ, उधर से पास पडेगा," एक कज्ज़ाक बोला। वह धूल से भरा हुआ पसीने से तर-बतर, एक घोडे पर बैठा था। घोडा बुरी तरह हाँफ रहा था।

पिछली रात अधिक पी जाने के कारण लुकाश्का का चेहरा लाल और सूजा हुआ था और टोपी पीछे हटकर चाँद पर आ गई थी। वह इतने अधिकार से बोल रहा था जैसे कोई अफसर हो।

"क्या बात है? तुम लोग कहाँ जा रहे हो?" कज्ज़ाको का ध्यान मुश्किल से अपनी ओर आकृष्ट करते हुए ओलेनिन बोला।

"हम लोग अब्रेको को पकडने निकले है। वे टीलो में छिपे हुए हैं। हम भी अभी ही जा रहे है परन्तु हमारे पास काफी जवान नही है।"

और कज्ज़ाक बराबर चिल्लाते रहे। जैसे जैसे वे सडक पर बढते गये अधिक से अधिक कज्ज़ाक उनके साथ शामिल होते गये। ओलेनिन को लगा कि इस समय पीठ दिखाना मुनासिब न होगा। और फिर, उसने यह भी सोच रखा था कि वह शीघ्र ही वापस आ जायगा। उसने कपडे पहने, बन्दूक भरी, घोडे पर कूदकर बैठा—जिसे वन्यूशा ने साज-सामान लगाकर बहुत कुछ ठीक कर रखा था—और गाँव के फाटको के पास कज्ज़ाको के साथ मिल गया। कज्जाक घोडो से उतर चुके थे और एक लकडी के प्याले में चिख़ीर भरकर, जिसे वे साथ साथ लाये थे, उसे चारो तरफ घुमाने और बाँटने और अभियान की सफलता की कामना में पीने लगे थे। उन्ही में से एक

छैल-छबीला कार्नेट भी था जो इत्तिफाक से गाँव में आया हुआ था। वह नौ कज्ज़ाको की एक टोली का नेतृत्व कर रहा था। सभी कज्ज़ाक मामूली सिपाही थे और यद्यपि कार्नेट को हुक्म देने का अधिकार था फिर भी वास्तविकता यह थी कि वे सिर्फ लुकाश्का की ही आज्ञा मान रहे थे।

ओलेनिन पर उन्होंने ज़रा भी ध्यान न दिया और जब वे घोडो पर बैठकर चल दिये तो वह यह दरयाफ्त करने के लिये कार्नेट के पास गया कि आखिर यह सब हो क्या रहा है। कार्नेट सामान्यत सौम्य स्वभाव का था। उसका ओलेनिन के साथ व्यवहार भी बडा मृदु था। लेकिन अब वह भी बडे घमण्ड से उसके साथ सलूक करता था। बडी मुश्किल से ओलेनिन की समझ में आ पाया कि जिन स्काउटो को अब्रेको की तलाश में भेजा गया था उनसे उनका मोर्चा गाँव से लगभग छ मील दूर हुआ था। ये अब्रेक एक गड्ढे में घुसकर उनपर गोलियाँ बरसाने लगे थे और उन्होंने अपने इस इरादे की घोषणा की थी कि वे हथियार न डालेगे। जो कारपोरल दो कज्ज़ाको के साथ स्काउटो का काम कर रहा था वह अब्रेको की निगरानी के लिए रह गया था और उसने एक को मदद लेने के लिए भेजा था।

सूर्योदय हो रहा था। गाँव के बाहर चारो ओर लगभग तीन मील तक का इलाका ऊसर और सुनसान स्टेपी था। हाँ, इधर-उधर मवेशियो के खुरो के चिन्ह अवश्य दिखाई पड जाते। कही कही घास की हरियाली या छोटे छोटे नरकटो की झाडी और हल्की पगडडियाँ भी नज़र आ जाती। दूर क्षितिज के पास नगई जाति के खानाबदोशो के शिविर भी दीख पडते। वहाँ छाया का नामोनिशान न था और सारी जगह मनहूसियत छाई हुई थी। स्टेपी में सूर्योदय तथा सूर्यास्त हमेशा लाली बिखेरते हुए दृष्टिगत होते। जब हवा चलती तो बालू एक स्थान से उड उडकर दूसरे स्थानो पर टीलो के रूप में इकट्ठा हो जाती। जब वातावरण शान्त रहता है, जैसा कि उस दिन प्रात काल था, तो चारो ओर सन्नाटा रहता

है और किसी प्रकार की कोई आवाज़ नही सुनाई पडती। उस दिन प्रात काल स्टेपी के चारो ओर शान्ति थी यद्यपि सूर्य निकल चुका था। वातावरण में वीरानी और नरमी थी। कोई हलचल न थी, केवल घोडो की हिनहिनाहट या टापो की आवाज सुनाई दे जाती और वह भी शीघ्र ही विलीन हो जाती। आदमी घोडो पर मौन चल रहे थे। कज्ज़ाक प्राय अपने हथियार इस ढग से लेकर चलता है कि किसी प्रकार की कोई भी झनझनाहट न हो। हथियारो का झनझना जाना कज्ज़ाक के लिए बेइज्ज़ती की बात समझी जाती है। गाँव से दो कज्ज़ाक और आकर उमी टोली में शामिल हो गये। उन्होने भी दो चार बाते की और फिर साथ हो लिये। लुकाश्का का घोडा लडखडाया अथवा शायद उसका पैर घास में उलझा और वह बेचैन हो उठा। यह कज्ज़ाको में अपशकुन समझा जाता है। और इस समय तो इसका विशेष महत्व था। दूसरे लोगो ने इधर-उधर देखा और तब वे एक ओर घूम गये। उन्होने यह देखने का प्रयत्न नही किया कि क्या हो गया है। लुकाश्का ने लगाम खीची, तेवरियाँ चढाई, दाँत पीसे और चाबुक अपने सिर के ऊपर घुमाया। उसका कबर्दा घोडा, यह न जानते हुए कि पहले कौनसा पैर आगे बढाया जाय, कभी इधर पैर रखता, कभी उधर और ऐसा लगता मानो हवा में उडने ही वाला है। लुकाश्का ने उसे फिर एड लगाई और फिर चाबुक फटकारा। उसने दो तीन बार यही किया। घोडा दाँत दिखाते तथा पूँछ फैलाते हुए, दूसरो से कुछ दूरी पर, अपने पिछले पैरो पर हिनहिनाकर खडा हो गया।

"कितना सुन्दर घोडा है!" कार्नेट ने नज़र लगाई।

"घोडा क्या है, शेर है," एक बूढे कज्ज़ाक ने कहा।

कज्ज़ाक बढते गये, कभी धीरे धीरे, कभी दुलकी चाल से और कभी तेज़। घोडो के टापो की ये आवाज़ें उस शान्त वातावरण को भग कर रही थी।

लगभग आठ मील तक स्टेपी मे चल लेने के पश्चात् उन्हे केवल एक नगई तम्बू दिखाई दिया जो किसी गाडी में रखा हुआ उनसे लगभग एक मील की दूरी पर आगे बढ रहा था। एक नगई परिवार स्टेपी के एक भाग से दूसरे भाग को जा रहा था। इसके बाद उन्हे फटे-पुराने कपडे पहने दो नगई स्त्रियाँ पीठ पर टोकरी लिए मिली जो स्टेपी में घूमनेवाले जानवरो का गोबर बटोरती फिर रही थी। कार्नेट उनकी भाषा अच्छी तरह न जानता था। उसने उनसे कुछ पूछने का प्रयत्न किया परन्तु उन्होने उसकी बात न समझी और भयभीत एक दूसरे को देखने लगी।

लुकाश्का उन दोनो के पास तक गया, घोडा रोका और विनम्रता से उनका अभिवादन किया। अब स्त्रियो की जान में जान आई और वे उससे उसी प्रकार खुलकर बातचीत करने लगी जैसे अपने भाई से करती हैं।

"एई, एई कोप अब्रेक!" उन्होने उस ओर इशारा करते हुए कहा जिधर कज्ज़ाक जा रहे थे। ओलेनिन समझ गया कि वे कह रही हैं कि वहाँ पर "बहुत से अब्रेक हैं।"

ओलेनिन ने इस प्रकार का मोर्चा स्वय कभी न देखा था। हाँ, चचा येरोश्का से उसके बारे में सुना ज़रूर था। अब ओलेनिन को उसे देखने की भी इच्छा हुई।

वह चाहता था कि कज्ज़ाक उसे पीछे ही न छोड दें। उसने कज्ज़ाको पर प्रशसात्मक दृष्टि डाली और उनकी बाते बडे ध्यान से सुनता रहा ताकि खुद भी अपने विचार प्रकट कर सके। यद्यपि वह अपने साथ एक तलवार और भरी हुई बन्दूक लेता आया था तथापि जब उसने देखा कि कज्ज़ाक उससे कन्नी काट रहे हैं तो उसने मोर्चे में कोई भी भाग न लेने का निश्चय किया, क्योकि वह समझता था कि अपने दस्ते में उसने अपने शौर्य का काफी परिचय दे दिया है। दूसरी बात यह थी कि इस समय वह

बहुत प्रसन्न था। सहसा दूर से गोली की आवाज सुनाई दी। कार्नेट उत्तेजित हो उठा और कज्जाको को हुक्म देने लगा कि किस तरह से आपस में बट कर और किस दिशा से कैसे हमला या बचाव किया जाय। परन्तु ऐसा लग रहा था कि कज्जाक उसका हुक्म मानने को तैयार न थे। वे देख रहे थे कि लुकाश्का क्या कहता है, कौनसा रुख अपनाता है। सारी आँखें लुकाश्का ही पर लगी थी। लुकाश्का के चेहरे पर गम्भीरता थी और घबडाहट के कोई भी लक्षण न थे। उसने घोडे को एड लगाई और उसे दौडा दिया। दूसरे लोग पीछे रह गये। उसकी घूरती हुई आँखें सामने लगी थी।

"वह रहा एक घुडसवार," घोडे को लगाम लगाते और दूसरो के साथ होते हुए लुकाश्का बोला।

ओलेनिन ने ध्यान से देखा, परन्तु किसी को देख न सका।

कज्जाको ने दो घुडसवारो को पहचाना और चुपके चुपके उनकी तरफ बढ गये।

"वे अब्रेक हैं क्या?" ओलेनिन ने पूछा। कज्जाको ने इस प्रश्न का कोई उत्तर न दिया। यह प्रश्न उन्हे बडा, बेतुका लग रहा था। अगर अब्रेक घोडो पर सवार होकर तेरेक के इस पार आ गये हैं तो बडे गधे है।

"वह जो हाथ हिलाता हुआ दिखाई पड रहा है हमारा मित्र रोदका होगा।" उन दो घुडसवारो की ओर, जो अब साफ दिखाई पडने लगे थे, इशारा करते हुए लुकाश्का बोला, "देखो, वह इस ओर ही आ रहा है।"

कुछ मिनटो बाद यह स्पष्ट हो गया कि दोनो घुडसवार कज्जाक स्काउट है और कोई नही। कारपोरल घोडे पर सवार लुकाश्का के पास चला आ रहा था।

"क्या वे लोग दूर होगे?" लुकाश्का बस इतना ही कह पाया था।

इसी समय लगभग तीस कदम की दूरी से आती हुई गोली की आवाज़ उन्हें सुनाई दी। कारपोरल मुस्करा दिया।

"वह हमारा गुरका है जो दुश्मनो को निशाना बना रहा है," गोली की दिशा में सिर हिलाते हुए वह बोला।

कुछ क़दम चल लेने के पश्चात् उन्होने रेत के एक टीले के पीछे गुरका को बैठे देखा। वह अपनी बन्दूक भर रहा था। समय बिताने की गरज़ से वह उन अब्रेको पर जवाबी गोलियाँ चला रहा था जो एक दूसरे टीले के पीछे छिपे थे। उस दिशा से एक गोली सनसनाती हुई आई और निकल गई। कार्नेट पीला पड गया और घबडा गया। लुकाश्का उतर पडा, घोडे की लगाम एक कज्ज़ाक को पकडाई और सीधा गुरका के पास चला गया। ओलेनिन भी उतर पडा और झुका झुका लुकाश्का के पीछे चल दिया। मुश्किल से वे गुरका के पास तक पहुँचे होगे कि दो गोलियाँ उनके सिर पर से होती हुई निकल गईं। लुकाश्का हँसता हुआ ओलेनिन को देखता रहा और थोडा झुक गया। "सभलकर, रहना, वरना वे तुम्हे मार डालेगे, दिमीत्री अन्द्रेइच," उसने कहा, "अच्छा ही तुम चले जाओ। यह जगह तुम्हारे लिए नही है।"

परन्तु ओलेनिन ने अब्रेको को देखने का निश्चय कर लिया था। टीले के पीछे से उसे लगभग दो सौ कदम पर टोपियाँ और बन्दूकें दिखाई पड़ीं। सहसा कुछ धुआँ उठा और फिर एक गोली निकल गई। अब्रेक एक टीले के नीचे दलदली भूमि में छिपे हुए थे। ओलेनिन का सारा ध्यान उनके छिपने के स्थान पर केन्द्रित हो गया। वास्तविकता यह थी कि वह स्थान

शेष स्टेपी की भाँति ही था, परन्तु चूँकि वहाँ अब्रेक जमे थे अतएव वह बाकी स्टेपी से अलग और एक खास तरह का लग रहा था। ओलेनिन को लगा कि वह स्थान अब्रेको के छिपने के लिए एक मुनासिब स्थान है। लुकाश्का लौटकर अपने घोड़े के पास चला आया और ओलेनिन भी उसके पीछे पीछे हो लिया।

"हमें भूसे की एक गाडी का इन्तज़ाम करना चाहिए," लुकाश्का बोला, "वरना वे हम सब को मार डालेंगे। वहाँ, उस टीले के पीछे, भूसे से लदी हुई एक नगई गाडी है।" कार्नेट ने उसकी बात सुनी और कारपोरल ने अपनी सहमति दे दी। भूसे की गाडी लाई गई और कज्ज़ाक, उसके पीछे छिपे उसे ठेलकर आगे बढाने लगे। ओलेनिन एक टीले पर चढ गया जहाँ से वह सब कुछ देख सकता था। गाडी आगे बढती गई और सब के सब कज्ज़ाक उसके पीछे दुबक गये। कज्ज़ाक बढ रहे थे परन्तु चेचेन (वहाँ कुल नौ चेचेन थे) घुटने से घुटना मिलाये एक पक्ति में बैठे थे। उन्होंने कोई गोली नही चलाई।

सब कुछ शान्त था। सहसा चेचेनो की तरफ से एक करुण गीत सुनाई दिया जो चचा येरोश्का के 'आई-दाई-दला-लाई' की धुन पर था। चेचेनो ने जान लिया था कि अब वे ज़िन्दा न बचेंगे और इसलिए कि कही मैदान से भाग खडे होने की उनकी इच्छा प्रबल न हो उठे उन्होंने एक दूसरे के घुटनो को अपनी पेटियो से फँसा लिया था और निशाना साधे हुए अपना मरसिया पढ रहे थे।

गाडी के पीछे पीछे चलते हुए कज्ज़ाक आगे बढते गये। अब ओलेनिन को लग रहा था कि गोलाबारी किसी भी समय आरम्भ हो सकती है। अब्रेको की तरफ से सुनाई पडनेवाले एक करुण गान से वातावरण की शान्ति भग हो रही थी। सहसा गाना बन्द हो गया और एक तीखी आवाज़ सुनाई पडने लगी। एक गोली आकर गाडी

के सामनेवाले भाग से टकराई, और चेचेन चिचियाने लगे। अब गोलियो का जवाब गोलियो से दिया जाने लगा और वे आकर गाडी से टकराने लगी। कज्जाको ने गोलियाँ नही चलाई। वे दुश्मनो से सिर्फ पाँच कदम दूर रह गये थे।

एक क्षण और वीता और सहसा कज्जाक गाडी के बाहर निकल कर दोनो ओर से दुश्मनो पर टूट पडे। आगे आगे लुकाश्का था। ओलेनिन ने कुछ गोलियो की आवाजें सुनी और फिर उसे चीखें और चिल्लाहटें सुनाई दी। उसे लगा कि उसने धुआँ भी देखा है और खून भी। घोडा छोडकर और विना इस बात पर ध्यान दिये हुए कि वह कितना वडा खतरा उठा रहा है, ओलेनिन कज्जाको की ओर भागा। भय ने उसे अन्धा बना दिया था। उसे कुछ पता न चला। हाँ, उसने यह ज़रूर समझ लिया कि सव कुछ खत्म हो चुका है। लुकाश्का, जो पीला पड रहा था, हाथो में एक घायल चेचेन को पकडे हुए चिल्ला रहा था "इसे मत मारो, इसे मत मारो। मैं इसे जिन्दा ले जाऊँगा!" यह चेचेन वही था जो अपने भाई की—लुकाश्का द्वारा उसके मारे जाने के वाद—लाश लेने आया था। लुकाश्का उसके हाथ वाँध रहा था। सहसा चेचेन ने अपने को छुडा लिया और अपना रिवाल्वर चला दिया। लुकाश्का गिर पडा। उसके पेट से खून की धार वह निकली। वह रूसी और तातारी में गालियाँ देते हुए फिर उठा और फिर गिरा। उसके कपडो और शरीर पर खून अधिक, और अधिक उभरता आ रहा था। कुछ कज्जाक दौडकर उसके पास तक गये और उसकी पेटी ढीली करने लगे। नज़ारका सहायता पहुँचाने के पहले कुछ समय तक इधर-उधर करता रहा। वह तलवार म्यान में रख रहा था परन्तु वह उसमें सीधी जा न रही थी। तलवार खून से सनी थी।

लाल लाल वालो तथा ऐंठी हुई मूछोवाले चेचेन मारे जा चुके थे और उन्हे टुकडे टुकडे किया जा चुका था। केवल एक ही ज़िन्दा वचा था, वह जिसने लुकाश्का पर गोली चलाई थी। मगर वह भी वुरी तरह घायल हो चुका था। घायल बाज़ की तरह, खून से लथपथ (खून उसकी दाहिनी आँख के नीचे के घाव से वह रहा था), पीतमुख और निराश वह दाँत पीसता हुआ खूनी आँखो से इधर-उधर देख रहा था। उसके हाथ में कटार थी और वह अभी तक उससे अपनी रक्षा करने की बात सोच रहा था। कार्नेट उसके पास तक गया। ऐसा लगता था कि वह सिर्फ उसके पास से होकर गुज़र भर जाना चाहता है। परन्तु सहसा वडी तेज़ी के साथ उसने घूमकर चेचेन पर गोली चला दी। गोली कनपटी पार कर गई। चेचेन ने उठने की कोशिश की पर व्यर्थ और वह वही ढेर हो गया।

कज्ज़ाको की साँसे ज़ोर ज़ोर से चल रही थी। वे लाशो को खींच-खाँच रहे थे, उनके हथियार बटोर रहे थे। लाल वालवाला हर चेचेन मर्द था और हर एक का अपना अलग अलग व्यक्तित्व था। लुकाश्का को लोग गाडी तक ले गये। वह रूसी और तातारी में गालियाँ दिये जा रहा था।

"नही, तुम नही, मैं अपने ही हाथो से उसका गला घोटूंगा। आना सेनी।" वह चिल्लाया, मगर शीघ्र ही इतना कमज़ोर हो गया कि चिल्ला भी न सका।

ओलेनिन घर वापस आ गया। शाम को उसने सुना कि लुकाश्का मरणासन्न है पर नदी पार के एक तातार ने वादा किया है कि जडी-वूटियो की सहायता से वह उसे अच्छा कर देगा।

लाशें गाँव के दफ्तर में लाई गई। स्त्रियाँ और वच्चे उनके चारो ओर खड़े हुए उन्हे देख रहे थे।

जब ओलेनिन लौटा उस समय अँधेरा हो रहा था। जो कुछ भी उसने देखा था उसने उसे हतबुद्धि बना दिया। परन्तु रात के समय पिछली शाम की स्मृतियाँ उसके मस्तिष्क में फिर ताज़ी होने लगी। उसने खिड़की के बाहर देखा। मर्यान्का इधर-उधर दौड़ रही थी, कभी घर से निकलकर ओसारे में जाती कभी ओसारे से घर में। वह अपनी चीज़ें उठाने-धरने में लगी थी। उसकी माँ अगूर के बाग में थी और पिता दफ्तर में। ओलेनिन मर्यान्का के काम समाप्त कर लेने तक की प्रतीक्षा न कर सका और उससे मिलने चल दिया। वह घर में थी और उसकी पीठ ओलेनिन के सामने थी। ओलेनिन ने सोचा उसे लज्जा आ रही होगी।

"मर्यान्का," वह बोला, "मर्यान्का! क्या मैं आ सकता हूँ?"

सहसा वह घूमी। उसके मुँह पर उदासी छायी हुई थी, परन्तु आँखो में आँसू न दिख रहे थे। इस उदासी के बावजूद उसका चेहरा दमक रहा था। उसकी दृष्टि में एक मौन मर्यादा थी।

"मर्यान्का, मैं आ गया," ओलेनिन ने कहा।

"मुझे अकेली रहने दो!" वह बोली। उसके चेहरे पर कोई परिवर्तन नहीं हुआ, किन्तु गालो पर झर झर आँसू बरस गए।

"तुम रो क्यो रही हो? बात क्या है?"

"बात क्या है?" उसने रूखी आवाज़ में वे शब्द दुहरा दिये, "हमारे कज़्ज़ाक मारे गये हैं। यही बात है!"

"लुकाश्का?" ओलेनिन ने पूछा।

"भाग जाओ! क्या चाहते हो?"

"मर्यान्का!" उसके पास आते हुए ओलेनिन बोला।

"तुम मुझसे कभी कुछ न पा सकोगे!"

"ऐसी बात न कहो, मर्यान्का," ओलेनिन बोला।

"चले जाओ। मै तुमसे तग आ गई हूँ।" अपना पैर जमाती हुई

वह चिल्लाई और तीखी दृष्टि से देखती हुई उसकी ओर बढने लगी। उसकी नज़रो से घृणा, तिरस्कार और क्रोध की ऐसी चिनगारियाँ निकल रही थी कि ओलेनिन ने समझ लिया कि अब उसकी सारी आशाएँ टूट चुकी हैं। उसने इस औरत के बारे में पहले-पहल जो कुछ सोचा था वही ठीक था, केवल वही ठीक था। उसकी यह पूर्व-धारणा ठीक निकली कि वह उसे कभी पा न सकेगा। वह उसके लिए अगम्य है, अप्राप्य है।

ओलेनिन बिना कुछ कहे उसके घर से बाहर हो गया।

४२

घर लौट आने के बाद, प्राय दो घण्टे तक, ओलेनिन बिना हिले-डुले अपने बिस्तर पर पडा रहा। फिर वह अपनी कम्पनी के कमाण्डर के पास गया और प्रधान कार्यालय में काम करने के लिए उससे छुट्टी माँगी। किसी से भी विदा लिये बिना, और वन्यूशा को किराया अदा करने के लिए मालिक मकान के पास भेजकर, उसने उस किले में जाने की तैयारी की जहाँ उसका रेजीमेंट पडा था। उसे विदा देने के समय अकेला चचा येरोश्का ही वहाँ था। दोनो ने शराब का प्याला पिया—दूसरा, फिर तीसरा। उसके दरवाज़े पर एक ओइका-गाडी खडी थी, वैसी ही जिसपर बैठकर वह मास्को से चला था। परन्तु इस समय ओलेनिन अपने-आप से कोई बात न कर रहा था जैसी कि उसने तब की थी, और अपने मन को यह कहकर भी न समझा रहा था कि यहाँ के बारे में उसने जो जो सोच रखा था, जो जो किया था वह "वैसी बात न थी!" अब उसने नये जीवन की कोई बात न सोची। वह मर्यान्का को हमेशा से अधिक प्यार करता था और अच्छी तरह जानता था कि वह उसे कभी प्यार न कर सकेगी।

"अच्छा मेरे छोटे दोस्त, विदा," चचा येरोश्का कहता जा रहा था, "अब जब तुम अभियान पर जा ही रहे हो तो बुद्धि से काम लेना और मेरी इन बातो पर ध्यान रखना—ये एक बूढे की बाते हैं। जब तुम्हे आक्रमण या इसी तरह के किसी काम के लिए जाना पडे (तुम्हे मालूम है कि मैं एक पुराना खुर्राट हूँ और मैंने अपनी जिन्दगी में ऐसी बहुत-सी वारदाते देखी है) और तुम्हारे दुश्मन तुमपर गोलियाँ बरसायें तो भीड में मत घुसना, वहाँ मत जाना जहाँ ढेरो आदमी हो। लेकिन तुम लोग करते क्या हो? जब डर लगता है तो भीड की भीड बटोर लेते हो। समझते हो लोग जितने ही ज्यादा होगें खतरा उतना ही कम होगा। मगर भाई यही तो खराबी की जड है। लोग गोली हमेशा भीड पर ही बरसाते है। मै हमेशा दूसरो से अलग अलग, अकेला, रहता था और मैं कभी घायल नही हुआ। ऐसी कौनसी चीज़ है जो मैंने अपनी ज़िन्दगी में देखी न हो?"

"मगर तुम्हारे तो पीठ में गोली लगी है," वन्यूशा बोला। वह कमरा खाली कर रहा था।

"यह कज्ज़ाको की बेवकूफ़ी से," येरोश्का ने उत्तर दिया।

"कज्ज़ाको की? कैसे?" ओलेनिन ने पूछा।

"बस ऐसे ही। हम लोग पी रहे थे। एक कज्ज़ाक वान्का सित्किन को ज़्यादा चढ गई होगी और उसने मुझी को अपनी पिस्तौल का निशाना बना दिया, धाँय।"

"और क्या तुम्हे चोट भी लगी?" ओलेनिन ने पूछा, "वन्यूशा जल्दी काम खत्म करो और तैयार हो जाओ," उसने कहा।

"जल्दी काहे की! अब इसके बारे में पूरी बात तो सुन लो जब उसने गोली चलाई तो उससे मेरी हड्डी नही टूटी। वह केवल थोडी-सी घुस भर गई। इसलिए मैंने तुरन्त कहा 'भाई तुमने तो मुझे मार ही डाला। यह क्या किया? मगर मै तुम्हे नही छोडूँगा। अब

तुम्हें मुझे एक वाल्टी शराव पिलानी होगी, यही तुम्हारी सजा है।' "

"मगर क्या तुम्हे चोट लगी ?" ओलेनिन ने फिर पूछा। वह इस दास्तान पर कोई ध्यान न दे रहा था।

"मुझे वात खत्म करने दो। उसने वाल्टी भर शराब दी और हमने पी, लेकिन खून निकलता ही गया। कमरे भर में खून ही खून हो गया। और बुर्लाक कहने लगा 'जान से हाथ धो वैठेगा। उसे मीठी शराव की वोतल दो नही तो तुमपर मुकदमा चलेगा!' और फिर और शराव आई और हमने और पी और पी "

"ठीक है, मगर क्या तुम्हे चोट गहरी लगी थी?" ओलेनिन ने एक वार फिर पूछा ।

"चोट जरूर लगी थी! वात न काटो। मुझे यह पसन्द नही। मुझे अपनी वात पूरी कर लेने दो। हम सवेरे तक पीते ही गये, खूब पी और नाक तक चढाकर मैं तो अगीठी की टांड पर ही सो गया। जव सुवह जागा तो वदन सीधा नही हो रहा था।"

" दर्द वहुत था क्या?" ओलेनिन बोला। वह सोच रहा था कि आखिर अव उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिलेगा।

"क्या मैंने तुमसे यह कहा कि मुझे दर्द हुआ था? मैंने यह नही कहा कि मुझे दर्द हुआ। लेकिन हाँ, न मैं चल-फिर सकता था, न सीधा खडा ही हो सकता था।"

"और तव घाव ठीक हो गया?" ओलेनिन वोला। वह इतना उदास था कि हँस भी न सका।

"अच्छा तो हो गया। मगर गोली अभी भी अपनी जगह पर है। छूकर देखो।" और अपनी कमीज़ उठाकर उसने अपनी हट्टी-कट्टी पीठ दिखाई जहाँ एक हड्डी के पास गोली टटोलकर देखी जा सकती थी।

"यह देखो कैसी लुढकती-पुढकती है," वह गोली से ऐसा मज़ाक कर रहा था जैसे खिलौने से खेल रहा हो। "छूकर देखो। अब वह पीठ पर आ गई।"

"और लुकाश्का, क्या वह ठीक हो जायेगा?" ओलेनिन ने पूछा।

"ईश्वर जाने! यहाँ कोई डाक्टर भी तो नही। वे किसी को बुलाने गये हैं।"

"डाक्टर मिलेगा कहाँ? ग्रोजनाया में?" ओलेनिन ने पूछा।

"नही दोस्त, नही! अगर मैं ज़ार होता तो मैंने तुम्हारे सारे रूसी डाक्टरो को न जाने कब की फाँसी दे दी होती। वे एक ही चीज़ जानते हैं—काट-छाँट, चीर-फाड। हमारा एक कज़्ज़ाक दोस्त है—वक्लाशेव। अब वह सचमुच का आदमी भी नही रह गया। उन्होने उसका पैर ही काट डाला। इससे ज़ाहिर है कि सारे डाक्टर गधे हैं। अब वक्लाशेव किस मर्ज़ की दवा रह गया है? नही, मेरे दोस्त। पहाडो में अब भी उस्ताद डाक्टर हैं। मेरा एक दोस्त था गिरचिक। अभियान में उसके एक गोली लगी, ठीक यहाँ छाती में। तुम्हारे डाक्टरो ने तो जवाब ही दे दिया, लेकिन पहाडो से एक आया और उसने उसे ठीक कर दिया। मेरे दोस्त, वे समझते हैं कि जडी-बूटी क्या है!"

"खैर, यह खुराफात बन्द करो," ओलेनिन बोला, "मैं प्रधान कार्यालय से डाक्टर भेज दूंगा।"

"फिज़ूल!" बूढा व्यग्य से बोला, "गधे हो तुम, बेवकूफ! तुम डाक्टर भेजोगे। अगर तुम्हारे डाक्टर ही लोगो को अच्छा करने लगते तो कज़्ज़ाक और चेचेन उन्ही के पास इलाज कराने न जाते। मगर होता क्या है? खुद तुम्हारे ही अफसर और कर्नल पहाडो से डाक्टर बुलाते हैं। तुम्हारे डाक्टर धोखेबाज़ हैं, सिर्फ धोखेबाज़।"

ओलेनिन ने कोई उत्तर न दिया। वह केवल एक ही बात से सहमत था– जिस दुनिया में वह रहता था और जहाँ रहने जा रहा था वह सभी धोखा है, चारो तरफ धोखा ही धोखा और कुछ नहीं।

"लुकाश्का की हालत कैसी है? तुम उसे देखने गये या नही?" उसने पूछा।

"वह ऐसे पडा है मानो मुर्दा हो। न खाता है, न पीता। सिर्फ शराब पीता है। जब तक पीता है तब तक ठीक है। अगर कही मर गया तो मुझे बडा दुख होगा। बहादुर लडका है–मेरी ही तरह बहादुर। मैं भी एक बार ऐसे ही मर रहा था। बूढी स्त्रियाँ रो धो रही थी। ऐसा लगता था कि सिर में भट्ठी जल रही हो। उन्होने मुझे पवित्र प्रतिमा के नीचे रख भी दिया था और मै वहाँ पडा रहा, और मेरे ठीक ऊपर, अगीठी पर छोटे छोटे ढोलकिये नगाडे बजा रहे थे। मैं उनपर चिल्लाया और उन्होंने नगाडो की आवाज़ और तेज़ कर दी।" (बूढा हँस पडा।) "औरतो ने हमारे पादरी को बुलाया। वे मुझे दफनाने की तैयारी कर रहे थे। वे कह रहे थे–'इसने काफिरो का साथ किया है, औरतो के साथ खुराफाते की है, लोगो को मौत के घाट उतारा है, कभी व्रत-उपवास नही किये और हमेशा बलालाइका ही बजाता रहा। अपने पापो को स्वीकार करो,' उन्होने कहा। इसलिए मैं अपने जुर्मो का इकबाल करने लगा। 'मैंने पाप किये हैं।' मैंने कहा। जो कुछ भी पादरी कहता उसके उत्तर में मैं कहता था, 'मैंने पाप किये है।' उसने मुझसे बलालाइका के बारे में पूछना शुरू किया। 'कहाँ है यह अपवित्र वस्तु?' उसने पूछा, 'उसे मुझे दिखाओ और नष्ट कर डालो।' 'लेकिन वह तो अब मेरे पास नही है,' मैंने कहा। मैंने उसे घर में एक जाल में छिपा दिया था। मैं जानता था कि वे कभी भी उसका पता न लगा सकेंगे। इसलिए उन्होंने

मुझे छोड दिया। लेकिन मुझे वह फिर मिल गई और फिर मैंने उसे खूब वजाया—हाँ तो मै क्या कह रहा था?" उसने शुरू किया, "मेरी वात मानो और दूसरो से अलग रहो, वरना मुफ्त में जान से हाथ धोना होगा। मुझे तुमसे हमदर्दी है। यह ठीक वात है। तुम पियक्कड हो इसलिए मै तुम्हें प्यार करता हूँ। तुम्हारे जैसे लोग टीलो पर चढना पसन्द करते है। यहाँ एक रूसी रहता था। उसे टीले पसन्द थे। वह हमेशा उनपर चढने जाया करता था। वह उन्हे 'टेकडी' या ऐसे ही किसी विचित्र नाम से पुकारता था। जव कभी वह कोई टीला देखता तो उसपर चढ जाता। एक वार वह वहाँ घोडे पर गया और सबसे ऊँची चोटी पर चढ गया। वह वडा खुश था। परन्तु ठीक उसी समय एक चेचेन ने उसे गोली का निशाना बना दिया और उसे मार डाला। ओफ ये चेचेन भी कितने वडे निशानेबाज़ है। कुछ तो मुझसे भी अच्छा निशाना साधते हैं। जव कोई आदमी इस तरह से व्यर्थ मारा जाता है तो न जाने क्यो मुझे अच्छा नही लगता। कभी कभी तुम्हारे सिपाहियो को देखकर मुझे ताज्जुब होता था। जिधर देखो वेवकूफी ही वेवकूफी। विचित्र दशा में घूमा-फिरा करते है, कोटो पर लाल लाल कालर लगा है तो लगा ही हुआ है कुछ फिकर नही। फिर क्यो न दूसरे लोग उन्हें निशाना वनाय। एक मारा जाता है, तो उसे ढकेल-ढकाल कर अलग फेंक दिया जाता है और दूसरा उसकी जगह जम जाता है। क्या वेवकूफी है।" सिर हिलाते हुए वूढा वोला, "क्यो न अलग अलग हो जाओ और एक एक करके जाओ। फिर तुम्हे कौन निशाना वनायेगा! हाँ यह वाते जरूर याद रखना।"

"अच्छा, धन्यवाद, नमस्ते, चचा। ईश्वर ने चाहा तो फिर मिलेगे," उठकर गलियारे तक आते हुए ओलेनिन वोला। वूढा फर्श पर ही वैठा रहा, उठा तक नही।

"इसी तरह नमस्ते की जाती है? वेवकूफ, वेवकूफ!" उसने कहना शुरू किया, "अरे प्यारे, लोगो को क्या हो गया है! हम साथ साथ रहे है, साथ साथ उठे-वैठे हैं और पूरे साल भर तक। और अव एक सीवी-सादी 'नमस्ते' और चल दिये। वस। मैं तुम्हे प्यार करता हूँ और मुझे तुमपर तरस आता है। तुम अकेले हो, विल्कुल अकेले, तुम्हे कोई भी प्यार नही करता। कभी कभी तो तुम्हारा ध्यान आ-जाने के कारण मुझे नीद भी नही आती। मुझे तुम्हारे जाने का दुख है। गीत में कहा गया है—

विरादर! चूर है दिल ग़म की इन लगती-सी ठेसो में,
वहुत मुश्किल विताना ज़िन्दगी अपनी विदेसो में।
और यही तुम्हारे साथ भी है।"

"हाँ जी, अच्छा नमस्ते," ओलेनिन फिर वोला।

वूढा उठा और अपना हाथ फला दिया। ओलेनिन ने उसे दवाया और जाने के लिए मुड गया।

"ज़रा इधर," और वूढ़े ने ओलेनिन का सिर अपने दोनो हाथो से पकड लिया और अपनी भीगी मूछो तथा ओठो से उसे तीन वार चूमा और सिसक सिसककर कहने लगा—

"मै तुम्हे प्यार करता हूँ! नमस्ते, मेरे दोस्त, नमस्ते।"

ओलेनिन गाडी म वैठ गया।

"ओफ ऐसे ही चले जा रहे हो? मुझे कुछ तो दिये जाओ कि तुम्हे याद करता रहूँ। एक वन्दूक ही सही! तुम्हे दो की क्या ज़रूरत?" वूढा वोला। वह सिसक सिसककर रो रहा था।

ओलेनिन ने वन्दूक़ दे दी।

"कितनी चीज़ें तो तुम इस वूढे को दे चुके, मगर इसे सन्तोष ही नही होता। पुराना भिखारी है। सभी ऐसे ही औला-मौला होते हैं,"

वन्यूशा ने कहा और अपने ओवरकोट में सिकुड़कर अपनी जगह बैठने लगा।

"बकवास बन्द कर, सुअर का बच्चा!" हँसता हुआ बूढा बोला। "कैसा बिच्छू है, बदमाश!"

मर्यान्का ओसारे से निकली, उसने गाडी पर एक सरसरी नज़र डाली, सिर झुकाया और घर की ओर चल दी।

"ला फिल!" आँख मारते हुए वन्यूशा बोला और बेवकूफो जसा हँसने लगा।

"गाडी हाँको!" ओलेनिन गुस्से से चिल्ला उठा।

"नमस्ते, मेरे दोस्त, नमस्ते। मै तुम्हे कभी न भूलूंगा, कभी न भूलूंगा!" येरोश्का की तेज़ आवाज़ सुनाई दी।

ओलेनिन ने पीछे मुडकर देखा । चचा येरोश्का मर्यान्का से बाते कर रहा था, शायद अपने ही बारे में। और न तो उस बूढे ने ही ओलेनिन की ओर देखा और न मर्यान्का न ही।

१८५२ – १८६२